'द स्पीकिंग स्टोन' और 'अंडमान' के लेखक की ओर से

ए पी एस

पैराडाइज़ लॉस्ट और रीगेन्ड

अपने अस्तित्व को सुनने
की एक प्रेरणादायक यात्रा

रत्नदीप
आचार्य

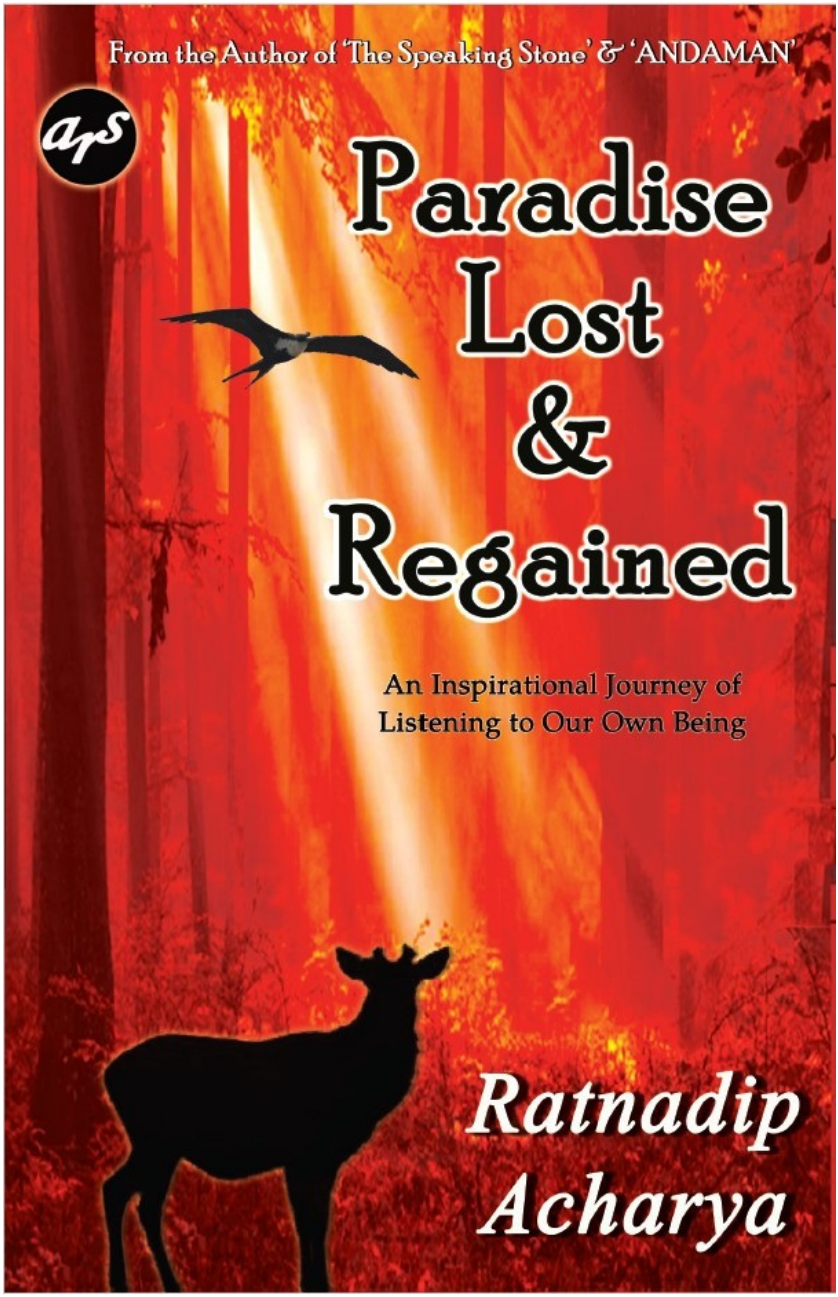
From the Author of 'The Speaking Stone' & 'ANDAMAN'
aps
Paradise Lost & Regained
An Inspirational Journey of Listening to Our Own Being
Ratnadip Acharya

अंतर्वस्तु

आसमान से टुटा
खोया हुआ स्वर्ग और पुनः प्राप्त
समर्पण
लेखक के बारे में
सामग्री पृष्ठ
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय-3
अध्याय-4
अध्याय-5
अध्याय-6
अध्याय 7
अध्याय -8
अध्याय-9
अध्याय-10
अध्याय-11
अध्याय-12
अध्याय-13
अध्याय-14
अध्याय-15
अध्याय-16
अध्याय-17
अध्याय-18
अध्याय-19
अध्याय-20
अध्याय-21
लेखक का नोट

इस लेखक की पुस्तकें

आसमान से टुटा

&

वापस पा ली

अपने भीतर की आवाज़ सुनने की एक प्रेरणादायक यात्रा

Ratnadip Acharya

खोया हुआ स्वर्ग और पुनः प्राप्त

अपने भीतर की आवाज़ सुनने की एक प्रेरणादायक यात्रा

Ratnadip Acharya

अक्सोरा पब्लिकेशन्स एलएलपी
भारत में पहली बार जुलाई 2025 में प्रकाशित।
अक्सोरा पब्लिकेशन्स एलएलपी
प्लॉट- 04 सेक्टर – 34ए
KHARGHAR – 410210
Navi Mumbai
ईमेल: aksorapublications@gmail.com
कॉपीराइट © रत्नादीप आचार्य
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, संग्रहित, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में डाला या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य)। इस प्रकाशन से संबंधित कोई भी अनधिकृत कार्य करने वाला व्यक्ति आपराधिक अभियोजन और क्षतिपूर्ति के लिए

दीवानी दावों का पात्र हो सकता है।
ISBN:978-81-941328-5-1
कवर डिज़ाइन: गोकुलराम सिंह
लेआउट: अक्सोरा पब्लिकेशन एलएलपी में टाइपसेटर
बुक एंटीक्वा 10.5 फॉन्ट में टाइपसेट किया गया।
भारत में कीमत: ₹147/-

समर्पण

मेरे प्यारे बेटे के लिए,

आकाश

लेखक के बारे में

रत्नादीप आचार्य चार सफल उपन्यासों - अंडमान, द स्पीकिंग स्टोन, योर लव मेक्स मी कम्प्लीट और लाइफ इज ऑलवेज एमलेस... अनलेस यू लव इट - और अलौकिक कहानियों के संग्रह 'द क्लैमी हैंड्स ऑफ द डार्क नाइट्स' के लेखक हैं। उनके ऐतिहासिक थ्रिलर उपन्यास, 'द स्पीकिंग स्टोन' और 'अंडमान', बेहद सफल रहे हैं और देशभर के कई पाठकों द्वारा सराहे गए हैं। वे टाइम्स ऑफ इंडिया के 'द स्पीकिंग ट्री' में स्तंभकार हैं। उन्होंने 'चिकन सूप फॉर द सोल' के विभिन्न संग्रहों में अनेक लेख लिखे हैं। वे मुंबई में अपनी पत्नी सोफिया और बेटे आकाश के साथ रहते हैं।
आप निम्नलिखित माध्यमों से रत्नादीप से जुड़ सकते हैं:
फेसबुक: www.facebook.com/TheRatnadip
फेसबुक: www.facebook.com/ratnadip.acharya.5
इंस्टाग्राम: www.instagram.com/ratnadipacharya

सामग्री पृष्ठ

1. जीवन की इच्छा
2. जीवन स्वयं एक चमत्कार है

3. मृत्यु—जन्म का जुड़वा भाई
4. जीवन—सबसे महान प्रेम गीत
5. जीवन के अनजाने मोड़
6. एक बार प्रार्थना का उत्तर मिल गया
7. जीवन के साथ एक प्रेम संबंध
8. आनंद की खोज में
9. सपने हकीकत जितने ही वास्तविक होते हैं
10. एक नए प्राणी का जन्म
11. दूसरे ग्रह से आए आगंतुक
12. पूरी तरह से प्रकाशमान
13. प्रयास और समर्पण का मिश्रण
14. मेरी मातृभूमि, मेरा प्यार
15. सुबह हो गई है, हिरण, उठो*!*
16. चट्टानें, पृथ्वी - ये सभी जीवित हैं
17. मौन की आवाज
18. जीवन में जो भी आए, उसका स्वागत करो।
19. विश्वास के साथ, हमेशा वसंत ऋतु रहती है।
20. अंतिम निर्णय
21. एक दैवीय नियुक्ति
लेखक का नोट

अध्याय *1*

जीवन की इच्छा

सृष्टि की रचना में भाग लेने में एक अलग ही आनंद है।

मेरी माँ ने मुझे धीरे से अपने गर्भ से निकालकर घास वाली धरती पर रखा, तो सबसे पहले मुझे चुभन का एहसास हुआ। चारों ओर की तेज़ रोशनी से मेरी दृष्टि मंद पड़ गई और मैंने एक आँख आधी खोली।

पिछले कुछ दिनों से मेरे मन में एक अनजान डर बैठा था, जिससे मेरा पूरा शरीर कांप उठा। अंधेरे, चिपचिपे तरल पदार्थ से भरे एक थैले में, जहाँ मुझे अपने चारों पैर मोड़कर रहना पड़ता था, मेरी खुशहाल जिंदगी में बस यही एक पल था जब डर ने मेरे मन पर कब्जा किया। बाद में मुझे पता चला कि मैं काफी भाग्यशाली था, क्योंकि मेरे जैसे ज्यादातर बच्चों को अपनी माँ के गर्भ में कम से कम एक या दो और भाई-बहनों के साथ रहना पड़ता है।

बोरी के अंदर घना अंधेरा था, और पिछले कुछ दिनों से मुझे एक अजीब सी अनुभूति हो रही थी कि जिस थैली में मैं हूँ, वह मेरे हर घंटे बढ़ते शरीर को अब और समाहित नहीं कर पा रही है। 'अगर मैं और बढ़ गया तो मेरा क्या होगा?' यह विचार मेरे मन में

आया था, और पहली बार मुझे भीतर से भय का एक गहरा झटका लगा।
बोरी के अंदर मुझे जो सुरक्षा का अहसास हुआ, उसने मुझे दो बातों से पूरी तरह बेखबर रखा, जो बाद में मेरे जीवन के प्रमुख और आवश्यक कारक बन गईं। इनमें से पहली थी समय, और इसका मुझ पर और मेरे आस-पास की हर चीज पर निश्चित और गहरा प्रभाव। और दूसरी थी मेरी कमजोरी, जिसने बाद में मेरे भीतर जीने की प्रबल इच्छा जगाई।
पिछले कुछ दिनों में मैंने अक्सर यह संकल्प लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं इस जगह को कभी नहीं छोड़ूंगा। हालांकि मुझे किसी और जगह के अस्तित्व का बिल्कुल भी पता नहीं था, लेकिन एक बात तो मुझे अपनी मां के गर्भ में ही पक्की पता थी कि मुझे फिर कभी रहने के लिए ऐसी सुरक्षित और आरामदायक जगह नहीं मिलेगी।
लेकिन मेरा संकल्प अक्सर डगमगा जाता था, क्योंकि कभी-कभी जिस कक्ष में मैं थी, वह चारों ओर से सिकुड़ जाता था, मानो मुझे उसे खाली करने का संकेत दे रहा हो, और मैं उससे जुड़े एक संकरे रास्ते से बाहर निकल जाऊं। गर्भ से बाहर फेंके जाने का भय तब और बढ़ गया जब वह संकरा रास्ता धीरे-धीरे फैलने लगा, मानो हमेशा के लिए इस सुरक्षा और शांति के आश्रय से मेरे सुरक्षित बाहर निकलने के लिए जगह बना रहा हो।
जैसे-जैसे मुझे इस बात का यकीन होता गया कि जल्द ही मुझे गर्भ छोड़ना होगा, वैसे-वैसे मेरा डर बढ़ता गया। और इसी डर ने मुझे अपनी माँ के गर्भ की चिकनी दीवारों से बेताब होकर चिपके रहने के लिए मजबूर कर दिया, हालाँकि यह कोशिश व्यर्थ ही रही।
कुछ क्षणों के लिए मैं पूरी तरह से स्तब्ध और असहाय हो गया था, इससे पहले कि मुझे एहसास हुआ कि मैं अपनी माँ से हमेशा के लिए अलग हो गया हूँ। मेरी माँ ने जब मुझे धरती पर लिटाया तो लगभग एक हल्की सी आवाज़ आई, फिर भी मेरे लिए वह आवाज़ एक चेतावनी की घंटी के साथ-साथ स्वागत की घंटी भी थी।
यह एक चेतावनी की घंटी थी कि अब मेरी सभी जरूरतों का ख्याल नहीं रखा जाएगा, क्योंकि अब मैं अपनी सुरक्षा के प्रति अनजान रहने का जोखिम नहीं उठा सकता था।
लेकिन यह वास्तव में एक स्वागत की घंटी भी थी; एक ऐसी घंटी जो मुझे घने जंगल में प्राकृतिक जीवन जीने के लिए आमंत्रित कर रही थी। एक ऐसी घंटी जो मुझे यह

संकेत दे रही थी कि पृथ्वी पर सभी जीवन प्रकृति का उपहार है, जो चुनौतियों और खतरों से भी भरा हुआ है, और जीवन का भरपूर आनंद उठाने, उससे रस की आखिरी बूंद तक निचोड़ने के लिए व्यक्ति को साहसी और जिम्मेदार होना चाहिए।

लेकिन एक नवजात हिरण के बच्चे के रूप में, जो अपनी ही चिंताओं और व्याकुलता से घिरा हुआ था, जाहिर तौर पर मैं उस गहन संदेश को समझने में असफल रहा जो लगभग खामोश ध्वनि के माध्यम से मुझे संप्रेषित किया गया था।

कुछ और दर्दनाक पल बीतने के बाद मैं अपनी आँखें दोबारा खोल पाई। इस बार मैं अपने आसपास की चीजों को समझने की कोशिश कर रही थी। अब मुझे अपनी माँ की जीभ अपने शरीर पर महसूस हो रही थी, जो मेरे शरीर से फिसलन भरी और साबुन जैसी नमी को चाट रही थी।

उसमें से एक अजीब सी गंध आ रही थी; ऐसी गंध जिसका अनुभव मेरी सूंघने की शक्ति ने मां के गर्भ में रहते हुए कभी नहीं किया था। गर्भनाल के द्रव की यह परत एक सुरक्षा कवच की तरह थी, जिसके साथ मेरी मां ने मुझे धरती पर छोड़ा था, लेकिन अब वह इसे मुझसे हटा रही थी।

अब मैंने अपनी आँखें खोलने के लिए एक और प्रयास किया, जो पहले से कहीं अधिक दृढ़ और सचेत था। मैंने अपनी गर्दन माँ की ओर घुमाई और धीरे-धीरे अपनी पलकें खोलीं। मुझे पहले ही एहसास हो चुका था कि जितनी धीरे-धीरे मैं अपनी पलकें खोलूँगी, दिन के उजाले का असर मेरी आँखों पर उतना ही कम होगा। और मैं सही थी; कुछ ही क्षणों में मैं अपनी माँ को स्पष्ट और बिना किसी रुकावट के देख सकी।

उसका शरीर लचीला और पतला था और वह अपनी गर्दन को बड़ी खूबसूरती और फुर्ती से हिला सकती थी। उसका मुलायम फर हल्के भूरे रंग का था और उस पर बड़े-बड़े सफेद धब्बे थे। उसकी छोटी सी पूंछ बेचैनी से हिल रही थी, जो मुझे लगा कि मेरी सुरक्षा को लेकर उसकी चिंता का कारण थी। अब मेरी नज़र उसकी कोमल और भावपूर्ण आँखों से मिली। उसकी बादाम जैसी गहरी आँखें, मेरे लिए गहरी चिंता से भरी हुई थीं, स्थिर थीं और उसकी निगाहें मुझ पर टिकी हुई थीं।

अनजाने में ही मैंने राहत की सांस ली, क्योंकि मुझे पता था कि अब भी मैं अपनी स्नेहपूर्ण माँ की सुरक्षा में हूँ। मैंने उनसे विनती भरी निगाहों से देखा, क्योंकि मुझे अपनी शंका और जिज्ञासा व्यक्त करने का कोई और तरीका नहीं सूझ रहा था।

मुझे अभी तक यह समझ नहीं आया था कि हिरणों का झुंड आपस में संवाद करने के

लिए एक निश्चित भाषा का उपयोग करता है।
दूसरे झुंड का कोई हिरण समय के साथ हमारी भाषा सीख सकता है, लेकिन कोई भी दूसरा जानवर हमारी भाषा को समझ नहीं सकता। हालांकि, मैं नवजात शिशु होने के कारण अपनी माँ से संवाद करने का केवल एक ही तरीका जानता था। वह था मेरी आँखों का इस्तेमाल।
मुझे नहीं पता था कि उसने मेरी आँखों में क्या पढ़ा, लेकिन जवाब में उसने कुछ धीमी, कर्कश आवाजें निकालीं, और फिर यह समझते हुए कि संचार का यह तरीका मेरे लिए समझ से परे था, उसने मेरी आँखों में देखा।
पहले तो ऐसा लगा जैसे बस एक पल भर की नज़र हो, लेकिन फिर मैंने महसूस किया कि उसकी निगाहें मेरी निगाहों पर टिक गईं, स्थिर और शांत। और भले ही यह अजीब लगे, मैं उसकी कोमल और स्नेह भरी आँखों में उसके शब्द आसानी से पढ़ सकता था।
जीवन के उत्तरार्ध में, अनेक कठिन समयों का सामना करने के बाद, मुझे यह अहसास हुआ कि जब हम किसी से गहरा प्रेम करते हैं, तो हमारी आँखें अपने प्रियजनों के प्रति हमारी गहरी भावनाओं या प्रश्नों को व्यक्त करने में सक्षम होती हैं। हम अपने विचारों को ज़ुबान से कहते हैं या वे हमें ज़ुबान से कहते हैं, हम अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए एक भाषा का आविष्कार तभी करते हैं जब हमारे बीच का प्रेम कम हो जाता है और दूरी बढ़ जाती है।
मैं अपनी माँ की आँखों को आसानी से पढ़ सकता था, जो मुझसे कह रही थीं, 'मेरे प्यारे बच्चे, तुम सोच रहे होगे कि मैं तुम्हारे शरीर को चाटकर साफ क्यों कर रही हूँ। तुम्हें नहीं पता, अगर तुम अच्छी तरह से साफ नहीं हुए, तो कोई भी शिकारी तुम्हारी गंध पहचान लेगा और तुम पर झपटने में एक पल भी बर्बाद नहीं करेगा। लेकिन चिंता मत करो, मेरे प्यारे बच्चे, मैं तुम्हारा पूरा ख्याल रखूँगी, और जल्द ही तुम अपने पैरों पर खड़े हो जाओगे और हम सब की तरह उछल-कूद और नाचोगे।'
मैं उसकी कही हुई सारी बातें तो नहीं समझ पाई, लेकिन इतना जरूर समझ गई कि मेरे शरीर से आ रही गर्भनाल की गंध मेरे जीवन के लिए खतरा बन सकती है।
अब उसने बड़ी सावधानी से अपने दाँतों से उस नाल को काटा जो उसके शरीर को मेरे शरीर से जोड़े हुए थी। मुझे कोई दर्द नहीं हुआ, लेकिन नाल का टुकड़ा मेरे साथ रह गया। मैंने उसे उत्सुकता से देखा और फिर अपनी माँ की ओर देखा।

‘धीरे-धीरे यह सिकुड़ता जाएगा, और एक दिन तुम्हारे शरीर से गिर जाएगा। अब तुम मुझसे शारीरिक रूप से हमेशा के लिए अलग हो गए हो। लेकिन याद रखना, भले ही अब हम शारीरिक रूप से जुड़े नहीं हैं, हम दोनों हमेशा एक-दूसरे के अस्तित्व का हिस्सा बने रहेंगे। हमें पूर्ण महसूस करने के लिए हमेशा एक-दूसरे की ज़रूरत होगी।’ मुझे लगा जैसे उसकी प्रेम भरी आँखें मुझसे यही कह रही हों।

और फिर मुझे ऐसा लगा जैसे वो अपनी उन दो स्नेह भरी आँखों से मुझसे कुछ और कह रही हो, ‘तुम मेरी सभी संतानों में सबसे सुंदर हो। नन्ही बच्ची, तुम्हारा शरीर एकदम परिपूर्ण है और चेहरा भी बहुत प्यारा है। मैं देख सकती हूँ कि एक दिन तुम हिरणों के एक बड़े झुंड का नेतृत्व करोगी। चारों ओर देखो, कितने सारे हिरण तुम्हारा स्वागत करने के लिए इकट्ठा हुए हैं।’

मैंने दोनों ओर गर्दन घुमाई और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि मैं हिरणों के झुंड से घिरा हुआ हूँ। उनकी प्रशंसा भरी और जिज्ञासु निगाहें मुझ पर टिकी हुई थीं।

जैसे ही मेरी नजरें दूसरे हिरणों से मिलीं, एक क्षण के लिए वे सभी एक साथ गले से एक कर्कश आवाज निकाल गए, और मुझे एहसास हुआ कि यह मेरा स्वागत करने और मुझे अपने झुंड के एक नए सदस्य के रूप में स्वीकार करने के लिए था।

सभी हिरणों को सतही तौर पर देखने पर आपको लग सकता है कि वे सभी एक जैसे दिखते हैं, लेकिन जब आप प्रत्येक हिरण की बारीकी से जांच करेंगे, तो आपको एहसास होगा कि वे सभी रंग-रूप, ऊंचाई और आकार में एक दूसरे से भिन्न हैं।

मेरे आस-पास मौजूद सभी हिरणों के साथ मुझे जुड़ाव का एहसास हुआ और अनजाने में ही मेरा मुंह खुल गया, जिससे मेरे दो जोड़ी सुंदर दांत दिखाई दिए। मुझे नहीं पता था कि मेरे इस भाव को मुस्कान कहते हैं। मेरे चेहरे पर मुस्कान आते ही सभी हिरणों ने एक साथ, लगभग एक सुर में, एक जैसी आवाज़ निकाली।

मैंने अपनी माँ की ओर देखा यह जानने के लिए कि उस आवाज़ का वास्तव में क्या अर्थ है और मेरी माँ ने अपनी आँखों के माध्यम से जो संदेश दिया, उससे मुझे अपार खुशी और संतुष्टि का अनुभव हुआ।

‘मेरे प्यारे बच्चे, जन्म के कुछ ही मिनटों में कोई नवजात शिशु मुस्कुराता नहीं है। तुम इतनी जल्दी जीवन के साथ सहज हो गए हो, यह देखकर सभी बच्चे सचमुच आश्चर्यचकित हैं।’ मेरी माँ थोड़ी देर रुकीं और फिर बोलने लगीं, ‘लेकिन सबसे पहले तुम्हें अपने पैरों पर खड़ा होना सीखना होगा। मैं तुम्हें हल्के से कुछ धक्के दे सकती हूँ,

लेकिन याद रखना, तुम्हें अपने पैरों पर खुद ही खड़ा होना होगा।'
'नहीं माँ,' मैंने उनसे विनती भरी निगाहों से कहा। 'कृपया मुझे कुछ धक्के देकर मदद न करें। पहले मुझे खुद कोशिश करने दें।'
'यह वाकई बहुत अजीब है। हर बच्चा शुरुआत में अपनी माँ से सहारा चाहता है ताकि वह अपने कमजोर और नाजुक पैरों पर खड़ा हो सके। लेकिन तुम अपवाद हो। आगे बढ़ो, मेरी बच्ची, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।'
जैसे ही मेरी मां ने मुझे अनुमति दी, मैंने अपने पैर हिलाए और सोचने लगा कि अपने अनुभवहीन पैरों पर कैसे खड़ा होऊं।
ठीक उसी क्षण, मेरी इस कोशिश को देख रहे सभी हिरणों ने एक साथ असहमति जताते हुए आह भरी। इससे मुझे थोड़ी निराशा हुई और मैंने अपनी माँ की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।
उनकी आँखों में एक पल के लिए शरारत की झलक दिखाई दी, फिर उन्होंने मुझसे कहा, 'दरअसल, वे सब तुम्हारी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। उन्हें लगता है कि अगर तुम अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करोगे तो तुम्हारे घुटने टूट सकते हैं। वे चाहते हैं कि मैं तुम्हें यह दुस्साहसी काम करने से रोकूँ। लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम आगे बढ़ो, मेरे बच्चे, क्योंकि मैंने तुम्हारी आँखों में साहस की एक झलक देख ली है।'
माँ के शब्दों से प्रेरित होकर, मैंने दृढ़ निश्चय किया। मैंने अपने पिछले पैरों पर भार डाला, अगले पैरों को मोड़ा और अपने खुरों के नीचे की ज़मीन को पूरी ताकत से धकेलते हुए अपने शरीर के अगले हिस्से को उठाया। लेकिन अपने शरीर के पिछले हिस्से को उठाना सचमुच एक कठिन काम था। फिर भी मैंने अपने शरीर के पिछले हिस्से को उठाने की कोशिश की, एक नवजात हिरण के रूप में मैं जितनी ताकत जुटा सकता था, उतनी ताकत वहाँ लगा दी। मैं न केवल अपने प्रयास में असफल रहा, बल्कि कुछ दर्दनाक क्षणों के बाद मेरे पिछले पैर जवाब दे गए और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा।
अचानक, आसपास मौजूद हिरणों के झुंड ने मुस्कुराते हुए अपने दांत दिखाए। यह एक अजीब सी मुस्कान थी, और बाद में मुझे पता चला कि इसे व्यंग्यात्मक मुस्कान कहते हैं, एक ऐसी मुस्कान जो अक्सर हम दूसरों और उनके प्रयासों पर हंसने के लिए देते हैं, एक ऐसी मुस्कान जो किसी के साहस या दृढ़ संकल्प को तोड़ सकती है। मुझे लगा कि वह मुस्कान मुझसे कह रही है कि उनकी बातों पर ध्यान न देने के लिए मुझे

बस जमीन पर गिरना ही उचित है।

लेकिन किसी अज्ञात कारण से, हिरणों की ताना मारने वाली भीड़ ने मेरे हौसले को कम नहीं किया, बल्कि मेरे संकल्प को और मजबूत कर दिया। मेरी नज़रें पहली बार अपनी माँ से मिलीं। उनकी आँखों में आशा और उम्मीद थी, मानो वह मुझे असफल नहीं देखना चाहती थीं। उनसे प्रोत्साहन का एक भी शब्द सुने बिना, मैंने एक और प्रयास किया, लेकिन इस बार धीरे-धीरे और अधिक सावधानी से।

हालांकि इस प्रयास से तुरंत सफलता नहीं मिली, लेकिन तीसरे प्रयास में मैंने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया और मैं चारों हाथों-पैरों के बल था, बेहतर संतुलन के लिए अपने घुटनों को आगे की ओर मोड़ रहा था।

मैं आपको पहली बार अपने पैरों पर खड़े होने की खुशी कैसे समझाऊं? अचानक एक हवा चली; एक सुहावनी और मधुर हवा। मुझे ऐसा लगा जैसे वह मेरे दृढ़ संकल्प और साहस का जश्न मना रही हो।

मैंने अपने साथी हिरणों पर एक भावहीन नज़र डाली। उनके चेहरों पर विस्मय स्पष्ट रूप से झलक रहा था। उनके उलझन भरे चेहरों और मेरे प्रति प्रेम से दमकते मेरी माँ के गर्वित चेहरे को देखकर अचानक मेरे मन में एक विचार आया।

जब भी आप कुछ ऐसा असामान्य करने का प्रयास करते हैं जिसमें आपके साथी और बड़े-बुजुर्ग पहले ही असफल हो चुके हैं या चुनौती स्वीकार करने का साहस नहीं कर पाए हैं, तो वे हमेशा आपको अपने लक्ष्य का पीछा करने से हतोत्साहित करेंगे।

अगर आपके साथ ऐसा होता है, तो अपने सपने को कम मत समझिए, बल्कि शांत और संयमित रहिए, उनकी बातों को अनसुना कीजिए और दोगुनी ऊर्जा और उत्साह के साथ अपना प्रयास जारी रखिए। और अगर आप सचमुच शांत रह सकते हैं और अपना ध्यान केंद्रित रख सकते हैं, तो अपने लक्ष्य तक पहुँचने में बस कुछ ही समय लगेगा।

'तुम उन चुनिंदा लोगों में से एक हो, मेरी बच्ची। मुझे तुम पर बहुत गर्व है,' मां ने अपनी प्रेम भरी आंखों से, जो खुशी से दमक रही थीं, मुझसे कहा।

चुनिंदा लोगों में से एक होने के नाते, मैंने उसकी कही बातों पर विचार किया। क्या इसका मतलब यह है कि मुझे कोई चमत्कार करना है? लेकिन एक हिरण क्या चमत्कार कर सकता है? मैंने सोचा और अपनी माँ की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

मेरी मां की निर्मल आंखों ने मुझसे कहा, 'मेरे बच्चे, मुझे नहीं पता कि तुम क्या

चमत्कार कर सकते हो या करोगे। जैसे-जैसे तुम्हारी उम्र बढ़ेगी, तुम्हें खुद ही इसका पता लगाना होगा।'

उसके शब्दों ने मुझे जीवन को जिज्ञासा और आश्चर्य से देखने का अवसर दिया। नवजात शिशु का डर मेरे भीतर धीरे-धीरे कम हो रहा था और मेरे भीतर चारों ओर फैले घने जंगल को देखने की तीव्र इच्छा बनी हुई थी। मैंने अपना सिर उठाया और ऊपर देखा, उत्साह से भर गया।

मेरी माँ ने कुछ पल मुझे देखा और बोलीं, 'अभी लंबा रास्ता तय करना है, लेकिन अगले कुछ दिनों तक तुम्हें ऐसी जगह रहना होगा जहाँ कोई शिकारी तुम्हें ढूंढ न सके। जब तक तुम इतनी तेज़ी से दौड़ने लगो कि अपने शिकारियों से आगे निकल सको, तब तक तुम्हें वहीं रहना होगा। खाने की चिंता मत करो, मैं हमेशा तुम्हारे आसपास रहूंगी और तुम्हें खाना खिलाऊंगी। अब धीरे-धीरे चलो और मेरे पीछे आओ।'

मैंने उसके निर्देशों का पालन किया और उसे आगे चलने दिया, जबकि हमारे आसपास हिरणों का झुंड धीरे-धीरे तितर-बितर हो गया। बाद में मुझे अपनी माँ से पता चला कि जब भी कोई मादा हिरण बच्चे को जन्म देने वाली होती है, तो झुंड के बाकी सभी हिरण नवजात शिशु के जन्म को देखने के लिए उसके आसपास इकट्ठा हो जाते हैं।

मैं लड़खड़ाते हुए अपनी माँ के पीछे-पीछे चल रहा था, और जल्द ही हम एक खुले मैदान में पहुँच गए, जो घनी झाड़ियों से घिरा हुआ था और ऊपर पेड़ों की पत्तियों से भरी शाखाओं का एक आवरण था, जो चारों दिशाओं से आकर आपस में मिल रही थीं। यह जगह निश्चित रूप से सुरक्षा और आराम का वादा करती थी।

'ध्यान से ज़मीन पर बैठो। कल सुबह हम अभ्यास शुरू करेंगे। मैं तुम्हें उन जगहों पर ले जाऊंगी जहाँ हम अक्सर समय बिताना पसंद करते हैं। एक हफ्ते बाद, तुम्हारे आगे और पीछे के पैर इतने मजबूत हो जाएंगे कि तुम पहाड़ी पर चढ़ सकोगे। आज तुम आराम करो और बस इस खुले मैदान में घूमो,' मेरी माँ ने कहा और फिर पेट ऊपर करके घास के मैदान पर पीठ के बल लेट गईं।

अचानक ही मेरा ध्यान उसके बड़े थनों की ओर गया, जिनसे छह नम निप्पल निकले हुए थे। वे गुलाबी रंग के थे और उनका आकार स्पष्ट और सुगठित था। दो निप्पलों से एक पतला सफेद पदार्थ रिस रहा था, मानो मुझे उसे चखने के लिए आमंत्रित कर रहा हो। माँ की ओर से कोई औपचारिक निमंत्रण दिए बिना ही मैं धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा और उसके पास पहुँचकर बैठ गया। अब मैंने एक निप्पल को अपने मुँह में लिया।

कुछ ही सेकंड में मैंने उससे निकलने वाले उस दिव्य रस को चूसना सीख लिया।
बीच-बीच में मुझे अपने माथे से उसके थनों को हल्का सा धक्का देना पड़ता था, जिससे उसके सभी निप्पल्स में एक पतला सफ़ेद तरल पदार्थ लगातार प्रवाहित होने लगता था। जल्द ही मुझे उस सफ़ेद पदार्थ को 'दूध' कहना सिखा दिया गया।
अपनी माँ के थनों से लिपटकर, उनके गर्म दूध से तृप्त होकर, उनके शरीर से निकलती सुगंध को महसूस करते हुए, एक सुखद आनंद ने मुझे घेर लिया और मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। फिर से मेरे चारों ओर अंधेरा छा गया और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं फिर से अपनी माँ के गर्भ में पहुँच गया हूँ। मैं समय के आयामों से पूरी तरह बेखबर हो गया और काश मैं इस आनंदमय अवस्था से कभी बाहर न आता...

अगले दस दिन तेज़ी से बीत गए। मेरी ममतामयी माँ के सख्त मार्गदर्शन और मुझसे बड़े अन्य हिरणों की पैनी निगाहों के बीच, मैं हर दिन कुछ न कुछ सीखता रहा। इसकी शुरुआत दबे पांव चलने की तकनीक से हुई, जिसके बारे में मेरी माँ ने मुझे बताया था कि यह हमारे शिकारियों को यह विश्वास दिलाने का एक कारगर तरीका है कि आसपास कोई आसान शिकार नहीं है, जबकि हम चुपचाप चले जाते और पास की किसी झाड़ी के पीछे छिप जाते।
लेकिन ट्रेनिंग सेशन का सबसे अच्छा हिस्सा था जी भर के दौड़ना, और जंगल का मनोरम दृश्य हमेशा मेरा ध्यान खींचे रखता था। मेरी माँ हमेशा मेरे साथ रहती थीं, हर जगह मेरा पीछा करती थीं और मेरी तरह, दसवें दिन जब मैं आसानी से उनसे आगे निकल गई, तो वह भी खुशी से फूली नहीं समा रही थीं।
मेरी मां ने अपनी आंखों से इशारा करते हुए कहा, 'अब तुम हमारे पूरे झुंड में सबसे अच्छे धावकों में से एक हो।'
मैंने हिरणों की कराहें, गुर्राहट, आहें और गले से निकलने वाली आवाज़ों के ज़रिए उनके सभी संवाद सीख लिए थे। मैं जानता था कि किस बात से उनकी आवाज़ धीमी या तेज़ होती है। उनकी खुशी और दर्द, प्रसन्नता और दुःख की अभिव्यक्ति को मैं सहजता से समझ लेता था। हालाँकि मेरी माँ दूसरे हिरणों से संवाद करने के लिए अपने मुख का इस्तेमाल करती थी, लेकिन वह हमेशा मुझसे अपनी आँखों से बात करती थी।

हाल ही में, अन्य हिरणों ने भी मुझसे बात करना शुरू कर दिया था, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि मेरे अथक प्रयास के बावजूद, मैं उनमें से किसी के साथ भी आंखों के माध्यम से संवाद स्थापित नहीं कर सका।

मेरी माँ ने आगे कहा, “अब से तुम अकेले ही घूम सकते हो। लेकिन फिर भी, झुंड के साथ रहना हमेशा बेहतर है क्योंकि इससे ज़्यादा सुरक्षा मिलती है, और इसके अलावा, धीरे-धीरे तुम्हारे और तुम्हारे साथी हिरणों के बीच दोस्ती का रिश्ता बन जाएगा। वे सभी अपने प्रियजनों को शिकारियों के हाथों खोने के दर्द और दुख की कहानियाँ साझा करेंगे। लेकिन याद रखना; मैंने तुम्हें जो सीमांकित इलाका दिखाया है, उससे आगे मत जाना। उसके बाहर खतरा कई गुना ज़्यादा है।”

मैं चुप रहा, अपनी माँ की कही बातों पर विचार करता रहा। मैं सोचने लगा कि मैं उन हिरणों के साथ कैसे दोस्ती कर सकता हूँ जो मेरा मज़ाक उड़ा रहे थे, जबकि नवजात शिशु के रूप में मैं अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश कर रहा था।

शायद मेरी माँ मेरे मन की बात समझ गई थीं, क्योंकि उन्होंने अधिक सहानुभूतिपूर्ण लहजे में कहना शुरू किया, 'कड़वी यादों को लंबे समय तक अपने दिल में मत रखो। आने वाले दिनों में कई और कड़वी घटनाएँ तुम्हें ज़रूर प्रभावित करेंगी। अगर तुम अपने दिल में सभी दर्दनाक घटनाओं को जमा करती रहोगी और याद करती रहोगी कि कब, कहाँ और क्यों किसी ने तुम्हें चोट पहुँचाई, तो तुम अपने दिल में पीड़ा का बोझ ढोती रहोगी। भले ही कोई इसे देखे या महसूस न करे, लेकिन तुम्हारा व्यथित और परेशान दिल तुम्हें दुखी और उदास बना देगा।'

मेरी माँ एक पल के लिए रुकीं, मुझे स्नेह से देखा और बोलीं, 'आनंदमय और सुखमय जीवन जीने के लिए आपको कुछ ऐसा करना सीखना होगा जो आप खुशी-खुशी और सचेत रूप से कर सकें। इसे 'त्याग' कहते हैं। इसका सीधा सा अर्थ है अपने अतीत की उन कड़वी घटनाओं से खुद को अलग करना जो आपके दिल से चिपकी हुई हैं और आपको बहुत पीड़ा दे रही हैं। जब भी आप इसे जानबूझकर करते हैं, आप एक तरह से स्वतंत्र हो जाते हैं। लेकिन मेरी बातों पर आँख बंद करके विश्वास मत करना। धैर्य रखो और सतर्क रहो। एक दिन समय इस सत्य को प्रकट करेगा कि 'त्याग' का अभ्यास करना ही सुखमय जीवन जीने का सबसे अच्छा तरीका है।'

अचानक मेरी माँ के लिए प्रेम की भावना मेरे भीतर फिर से उमड़ पड़ी। मैं उनसे लिपट जाना चाहती थी क्योंकि उन्होंने मुझे इतना सुंदर पाठ पढ़ाया था। मैं उनके पास गई

और अपने शरीर के अगले हिस्से को झुकाकर उनके भरे-पूरे थनों तक पहुँची। यह मेरे जीवन में पहली बार था जब मैं खड़े होकर अपनी माँ का दूध पी रही थी। मेरी माँ हिली-डुली नहीं ताकि मैं बिना किसी रुकावट के उनका दूध पी सकूँ।

बीच-बीच में वह मेरे मुलायम फर को प्यार से चाट रही थी। सुहावनी हवा चल रही थी और कुछ पक्षी चहचहा रहे थे, कभी-कभी अपने पंख धीरे-धीरे फड़फड़ा रहे थे। पूरा जंगल इतना शांत लग रहा था कि यह कल्पना से परे था कि कहीं आसपास शिकारी भी हो सकते हैं, और कभी-कभी वे हम में से किसी एक को बेरहमी से मार डालते थे। एक बार फिर मेरे मन में एक विचार आया; मैं यहाँ उतना ही खुश हूँ जितना अपनी माँ के गर्भ में था। जीवन के प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हुए, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं, जबकि मेरी माँ के स्तन से दूध बिना किसी प्रयास के मेरे मुँह में लगातार बहता रहा। मेरी इच्छा थी कि यह अनमोल क्षण कभी समाप्त न हो।

अध्याय दो

जीवन ही अपने आप में एक चमत्कार है।

वन्य जीवन में मुझे जीवन के चमत्कार और रहस्य का अनुभव होता है...

मेरे जीवन के कुछ और दिन बहुत तेज़ी से बीत गए। अब तक मुझे सूर्योदय और सूर्यास्त पर नज़र रखने में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी, ताकि मैं जान सकूँ कि मैंने धरती पर कितने दिन बिताए हैं। लगभग हर दिन मुझे कुछ नया खोजने को मिलता था, कुछ नया सीखने को मिलता था और किसी नए प्रकार के फल या पत्ते का स्वाद चखने को मिलता था, हालाँकि उनसे मेरी स्वाद कलियों को कोई खास उत्तेजना नहीं होती थी। फिर भी, हर दिन नए फल और पत्ते चखने का विचार मुझे रोमांचित करता था।

एक दोपहर मैंने एक बूढ़ी हिरणी से पूछा कि क्या वह जंगल में थोड़ा और घूमना नहीं चाहती।

'बैठो,' उसने मुझे अपनी मधुर आवाज में कहा और कुछ देर तक मुझे गौर से देखती रही। 'तुम अपनी उम्र के हिसाब से काफी लंबे हो गए हो। यह अच्छी बात है,' उसने घमंडी लहजे में आगे कहा। 'क्या तुम्हें पता है कि मैंने तुम्हारी माँ का जन्म भी देखा था? वह लगभग पाँच साल पहले मेरे पास आकर बैठती थीं और मुझसे मार्गदर्शन लेती थीं।'

मुझे पता था कि वह उन्हीं हिरणों में से एक थी जिन्होंने पहली बार खड़े होने की

कोशिश करते समय मेरा मजाक उड़ाया था। लेकिन जब से मैंने 'छोड़ने' का अभ्यास शुरू किया था, तब से मुझे किसी भी हिरण से कोई शिकायत नहीं थी।

'क्या अब आपको नए-नए व्यंजन चखने का मन नहीं करता? हो सकता है कि आपने अभी तक कई अलग-अलग स्वादों वाली पत्तियां न चखी हों?' मैंने उत्सुकता जताने की कोशिश की।

बोलने से पहले उसके होठों पर हल्की सी व्यंग्यात्मक मुस्कान थी। उसने कहा, "जब मैं तुम्हारी उम्र की थी, तब मैं तुमसे कहीं ज़्यादा साहसी थी। जंगल में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ मैंने कदम न रखा हो। जंगल में ऐसा कोई पेड़ नहीं है जिसके पत्ते मैंने न चबाए हों। लेकिन अब, उम्र के साथ परिपक्व होकर, मुझे एहसास हुआ है कि वास्तव में इस जंगल में खोजने के लिए कुछ भी नया नहीं है। यहाँ की सभी जगहें कमोबेश एक जैसी ही हैं। अगर तुम मेरी सलाह मानो, तो याद रखना, साहसी होने से तुम्हें कुछ हासिल नहीं होगा। इसलिए मेरा सुझाव है कि तुम हिरणों के झुंड के साथ रहो, उनका पसंदीदा भोजन खाओ और उन्हीं की तरह जियो। यह सलाह तुम्हारे झुंड के सबसे बूढ़े हिरणों में से एक की तरफ से है।" बोलते समय वह गर्व से फूल गई, मानो मैं उसे सुनने के लिए भाग्यशाली हूँ।

चुपचाप बैठे-बैठे मैं उसकी कही हर बात पर विचार करने लगा। उसकी आँखें भावहीन और बेजान थीं, और उसका हावभाव आलस्य का प्रतीक था। मैं उसकी कही किसी भी बात पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। बल्कि मुझे ऐसा लग रहा था कि अगर मैं लंबे समय तक उसके पास रहकर उसकी जीवन की बातें सुनता रहूँ, तो धीरे-धीरे मुझमें भी स्वाभाविक आलस्य घर कर जाएगा। मैं नई चीजें सीखना बंद कर दूँगा और हिरणों की तरह दिन भर खाने-पीने और आराम करने के अलावा जीवन को अर्थहीन समझने लगूँगा।

मैंने उसे धन्यवाद कहा और चुपचाप चली गई। जब मैं उस सुनसान और कंटीली झाड़ियों से घिरी संकरी गली से गुज़र रही थी, तो मेरे मन में एक विचार आया।

मुझसे पहले, कई अन्य हिरण इस जंगल के हर कोने-कोने में घूम चुके होंगे; शायद अब यहाँ कुछ भी ऐसा न बचा हो जिसे खोजा जा सके, जिसके बारे में मैं अपने साथी हिरणों को बता सकूँ, क्योंकि उन सभी ने इसके बारे में सुन लिया होगा। हम सभी अपनी माताओं से अपने पूर्वजों के महान कारनामों और बलिदानों की कहानियाँ सुनते हुए बड़े हुए हैं। फिर भी, दूसरों के अनुभवों को सुनने और स्वयं उन्हीं अनुभवों को

जीने के बीच एक बहुत बड़ा अंतर रह जाता है।
और अपने जीवन को पूरी तरह से जीने के लिए, आपको हर चीज़ का अनुभव स्वयं करना होगा और अपनी ऐसी समझ विकसित करनी होगी जो दूसरों के विचारों से उधार ली गई या प्रभावित न हो। यह शुद्ध, मौलिक और अपने आप में अनूठी है।
लेकिन एक बार जब आप अपने आस-पास की हर चीज़ को स्वयं ही खोजने का निर्णय ले लेते हैं, तो संभवतः आप इस साहसिक यात्रा में अकेले ही होंगे, फिर भी यह प्रयास सार्थक है, क्योंकि ऐसा जीवन जीने का अर्थ है हर पल को जीना, और जीवन के हर नए मोड़ पर एक आश्चर्य आपका इंतजार कर रहा होता है...
विचारों की इस सुखद श्रृंखला ने मुझे एक तन्मयता की अवस्था में पहुँचा दिया, और मुझे जरा भी एहसास नहीं हुआ कि मेरे सामने घनी झाड़ियाँ मुझे जंगल की गहराई में और आगे बढ़ने नहीं देंगी। मैं वापस मुड़ने ही वाला था कि तभी किसी चीज़ ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।
पास ही एक झाड़ी पर, दो फूल एक साथ, आलस से लहरा रहे थे। वे पीले रंग के थे और उनकी सभी पंखुड़ियों पर लाल बिंदु बिखरे हुए थे, जो उन्हें बेहद अनोखा बना रहे थे। वे लंबे और शंकु के आकार के थे, और उनकी सभी कोमल पंखुड़ियाँ चारों ओर इस तरह फैली हुई थीं मानो आसपास के हर पौधे को देखकर मुस्कुरा रही हों।
फूलों के केंद्र से कुछ परागकोष झाँक रहे थे। फूलों से कोई सुगंध नहीं आ रही थी, फिर भी उनकी सुंदरता इतनी मनमोहक थी कि उनसे नज़रें हटाना असंभव था।
वे दोनों एक अद्भुत सामंजस्य में एक साथ झूम रहे थे, मानो हवा उनके कानों में एक ही संगीत बजा रही हो, उन्हें एक ही अंदाज़ में नाचने के लिए प्रेरित कर रही हो। अब मैं झाड़ियों के पास पहुँचा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि पूरी झाड़ी में न तो कोई और फूल था और न ही कोई कली।
मुझे पूरा यकीन था कि मैंने इससे पहले कभी ऐसा फूल नहीं देखा था। लेकिन मुझे अभी भी यह समझ नहीं आ रहा था कि फूलों का यह जोड़ा मुझे एक अनियंत्रित शक्ति से अपनी ओर क्यों खींच रहा था।
अब मैं फूलों के इतने करीब था कि जीभ बाहर निकालने पर वे आसानी से टूट सकते थे। मैं उन्हें ध्यान से देख रहा था, तभी समय थम सा गया। दोनों फूलों के परागकोष के पास दो मधुमक्खियाँ बैठी थीं। शायद वे अपने कोमल डंकों से फूलों के पराग से खेलकर आनंद ले रही थीं, मैंने सोचा।

कुछ ही देर में मैंने एक और अविश्वसनीय दृश्य देखा। कुछ क्षण बाद, दोनों मधुमक्खियों ने हवा में थोड़ी देर आपस में सलाह मशवरा करने के बाद अपनी स्थिति बदल ली, जबकि उनके नाजुक पंख फड़फड़ाते रहे।

फूलों पर बैठी मधुमक्खियों को देखना इतना अद्भुत था कि उसकी भव्यता का वर्णन करना मेरे लिए असंभव था। तभी अचानक हवा रुक गई। मैंने हवा का यह खेल पहले भी कई बार देखा था और जानता था कि अचानक हवा के बिना पूरा जंगल तरसने लगेगा और उस पर तुरंत उदासी छा जाएगी।

मैंने चारों ओर देखा और महसूस किया कि अचानक सभी पेड़ों पर सन्नाटा छा गया, जो पहले खुशी से झूम रहे थे। अब मेरा ध्यान मेरे आस-पास के फूलों की ओर गया और तुरंत ही मुझे एक सुखद आश्चर्य हुआ।

दोनों फूल हवा के झोंकों से बेपरवाह होकर आनंद से झूम रहे थे। यह कैसे संभव है? मैं इस विचित्र घटना के बारे में सोचकर हैरान रह गया। मुझे नहीं पता कि मैंने कितनी देर तक बिना पलक झपकाए दोनों फूलों को निहारता रहा, लेकिन जब मैंने पहली बार अपनी आँखें बंद कीं, तो मुझे ऐसा लगा मानो मेरी दोनों आँखों ने उनकी सुंदरता को इतना आत्मसात कर लिया हो कि वह अब मेरा ही एक हिस्सा बन गई हो।

मैं अपने सामान्य मिलन स्थल की ओर वापस चल पड़ा, जबकि बैंगनी सूरज आकाश के पश्चिमी छोर की ओर धीरे-धीरे ढल रहा था। जब मैं छोटा बच्चा था, एक सुबह मेरी माँ ने मुझे सूर्योदय और सूर्यास्त का कारण समझाया था।

‘यह सदियों पुराना ज्ञान है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। जब आपके अपने बच्चे हों, तो उन्हें भी यह ज्ञान ज़रूर बताएं, वरना उनकी कल्पनाशील बुद्धि इससे जुड़ी कोई न कोई कहानी गढ़ लेगी। क्या आपने कभी सोचा है कि सूरज हर सुबह पूरब से क्यों उगता है और हर शाम पश्चिम में क्यों डूबता है?’ वह थोड़ी देर रुकी और मुझे इस हैरान कर देने वाली रोज़मर्रा की घटना पर सोचने का मौका दिया।

फिर मुझे चुप देखकर उसने आगे कहा, 'इतना सरल कारण तुम्हारे दिमाग में नहीं आया। देखो, हर रात तुम सोते हो और सुबह तरोताजा और ऊर्जावान होकर उठते हो। अच्छी नींद तुम्हें चुस्त-दुरुस्त रखती है।'

क्या आपको लगता है कि जो दिन भर आपको रोशनी देता है, वह बिल्कुल भी नहीं थकता? वह भी हर शाम थक जाता है। इसीलिए आपने हर शाम, सूरज डूबने से पहले, उसकी रोशनी फीकी पड़ते हुए देखी होगी।

दरअसल, दिनभर पूरे जंगल और उसके आसपास के इलाकों को रोशनी देते-देते यह थक जाता है। इसलिए हर शाम यह अपनी बत्ती बंद कर देता है और पूरी रात आराम करता है। और इसीलिए रात में सूरज की रोशनी नहीं होती।' मेरी माँ चुप हो गईं।

सूर्योदय और सूर्यास्त की इस अवधारणा ने मुझे कुछ मिनटों के लिए मंत्रमुग्ध कर दिया, लेकिन फिर कुछ संदेह मुझे परेशान करने लगे।

"शाम को सूरज थक जाता है, इसलिए उसकी रोशनी धीरे-धीरे कम हो जाती है। लेकिन सुबह-सुबह क्या होता है? उस समय सूरज की रोशनी इतनी कम क्यों होती है? अच्छी नींद के बाद, तरोताज़ा सूरज को भोर से ही बहुत तेज रोशनी देनी चाहिए," मैंने अपनी माँ से पूछा; अधिकांश छोटे बच्चों की तरह, मुझे भी पूरा विश्वास था कि मेरी माँ के पास मेरे सभी सवालों के जवाब हैं।

मेरी माँ ने जवाब में एक दबी हुई मुस्कान दी। 'सुबह उठते ही तुम्हें नींद और आलस क्यों आता है? कभी-कभी तो और सोने का मन करता है, कभी-कभी तरोताज़ा महसूस करने से पहले कई बार जम्हाई लेते हो। सूरज के साथ भी ऐसा ही होता है। सुबह के समय वह थोड़ा आलसी और सुस्त सा लगता है, इसीलिए उसकी रोशनी मंद होती है। लेकिन देखो, हममें से कई लोगों के विपरीत वह फिर से सोता नहीं है। वह हर सुबह बिना किसी चूक के उठता है, अपनी सारी आलस को दूर भगाता है और हमें पूरे दिन रोशनी देता है। ज़रा सोचो सूरज कितना दयालु है; वह आकाश के पूर्वी क्षितिज से पश्चिमी छोर तक एक ही गति से यात्रा करता है ताकि पूरी धरती को उसकी रोशनी बराबर मिल सके।'

मेरी माँ के शब्दों में एक अलौकिक सुंदरता थी। यह उन दुर्लभ अवसरों में से एक था जब वह मुझसे आँखों से बात नहीं कर रही थीं। दोपहर हो चुकी थी और सूरज की चकाचौंध काफी कम हो गई थी। मुझे उसे देखने के लिए आँखें सिकोड़ने की ज़रूरत नहीं थी। उस चमकते हुए गोले को निहारते हुए, अचानक मुझे उसके प्रति, अपने जीवन के प्रति और अपनी माँ के प्रति कृतज्ञता का भाव महसूस हुआ।

और कई हफ्तों के बाद, आज शाम जब मैं दो अनूठे फूलों से मिलने के बाद अकेले लौट रहा था, तो एक बार फिर जीवन के प्रति कृतज्ञता की भावना ने मुझे भर दिया।

चुपचाप टहलते हुए, अपने खुरों के नीचे सूखी पत्तियों के कुचलने की आवाज़ सुनते हुए, मैं उस बड़े खुले मैदान में पहुँचा जहाँ मेरे सभी साथी हिरण दिन भर की बातें करने के लिए एक साथ बैठे थे।

हर शाम की चर्चा आम तौर पर सांसारिक मामलों पर होती थी, और मेरे लिए, यह ज्यादातर एक संक्षिप्त औपचारिक मुलाकात होती थी जो मैं हर शाम मुख्य रूप से अपनी माँ के कहने पर करता था। अन्यथा, मैं ज्यादातर समय अकेले रहना पसंद करता था।

आज शाम जैसे ही मैं खुले मैदान में पहुँचा, उनकी बातचीत अचानक रुक गई। वे सब मुझे अजीब नज़रों से देख रहे थे। मैं थोड़ा घबराया हुआ था और एक चेहरे से दूसरे चेहरे को देखता रहा, तभी मेरी माँ मेरे पास आईं।

'मेरी बच्ची, तुम कहाँ चली गई थी? तुम्हें क्या हुआ? रात के अंधेरे में भी तुम्हारी आँखें इतनी चमकदार क्यों हैं?' मेरी माँ ने मातृत्व की चिंता से घिरे हुए पूछा।

'लेकिन वह आज दोपहर मुझसे मिली थी। उस समय उसकी आंखें इस तरह बेजान नहीं थीं,' उस बूढ़े हिरण ने टिप्पणी की जिसने कुछ देर पहले मुझे जंगल में जीवन के बारे में उपदेश दिया था।

क्या मेरी आंखें सचमुच चमक रही हैं? मैंने सोचा, और अचानक मुझे यह ख्याल आया कि अगर वे सचमुच चमक रही हैं तो शायद ऐसा उन दोनों फूलों के उत्सव को देखने के कारण हुआ होगा जिन्हें नाचने के लिए हवा की मदद की जरूरत नहीं थी।

मैंने सोचा, शायद लंबे समय तक उन्हें बेफिक्री से नाचते हुए देखने से मेरी आंखों में कुछ रोशनी आई होगी, लेकिन अब मैं सदमे की स्थिति में था।

मैंने दबी आवाज़ में अपनी माँ से पूछा, 'क्या आपने इससे पहले कभी किसी और हिरण की आँखों में ऐसी चमक देखी है?'

'नहीं, मेरे प्यारे, हममें से किसी ने भी ऐसी विचित्र चीज़ पहले कभी नहीं देखी। इसीलिए हम सब हैरान हैं।' उसने अपनी आँखों से इशारा करते हुए जवाब दिया।

अपनी मां को हल्की सी मुस्कान देते हुए, मैं उस खुले मैदान से निकल गया, जबकि मेरे पीछे कई हिरणों की हैरान निगाहें मुझ पर टिकी हुई थीं।

दरअसल, मैं कुछ समय के लिए अकेला रहना चाहता था। एक एकांत जगह ढूंढकर, मैं वहाँ अकेला बैठ गया और मेरे मन में विचारों की एक नई श्रृंखला चलने लगी।

जीवन के हर कदम में शायद और भी कई अजूबे, आश्चर्य और अकथनीय सुंदरता छिपी हुई है। मुझे बस इतना करना है कि अपने हृदय और मस्तिष्क के द्वार हमेशा खुले रखूं और जीवन के आनंद और प्रेम को अपने भीतर प्रवेश करने दूं। और फिर एक दिन, आश्चर्य की बात नहीं, मेरा पूरा अस्तित्व मेरी आंखों की तरह चमकने

लगेगा।

हमारा जीवन नीरस और उबाऊ तब नहीं लगता जब हम बूढ़े हो जाते हैं, बल्कि तब लगता है जब हम हर चीज को मासूमियत और जिज्ञासा से देखना शुरू करते हैं। मैं उन उपदेश देने वाले बूढ़े हिरणों की तरह कभी बूढ़ा नहीं होऊंगा, चाहे मेरी उम्र कितनी भी हो जाए...' मेरी सोच धीरे-धीरे एक सुखद नींद में डूब गई। मेरा दिल आनंद से भरा हुआ था, मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि अगली सुबह एक और आश्चर्य और झटका मेरा इंतजार कर रहा है।

अध्याय-3

मृत्यु – जन्म का जुड़वां भाई

वृद्धों के लिए मृत्यु नवजात शिशुओं की तुलना में उतनी ही निकट नहीं होती; न ही जीवन।

~खलील जिब्रान

एक तीखी और तीव्र चीख ने मुझे चरने के सुखद आनंद से जगा दिया। मैं जिन पत्तियों और घास को चबा रहा था, उनके किनारे नुकीले थे और वे हमारे तालू या मुंह के अंदर की कोमल त्वचा को खरोंच सकते थे। मुख्यतः इसी कारण से अधिकांश हिरण इन घासों और पत्तियों को चबाने से परहेज करते थे, हालांकि इनका स्वाद बहुत ही लाजवाब होता था। मैंने पाया कि इन लंबी, पतली और सुगंधित पत्तियों को चबाने के बाद मैं तरोताजा और ऊर्जावान महसूस करता था। इसलिए, हालांकि ये पौधे अन्य पौधों की तरह व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं थे, मैं हमेशा इनकी तलाश में रहता था।

इस तेज़ चीख के बाद एक दिल दहला देने वाली चीख सुनाई दी, मानो कोई अपनी जान गंवाने वाला हो। बिना सोचे समझे मैं उस दिशा में भागा जहाँ से आवाज़ आ रही थी। मैं मुश्किल से कुछ कदम ही आगे बढ़ा था कि तभी विपरीत दिशा में भागते हुए हिरणों के झुंड ने मुझे रोक लिया।

मेरी जिज्ञासु निगाहें एक हिरणी से मिलीं। उसकी आँखों में भय स्पष्ट झलक रहा था और उसके मुँह से झाग निकल रहा था। वह मुझसे कुछ महीने बड़ी थी।

'एक बाघ पहले ही हमारे एक बुजुर्ग साथी पर हमला कर चुका है। अगर तुम अपनी जान नहीं गंवाना चाहते तो इस रास्ते पर आगे मत बढ़ो,' उसने हांफते हुए कहा और फिर तेजी से दौड़ने लगी।

अकेला रह गया, हताश होकर मैं कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध खड़ा रहा, और फिर मुझे एक गिड़गिड़ाती हुई सिसकी सुनाई दी जो मुझे कुछ जानी-पहचानी सी लगी। उसके बाद एक अधीर और गुस्से भरी गुर्राहट सुनाई दी, जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

धीरे-धीरे हिरण की दर्द भरी कराह लगभग सुनाई देना बंद हो गई। अब मैं धड़कते दिल के साथ दबे पांव उस जगह की ओर बढ़ा। घनी झाड़ियों के बीच से मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा, मेरे सारे अंग और नसें सतर्क और तनावग्रस्त थीं। और फिर अचानक, जो भयानक दृश्य मेरी आंखों के सामने आया, उसने मुझे वहीं जड़वत कर दिया।

थोड़ी दूरी पर खड़ा बाघ अब तक का सबसे भव्य प्राणी था जिसे मैंने देखा था। उसके शक्तिशाली अगले पैर और विशाल सिर था। उसके शरीर पर विशिष्ट काली धारियाँ थीं। उसके छोटे गोल कानों के पीछे काले निशान थे। उसकी लंबी पूंछ हवा में लहरा रही थी और ऊपर की ओर झुकी हुई थी। उसके पंजे घुमावदार थे जिनका इस्तेमाल बाघ अपने शिकार को चीरने के लिए पूरी ताकत से कर रहा था।

अब मेरा ध्यान उसके शिकार पर गया, जो असहाय अवस्था में पड़ा था और अपने

शरीर को चीरते-फाड़ते देख असहनीय दर्द से कराह रहा था। हिरण ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था और बीच-बीच में अपना मुँह खोलने की कोशिश कर रहा था, मानो और हवा अंदर लेना चाहता हो। अपने अगले पैरों से वह पास के एक पतले पौधे को पकड़ने की व्यर्थ कोशिश कर रहा था, मानो वह उसे बाघ की पकड़ से छुड़ाने में मदद कर सके।

मेरी नज़र हिरण से मिली और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मैं जानती थी कि यह बूढ़ी हिरणी हमारे झुंड की मुखिया थी। पिछले कुछ दिनों से मैंने उसे कभी-कभी लंगड़ाते देखा था। इसी वजह से वह अपने शिकारी से बच नहीं पा रही थी। वह शांत स्वभाव की थी और ज़्यादातर बूढ़ी हिरणियों की तरह शेखी नहीं बघारती थी।

मैं उसकी आँखों में देखता रहा क्योंकि किसी अज्ञात कारण से, मेरे लिए उससे नज़रें हटाना असंभव था। उसकी भूरी आँखें तुरंत मेरे विचारों में उतर गईं। वे निराशा और पीड़ा से भरी हुई थीं। मुझे ऐसा लगा जैसे वे मुझसे विनती कर रही हों कि मैं उसे इस भयानक कष्ट से मुक्त कराने में मदद करूँ।

लेकिन उसके शिकारी पर हमला करने का ख्याल आते ही मेरी हिम्मत जवाब दे गई। वह देखने में भयानक और निर्दयी लग रहा था। वह आलस से अपनी पूंछ हिला रहा था, और धीरे-धीरे, मेरी आंखों के सामने, उसने बड़े चाव से उसके अंदरूनी अंगों को चट कर दिया। अब उसका शरीर कांपना बंद हो गया और एकदम स्थिर हो गया।

मैं सदमे और भय से भर गई थी, मुझे पता था कि अब वह सिर्फ एक शव मात्र थी। उसकी आँखें खुली हुई थीं। वे भावहीन और मृत्यु के समान स्थिर थीं।

अचानक मुझे जी मिचलाने लगा, क्योंकि मुझे यह एहसास हुआ कि मेरे सामने पड़े हिरण के खुले और खून से लथपथ अंदरूनी अंग मेरे भीतर भी मौजूद हैं। मैं भी किसी अन्य हिरण से कम असुरक्षित नहीं था। जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, मुझे ऐसा लगा मानो मेरे भीतर की खुशी का कोई स्रोत मर रहा हो।

तभी अचानक, बिना किसी चेतावनी के, एक चिड़िया चहचहाते हुए मेरे पीछे एक ऊंचे पेड़ की शाखा पर बैठ गई। तुरंत ही, बाघ ने अपनी गर्दन घुमाई और उसकी निगाहें मुझ पर टिक गईं। उसकी आँखों में एक अत्यंत प्रभावशाली भाव था और चारों ओर एक रहस्यमय सन्नाटा छाया हुआ था।

इससे तुरंत यह आभास होता कि इसे आज्ञा मानने की आदत थी। अब बाघ की निगाहें मुझ पर टिक गईं, और मुझे लगा जैसे मेरे पैरों से सारी ऊर्जा निकल रही हो। काश मैं

तुरंत भाग पाता, लेकिन एक अदृश्य शक्ति ने मेरे पैरों को ज़मीन से चिपका रखा था। अपने डर और सामने खड़े उस भयानक प्राणी से घबराकर मैं वहीं खड़ा रहा, बिना पलक झपकाए उस शिकारी को देखता रहा, मानो उस पर झपटने का इंतज़ार कर रहा हो। बाघ की निगाहें कुछ देर तक मुझ पर टिकी रहीं, फिर उसने पलकें झपकाईं और आलस से जम्हाई ली।

मुझे इसका असली मतलब समझ नहीं आया, लेकिन जल्द ही बाघ ने मेरी तरफ पीठ कर ली, हिरण के अवशेषों को उसकी गर्दन से पकड़ा और वहां से गायब हो गया।

बाघ के जाने के कुछ क्षण बाद ही मुझे अपने पैरों में ऊर्जा और शक्ति वापस आती महसूस हुई। मैं उस स्थान पर गया जहाँ मेरे साथी हिरण को मारा गया था। वहाँ की घास उसके खून से लाल हो चुकी थी, और उसमें से ताजे खून की एक अजीब सी गंध आ रही थी।

उसके शरीर के अंदरूनी अंगों का एक छोटा सा टुकड़ा वहाँ पड़ा था। उसकी मृत्यु से मैं दुखी और स्तब्ध था, फिर भी एक सवाल मेरे मन में लंबे समय तक गूंजता रहा। बाघ ने मुझे क्यों नहीं मारा? उसके लिए तो यह बच्चों का खेल होता!

उस शाम चारों ओर उदासी छाई हुई थी क्योंकि सभी हिरण हमारे नियमित मिलन स्थल पर इकट्ठा हो गए थे। मैं भी वहीं अपनी माँ के पास बैठी थी। हमारे चारों ओर सन्नाटा घुटन भरा था, और यह तब और भी परेशान करने वाला हो गया जब कई हिरण बीच-बीच में पीड़ा और भय से गहरी आहें भर रहे थे। वे सभी बूढ़े हिरण थे जिनकी चाल समय के साथ धीमी हो गई थी। वे जानते थे कि वे शिकारियों के लिए सबसे आसान शिकार हैं।

मैंने चुपके से सभी हिरणों के चेहरों पर एक नज़र डाली। डर के साथ-साथ, उनके चेहरों पर एक और भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। यह भाव मेरे लिए अपरिचित था, इसलिए मैंने अपनी माँ की ओर देखा।

मुझे पता था कि हमारी आंखों से आंखों के संपर्क में की गई बातचीत को कोई नहीं पढ़ सकता।

‘माँ, तुम सब इतने परेशान और व्याकुल क्यों दिख रहे हो? बाकी सभी हिरणों के चेहरों पर ये अजीब सा भाव क्यों है?’ मेरी आँखों ने माँ से पूछा।

'यह नफरत है, मेरी बच्ची,' उसकी आंखों ने जवाब दिया।

'वह क्या है?'

‘यह किसी के प्रति तीव्र नापसंदगी है। लेकिन घृणा नापसंदगी से कहीं अधिक गहरी भावना है। घृणा गहरी जड़ें जमा लेती है और लंबे समय तक हृदय में बनी रहती है।’
मैंने उसकी कही हर बात सुनी और उससे पूछा, 'क्या आप सभी को बाघ से नफरत है?'
‘हाँ,’ उसकी आँखों में थोड़ी बेचैनी झलक रही थी। ‘आप हमसे उस शिकारी के लिए और क्या उम्मीद करते हैं जो हममें से किसी एक को बेरहमी से मार डालता है? खुद देख लीजिए कि हममें से किसी एक को बाघ या किसी अन्य शिकारी द्वारा चीर-फाड़ कर दिया जाता है। तब आपको भी उसके प्रति घोर घृणा का अनुभव होगा।’
मैं चुप रहा और मुझे लगा कि आज सुबह उस बाघ से हुई मेरी मुठभेड़ के बारे में उसे बताना व्यर्थ होगा। शायद उसे इस पर विश्वास ही न हो।
मैंने खुद से पूछा, "मेरी माँ ने मुझे जो 'किसी के प्रति दुर्भावना से उबरने का सबसे अच्छा तरीका' बताया था, वह 'छोड़ देना' क्यों नहीं सिखातीं?" लेकिन जवाब तुरंत मेरे भीतर से आ गया। जब हमारा जीवन सचमुच खतरे में होता है और चिंता हमें घेर लेती है, तो कोई भी तार्किक तरीका या तकनीक हमें उन गहरी भावनाओं से उबरने में मदद नहीं करती जो हमारे भीतर घर कर चुकी होती हैं।
अब मैंने झुंड के सबसे बूढ़े हिरण को बोलते सुना, “मेरा अनुभव यह है कि हमारे साथियों में से किसी एक पर होने वाले हर हमले के बाद अगले कुछ दिनों तक ऐसे कई और हमले होते हैं। मेरा मानना है कि बाघ और भेड़िये हमारे मांस को रसीला और स्वादिष्ट पाते हैं, इसलिए वे अगले कुछ दिनों तक हमारा मांस खाना चाहते हैं, जब तक कि वे किसी और जानवर पर हमला न कर दें। इसलिए यह ज़रूरी है कि अगले कुछ दिनों तक हम सब साथ रहें और सतर्क रहें। मेरा सुझाव है कि हम सब एक गोलाकार आकृति में घूमें और उसके घेरे में फुर्तीले शरीर और तेज़ नज़र वाले सभी युवा हिरण रहें। जैसे ही उन्हें आस-पास किसी शिकारी की मौजूदगी का एहसास होगा, वे ज़ोर से चिल्लाएंगे। उनकी आवाज़ शायद आकृति के दूसरे छोर पर मौजूद हिरण तक न पहुँचे, इसलिए जैसे ही हम किसी हिरण को बेबसी से चिल्लाते हुए सुनें, तुरंत आवाज़ लगाना हम सबका कर्तव्य है। इस तरह देखते ही देखते हम सब सतर्क हो जाएंगे,” बूढ़े हिरण ने रुककर कहा।
फिर उसने हम सभी पर एक नज़र डाली और दोबारा बोलना शुरू किया, 'अब मेरी बात ध्यान से सुनो, क्योंकि यही सबसे महत्वपूर्ण बात है। जैसे ही तुम्हें पता चले कि

कोई गंभीर खतरा मंडरा रहा है, तुम्हें बस भाग जाना है। लेकिन तुम्हें यह बहुत सावधानी से करना होगा। मान लो तुम्हारे पीछे वाला हिरण चिल्लाता है, तो तुम्हें तेज़ी से आगे दौड़ना है, और कुछ कदम दौड़ने के बाद हमेशा दाएं या बाएं मुड़ जाना है। अगर तुम्हें अपने सामने वाले हिरण की चेतावनी सुनाई दे, तो तुम्हें वापस मुड़कर भाग जाना है। अगर तुम्हें दाएं या बाएं से कोई आवाज़ सुनाई दे, तो भी ऐसा ही करो।'

हम सभी हिरण की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे, मानो उसके शब्द हमें कोई ऐसा ताबीज प्रदान करेंगे जो हमें सभी विपत्तियों से बचा सके।

हिरण ने फिर बोलना शुरू किया, "तो कल से हम सब सबकी भलाई के लिए एक गोलाकार आकृति में घूमेंगे। हम तब तक ऐसा करते रहेंगे जब तक हमें पूरा यकीन न हो जाए कि शिकारी कहीं और चले गए हैं और अगले कुछ हफ्तों या महीनों तक हमें परेशान नहीं करेंगे। लेकिन अगर हममें से किसी को लगता है कि वह अकेले रहने के लिए काफी साहसी है और उसे हमारी आकृति से मिलने वाली सुरक्षा की जरूरत नहीं है, तो वह अकेले रह सकती है। हमें इसमें कोई आपत्ति नहीं है।"

मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि उसकी आखिरी टिप्पणी का निशाना मैं ही था। मैंने अपनी माँ की ओर एक नज़र डाली।

'फिलहाल उसकी बात सुनो। कुछ समय के लिए अन्य हिरणों के साथ रहने से तुम्हारे अंदर बहनचारे की भावना विकसित होगी,' उसकी आंखों ने मुझे बताया।

धीरे-धीरे सभी हिरण अपने-अपने सोने के स्थानों की ओर चले गए। मैं अकेला रह गया, अपने विचारों के गुच्छे में डूबा हुआ। चारों ओर घना अंधेरा था, और अर्धचंद्राकार चंद्रमा भागते बादलों के टुकड़ों के साथ लुका-छिपी खेल रहा था, जो चंद्रमा को थोड़े समय से अधिक देर तक ढकने में विफल रहे थे।

आस-पास के सभी ऊंचे पेड़ और झाड़ियाँ गहरी नींद में सो रही थीं। वे सभी कोमल और मखमली चांदनी में नहा रही थीं। चंद्रमा की इस सुनहरी चमक ने पूरे जंगल को एक अलौकिक दुनिया में पहुँचा दिया था, जहाँ रहस्य और सुंदरता का समान महत्व था।

कई पक्षी पेड़ों की शाखाओं पर बैठे थे। वे सभी सो नहीं रहे थे, लेकिन उनमें से कुछ पूरी तरह जाग रहे थे, फिर भी न तो अपने पंख फड़फड़ा रहे थे और न ही कोई ऐसी आवाज़ निकाल रहे थे जिससे रात की गहरी शांति भंग हो। अंधेरा, चांदनी और तारों भरा आकाश उन पर भी सम्मोहक प्रभाव डाल रहे थे।

एक पल के लिए, मेरे मन में दबी आवाज़ में अपने सभी साथी हिरणों को बुलाने की तीव्र इच्छा हुई। मैं उन्हें जगाना चाहता था ताकि वे इस जादुई रात की सुंदरता का आनंद ले सकें। और फिर, अगले ही पल, मुझे उस बूढ़े हिरण की हत्या याद आ गई जिसे मैंने इतनी नज़दीक से देखा था।

क्या मैं हृदयहीन हूँ? प्रकृति की सुंदरता से मैं कैसे मंत्रमुग्ध हो सकता हूँ जबकि मेरा हृदय पीड़ा और दुःख से भरा होना चाहिए? ये विचार मेरे हृदय में अपराधबोध की एक तीव्र चुभन के रूप में उभरे।

हाँ, मैं दुखी हूँ और हमारे शिकारियों से डरी हुई भी हूँ, लेकिन साथ ही यह भी सच है कि रात की असीम सुंदरता मुझे अचंभित कर देती है। भला मैं अपने छोटे से दिल में उमड़ रही इतनी सारी परस्पर विरोधी भावनाओं को कैसे नकार सकती हूँ?

लेकिन मेरे मन में एक और बात भी घर कर गई थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि आज बाघ से हुई मुठभेड़ के बाद मुझे एहसास हुआ कि मेरे जीवन का एक हिस्सा हमेशा मेरे लिए अनसुलझा ही रहेगा। मुझे कभी पता नहीं चलेगा कि प्रकृति की एक अचानक लहर मेरे पूरे जीवन को कैसे बदल सकती है। मुझे कभी पता नहीं चलेगा कि मृत्यु कब, क्यों और कैसे मुझ पर आ गिरेगी।

एक शिकारी द्वारा मुक्त किए जाने से मुझे वह बात समझ में आई जिसे मेरी माँ कभी-कभी नियति कहती थीं। यह हमेशा एक अथाह रहस्य ही रहेगा, ठीक वैसे ही जैसे तारों से जगमगाता आकाश और उसके नीचे फैला जंगल। नियति की इस अवधारणा ने मेरे मन में एक और विचार को जन्म दिया।

कौन जाने, शायद मेरा भविष्य बहुत छोटा हो? मैंने यह तो नहीं कहा कि मैं अपने कबीले के सबसे बूढ़े हिरण जितना लंबा जीऊंगा। मुझे कभी भी कोई शिकारी मार सकता है। मैं अपने दिन चिंता या निराशा में क्यों बर्बाद करूं? सभी हिरण समान रूप से असुरक्षित हैं, लेकिन यह हमें अपने जीवन का भरपूर आनंद लेने से क्यों रोके?

मैंने ऊपर देखा, और आकाश में अर्धचंद्राकार चाँद था, और मुझे लगा जैसे वह मुझ पर मुस्कुरा रहा हो। जब भी मुझे लगता था कि प्रकृति ने मेरी समझ को स्वीकार कर लिया है, तो मैं अपने साथी हिरणों से स्वीकृति नहीं माँगता था। जल्द ही मैं सो गया।

मेरे जन्म के बाद से यह पहली बार था जब किसी हिरण का वध किया गया था, और

मैं अपने झुंड द्वारा अपने मृत साथी को श्रद्धांजलि देने के लिए अपनाए जाने वाले रीति-रिवाजों से पूरी तरह अनभिज्ञ था। अगली सुबह, हम सब फिर से खुले मैदान में इकट्ठा हुए, और हममें से सबसे बड़े ने पूरे समूह को उस स्थान पर ले गए जहाँ पिछले दिन वह भयानक वध हुआ था।

घास पर अब भी लालिमा के निशान ताज़ा थे। आगे बढ़ने से पहले हम सभी को कुछ क्षणों के लिए उस स्थान पर रुकना पड़ा, ताकि अगले व्यक्ति को कल की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बचे हुए थोड़े से सबूत देखने के लिए जगह मिल सके। मैं कुछ क्षणों के लिए उस स्थान पर खड़ा रहा, यह नहीं जानते हुए कि श्रद्धांजलि अर्पित करने का क्या अर्थ होता है।

फिर, थोड़ी दूरी पर खड़े होकर, मैंने अपने सभी साथियों को खून से सनी घास के किनारे कुछ पल रुकते हुए देखा, फिर वे आगे बढ़ गए। कुछ हिरणों की आँखों को छोड़कर, बाकी सभी हिरणों की आँखों में मुझे केवल तीव्र भय दिखाई दिया; एक ऐसा भय जो आपकी मृत्यु को इतने करीब से देखने पर आपके दिमाग को पंगु बना देता है। मैंने मन ही मन सोचा, शायद दिवंगत व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित करने का वास्तविक अर्थ स्वयं को यह याद दिलाना है कि हमारा अस्तित्व अनिश्चित और अप्रत्याशित है।

उस शापित स्थान के पास कुछ पल बिताने के बाद, हममें से सबसे बड़े, जो उस समय हमारे सर्वसम्मत टीम लीडर की भूमिका निभा रहे थे, हमें जंगल के किनारे बहने वाली छोटी नदी की ओर ले गए। नदी का कंकड़ भरा किनारा हमारे लिए आरामदायक नहीं था, और हम आमतौर पर वहाँ पानी पीने नहीं जाते थे क्योंकि जंगल में मौजूद छोटे-छोटे तालाब हमारी प्यास बुझाने के लिए पर्याप्त थे।

जल्द ही, अन्य सभी युवा हिरणों की तरह, मुझे भी पता चल गया कि हम यहाँ नाले के बहते पानी में डुबकी लगाने आए हैं।

पानी में उतरने से पहले सबसे बड़े हिरण ने हमें चेतावनी दी, “ऐसी किसी भी जगह मत जाना जहाँ पानी घुटनों से ज़्यादा गहरा हो। नदी का तल कुछ जगहों पर खतरनाक हो सकता है। एक भी गलत कदम नदी की धारा में बह सकता है। इसलिए, आप सभी घुटनों तक गहरे पानी में खड़े होकर जल्दी से डुबकी लगा लें। पीढ़ियों से हम यही रिवाज निभाते आ रहे हैं। जब भी हमारा कोई साथी बिछड़ता है, हम यहाँ आकर इस छोटी नदी में डुबकी लगाते हैं। हमारे पूर्वजों ने हमें बताया था कि इस नदी में डुबकी लगाने से हमारे दिल को हिम्मत मिलती है और हम बिना किसी डर के जीवन

जी सकते हैं।”

मैंने नदी की लहरदार सतह को देखा, जहाँ एक दिव्य चाँदीनुमा रोशनी खेल रही थी, मानो अपने नीचे बहती धारा के कई रहस्यों को छुपा रही हो। मुझे उस धारा की सबसे विचित्र बात यह लगी कि वह हमेशा बहती रहती थी, फिर भी उसके आसपास का सारा वातावरण अत्यंत शांत था।

मेरे सभी साथी पानी में जल्दी से डुबकी लगा रहे थे, और बिना इंतज़ार किए मैंने भी उनकी नकल की। डुबकी जल्दी से और लगभग मशीनी तरीके से हुई, फिर भी इसने मेरे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। मुझे पता था कि एक दिन मैं इस जगह पर अकेले ज़रूर आऊँगा। अब हम सब नाले की ओर ढलान पर बिछी घास पर बैठ गए।

काफी देर तक घास पर लेटे रहने के बाद, सूरज आसमान के बीचोंबीच पहुँचने पर हम सब उठ खड़े हुए और भूख ने हमें सचेत कर दिया। हम सब एक गोलाकार आकृति में खड़े होकर जंगल की ओर चल पड़े।

पानी में डुबकी लगाने से हम सब थोड़े उत्तेजित हो गए थे, फिर भी हम चारों ओर सतर्कता से देख रहे थे क्योंकि हमारे शिकारी अपने शिकार पर हमला करने से पहले छलावरण करने में माहिर थे। गोलाकार संरचना में हमारी गति धीमी थी, फिर भी मेरे आस-पास के सभी हिरण अधिक सुरक्षित महसूस कर रहे थे।

कोयल मधुरता और जोश से लगातार पुकार रही थीं; पेड़ धीरे-धीरे हिल रहे थे मानो पास के पौधों से कुछ फुसफुसा रहे हों। आकाश बादलों से रहित था, और हवा जादुई सुगंध से भरी थी। यह आपको और अधिक ताजगी का एहसास करा रही थी।

मुझ जैसे कुछ महीने के हिरण को कैसे पता चलता कि ये संकेत वसंत ऋतु के आगमन का संकेत दे रहे हैं? अगले कुछ हफ्तों में एक और सुखद आश्चर्य मेरा इंतजार कर रहा था। अब तक मुझे यह नहीं पता था कि इस जंगल में लंबे सींगों वाले नर हिरण भी होते हैं।

अध्याय-4

जीवन - सबसे बड़ा प्रेम गीत

जब मेरे दिल और शरीर की इच्छाएं एक साथ मिलती हैं और खुलकर हंसती हैं, तभी मेरा जीवन पूर्ण होता है।

अगले कुछ दिन लगभग शांतिपूर्ण रहे और उन दिनों हम सब साथ रहे। धीरे-धीरे हम सब पर शांति छा गई और मुझे महसूस होने लगा कि दूसरे हिरणों के चेहरे से डर की परत धीरे-धीरे गायब हो रही है।

बल्कि, सभी वयस्क हिरणों की आँखों में एक गहरी लालसा झलक रही थी। हम जैसे युवा यह जानने के लिए उत्सुक थे कि आखिर वह लालसा किस बारे में थी।

कुछ और दिन शांतिपूर्वक बीतने के साथ, धीरे-धीरे गोलाकार आकृति टूटने लगी और अधिकांश हिरण दस-पंद्रह के समूहों में घूमने लगे, जैसे वे पहले घूमते थे। ये उपसमूह आपस में सौहार्दपूर्ण स्वभाव वाले हिरणों के बीच बने थे, और मैं फिर से अकेला हो गया। मुझे यह अच्छा लगा; पिछले कुछ दिनों से मैं उस नाले का पता लगाने की योजना बना रहा था, उसके किनारे-किनारे चलकर उसके स्रोत और उसके बहाव का पता लगाने की सोच रहा था।

एक सुबह मैंने चुपके से बाहर निकलकर अपनी योजना को अंजाम देने का फैसला किया, लेकिन तभी कुछ असाधारण घटित हुआ। अचानक, हवा का एक झोंका आया, सारी झाड़ियाँ सरसरा उठीं, पेड़ों से पुराने पत्ते गिरने लगे, और सभी वयस्क हिरणों की आँखों में खुशी की एक चमक दिखाई दी, मानो किसी चीज़ के लिए उनकी लंबे समय से चली आ रही तड़प पूरी होने वाली हो।

वे सभी सरपट दौड़ते हुए उस चरागाह की ओर बढ़े जहाँ छोटी-छोटी घास के बीच कंटीली झाड़ियाँ थीं। मैं उनके पीछे-पीछे गया और बाकी सभी युवा हिरण भी। जैसे ही हम सब उस हरे-भरे चरागाह में पहुँचे, हमारे लिए एक सुखद आश्चर्य इंतजार कर रहा था।

हमारे चारागाह में लगभग बीस हिरण चर रहे थे। वे सभी हमसे अधिक बलवान और लंबे थे। मैंने पहले कभी उनमें से किसी को नहीं देखा था। उनके सिर का अकड़ू अंदाज़ उनमें स्वाभाविक आक्रामकता का भाव पैदा कर रहा था; ऐसा कुछ जो हमारे झुंड के हिरणों में बिलकुल नहीं था।

हम सभी काफी शालीन और मर्दानगी से रहित प्राणी थे। हम सभी उन्हें विस्मय से देखते रहे, मानो वे अचानक किसी दैवीय इच्छा से हमारे क्षेत्र में आ गए हों।

उनमें सबसे प्रभावशाली बात उनके दो लंबे और घुमावदार सींग थे, जिनमें से जगह-जगह छोटे-छोटे सींग निकले हुए थे। वे उन सींगों से आसानी से अपनी रक्षा कर सकते हैं, और इसीलिए वे हमारी तरह असुरक्षित नहीं दिखते, मैंने सोचा। अब मैंने अपने समूह में अपनी माँ को ढूँढा और जल्द ही उन्हें पा लिया। वह सबसे आगे वाली पंक्ति में खड़ी थीं और लंबे सींगों वाले हिरणों को घास चरते हुए अत्यंत ध्यान से देख रही थीं।

लेकिन असली रोमांच तो अभी हमारे सामने आना बाकी था। जल्द ही सभी लंबे हिरणों ने एक तीखी चीख निकाली, मानो एक-दूसरे को आने वाली लड़ाई के बारे में चेतावनी दे रहे हों। और फिर हमारी अचंभित आँखों के सामने ही, हिरणों के जोड़े आपस में भिड़ गए और उन्होंने अपने मजबूत सींगों का इस्तेमाल करके अपने प्रतिद्वंद्वियों को हरा दिया। मैंने पहले कभी ऐसी लड़ाई नहीं देखी थी। मैं उस लड़ाई में इतना खो गया कि अपनी जगह से उठकर लड़ाई को बेहतर ढंग से देखने के लिए आगे की पंक्ति के पास कुछ कदम चला गया।

जल्द ही मुझे उस लड़ाई के बारे में एक बहुत ही विचित्र बात समझ में आई। मुझे ऐसा लगा कि लंबे सींगों वाले हिरणों में से कोई भी लड़ाई में अपने प्रतिद्वंद्वी को नुकसान या चोट पहुँचाना नहीं चाहता था, क्योंकि उनका हर हमला सधा हुआ और संयमित था। उनके सींग चुनौती देने वालों को बस हल्का सा चुभ रहे थे, उन्हें चीरकर खून नहीं बहा रहे थे। यह लड़ाई अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए थी, न कि प्रतिद्वंद्वी को खून बहाकर मौत के घाट उतारने के लिए। पूरी लड़ाई में एक तरह की शालीनता और संतुलन था।

हिरणों का प्रत्येक जोड़ा अपने सींगों को आपस में फंसाकर दूसरे को पीछे धकेलने की कोशिश करता। दोनों हिरण अपने पैरों के नीचे की ज़मीन को पूरी ताकत से पकड़ लेते, अपने घुटनों को आगे की ओर मोड़ लेते और एक इंच भी पीछे हटने से इनकार

कर देते, जब तक कि उनमें से बलवान हिरण दूसरे को काबू में करके उसे पीछे हटने पर मजबूर न कर दे और इस तरह अपनी श्रेष्ठता साबित न कर दे।

कुछ ही देर में कुछ ताकतवर हिरणों का एक छोटा झुंड निकल गया, जबकि हारे हुए हिरण थोड़ा पीछे हटकर चरने लगे, शायद अपनी हार को पचाने की कोशिश कर रहे थे। अब जीतने वालों में से कोई भी आपस में अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए लड़ाई नहीं लड़ना चाहता था। बल्कि उन्होंने हमारे झुंड पर, खासकर आगे वाली पंक्ति के हिरणों पर एक नज़र डाली। तभी मैंने देखा कि सबसे लंबा और सबसे प्रभावशाली सींगों वाला हिरण अपने झुंड से निकलकर हमारे झुंड की ओर बढ़ा, जबकि आगे वाली पंक्ति के सभी हिरण उसे चुनौती भरी निगाहों से देख रहे थे।

सींगों वाला हिरण धीरे-धीरे हिरणों की कतार के साथ-साथ चलता रहा और तिरछी नज़रों से उन्हें निहारता रहा। फिर अचानक वह मेरी माँ के पास रुका और शरारत से अपने सींग उनके शरीर से रगड़े। मैं महसूस कर सकता था कि इससे मेरी माँ के शरीर में आनंद की एक लहर दौड़ गई। मैंने देखा कि उन्होंने हिरण को एक भावुक नज़र से देखा और फिर आनंद और उल्लास में अपनी आँखें बंद कर लीं। अब दोनों की नाकें एक-दूसरे के बहुत करीब थीं, मानो वे एक ही हवा में साँस ले रहे हों। लंबे सींगों वाले हिरण ने मेरी माँ की गर्दन चाटी और मेरी माँ ने धीरे से अपना सिर हिलाया; शायद यह दूसरे हिरण के प्रस्ताव के प्रति उनकी सहमति का भाव था।

लंबे सींगों वाला हिरण अब ऊंचे पेड़ों की ओर चला गया और जल्द ही पेड़ों और झाड़ियों के पर्दे के पीछे गायब हो गया। बिना कुछ कहे, मेरी माँ बिना किसी देरी या हिचकिचाहट के उसी रास्ते पर चल पड़ी। मैंने देखा कि सभी हिरण मेरी माँ को ईर्ष्या से देख रहे थे और एक अजीब सा गर्व का भाव मुझमें भर गया, जब मुझे एहसास हुआ कि मेरी माँ को पूरे झुंड में से किसी ऐसे काम के लिए चुना गया था जिसे सभी हिरण उत्सुकता से करना चाहते थे। लेकिन मुझे अभी तक यह पता नहीं चला था कि वह काम क्या था। अब तक, मेरी माँ ने मुझे उन लंबे सींगों वाले हिरणों के बारे में कभी नहीं बताया था।

थोड़ी दूरी बनाए रखते हुए, मैं चुपचाप अपनी माँ के पीछे-पीछे चलने लगा। मुझे पता था कि मेरे पीछे लंबे सींगों वाला एक-एक हिरण हमारे झुंड में से किसी एक हिरण को चुनकर, उसे किसी एकांत स्थान पर ले जाएगा, जहाँ वे दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य पूरा करेंगे।

अब मैंने अपनी माँ और ऊँचे सींगों वाले हिरण को एक छोटे से खुले मैदान में, पौधों और पेड़ों से घिरे हुए, एक-दूसरे के करीब खड़े देखा। वे दोनों एक साथ इतने परिपूर्ण और संपूर्ण लग रहे थे कि मुझे उनके पास जाने का मन ही नहीं हुआ। बल्कि, एक ऊँचे पेड़ के पीछे खड़े होकर, मैं उन दोनों को देखता रहा।

धीरे-धीरे उन्होंने एक-दूसरे की गर्दनें रगड़ीं, एक-दूसरे को सूंघा और फिर अपने गले से एक अजीब सी आवाज़ निकाली। फिर मेरी माँ बिना हिले-डुले खड़ी रहीं, उनके चेहरे पर एक ग्रहणशील और प्रतिक्रियाशील भाव था। उनके चेहरे पर एक अजीब सी स्वागत भरी मुस्कान खिल उठी, जो मैंने उनके चेहरे पर पहले कभी नहीं देखी थी।

मुझे नहीं पता कि उस लंबे सींग वाले हिरण को क्या संदेश मिला, लेकिन वह मेरी माँ के पीछे गया और उन पर पीछे से चढ़ गया। अब वह अपने शरीर के पिछले हिस्से को मेरी माँ के शरीर में धक्के देने लगा। शुरुआत में यह धीमी गति से हो रहा था, और फिर धक्के देने की पूरी क्रिया लयबद्ध हो गई। कुछ क्षण बाद, मुझे ऐसा लगा जैसे उनके आसपास की पूरी प्रकृति उनके इस अंतरंग कृत्य के साथ तालमेल बिठा रही हो।

मेरी माँ का चेहरा असीम आनंद से दमक रहा था। उन दोनों को एक-दूसरे के इतने करीब देखकर, मानो उनका शारीरिक स्पर्श उन्हें आनंद की एक अलग ही दुनिया में ले गया हो, मेरे भीतर एक नई अनुभूति उत्पन्न हुई। मैं भी लंबे सींगों और बलवान शरीर वाले हिरण द्वारा सहलाए जाने की इच्छा करने लगा।

कुछ मिनटों बाद, सींगों वाला हिरण मेरी माँ के शरीर में प्रवेश करना बंद कर दिया और उससे उतर गया। फिर वे कुछ मिनट चुपचाप एक साथ रहे, एक-दूसरे के शरीर को रगड़ते रहे, मानो यह सुनिश्चित करना चाहते हों कि दोबारा मिलने पर वे एक-दूसरे को पहचान सकें। फिर वे दोनों चुपचाप अलग हो गए। उनके हावभाव से एक-दूसरे के प्रति गहरी कृतज्ञता का भाव झलक रहा था।

उस शाम जब हम अपने सामान्य मिलन स्थल पर मिले, तो मैं आसानी से कई वयस्क हिरणों में एक आंतरिक उत्साह देख सका और जान गया कि उन सभी का आज सुबह सींग वाले हिरणों के साथ एक सुखद और रोमांचक सामना हुआ था।

अगर ऐसी मुलाक़ात हम सबको इतना आनंद दे सकती है, तो हम अक्सर ऐसा क्यों नहीं करते? लंबे सींगों वाले वो हिरण हमारे साथ क्यों नहीं रहते और दिन-रात हमारे साथ घुलते-मिलते रहते? तब तो पूरा जीवन आनंद से भर जाता। अगर वो सींगों वाले

हिरण हमारे साथ रहते, तो हम ज़्यादा मज़बूत और सुरक्षित महसूस करते... मेरे मन में सवालों और शंकाओं से भरी एक लंबी सोच उमड़ पड़ी।

आज शाम की बैठक सामान्य से जल्दी समाप्त हो गई। धीरे-धीरे रात गहरी होती गई और हमारे चारों ओर की खामोशी बहुत सुकून देने वाली थी। मैंने तिरछी नज़र से अपनी माँ की ओर देखा। हम दोनों ही साथ बैठे थे। उनके शांत चेहरे को देखकर और आज सुबह एक हिरण के साथ हुई उनकी मुठभेड़ को याद करके, अचानक मुझे एहसास हुआ कि उनके व्यक्तित्व का एक हिस्सा अभी भी मेरे लिए अनजान है। आज रात पहली बार, मुझे उनसे कुछ भी पूछने का मन नहीं हुआ; बल्कि मुझे लगा कि मुझे उनसे सारी घटनाओं का स्पष्टीकरण पाने का हक है।

हमारे झुंड में सभी हिरण मादा हैं। हम स्वभाव से अधिक विनम्र और संवेदनशील हैं, इसलिए हम सभी समूह में रहना पसंद करते हैं। मैंने आपको पहले इसके बारे में नहीं बताया था, क्योंकि जब तक आप स्वयं नर हिरणों को नहीं देखेंगे, तब तक आपको पता नहीं चलेगा कि हम सभी मादा हिरण क्यों हैं। सींग वाले सभी तंदुरुस्त और बलवान हिरण नर हैं। वे सभी स्वभाव से अधिक आक्रामक होते हैं और अकेले रहना पसंद करते हैं, या ज़्यादा से ज़्यादा दो या तीन के समूह में रहते हैं। हालाँकि उन्हें हमारे ठिकाने का पता है, फिर भी वे नियमित रूप से हमसे मिलने नहीं आते।

वे घने जंगल में रहना ज़्यादा पसंद करते हैं। वे केवल प्रजनन के मौसम में ही हमसे मिलने आते हैं, और हम भी इस मौसम में उन्हें देखने के लिए तरसते हैं। जैसा कि आपने आज सुबह देखा, वे हमें आकर्षित करने के लिए अपनी ताकत और पौरुष का इस्तेमाल करते हैं, जबकि हममें उन्हें शालीनता और विनम्रता सबसे आकर्षक गुण लगते हैं। लेकिन याद रखें, जब भी कोई नर हिरण आपसे प्रेम करने का फैसला करे, तो यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है कि आप अपनी सहमति देना चाहते हैं या नहीं। अगर आप चाहें, तो आप आसानी से उनके प्रस्ताव को ठुकरा सकते हैं।

इस पूरे प्रसंग का सबसे रोचक पहलू यह है कि जब भी आप किसी नर हिरण के साथ आनंदपूर्वक प्रेम करती हैं, तो उस प्रेम-संबंध का फल आपके भीतर ही रह जाता है। यह आपके जीवन का सबसे रहस्यमय अनुभव हो सकता है। अचानक आपको अपने भीतर कुछ बदलाव महसूस होने लगते हैं। कुछ ही समय में आपको एहसास हो जाता है कि आप एक हिरण के बच्चे को जन्म देने वाली हैं। आपको बच्चे का पालन-पोषण तब तक करना होता है जब तक वह आत्मनिर्भर न हो जाए। यह उम्मीद न करें कि

जिस नर हिरण ने आपके बच्चे को जन्म दिया है, वह आकर बच्चे के पालन-पोषण में अपना योगदान देगा। गर्भ धारण करने के बाद आप उससे कभी नहीं मिलेंगी। फिर भी, हर बार प्रेम-संबंध बनाने के बाद हम एक-दूसरे को सूंघते हैं, इस उम्मीद में कि शायद फिर कभी मुलाकात हो जाए। और एक दिन, आप उस हिरण से मिल सकती हैं जिसके साथ आपने पहले प्रेम-संबंध बनाया था। ऐसे अवसरों पर, पूरी मुलाकात नितांत आनंद और संतुष्टि के क्षणों से भर जाती है...' मेरी माँ की बात अधूरी रह गई, और मैं समझ गई कि वह यादों में खोई हुई थीं।

उसने एक गहरी साँस ली और फिर से कहने लगी, 'पर मेरे अनुभव को सुनने से तुम्हें ज़्यादा मदद नहीं मिलेगी। कुछ महीने बीतने दो। जल्द ही तुम कम उम्र के चंगुल से बाहर निकल जाओगी। अगले प्रजनन काल से पहले, तुम हमारे झुंड की सबसे खूबसूरत हिरणियों में से एक बन जाओगी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बहुत सारे नर हिरण तुमसे प्रेम करने के लिए तरसेंगे।'

उस रात मैं अपनी माँ के सो जाने के काफी देर बाद तक जागता रहा।

जब तक मैं किसी नर हिरण के साथ अंतरंग संबंध नहीं बना लेती, तब तक मैं अधूरी रहूंगी। शायद मेरे अस्तित्व का एक हिस्सा तब तक अज्ञात ही रहेगा जब तक कोई नर हिरण मुझे स्पर्श और दुलार नहीं कर लेता; शायद मेरा जीवन तभी पूर्ण होगा जब मेरे गर्भ में एक बच्चा पल रहा होगा, मैंने सोचा, फिर भी मुझे यह बात खटक रही थी कि मुझे किसी भी नर हिरण का ध्यान आकर्षित करने के लिए खुद में जरा सा भी बदलाव नहीं करना चाहिए।

प्रजनन के मौसम के अगले कुछ सप्ताह तेज़ी से बीत गए। हालाँकि मैंने नर हिरणों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ भी न करने का अपना संकल्प बरकरार रखा, फिर भी मैं चारागाहों पर जाती रही, जहाँ नर हिरण हर सुबह अपनी शक्ति और साहस का प्रदर्शन करते हुए मादा हिरणों को आकर्षित करने की कोशिश करते थे, और जहाँ हर मादा हिरण, एक पंक्ति में खड़ी होकर, सबसे आकर्षक और सुंदर मुद्रा धारण करने का प्रयास करती थी ताकि सबसे शक्तिशाली नर हिरण को अपने साथ पा सके।

मैंने उनमें से अधिकतर को अपने चुने हुए नर साथियों के साथ प्रेम करते देखा। वे प्रेम करने के लिए हमेशा एकांत स्थान पसंद करते थे। इसके अलावा, प्रेम करते समय मैंने सभी जोड़ों में एक और बात समान पाई। आनंद के उन गहन क्षणों में, वे प्रकृति का ही एक हिस्सा प्रतीत होते थे; कोई भिन्न प्राणी नहीं। हिरणों के हमारे झुंड में मैंने एक

और स्पष्ट बदलाव देखा कि प्रजनन का मौसम शुरू होने के बाद से, अधिकतर हिरण अधिक शांत और मौन हो गए थे। पहले की तरह वे अब उतने बातूनी नहीं रहे थे।

मैंने सोचा, अगर प्रजनन का मौसम पूरे साल चलता तो जंगल कितना सुंदर होता! मुझे प्रकृति की विचित्रताओं और उसके हमारे साथ खेलने के शौक के बारे में ज़रा भी जानकारी नहीं थी। वह हमें आश्चर्यचकित करने वाली घटनाओं से कभी वंचित नहीं रहती थी।

मेरी माँ ने मुझे बताया था कि प्रजनन का मौसम वसंत ऋतु होती है, लेकिन जैसे-जैसे हवा गर्म होती गई, पेड़ पत्तों से रहित होते गए, घास सूखती गई और जंगल में जगह-जगह बने पानी के तालाब भी सूख गए, वैसे-वैसे यह मौसम भी गायब हो गया। कोयल की आवाज़ में जोश कम हो गया और वह डरावनी लगने लगी। जंगल, जो पहले घनी हरी पत्तियों और झाड़ियों से ढका रहता था, अब आंशिक रूप से बंजर और सूखा दिखाई देने लगा। सूखी घास के नीचे की बंजर ज़मीन फटने लगी। जैसे-जैसे सूखी हवा और गर्म मौसम ने पेड़ों को पत्तों से रहित किया, हम पेड़ों की घनी छाया से वंचित हो गए। दिन के अधिकांश समय तेज़ धूप में रहने के कारण मैं जल्दी थक जाता था। एक और खतरा हमारे सामने आ गया क्योंकि हमारे आसपास की झाड़ियाँ कम होती जा रही थीं। हमारे शिकारी हमें दूर से आसानी से देख सकते थे। वसंत ऋतु में हिरणों के चेहरों पर जो चमक आई थी, वह धीरे-धीरे गायब होने लगी क्योंकि नियमित भोजन के लिए हर दिन की मेहनत एक कठिन काम बन गई थी।

जिस छोटी नदी में हम कभी डुबकी लगाने आए थे, वह अब पानी की एक संकरी धारा बन गई थी। पूरे शरीर को गीला करने के लिए डुबकी लगाने की संभावना लगभग न के बराबर थी। अधिकांश हिरणों में एक अजीब सी बेचैनी छा गई थी, और केवल कुछ ही हिरण शांत और स्थिर थे। मेरी माँ भी उन्हीं में से एक थीं, मानो उन्हें सुहावनी वसंत ऋतु के बाद ऐसे प्रतिकूल मौसम की उम्मीद रही हो।

मैंने इस कठोर जलवायु में खुद को ढालने की पूरी कोशिश की, फिर भी मैं महसूस कर सकता था कि इसका मुझ पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। एक दोपहर जब सूरज की रोशनी हल्की हो गई थी और एक सुहावनी हवा चल रही थी, जो आजकल बहुत कम ही चलती है, तो मैं आलस से सूखी घास पर बैठ गया। अभी-अभी मैं झरने से

मीठा पानी पीकर लौटा था। दोपहर में पानी गर्म हो गया और हमारी प्यास नहीं बुझी, लेकिन दोपहर बाद वह फिर से ठंडा और सुखदायक हो गया।

मैं अपनी गीली जीभ से अपना पेट चाट रहा था और आराम कर रहा था, नीचे सूखी पत्तियों और घास से हो रही चुभन को नज़रअंदाज़ करते हुए, तभी मैंने अपनी माँ को अपनी ओर आते देखा। मेरे पास पहुँचकर, वह चुपचाप मेरे बगल में बैठ गईं, मानो वह मुझे परेशान नहीं करना चाहती हों। फिर उन्होंने कुछ देर तक अपने स्वाभाविक प्रेम और चिंता से मेरा चेहरा निहारा।

कुछ देर बाद उसने मुझसे पूछा, 'हमारे झुंड की सबसे बहादुर हिरणी इस निर्दयी मौसम को लेकर इतनी चिंतित क्यों है? क्या उसे नहीं पता कि सर्दी और वसंत की तरह यह गर्मी भी एक क्षणिक अवस्था है?'

मैं चुपचाप मुस्कुराया, यह जानते हुए कि उसने मेरे विचारों की श्रृंखला को सही ढंग से समझ लिया था।

‘मुझे कैसे पता चलता कि यह गर्मी जल्द ही खत्म हो जाएगी? क्या यह मेरे जीवन की पहली गर्मी नहीं है?’ मैंने उससे उत्साह से पूछा।

उन्होंने स्पष्टवादिता से कहा, 'मुझे लगा कि आपने अपनी कल्पनाशील बुद्धि का उपयोग करके इसे पहले ही समझ लिया होगा।'

उसके शब्दों से मेरे मन में एक सुखद अनुभूति हुई। आजकल मेरी माँ मुझे अपने दोस्त की तरह, अपनी उम्र के किसी साथी की तरह मानती थी, न कि अपने उस छोटे बच्चे की तरह जिसे उसकी सुरक्षा और मार्गदर्शन की ज़रूरत थी। मैं अपने जीवन की सारी घटनाएँ उससे साझा करती थी, सिवाय कुछ घटनाओं के जो मुझे लगता था कि हमारे झुंड के किसी भी हिरण के साथ कभी नहीं घटी थीं।

लेकिन अब मैं अक्सर सोचता हूँ कि उस बाघ ने मुझ पर हमला क्यों नहीं किया या मुझे क्यों नहीं मारा, जबकि मैं उसकी पहुँच में ही था। अब तक मुझे इस बात का कोई जवाब नहीं मिला है कि बिना हवा चले भी कोई फूल कैसे नाच सकता है या हिल सकता है।

‘तुम्हें पता है, कुछ महीनों बाद तुम्हारे नए भाई-बहन होंगे। इस बार मुझे लगता है कि मेरे अंदर दो हैं,’ मेरी माँ ने कहा।

कुछ पल बीतने के बाद ही उसके शब्द मेरे मन में समाए। अचानक मेरा चेहरा खुशी से चमक उठा। जल्द ही मेरे छोटे भाई या बहन होंगे। मैं उन्हें इतना साहसी और निडर

बनाऊँगी कि वे मेरे साथ जंगल में दूर-दूर तक घूमने जाने से पहले कभी दो बार नहीं सोचेंगे, मैंने सोचा।

“मेरे बच्चे, भविष्य के बारे में बहुत सारे सुखद सपने मत देखो। अगर बेटा हुआ तो जैसे ही वह दौड़ने लायक ताकतवर होगा, मुझे छोड़कर चला जाएगा। वह अपने आप नर हिरणों के झुंड में शामिल हो जाएगा। वैसे, तुम्हें साथी मिलने की संभावना तभी है जब मैं मादा हिरण का बच्चा पैदा करूँ,” मेरी माँ मुस्कुराते हुए बोलीं। वह मेरी आँखों से मेरे मन की बात समझ जाती थीं।

‘मां, क्या आपको दुख होता है जब आपका कोई बेटा आपको हमेशा के लिए छोड़कर चला जाता है?’ मैंने अपनी मां से पूछा, क्योंकि एक दिन अपनी मां को छोड़ने का विचार भी मेरी कल्पना से परे था।

एक पल के लिए उसके चेहरे पर उदासी छा गई और फिर वह फीकी मुस्कान के साथ बोली, 'अगर मैं इस बात पर ज़ोर दूं कि मेरा बेटा हमेशा मेरे साथ रहे, तो मैं उसके अस्तित्व के एक हिस्से को मारना ज़्यादा पसंद करूंगी। उसका संपूर्ण विकास हमेशा नर हिरणों के झुंड के साथ ही होता है, हालांकि बिछड़ना हमेशा दिल दहला देने वाला होता है। दर्द की तीव्रता अथाह होती है क्योंकि आप जानते हैं कि आप शायद अपने बच्चे को फिर कभी न देख पाएं।'

मैंने टिप्पणी की, 'तो मातृत्व केवल बच्चे के पालन-पोषण की खुशी और आनंद के बारे में ही नहीं है। यह दर्द भी लाता है।'

“यदि आप कोई कार्य केवल इसलिए करते हैं क्योंकि उससे आपको आनंद और प्रसन्नता मिलेगी, तो आप गुमराह हैं। इस धरती पर बिना कष्ट के कोई सुख नहीं है। और जैसा कि आप जानते ही हैं, वास्तविक परिपक्वता का अर्थ है सुख और कष्ट, आनंद और दुःख, दोनों को स्वीकार करना और जीवन में प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ना,” वह रुकी और बोली, “बहुत हो गया दर्शन। अब मैं नदी में डुबकी लगाने जा रही हूँ। क्या आप मेरे साथ आएँगे?” अब वह अपने पैरों पर खड़ी हो गई।

‘नहीं माँ, मैं अभी-अभी वहाँ से लौटा हूँ।’

उसने मेरी तरफ मुस्कुराया और चली गई। जब मैंने अपनी माँ को लड़खड़ाते हुए जाते देखा, जो उसकी सामान्य आत्मविश्वास भरी चाल से बिल्कुल अलग थी, तो मुझे लगा कि उसके अंदर के बच्चे उसे इस तरह चलने पर मजबूर कर रहे थे।

मैं सूर्यास्त से पहले थोड़ी देर घूमने के इरादे से उठा, और ठीक उसी क्षण मुझे वही

मंथन की आवाज़ फिर से सुनाई दी; इस बार यह आवाज़ पहले से कहीं अधिक स्पष्ट और तेज़ थी। मैं इस आवाज़ के स्रोत को जानता था, क्योंकि मैंने इसे पिछले कुछ दिनों से सुना था।

पेड़ों की कतारों के पीछे सूखी पत्तियों पर एक बूढ़ा हिरण बैठा था। दिनभर वह हम सबकी तरह भोजन की तलाश में कहीं नहीं जाता था। अपनी चिंताओं में डूबे होने के कारण शायद दूसरे हिरणों ने इस हिरण पर ध्यान भी नहीं दिया होगा, लेकिन मेरा जिज्ञासु मन हमेशा यह सोचता रहता था कि यह बूढ़ा हिरण अचानक जीवन से इतना विरक्त क्यों हो गया है।

मैंने उसे कुछ दूरी पर चुपचाप खड़े देखा था, वह अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रही थी और फिर अचानक पत्तों पर बैठ जाती थी, मानो वह अब उठ न सके। सूखे पत्तों पर उसके हिलने-डुलने या खड़े होने की कोशिश से कभी-कभार हल्की सी चरमराहट की आवाज़ आती थी। उसकी आँखों में हमेशा एक उदास भाव छाया रहता था। कई बार मैंने उसे खाली आँखों से आकाश की ओर देखते हुए देखा था।

जब मैं उत्सुकता से उसे देख रही थी, तो मेरी इच्छा हुई कि काश मैं उसकी आँखों से उसके विचार पढ़ पाती। उसके चारों ओर छाई रहने वाली गहरी खामोशी ने मुझे उसके पास जाने और उसकी खैरियत पूछने के लिए प्रेरित नहीं किया। फिर भी मेरी अंतरात्मा ने कहा कि वह धैर्यपूर्वक किसी चीज़ का इंतज़ार कर रही थी; किसी ऐसी चीज़ का जिसकी मौजूदगी का एहसास उसे अपने आसपास हो रहा था; कोई ऐसी चीज़ जिसने शायद भोजन की तलाश करने की उसकी इच्छा को भंग कर दिया हो।

आज दोपहर जैसे ही मुझे सूखे पत्तों की सरसराहट सुनाई दी, मैं दबे पांव उस जगह पर गई। मैंने उसे खड़े होने के लिए इतना प्रयास करते कभी नहीं देखा था। कुछ असफल प्रयासों के बाद, आखिरकार वह दृढ़ता से खड़ी हो गई।

मुझे लगा कि वह कम से कम छह-सात दिनों के बाद अपने पैरों पर खड़ी हुई होगी, क्योंकि मैंने उसे जंगल के सबसे कम इस्तेमाल होने वाले रास्ते पर चलते देखा। वह रास्ता इतना संकरा था कि उस पर चलने से कांटेदार झाड़ियों के कारण शरीर पर खरोंचें लग सकती थीं।

आखिर वो कहाँ जा रही है? मैं सोच रहा था, लेकिन उसके कमज़ोर, धीमे लेकिन दृढ़ कदमों से मुझे यकीन हो गया कि वो अपनी सारी इंद्रियों से जानती है कि उसे कहाँ जाना है। मैं पहली बार चुपके से उसके पीछे-पीछे गया, हिरण के व्यवहार से मैं बहुत

उत्सुक था।

धीरे-धीरे, वह उस जगह तक पहुँचने के लिए संघर्ष करती हुई आगे बढ़ी जहाँ मैंने अभी तक कदम नहीं रखा था। मैंने उत्सुकता से अपने चारों ओर की हर चीज़ पर एक नज़र डाली और यहाँ व्याप्त उदासी भरे माहौल को देखकर आश्चर्यचकित रह गया।

यह ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा था, जिसे प्रकृति ने जंगली जानवरों के बार-बार अतिक्रमण से बचा रखा था। गोलाकार आकार में एक-दूसरे के बेहद करीब खड़े लंबे पेड़ों के कारण मुझ जैसे जिज्ञासु हिरण के लिए भी इस ज़मीन के अस्तित्व का पता लगाना असंभव था।

अब घना अंधेरा छा गया, जिससे धरती पर परछाइयाँ छा गईं। पेड़ों की आकृतियाँ, उनकी पत्तीविहीन शाखाएँ, हम सभी को निर्जीव, प्रतिक्रियाहीन और उदासीन प्रतीत हुईं। हमारे चारों ओर की खामोशी सुखद होने के बजाय, बेचैन करने वाली और अशुभ थी।

मैं वहीं स्थिर खड़ा रहा, पेड़ों के बीच से बूढ़े हिरण को देखता रहा, जबकि मेरी अंतरात्मा मुझे बता रही थी कि मैं कुछ ऐसा देखने वाला हूं जिसके बारे में मुझे अभी तक कोई जानकारी नहीं थी।

हिरण ने अपनी दुबली-पतली गर्दन ऊपर उठाई और आकाश की ओर देखा, जहाँ कुछ तारे अभी-अभी टिमटिमाते हुए दिखाई दिए थे, जो अन्यथा फीके अंधेरे आकाश को सुंदर बना रहे थे। चंद्रमा अभी दिखाई नहीं दे रहा था, और जंगल को जो थोड़ी सी रोशनी मिल रही थी, वह केवल तारों से ही आ रही थी, जो बादलों से रहित और अथाह आकाश में सुरक्षित रूप से लटके हुए थे। हिरण लंबे समय तक ऊपर की ओर देखता रहा, मानो वह ऊपर किसी अज्ञात और अदृश्य सत्ता से स्वीकृति मांग रहा हो, जिसके अस्तित्व का एहसास इस बूढ़े और कमजोर हिरण को अचानक हुआ था।

मैं स्तब्ध होकर अपनी आँखों के सामने घट रही पूरी घटना को देखता रहा। अचानक उसने अपना सिर नीचे झुका लिया, मानो उसे ईश्वर का संदेश मिल गया हो। अब वह ज़मीन पर लेट गई, उसके आगे और पीछे के पैर नीचे की ओर मुड़े हुए थे, मानो वह अंतिम विश्राम की मुद्रा में हो। उसका सिर घास पर आराम से टिका हुआ था, उसकी शांत आँखें खुली थीं और साँस लेते समय उसके नथुने थोड़े फैल गए थे। उसका पूरा शरीर लयबद्ध तरीके से ऊपर-नीचे हो रहा था, जैसे-जैसे वह साँस ले रही थी। और फिर धीरे-धीरे, उसके शरीर का स्पंदन लगभग अदृश्य हो गया, और अंत में पूरी तरह

रुक गया। जैसे ही मैंने महसूस किया कि उसका शरीर गतिहीन हो गया है, मैंने देखा कि उस ज़मीन के टुकड़े के चारों ओर फैले पेड़ों की सभी ऊपरी शाखाएँ बाहर की ओर झुक गईं, मानो किसी अदृश्य चीज़ को ऊपर की ओर जाने के लिए जगह दे रही हों, और एक क्षण के लिए सभी पेड़ एक साथ काँप उठे।

क्या हिरण के शरीर से कुछ ऊपर की ओर प्रवाहित हुआ है, जिससे पेड़ कांप रहे हैं? मैं धीरे-धीरे हिरण के शरीर की ओर बढ़ते हुए सोचने लगा। मैं कुछ देर तक उसके पास खड़ा रहा, उसकी खुली लेकिन भावहीन आँखों को निहारता रहा। मेरे भीतर एक दुर्लभ अंतर्ज्ञान ने मुझे बताया कि यह हिरण अब कभी उठ नहीं पाएगा; उसकी नाक से हवा उसके शरीर में दोबारा प्रवेश नहीं कर पाएगी। वह अब निर्जीव हो चुका था, ठीक वैसे ही जैसे जंगल में बिखरे हुए पत्थर और चट्टान के टुकड़े।

क्या यही मृत्यु है? मैंने खुद से पूछा। मैंने एक हिरण को मरते हुए देखा था, लेकिन यह मृत्यु देखना उससे बिल्कुल अलग था। इस हिरण को कैसे पता चला कि उसकी मृत्यु निकट है? इस अंतिम यात्रा पर निकलने से पहले उसने विदाई क्यों नहीं ली? किसी एकांत स्थान पर मृत्यु को ही क्यों पसंद किया जाता है? हम अपनी आम सभाओं में इस बारे में चर्चा क्यों नहीं करते? अब तक हमें शिकारी के हमले से खुद को बचाने के कई तरीके बताए गए हैं, लेकिन किसी ने भी हमें मृत्यु के चंगुल से हमेशा के लिए दूर रहने के उपाय नहीं बताए।

क्या मृत्यु से कोई बच नहीं सकता? यदि उत्तर नहीं है, तो चाहे शिकारी हों या न हों, जीवन का अंत निश्चित है, ठीक वैसे ही जैसे इसकी शुरुआत... कई सवाल और विचार मेरे मन में उमड़ रहे थे और मैं थोड़ा उदास था। मेरे भीतर कहीं न कहीं यह भावना थी कि अगर मैं हमेशा खुद को शिकारियों से बचा पाता, तो मैं जंगल में ही हमेशा के लिए रह जाता। लेकिन अब मुझे लग रहा था कि मेरा अस्तित्व क्षणभंगुर है और शायद पूर्वनिर्धारित भी।

मैंने फिर से विशाल और अनंत अंधेरे आकाश की ओर देखा, जो अब अनगिनत तारों से जगमगा रहा था, और एक अजीब सी अनुभूति ने मुझे जकड़ लिया। मुझे ऐसा लगा मानो यह बूढ़ा हिरण, जिसका निर्जीव शरीर मेरे पास पड़ा था, अभी भी इस ब्रह्मांड में कहीं विद्यमान है, किसी अन्य रूप में या निराकार रूप में। कौन जाने, शायद मैं जन्म से पहले भी यहाँ था और इस जंगल के किसी भी हिस्से में मेरा शरीर छोड़े जाने के बाद भी यहाँ रहूँगा।

मैंने इस हिरण की मौत के बारे में किसी से एक शब्द भी न कहने का फैसला किया। हो सकता है कि हिरणों में से किसी को भी प्राकृतिक मृत्यु का ज्ञान न हो और उन्हें इसका एहसास तभी हुआ हो जब मृत्यु ने उनके दरवाजे पर दस्तक दी हो। मैंने उस जगह से जाते हुए खुद से कहा कि केवल समय और मेरी सच्ची जिज्ञासा ही मृत्यु की इस पूरी घटना के रहस्य को सुलझाने में मेरी मदद कर सकती है।

उस रात मुझे अच्छी नींद नहीं आई और आधी रात को मेरी नींद खुल गई। मेरे मन में उस सुनसान जगह पर दोबारा जाने और उस हिरण के बेजान शरीर के पास कुछ देर बैठने की तीव्र इच्छा थी। बिना सोचे-समझे मैं उस रहस्यमयी जगह की ओर चल पड़ा। लेकिन वहाँ मेरा इंतज़ार एक चौंकाने वाली बात कर रही थी। हिरण का शरीर वहाँ नहीं था।

मैं पूरी रात वहीं पड़ा रहा। आसपास कोई और जीवित प्राणी नहीं था। नींद ने मेरी आंखों को तभी झकझोरा जब आसमान के पूर्वी छोर पर बैंगनी रंग का एक धब्बा दिखाई दिया और कुछ पक्षियों ने नए दिन की शुरुआत का संकेत देते हुए अपने पंख फड़फड़ाए।

अध्याय-5

जीवन के अनजाने मोड़

मृत्यु के बारे में सोचने का एकमात्र सही तरीका इसे जीवन का एक अभिन्न अंग मानना है।

~थॉमस मान

यह मेरे जीवन की सबसे निराशाजनक शामों में से एक थी, और उन सभी युवा हिरणों के लिए भी, जिन्होंने इससे पहले कभी एक ही दिन में इतने बड़े पैमाने पर अपने साथी हिरणों की हत्या नहीं देखी थी। डर की सिहरन उनके भीतर तक समा गई क्योंकि इस बार शिकार हमारे ही उम्र के युवा हिरण थे।

हम सब अपने बैठक स्थल पर इकट्ठा हो गए। इस बार किसी ने भी सुरक्षा और बचाव के लिए किसी विशेष संरचना में घूमने का सुझाव नहीं दिया। चार युवा हिरणों की हत्या ने हमें आश्वस्त कर दिया था कि एक बूढ़ा हिरण चाहे जो भी सलाह दे, उसका कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं था और हम किसी भी तरह से अपने शिकारियों को मात नहीं दे सकते थे।

आज की हत्याओं ने हमें कुछ और तथ्यों से अवगत कराया; कि जंगल में एक नहीं बल्कि कई शिकारी जानवर मौजूद हैं। गर्म और उमस भरे मौसम ने उन्हें और भी खूनी बना दिया है। और आने वाले हफ्तों में, हम अपने कई साथी हिरणों को खो सकते हैं जो अभी एक साल के भी नहीं हुए थे।

“अगर मैं उन घृणित बाघों में से कुछ को चीर-फाड़ कर मार सकूँ, तो मुझे अपनी जान

कुर्बान करने में कोई आपत्ति नहीं होगी। कुछ को नहीं तो कम से कम एक को तो मार ही सकूँ," एक युवा हिरण ने बेबसी भरे गुस्से से उबलते हुए कहा।

'लेकिन तुम यह कैसे करोगे?' एक बूढ़े हिरण ने व्यंग्यपूर्वक पूछा। 'तुम्हारे पास नुकीले दांत नहीं हैं, न ही पंजे हैं।'

'लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि हम बस बैठकर अपने करीबी रिश्तेदारों और दोस्तों को बेवजह मरते हुए देखते रह सकते हैं?' एक और युवा हिरणी ने नम आँखों से बेचैनी से पूछा। आज की हत्या में उसने अपनी जुड़वां बहन को खो दिया था।

हम सब चुप रहे, क्योंकि कोई भी संतोषजनक जवाब नहीं दे सका।

'अगर हम इस जंगल को छोड़कर किसी ऐसे प्राकृतिक आवास में चले जाएं जहां बाघ या कोई अन्य शिकारी जानवर न हों तो क्या होगा?' मुझसे कुछ अधिक उम्र के एक हिरण ने यह प्रस्ताव रखा। हालांकि उसने शांत रहने की कोशिश की, लेकिन उसकी आँखों में क्रोध साफ झलक रहा था।

"हम ऐसा नहीं कर सकते, मेरे बच्चे। हमारे पूर्वजों ने हमारे घूमने-फिरने का क्षेत्र पहले ही निर्धारित कर दिया है। उन्होंने हमारे सुरक्षित रूप से घूमने-फिरने के क्षेत्र को तय करने से पहले बहुत सोच-समझकर निर्णय लिया होगा। इसके अलावा, हम कहीं भी जाएं, हमारे शिकारी हमारा पीछा करेंगे। वे अपनी सूंघने की शक्ति के लिए जाने जाते हैं।" एक बूढ़े हिरण ने तर्कसंगत बात कहने की कोशिश की।

'तो अब हमारे पास मारे जाने का इंतजार करने के अलावा और कोई चारा नहीं है, है ना? मुझे अपनी जिंदगी से उतनी ही नफरत है जितनी मुझे अपने शिकारियों से है,' एक और युवा हिरण गुस्से से बोला।

फिर से सन्नाटा छा गया जब मुझे याद आया कि अगली सुबह हम सभी उन जगहों पर जाएंगे जहां हमारे साथियों की हत्या हुई थी और फिर उस नाले की ओर जाएंगे जहां डुबकी लगाने के लिए पर्याप्त पानी नहीं था।

साथी हिरणों पर एक दबी नज़र डालते हुए, उनके व्यथित चेहरों का अध्ययन करते हुए, अचानक मुझे यह एहसास हुआ कि भय और घृणा हमें असामान्य रूप से हिंसक बना देते हैं, जबकि हम स्वयं को भी नुकसान पहुँचा सकते हैं। तभी मेरा ध्यान एक बूढ़े हिरण पर गया जो ज़्यादातर समय असामान्य रूप से शांत रहता था, और अगर कभी बोलता भी था तो मुश्किल से एक-दो शब्द ही बोलता था।

मुझे ऐसा लगा कि वह कुछ कहना चाहती थी, लेकिन असमंजस में थी, मानो उसे

यकीन न हो कि दूसरे हिरण उसकी बात सुनेंगे या नहीं। अंत में, उसने बाकी सभी हिरणों पर एक नज़र डाली और चुप रहना ही बेहतर समझा। मैं सचमुच उसकी बात सुनना चाहता था।

लेकिन अगली सुबह, हमारे पशुओं के झुंड के साथ एक दुर्घटना हो गई। यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा व्यक्तिगत नुकसान था, जिसके कारण नदी किनारे जाने का हमारा कार्यक्रम स्थगित हो गया।

आज सुबह मेरी माँ को एक अजीब सी चिंता सताने लगी। जब से उन्हें एहसास हुआ कि उनके गर्भ में इस जंगल के सबसे ताकतवर नर हिरणों में से एक के साथ प्रेम संबंध का फल पल रहा है, तब से वे जंगल के सबसे अच्छे और ताज़े फल-सब्ज़ियों से अपना पेट भरने में विशेष सावधानी और मेहनत कर रही थीं। एक बार उन्होंने मुझे बताया था कि अगर उनके गर्भ में पल रहे बच्चे भोजन से पूरी तरह संतुष्ट नहीं होते, तो वे तब तक बेचैनी से उन्हें लात मारते रहते हैं जब तक कि वे कुछ ताज़ी पत्तियाँ न चबा लें।

'क्या मैंने भी तुम्हारे अंदर जाने के बाद ऐसा ही किया?'

उसके होठों पर स्नेह भरी मुस्कान आ गई। उसने मेरे गालों को चाटा और फिर बोली, 'मेरे प्यारे, तुमने भी ऐसा ही किया। लेकिन मेरे बाकी बच्चों की तुलना में बहुत कम। वास्तव में, तुम अब तक के सबसे शांत बच्चे हो।'

मैंने भी उसकी मुस्कान का जवाब देते हुए उसे बताया कि मुझे उसकी कोख से बाहर आना कितना नापसंद था।

'माँ, हमारे चारों ओर सूखी घास और पत्तों के सिवा कुछ नहीं है। इन्हें चबाने से गला सूख जाएगा। चलिए दाईं ओर चलते हैं। उस इलाके में कम लोग आते हैं, और शायद वहाँ हमें ताज़ी घास मिल जाए,' मैंने आज सुबह उनसे कहा।

'मुझे कुछ गड़बड़ महसूस हो रही है। मुझे सच में नहीं पता कि क्या है। लेकिन मेरा एक हिस्सा मुझे खाने की तलाश में कहीं भी जाने से रोक रहा है,' उसने मुझसे कहा।

'क्या यह कल की भयानक हत्याओं के कारण हो सकता है? इसने शायद आपके भीतर एक गहरा निशान छोड़ दिया हो,' मैंने अनुमान लगाया।

'मुझे नहीं पता,' उसने गहरी साँस ली। 'फिर भी, मुझे अब उठना होगा। क्या आपको

पता है कि हम कल उन जगहों पर कब जाएँगे जहाँ हमारे बच्चों ने अपनी जान गंवाई?'

मैंने उत्तर दिया, 'थोड़ी देर बाद। उससे पहले हम कुछ खा सकते हैं, और उससे हमारा दिन का अधिकांश भाग निकल जाएगा।'

'हां, आप सही हैं,' उसने उठते हुए कहा, मानो उसका मन किसी और बात में उलझा हुआ हो।

हम एक दूसरे के बगल में चलते रहे, और सूखी जमीन के एक लंबे हिस्से को पार करने के बाद, हम जंगल के एक ऐसे हिस्से में पहुंचे जहां पौधे घने और कांटेदार थे और घास कहीं-कहीं लंबे पेड़ों की छाया में होने के कारण अभी भी हरे रंग की थी।

मेरी माँ ने घास का एक गुच्छा तोड़ते हुए और उसे धीरे-धीरे चबाते हुए कहा, 'हम यहाँ ज्यादा देर तक चर नहीं सकते। दूसरे हिरण हमारा इंतज़ार कर रहे होंगे।' फिर उन्होंने आगे कहा, 'मैं यहाँ पहले कभी नहीं आई। तुम्हें इस जगह के बारे में कैसे पता चला?'

'मैं पहले भी कई बार यहाँ आ चुका हूँ। आसपास के उन कांटेदार पौधों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया,' मैंने अपनी माँ को खाते हुए देखते हुए कहा।

हमारे चारों ओर पत्तों की सरसराहट लगातार सुनाई दे रही थी, जिससे हमें घर जैसा सुकून महसूस हो रहा था। हमें जरा भी अंदाजा नहीं था कि एक माहिर शिकारी आसानी से पत्तों की सरसराहट के साथ अपने कदमों की आहट को मिला सकता है। उसने हमें अपनी मौजूदगी का एहसास तभी कराया जब उसे पता चला कि वह हमारे इतने करीब आ गया है कि हम उसकी पकड़ से बच नहीं सकते।

हमारे पास उसकी मौजूदगी का ऐलान करने वाली एक स्वाभाविक गुर्राहट ही हमें डर से पागल करने के लिए काफी थी। तुरंत ही घूमकर, मैंने और मेरी माँ ने अपने सामने उस प्रभावशाली और भयानक प्राणी को देखा।

एक बाघ; विशाल सिर, पीले और काले रंग की धारियों वाला एकदम साफ-सुथरा फर और एक ऐसी पूंछ जो किसी का भी ध्यान तुरंत खींच ले। पूंछ पीली थी और उसका आखिरी छोटा सा हिस्सा काला था, मानो बाघ की पीली पूंछ पर काली टोपी पहनी हो। वह आलस से अपने कान हिला रहा था; शायद कानों के पास बैठे कीड़ों को भगाने के लिए। उसकी जीभ बाहर लटकी हुई थी और उससे टपकती लार नीचे सूखी घास पर गिर रही थी।

एक पल के लिए मैं असमंजस की स्थिति में था, फिर अचानक मेरी सूझबूझ जागृत

हुई। सहज ही मैं आगे बढ़ा और अपनी माँ के सामने खड़ा हो गया, यह ठानकर कि मैं हर कीमत पर उनकी रक्षा करूँगा।

हम दोनों जानते थे कि यहाँ से बिना किसी नुकसान के बच निकलना नामुमकिन था। लेकिन मुझे थोड़ी देर हो गई थी, जिसके लिए मैंने बाद में खुद को कई बार कोसा। इससे पहले कि मैं अपनी माँ के सामने पहुँच पाती, बाघ ने उनके उभरे हुए पेट पर एक नज़र डाल ली। बहुत बाद में मुझे समझ आया कि गर्भवती हिरणी बाघ या भेड़िये के लिए हमेशा एक स्वादिष्ट भोजन होती है और वे इसे किसी भी अन्य हिरणी से ज़्यादा पसंद करते हैं।

अब मेरे और बाघ के बीच बहुत कम दूरी रह गई थी। हम एक-दूसरे की साँसें आसानी से सुन सकते थे। मैं चुपके से अपने पिछले पैरों में से एक को हिला रहा था, मानो माँ को भागने का संकेत दे रहा हो। लेकिन इस बार, माँ ने चेतावनी का संकेत नहीं समझा या शायद उस पर ध्यान ही नहीं दिया। मुझे नहीं पता कि कौन सी बात सच थी, क्योंकि उसके बाद मैं उससे कभी बात नहीं कर पाया।

मेरी निगाहें बाघ पर टिकी हुई थीं। मैं नहीं चाहता था कि वह अपनी निगाहें मुझसे हटाए, क्योंकि मुझे पक्का यकीन था कि वह मेरी माँ पर हमला करने में ज़्यादा दिलचस्पी रखता है। यकीन मानिए, मुझे मरने से ज़रा भी डर नहीं था।

अचानक बाघ अपने चारों पैरों पर झुक गया और पलक झपकते ही हमारी ओर झपटा। यह एक बहुत बड़ी छलांग थी। उसका विशालकाय शरीर मेरे ऊपर से उड़ता हुआ मेरी माँ के पास धड़ाम से गिरा। इससे पहले कि मैं अपनी माँ की ओर मुड़ पाता, हमलावर ने उनकी गर्दन पकड़ ली और उसके दाँत उनकी गर्दन में गहरे धंस गए थे।

असहनीय दर्द की वजह से उसके पैर बुरी तरह कांप रहे थे। उसकी आंखें फटी रह गईं और वह दर्द से कराह उठी। उसकी गर्दन से पहले ही बहुत खून बह रहा था। मैंने उसे पहले कभी इतनी देर तक पेशाब करते नहीं देखा था। मैं जानता था कि उसे बाघ और मौत, दोनों के चंगुल से बचाना मेरे बस की बात नहीं थी।

अनजाने में ही मेरे मुंह से एक चीख निकल गई; एक ऐसी चीख जो कानों को चीर देने वाली थी, मेरी पीड़ा और बेबसी से भरी हुई। मेरे आस-पास मौजूद हर किसी ने मेरी बेबसी भरी चीख सुनी होगी, लेकिन कोई मदद मुझ तक नहीं पहुंची।

बाघ को कोई जल्दी नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि कोई भी उसके चंगुल से उसका भोजन छीन नहीं सकता। मेरी माँ का सिर उसके शरीर से बेजान लटका हुआ

था। उसके मुँह से एक गहरी कराह निकल रही थी।
सामने के भयानक दृश्य को देखकर मुझे उल्टी आने लगी और जी मिचलाने लगा। मैं स्तब्ध खड़ा रहा। मुझे ज़रा भी डर नहीं था कि बाघ मुझ पर हमला कर देगा। साथ ही, मुझे यह भी एहसास था कि मैं अपनी माँ की कोई मदद नहीं कर सकता।
अब बाघ ने उसका पेट फाड़ दिया। धीरे-धीरे और व्यवस्थित ढंग से उसने उसके पेट के अंदर हर चीज़ की जाँच की, और आंतों के साथ-साथ दो अविकसित हिरण के बच्चे भी बाहर आ गए। उनके चिपचिपे छोटे शरीर बाघ के मन में स्नेह की कोई भावना विकसित नहीं कर पाए। उसने दोनों नवजात जीवों को झटपट निगल लिया और मेरी माँ को गर्दन के पीछे से पकड़ लिया।
मुझे पता था कि अब यह शव को सुरक्षित स्थान पर ले जाएगा और अगले दो दिनों तक उसका आनंद लेगा। मेरे मन से उस क्रूर प्राणी के लिए एक श्राप निकला जिसे मैं किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचा सका। विडंबना यह है कि हम अपने उत्पीड़कों को तभी श्राप देते हैं जब हम कमजोर होते हैं या उनसे बदला लेने में असमर्थ होते हैं।
जब मैं उस खून से लथपथ जगह से धीरे-धीरे निकला, तो मेरा दिल न केवल टूट गया था, बल्कि मेरी माँ की मृत्यु के साथ ही मेरा एक हिस्सा भी मर गया था। जब भी हम किसी ऐसे व्यक्ति को खोते हैं जो हमारे दिल के बहुत करीब होता है, जिसके साथ हमारी कई प्यारी यादें जुड़ी होती हैं, तो हमारे अस्तित्व का एक हिस्सा भी मर जाता है।
पिछले कई दिनों से मैं अपने छोटे भाई-बहनों के आने का सपना देख रही थी, उनके साथ जंगल की सैर करने का सपना संजोए हुए थी। माँ के निधन के साथ ही मेरा यह सपना भी टूट गया।
मेरे भीतर का असहनीय दर्द बर्दाश्त से परे था। यह मेरे जीवन में पहली बार था जब मेरी आँखों से आंसू बह निकले। उनका स्वाद थोड़ा नमकीन था। अब मैं अनाथ हो गया था।
अब जंगल में मेरे पास कोई ऐसा नहीं बचा था जिससे मैं सिर्फ आंखों के इशारों से बात कर सकूं। जन्म से ही मुझे अकेले रहना अच्छा लगता था, लेकिन अब पहली बार मुझे अकेलेपन का दर्द महसूस हुआ।
मेरे भाई-बहनों में से दो बेटियाँ थीं। उनमें से एक को मेरे जन्म से बहुत पहले एक बाघ ने मार डाला था, और दूसरी एक दिन अचानक गायब हो गई। उसके बारे में फिर कभी

किसी ने कुछ नहीं सुना। हालाँकि मेरे कई भाई थे, लेकिन मेरी माँ ने उनके बारे में मुझसे कभी बात नहीं की।

मैं कल की हत्या वाली जगह पर जाना भूल गया था, और अपनी रोज़ की मुलाकात की जगह पर बैठे-बैठे मैंने अपनी आँखों से आँसू बहने दिए। समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था, और मेरे अंदर भूख बढ़ती जा रही थी। फिर भी मुझमें उठने की हिम्मत नहीं थी।

शोक संतप्त हिरणों को अक्सर दूसरे हिरण सांत्वना देते थे, जिन्होंने कभी न कभी अपने किसी प्रियजन को खोया होता था। मुझे नहीं पता था कि दूसरे हिरणों ने मेरे चेहरे पर क्या भाव देखा, क्योंकि कोई भी मुझे सांत्वना देने नहीं आया। शायद उन सभी को लगा कि मैं पहले से ही वह सब कुछ जानता हूँ जो वे मुझे सांत्वना और दिलासा के शब्दों में कह सकते थे।

‘तो आप क्या सोचते हैं? अब हमें क्या करना चाहिए?’ बूढ़े हिरणों में से एक ने मेरी ओर देखते हुए पूछा, मानो मैं झुंड का नेता हूँ।

मैं कुछ देर चुप रही, सोचती रही कि मुझसे यह सवाल क्यों पूछा गया। कुछ देर बाद मैंने बोलना शुरू किया। मेरी धीमी और बेजान आवाज़ मुझे खुद भी अजीब लग रही थी, 'मैं किसी और की तरफ से नहीं बोल सकती। लेकिन काश मैं कहीं और जा पाती, यहाँ से बहुत दूर। यहाँ मेरे चारों ओर सब कुछ मेरी माँ की यादों से घिरा हुआ है। मुझे नहीं पता कि मैं इस सदमे से कभी उबर पाऊँगी या नहीं।'

एक अन्य युवा हिरण ने कहा, 'हमारे झुंड के सदस्यों को हर दिन खोने के अलावा, यहां भोजन की कमी भी हम सभी के लिए चिंता का विषय है।'

'हालांकि यह एक आम धारणा है कि हमें अपने लिए निर्धारित क्षेत्र से बाहर नहीं जाना चाहिए, लेकिन बेहतर जगह की तलाश करने में क्या हर्ज है, क्योंकि इससे बदतर कोई जगह नहीं हो सकती जहां हमें हर दिन अपने रिश्तों का त्याग करना पड़ता है,' एक अन्य युवा हिरण ने तर्क दिया।

एक लंबा सन्नाटा छा गया, बेचैनी और चिंता से भरा, और हर पल यह और भी गहरा होता जा रहा था। अचानक एक बूढ़ी हिरणी, जिसे मैंने कल अपने विचार व्यक्त करने में हिचकिचाते हुए देखा था, ने सन्नाटा तोड़ा और स्पष्ट स्वर में बोलना शुरू किया,

“बहुत समय पहले, जब मैं छोटी बच्ची थी, मैंने एक बार अपनी दादी को मेरी माँ और हमारे झुंड के अन्य सदस्यों को एक विचित्र घटना और उसके प्रभाव के बारे में बताते हुए सुना था। मैं इसकी सत्यता की गारंटी नहीं दे सकती क्योंकि मैंने कभी इसका प्रयोग नहीं किया और न ही मुझे कभी इसकी आवश्यकता महसूस हुई,” बूढ़ी हिरणी रुक गई।

उसने हमारे चेहरों को गौर से देखा और फिर यह तौल लिया कि क्या हम उसकी बात ध्यान से सुन रहे हैं, उसके बाद उसने आगे कहा, “उसके सुझाव के अनुसार, जब हिरणों का पूरा झुंड किसी विकट परिस्थिति से जूझ रहा हो; एक ऐसी मुश्किल स्थिति जिससे निकलने का उन्हें कोई रास्ता न सूझ रहा हो, तो वे कुछ निष्क्रिय रूप से कर सकते हैं। वे चुपचाप एक घेरे में बैठकर प्रार्थना कर सकते हैं ताकि इस समस्या से छुटकारा मिल सके। उसका दावा था कि अगर इसे पूरी ईमानदारी से किया जाए तो इससे वाकई हमारे जीवन में बदलाव आता है। मैंने यह बात किसी को नहीं बताई थी क्योंकि आप सब शायद इस प्रस्ताव पर हंस देते। लेकिन अब, ऐसा लगता है कि हम सब बहुत परेशान हैं। इसलिए मेरा सुझाव है कि आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें ताकि हम इस दुविधा से मुक्त हो सकें। कौन जाने, शायद हमारी प्रार्थना का उत्तर मिल जाए और हमें रहने के लिए एक सुरक्षित जगह मिल जाए जहाँ भोजन की कोई कमी न हो। कम से कम प्रार्थना करने से हमारा कुछ नुकसान तो नहीं होगा।”

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, इतना गहरा कि हमारी साँसें भी सुनाई दे रही थीं। मैं चारों ओर फैले जंगल को खाली निगाहों से देखता रहा। पहली बार मैं चाहता था कि दूसरे लोग बोलें और ऐसा फैसला लें जो पूरे समूह के हित में हो।

मेरे आस-पास के सभी हिरण, अपने पिछले पैरों पर बैठे हुए, लगभग खामोशी से गहरी साँसें ले रहे थे। मैं जानता था कि वे सब पुरानी यादों में खो गए थे और पीढ़ियों से अपने निवास स्थान से जुड़ी खट्टी-मीठी यादों को याद कर रहे थे। आज भी, इस जंगल को छोड़ना कई हिरणों की कल्पना से परे था।

“ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि शिकारी लगातार कुछ दिनों तक हमारे भाई-बहनों और बच्चों को मारते रहे हों। इसके अलावा, ऐसा भी पहली बार नहीं हुआ है कि चिलचिलाती गर्मी के कारण हमारे आसपास की वनस्पति मुरझा गई हो। इससे बच्चों को परेशानी हो सकती है। लेकिन हम सभी वयस्क हिरण जानते हैं कि कुछ ही समय में मूसलाधार बारिश होगी और जंगल फिर से हरा-भरा हो जाएगा। मुझे इस जगह को

छोड़ने का कोई मतलब नहीं दिखता, जो सदियों से हमारी है," एक बूढ़े हिरण ने दृढ़ता से कहा।

कुछ युवा हिरणों ने एक साथ पूछा, मानो उनके मन में एक ही विचार चल रहा हो, "हमने अतीत में अपने कई साथियों को खोया है, लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि अगर हमारे पास बेहतर विकल्प है तो हम भविष्य में भी ऐसा होने दें? इसके अलावा, हर मृत्यु हमारे मन में और अधिक भय और क्रोध भर देती है। अगर रहने के लिए कोई सुरक्षित जगह है तो हम इस तरह की चिंता और भय के बोझ तले क्यों जिएं? कौन जानता है, इस जंगल के बाहर ऐसी कोई जगह हो और हमारी प्रार्थना हमें उसे खोजने में मदद करे।"

"लेकिन यह जगह हमारी मातृभूमि है, जहाँ हमारी यादें जुड़ी हुई हैं। हम इस जगह को कैसे छोड़ सकते हैं?" एक अन्य बूढ़े हिरण ने पूछा।

"अगर हम नई जगह ढूंढने में आनाकानी कर रहे हैं, तो इसका सीधा सा मतलब है कि हमें अपनी और अपने प्रियजनों की जान की परवाह नहीं है। हम भले ही जवान हों, अनुभवहीन हों और जंगल से जुड़ी हमारी उतनी यादें न हों जितनी हमारे बड़ों की हैं, लेकिन हम अपनी जिंदगी से बेहद प्यार करते हैं। और इसे सुरक्षित बनाना ही इस समय हमारी सबसे बड़ी चिंता है," युवा हिरणों के एक समूह ने एक साथ अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

काफी देर तक, लगभग सौहार्दपूर्ण ढंग से, एक लंबी बहस चलती रही, जिसमें सभी युवा हिरणों ने एक नए और सुरक्षित स्थान पर जाने की इच्छा व्यक्त की, जबकि अपेक्षाकृत बड़े हिरणों ने उसी जंगल में रहने पर जोर दिया।

मैं पूरे समय चुप रहा, बोलने की कोई इच्छा नहीं थी। अंततः यह तय हो गया कि जो हिरण यहाँ से दूर किसी नई जगह जाना चाहते हैं, वे एक साथ प्रार्थना कर सकते हैं, और बाकी हिरण अब जा सकते हैं।

धीरे-धीरे सभी हिरण दो समूहों में बंट गए। एक समूह, जिसमें युवा हिरणों की संख्या बहुत अधिक थी, एक साथ बैठ गया और बूढ़े हिरण के मार्गदर्शन में प्रार्थना शुरू करने के लिए तैयार हो गया, जबकि बाकी हिरण, जो उनके साथ शामिल नहीं होना चाहते थे, पास में ही बैठ गए और उत्सुकता भरी निगाहों से दूसरे समूह को देखने लगे।

लगभग अनिच्छा से ही मैं युवा हिरणों के समूह में शामिल हो गया; मेरे भीतर का एक हिस्सा जानता था कि मैं इस जंगल और इससे जुड़ी हर चीज़ से कितना गहरा लगाव

रखता हूँ। लेकिन मेरे भीतर का एक हिस्सा एक साथ प्रार्थना करने के इस विचार और इसकी प्रभावशीलता से भी उत्सुक था।

कुछ पल खामोशी छा गई, फिर हमने उस बूढ़ी हिरणी को सुना, जिसने प्रार्थना का सुझाव दिया था, उसने शांत स्वर में कहा, 'अपनी आँखें बंद करो और अपनी साँस धीमी होने दो। इससे तुम्हारा मन शांत होगा...' अचानक उसकी आवाज़ बेहद सुखदायक और सम्मोहक हो गई। अनायास ही मेरी आँखें बंद हो गईं और साँस धीमी हो गई।

कुछ देर बाद उसने धीरे-धीरे कहना शुरू किया, 'एक ऐसी जगह की कल्पना करने की कोशिश करो जहाँ वसंत कभी खत्म नहीं होता, जहाँ भोजन प्रचुर मात्रा में होता है, और आसपास कोई शिकारी जानवर नहीं होते।'

जब आपके मन में ऐसी कोई सजीव तस्वीर आ जाए, तो खुद को वहां देखने की कोशिश करें। कहते हैं कि आप अपने मन में कल्पना किए गए स्थान को जितना स्पष्ट रूप से देखेंगे, उतनी ही जल्दी आप वहां पहुंच पाएंगे।' उसकी आवाज कोमल और मधुर थी।

'मुझसे यह मत पूछो कि ऐसी प्रार्थनाएँ कैसे और क्यों पूरी होती हैं, क्योंकि मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है। मैं बस इतना जानता हूँ कि इस साधन का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं करना चाहिए। अब, मेरे प्रियजनों, जब तक आप चाहें, अपने आप को अपने काल्पनिक सुरक्षित ठिकाने में कल्पना करते रहिए। जब आप इसे एक साथ करेंगे, तो यह अधिक प्रभावी होगा।' ये हिरण के अंतिम शब्द थे, इससे पहले कि वह हमें अपनी प्रार्थना जारी रखने के लिए तब तक अकेला छोड़ दे जब तक हम चाहें।

पल बीतते गए और मेरी आँखें बंद ही रहीं। कुछ मिनटों के बाद, मुझे महसूस होता था कि कोई हिरण उठकर चुपचाप चला जाता है, मानो उसकी प्रार्थना समाप्त हो गई हो। मुझे दूसरे हिरणों के बारे में पता नहीं था, लेकिन मेरी मां के क्षत-विक्षत शरीर की भयावह तस्वीरें मेरे दिमाग में बार-बार घूम रही थीं, इसलिए मैं उनकी कोई स्पष्ट तस्वीर नहीं बना पा रहा था। मेरे भीतर से एक आवाज़ मुझे यह भी कह रही थी कि यहां बैठकर प्रार्थना करना स्वार्थीपन है। जीवन में इससे पहले मैं कभी इतना भ्रमित नहीं हुआ था।

हालांकि, जब मैंने अपनी आंखें खोलीं, तो वहां सिर्फ मैं ही बैठा था।

"उसकी प्रार्थना सबसे शक्तिशाली है। उसने प्रार्थना करने में बहुत समय बिताया था,"

यह फुसफुसाहट उस स्थान पर ठहरे हुए युवा हिरणों के बीच फैली।
किसी को नहीं पता था कि हमारी प्रार्थना का उत्तर कब और कैसे मिलेगा। अगले कुछ दिनों तक हममें से कई लोग पूरे जोश और लगन से प्रार्थना करते रहे, लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए और हमने अपने कुछ और साथियों को खो दिया, प्रार्थना पर हमारा भरोसा कम होने लगा।
हमारी इस धारणा को सबसे बड़ा झटका तब लगा कि हमारी प्रार्थना से कोई चमत्कार हो सकता है, जब उस बूढ़े हिरण को, जिसने हमें प्रार्थना करना सिखाया था, एक शिकारी ने मार डाला। तब से, हम प्रार्थना के बारे में पूरी तरह भूल गए और उससे कोई उम्मीद नहीं रखी।
अंततः हमारी प्रार्थना का उत्तर मिल गया; लेकिन ठीक उसी तरह नहीं जैसा हम चाहते थे। इसने हमें जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण सबक सिखाया।
हमारे जीवन में घटित होने वाली हर अच्छी चीज़ का एक ऐसा पहलू भी होता है जो हमें स्वीकार्य नहीं होता। यह हमारे जीवन में और अधिक आश्चर्य लाता है और जीवन को आगे बढ़ाने के लिए हमारे साहस और दृढ़ संकल्प की मांग करता है।

अध्याय-6

प्रार्थना का उत्तर मिलने पर...

मेरे मन में हमेशा पुरानी यादें और नई उम्मीदें बनी रहती हैं।
~अनाम

गर्मी के अंत में, क्षितिज पर काले बादल मंडराने लगे और हवा उमस भरी हो गई, जिससे हमें ज़्यादा पसीना आने लगा। दिनभर हमारा मन करता रहा कि नाले में डुबकी लगा लें। लेकिन हमें सख्ती से मना किया गया था कि नाले की ओर न जाएं। ऐसा इसलिए था क्योंकि गर्मी के दिनों में बाघ अक्सर नाले में डुबकी लगाकर या पानी पीकर खुद को ठंडा करने आते थे। गर्मी के बारे में एक और बात जो मैंने देखी, वह यह थी कि इसका असर हमारे रूप-रंग पर भी पड़ा था। हममें से ज़्यादातर लोगों के बालों की प्राकृतिक चमक फीकी पड़ गई थी। ज़ाहिर है, हमारे फर की रेशमीपन भी खत्म हो गई थी। कुछ बूढ़े हिरणों के बाल भी काफी झड़ गए थे।

एक सुबह एक युवा और ऊर्जावान हिरण ने मुझसे कहा, 'आजकल हमें चबाने के लिए केवल सूखे पत्ते और तिनके ही मिलते हैं।'

मैंने मुस्कुराकर जवाब दिया और फिर कुछ देर तक अपनी जीभ मुंह से बाहर लटकाए रखी। धीरे-धीरे पसीने की बूँदें मेरी जीभ से टपकने लगीं।

फिर मैंने उससे पूछा, 'क्या तुमने उस पहले दिन से जब हमने साथ मिलकर यह किया था, कभी बेहतर जीवन के लिए प्रार्थना की है?'

'नहीं,' हिरण ने सूंघते हुए कहा। 'उस दिन मैं बहुत असहाय महसूस कर रहा था, इसीलिए मुझे प्रार्थना और इन सब बातों का ख्याल आया। तुम्हें पता है, जब हम किसी वास्तविक खतरे में होते हैं, तभी हम असंभव विचारों पर विश्वास करने लगते हैं, जब उनसे हमें कुछ राहत मिलने की उम्मीद हो। तुम्हारा क्या ख्याल है?'

मैंने कुछ अनमने ढंग से कहा, 'सचमुच नहीं पता। मैंने कई दिनों तक पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की, लेकिन फिर मेरी रुचि खत्म हो गई। दरअसल, मुझे लगता है कि हमारे जीवन में कई चीजें पूरी तरह से समझ से परे हैं। कोई भी उन सवालों के जवाब नहीं दे सकता। प्रार्थना की यह अवधारणा भी शायद उन्हीं में से एक है।'

'मुझे अभी तक ऐसी कोई घटना नहीं मिली है जिसे मैं समझा न सकूं,' हिरण ने लगभग आत्मसंतुष्टि से कहा।

मैं चुप रहा और हल्की सी मुस्कान दी, हिरण से बहस शुरू करने से बचता रहा। वह इतराते हुए चली गई, और ठीक उसी क्षण, पास के एक पेड़ पर बैठी एक चिड़िया ने उपहास भरी आवाज़ें निकालीं। वह आवाज़ मेरे कानों तक एक ताने की तरह पहुँची, मानो चिड़िया उस हिरण का उपहास कर रही हो जिसने हमारे जीवन में आश्चर्य के तत्व के अस्तित्व को इतनी दृढ़ता से नकार दिया था।

मैं यूं ही इधर-उधर भटक रहा था। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि महज एक हफ्ते के भीतर यह हिरण प्रार्थना में सबसे ज्यादा आस्था रखने वाला बन जाएगा।

यह मेरे जीवन के सबसे यादगार दिनों में से एक रहेगा। आज सुबह, मैंने पहली बार ऊपर से बारिश की बूँदें गिरते हुए देखीं। देखते ही देखते जंगल में एक अद्भुत बदलाव आ गया।

हवा में ठंडक थी और धरती से मदहोश कर देने वाली खुशबू आने लगी थी। पेड़ों पर बचे पत्ते हरे रंग के हो गए थे और खुशी से झूल रहे थे, मानो वे लंबे समय से बारिश के लिए तरस रहे हों।

कुछ मिनटों तक हल्की बारिश हुई, लेकिन उससे पूरा जंगल और भी हरा-भरा और तरोताज़ा दिखने लगा। बारिश की बूँदें शरीर पर गिरने के बाद मैं भला कहीं यूँ ही कैसे

बैठ सकता था?

कई जगहों पर, सूखी घास के नीचे, ज़मीन फट गई और वहाँ से चींटियों की एक पूरी सेना कतार में बाहर आ रही थी। हालाँकि उनकी संख्या बहुत कम थी, फिर भी वे सभी उत्तेजित दिख रही थीं।

शायद उन्होंने बरसात के दिनों के लिए कुछ इंतज़ाम कर रखे थे और अब ज़मीन की दरारों से रिसता बारिश का पानी उनके खाने तक पहुँच गया और उसे खराब कर दिया। अगर मेरा ध्यान एक लेटी हुई आकृति की ओर न गया होता, तो मैं चींटियों द्वारा मचाए जाने वाले हंगामे के बारे में और अधिक अध्ययन करता।

वह मुझसे मुश्किल से बीस कदम दूर था, और मुझे यह पहचानने में जरा भी समय नहीं लगा कि वह कोई और नहीं बल्कि वही हिरण था जिसने कुछ दिन पहले मेरे साथ प्रार्थना और उसकी प्रभावकारिता पर चर्चा की थी।

मेरी पहली प्रतिक्रिया यही थी कि मैं देखूँ कि वह जीवित है या नहीं। उसकी छाती की नियमित हलचल ने मेरे इस अनुमान की पुष्टि कर दी कि वह जीवित है, लेकिन उसके जबड़े के आसपास जमा झाग ने मुझे तुरंत संदेह का भाव दे दिया। अब मैंने कुछ अनोखा और भयावह देखा, और अनायास ही मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

उसकी गर्दन के पास की त्वचा को नुकीले सिरे वाली पतली बांस की छड़ी से चुभोया गया था। खून तो नहीं बह रहा था, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो चुभन से हिरण गहरी और शांतिपूर्ण नींद में सो गया हो।

बाद में मुझे पता चला कि नुकीले सिरे वाली बांस की ऐसी छड़ी को तीर कहा जाता था और इसके सिरे पर कोई शामक पदार्थ लगाया जाता था जो हमारे रक्त में पहुंचते ही हमें सुला देता था।

भय की एक लहर सी मेरी रीढ़ की हड्डी में दौड़ गई। अचानक मुझे हवा में खतरे की आहट महसूस हुई। मैंने तुरंत चारों ओर सतर्कता से नजर घुमाई। और यह पहली बार था जब मैंने उस विचित्र प्राणी को देखा जिसने बाद में कई तरह से हमारे जीवन को नियंत्रित किया।

अब तक मैंने जितने भी जानवर देखे थे, उनसे बिल्कुल अलग, यह चमत्कारिक रूप से केवल अपने पिछले पैरों पर खड़ा था। इसके चेहरे और दोनों अगले पैरों को छोड़कर, इसका पूरा शरीर किसी चीज़ से ढका हुआ था।

मुझे कैसे पता चलता कि यह किसी इंसान से मेरी पहली मुलाकात थी? धीरे-धीरे मैंने

उनमें से एक नहीं बल्कि कई को देखा, जो अपने अगले पैरों से एक अजीब सा यंत्र पकड़े हुए थे और उसे मेरी ओर ताने हुए थे। बाद में मुझे पता चला कि उनके अगले पैरों को हाथ कहते हैं।

लेकिन इससे मुझे डर नहीं लगा। शुरुआती कुछ पलों के डर के बाद, मैं फिर से अपने स्वाभाविक रूप में आ गया। आखिर, जो हिरण दो बार मौत के मुंह से बचकर निकला हो, उसे आसानी से डराया नहीं जा सकता।

मेरी निगाहें उन विचित्र प्राणियों में से एक पर टिक गईं, जो अपना यंत्र मेरी ओर ताने खड़ा था। लेकिन मुझे लगा कि उसे मेरी आँखों में देखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। बल्कि वह अपने हाथ में पकड़े यंत्र पर ध्यान दे रहा था। मुझे ज़रा भी समझ नहीं आ रहा था कि वह मुझसे सौ कदम दूर खड़ा होकर मुझे कैसे नुकसान पहुँचा सकता है। बाकी प्राणी, जो कमोबेश उसी जैसे दिखते थे, केवल दो पैरों पर खड़े थे और उत्सुकता से मुझे देख रहे थे।

हालांकि मैं इस विचित्र प्राणी को देखकर उत्सुक था, लेकिन मुझे इस जगह से भागने का मन नहीं हुआ। अचानक, दो पैरों वाले प्राणी के हाथ में पकड़े हुए यंत्र से तीर जैसी कोई वस्तु निकली और मेरी त्वचा पर जा लगी। एक पल के लिए मुझे तेज दर्द हुआ, लेकिन फिर एक सुखद चक्कर सा आ गया।

मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि होश में आने पर मैं खुद को जंगल से बहुत दूर पाऊंगा। बहुत बाद में मुझे पता चला कि इन दो पैरों वाले प्राणियों को मनुष्य कहा जाता है और वे मेरे देखे सबसे खूंखार जानवर से भी कहीं अधिक शक्तिशाली थे, हालांकि वे देखने में बिल्कुल कमजोर लगते थे।

मैं इस गंध को अच्छी तरह जानता था। यह जंगल के उस हिस्से में फैली हुई थी जहाँ शिकारी के हाथों अपने किसी करीबी साथी को खोने के बाद डरे हुए हिरणों का झुंड अक्सर इकट्ठा होता था। यह डर और बेबसी की गंध थी।

लेकिन अब इस गंध के साथ एक और दुर्गंध भी मेरी नाक तक पहुँच रही थी। यह हमारे मल-मूत्र से आ रही थी, खासकर जब कहीं भी बड़ी मात्रा में ताजा मल-मूत्र जमा हो जाता था। काश मैं कुछ देर के लिए साँस लेना बंद कर पाता।

मेरे सिर में असहनीय भारीपन था और मुझे आंखें खोलने का मन नहीं कर रहा था।

धीरे-धीरे मैंने अपने सभी अंगों को महसूस करने की कोशिश की और पाया कि उनमें एक तरह की जड़ता छाई हुई है। मैं कहां हूं? मैंने आंखें बंद रखते हुए सोचा।

अचानक मुझे एहसास हुआ कि मेरे नीचे की ज़मीन हिल रही है। इससे भी ज़्यादा हैरानी की बात यह थी कि यह हमारे जंगल की ज़मीन से बिल्कुल अलग, बहुत सख्त थी। कहीं पास ही से एक भिनभिनाहट की आवाज़ आ रही थी, जो मेरे नीचे की ज़मीन के कांपने के साथ लगभग तालमेल बिठा रही थी। मैंने सोचा, यह जंगल का कोई हिस्सा तो नहीं हो सकता, और मैं इस चक्कर आने से पहले की घटनाओं को याद करने की कोशिश कर रहा था।

पलक झपकते ही, मेरे दिमाग में कई तस्वीरें कौंध गईं, इससे पहले कि मुझे वह अजीब दिखने वाला दो पैरों वाला प्राणी याद आया जिसके हाथों में एक अनोखा यंत्र था।

एक अनकही चिंता से मेरा दिल कांप उठा और एक भयानक ख्याल मन में आया। क्या होगा अगर वे दो पैरों वाले जीव मुझे बंदी बना लें? मैंने बड़ी मुश्किल से, सुस्ती से भरी आँखों से आँखें खोलीं। मेरे चारों ओर जो कुछ मैंने देखा, उसे देखकर मेरी आँखें फटी रह गईं और मुँह खुला रह गया, मैं बुरी तरह डर गया था।

मैं एक तंग जगह में था, जो हिरणों से खचाखच भरी हुई थी, और वे सभी अभी भी सदमे से उबर नहीं पाए थे। तीन तरफ हमसे कहीं ऊंची लकड़ी की दीवारें थीं, और केवल एक तरफ की दीवार हमारी गर्दन जितनी ऊंची थी।

हालांकि यह एक साहसिक कार्य था, लेकिन अगर हम चाहते तो हम अपनी गर्दन को उस नीची लकड़ी की दीवार से बाहर निकालकर यह जान सकते थे कि हम कहाँ हैं।

इस बंद जगह में एकमात्र राहत की बात यह थी कि इसकी कोई छत नहीं थी और ऊपर देखने पर हमें बादलों से भरा आसमान दिखाई देता था। जल्द ही मुझे उस दुर्गंध का स्रोत मिल गया। इस बंद जगह में डरे हुए अधिकांश हिरणों ने शायद अनजाने में ही यहीं शौच कर दिया था।

मैंने उनके चेहरों पर सरसरी नज़र डाली। मैं उन सबको जानता था, लेकिन मौजूदा संकट ने उनके चेहरे का भाव बदल दिया था, और अचानक उनके चेहरे पर चिंता की हल्की लकीरें उभर आईं।

वे सब एक-दूसरे को चुपचाप देख रहे थे, इस उम्मीद में कि शायद हममें से कोई हमारी उलझन भरी स्थिति के बारे में दूसरों को कुछ सुराग दे दे। उनमें से अधिकतर

लगभग मेरी ही उम्र के थे, और कुछ मुझसे उम्र में काफी बड़े थे।

मैंने ऊपर आसमान की ओर देखा। आसमान के उस हिस्से को देर तक निहारते हुए मुझे एहसास हुआ कि वह हिल रहा है। यह एक बहुत ही अजीब और अद्भुत अनुभव था, क्योंकि मैंने पहले कभी आसमान को हिलते हुए नहीं देखा था। मैंने फिर चारों ओर देखा, और जैसे ही मेरी नज़र गर्दन तक ऊंची लकड़ी की दीवार पर पड़ी, मुझे उसे छूने का मन हुआ। दीवार के ऊपर बाहर देखने से ही मुझे इस बात का एक संभावित स्पष्टीकरण मिल सकता था कि आसमान पीछे की ओर क्यों हिल रहा था।

मैं किसी तरह नीचे वाली लकड़ी की दीवार तक पहुंचा और वहां पहुंचकर मैंने अपनी गर्दन बाहर निकालकर बाहर का नजारा देखा।

हम एक सुव्यवस्थित, पक्की सड़क पर चल रहे थे, जिस पर घास बिल्कुल नहीं थी। यह हमारे जंगल के संकरे रास्तों से बिल्कुल अलग थी। मेरे सामने एक मनोरम दृश्य था। सड़क के दाहिनी ओर पहाड़ी की ढलान पर घना जंगल था, और बाईं ओर एक गहरी खाई थी। मेरे सामने का यह खूबसूरत नज़ारा तेज़ी से दूर होता जा रहा था, और सड़क का घुमाव हर मोड़ पर पहाड़ी के पीछे गायब होता जा रहा था।

हवा में आने वाली बारिश और पास की पहाड़ी की वनस्पतियों और जीव-जंतुओं की महक फैली हुई थी। काफी देर तक निहारते हुए अचानक मुझे एहसास हुआ कि वास्तव में हमारे आस-पास कुछ भी नहीं हिल रहा था, सिवाय हम हिरणों के, इस बंद इलाके में। हम सब, इस सीमित जगह में, आगे बढ़ रहे थे, सब कुछ पीछे छोड़ते हुए। मैंने घुमावदार सड़क के किनारे खड़े पेड़ों को देखा और मेरे होंठों से एक संदेश निकल गया।

'मुझे चाहे जहाँ भी ले जाया जाए, अगर मैं जीवित रहा, तो एक दिन मैं आप सबके पास से गुजरते हुए अपने जंगल में वापस आऊंगा। मुझे याद रखना...'

अब मैंने अपने सभी साथियों पर एक नज़र डाली। वे सब मुझे प्रश्नवाचक दृष्टि से देख रहे थे। उनमें से मेरा ध्यान उस हिरणी पर गया जिससे मैंने कुछ दिन पहले प्रार्थना और उसकी प्रभावशीलता पर चर्चा की थी। उसके चेहरे पर हमेशा की आक्रामकता की जगह चिंता और घबराहट की लकीरें दिखाई दे रही थीं।

क्या मुझे उन्हें बताना चाहिए कि वास्तव में हम सभी को कहीं ले जाया गया है और कोई तत्काल खतरा नहीं है? मैंने सोचा और फिर एक शब्द भी न बोलने का फैसला किया। उनकी चिंता स्वयं उनके अहसास से ही दूर होगी। मेरे शब्द उन्हें केवल सतही

सांत्वना दे सकते हैं, जबकि उनकी अपनी समझ उनके भीतर कहीं अधिक गहराई तक उतरेगी।

मैंने अपनी ओर देखती उन सभी जिज्ञासु निगाहों को अनदेखा किया और गर्दन तक ऊंची दीवार के पास बैठकर बाहर की ओर ध्यान से देखने लगा। यह मेरे जीवन का पहला क्षण था जब मेरे भीतर कैद की उदासी का भाव उमड़ आया। लेकिन इस नन्हे हिरण के लिए अभी और भी कई आश्चर्य इंतजार कर रहे थे। जल्द ही मुझे पता चला कि जिस मशीन में हम सवार थे उसे पशु वैन कहते हैं और जिस जगह को हम अपना अगला घर बनाने वाले थे उसे चिड़ियाघर कहते हैं।

हालांकि, चिड़ियाघर की हमारी यात्रा आसानी से समाप्त नहीं हुई, और रास्ते में कुछ और छोटी-छोटी घटनाएं घटीं जो लंबे समय तक मेरी स्मृति में अंकित रहेंगी।

बाद में उन घटनाओं को याद करते हुए मुझे एहसास हुआ कि प्रकृति और जीवन हमेशा हमें आने वाले दिनों में हमारे जीवन में घटने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं के संकेत देते हैं। लेकिन हम अक्सर उन संकेतों और सुरागों को समझने में असफल रहते हैं, क्योंकि हमारा मन हमेशा कहीं और ही लगा रहता है।

अब से मैं उस दो पैरों वाले प्राणी को पुरुष कहूँगी। मुझे नहीं पता था कि जल्द ही मैं एक ऐसी दुनिया का हिस्सा बन जाऊँगी जहाँ पुरुषों की संख्या हमसे कहीं अधिक होगी।

अचानक पशुओं को ले जाने वाली वैन रुक गई। वैन के चलते समय नीचे से आ रही भिनभिनाहट की आवाज़ भी बंद हो गई।

हममें से लगभग सभी को आशंका थी कि अब कुछ अप्रिय घटना घटेगी और हम सब गर्दन तक ऊंची दीवार को भयभीत होकर देख रहे थे; हमारे चेहरे तनावग्रस्त और पीले पड़ गए थे। भूख ने हम सब पर अपना साया डालना शुरू कर दिया था।

कुछ ही पल बीते थे कि बाहर से भूसे के दो गट्ठे इस बंद जगह में फेंक दिए गए। मैंने बाहर किसी को एक अनजान भाषा में बात करते सुना। मैंने बाहर देखा। वहाँ दो आदमी थे। एक लंबा और दाढ़ी वाला था, और दूसरा मध्यम कद का और हट्टा-कट्टा था। वे दोनों सड़क किनारे खड़े होकर पेशाब कर रहे थे। फिर वे सड़क किनारे एक बड़े पत्थर पर बैठ गए और एक पतली सी पाइप पीने लगे, जिसे बाद में मुझे पता चला

कि बीड़ी कहते हैं।
अब मेरा ध्यान भूसे के गट्ठों पर गया। सूखी घास हमेशा हमारी खाने की आखिरी पसंद होती थी, लेकिन अब सारे हिरण उसे ही खा रहे थे। अचानक कहीं से एक चिड़िया आई और हमारे छोटे से कमरे की दोनों तरफ की ऊंची दीवारों को जोड़ने वाले लोहे के डंडे पर बैठ गई। मैंने पहले कभी इतनी रंगीन चिड़िया नहीं देखी थी। उसकी लंबी लाल पूंछ और नुकीली टेढ़ी चोंच थी।
जब मेरे सभी साथी घास चरने में व्यस्त थे, तब मेरी निगाहें उस पक्षी पर टिकी थीं। अचानक उसने अपनी गर्दन घुमाई और उसकी नज़रें मुझसे मिलीं। मुझे नहीं पता कि मुझ पर क्या बीता, लेकिन मैं अपनी नज़रें उसकी आँखों से हटा नहीं सका। उसकी आँखों में एक रहस्यमय आकर्षण था। अब उसने अपने पंख फड़फड़ाए। उसके पंखों में अनेक रंग इस तरह घुलमिल गए कि वे उसके सबसे आकर्षक अंग बन गए।
अचानक चिड़िया थोड़ी सी उड़ी और मेरी पीठ पर बैठ गई। अपने नुकीले और तेज़ पंजों से उसने मेरी पीठ को पकड़ लिया और वहीं बैठी रही। मैं आसानी से खुद को ज़ोर से हिला सकता था, जिससे चिड़िया मेरी पीठ से उड़ जाती। लेकिन एक धारणा, भले ही निराधार हो, मेरे मन में घर कर चुकी थी। वह शानदार दिखने वाली चिड़िया अचानक किसी संदेश और उद्देश्य के साथ पशु-वाहन के पास पहुँच गई थी।
तब तक दोनों आदमी बीड़ी पी चुके थे। वे उठे और हमारे बंद कमरे के पास से गुज़र गए। बाद में, ऐसी गाड़ी को कई बार देखने के बाद मुझे पता चला कि उसमें आगे की तरफ एक कैबिनेट लगा होता था, और उसके अंदर बैठकर एक आदमी वैन को नियंत्रित करता था। वैन के नीचे लगे तीन पहियों के जोड़े ड्राइवर द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते थे।
अब वैन में जान आ गई और वह आगे बढ़ने लगी, जंगल, पहाड़, घुमावदार रास्ते और घाटी सब कुछ पीछे छूटते चले गए। बस ऊपर बादलों से भरा आसमान और मेरी पीठ पर बैठी चिड़िया ही हमारे साथ बनी रही।
धीरे-धीरे मेरे सभी साथियों को नींद आ गई, लेकिन मैं पूरी तरह से जागा हुआ और सतर्क था क्योंकि मुझे पक्षी के संकेत की प्रतीक्षा थी। धीरे-धीरे जंगल कम घना होता गया, पहाड़ी मैदान में बदल गई, और मैंने आसपास अधिक संख्या में लोगों को देखा। उनमें से कुछ हिरणों से लदी वैन पर उत्सुकता भरी निगाहें डाल रहे थे।
मुझे अपनी पीठ पर कुछ हलचल महसूस हुई, जो धीरे-धीरे मेरी गर्दन तक पहुँच रही

थी। चिड़िया अब मेरी गर्दन के पिछले हिस्से पर बड़ी मुश्किल से बैठी थी। उसने अपनी चोंच मेरे कान के पास लाकर एक चीख निकाली। उसकी चीख में इतनी जीवंतता और ऊर्जा थी कि एक पल के लिए मैं सब कुछ भूल गया।

कुछ क्षणों का सन्नाटा छा गया, और फिर चिड़िया ने दोबारा आवाज़ लगाई। चिड़िया ने तीन बार आवाज़ लगाई, दो आवाज़ों के बीच गहरा सन्नाटा छा गया। हर आवाज़ दिलासा देने वाली और सुकून देने वाली थी, मानो वह मुझे बता रही हो कि इस दुनिया में कोई भी चिंता स्थायी नहीं है और जल्द ही मैं उस चिंता और दर्द से उबर जाऊँगा जिसने मुझे अभी जकड़ रखा है।

हालांकि, काफी समय बाद मुझे एहसास हुआ कि मेरे कान के पास बार-बार आ रही चिड़िया की आवाज का कहीं अधिक गहरा अर्थ था। तभी चिड़िया अचानक उड़ गई और सड़क के किनारे पेड़ों के पीछे गायब हो गई।

कुछ देर बाद, जानवरों को ले जाने वाली वैन अचानक ब्रेक लगाकर रुक गई। वैन के अचानक रुकने से सभी हिरण नींद से जाग गए और विरोध में एक साथ चीखने लगे। लेकिन हमारी इस आवाज़ पर ध्यान देने वाला कौन था? हमने वैन में बैठे दोनों आदमियों को एक आदमी से बात करते सुना। उनकी बातचीत के बाद एक भारी धातु की आवाज़ आई और वैन फिर से आगे बढ़ गई। वैन के आगे बढ़ते ही मैंने अपने पीछे एक ऊँचा गेट बंद होते देखा। मैं समझ गया कि वह धातु की आवाज़ गेट के खुलने और बंद होने से आ रही थी।

वैन साफ-सुथरी लेकिन संकरी सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी, जिसके दोनों ओर करीने से छंटे हुए पेड़ थे। पेड़ों की कतारों के पीछे, सड़क के दोनों ओर करीने से सजे खेत थे, जो हमारे जंगल के घास के समतल मैदान से बिल्कुल अलग थे। यहाँ घास छोटी-छोटी थी, और खेत के कई हिस्सों में एक अजीब सा यंत्र लगा था जो चारों ओर पानी छिड़क रहा था। तभी मैंने दो आदमियों को घास पर एक बेलनाकार वस्तु को धकेलते हुए देखा, और वह वस्तु घास पर से कटी हुई निकली।

हालांकि इससे बगीचा साफ-सुथरा दिखता था, लेकिन घास मुरझाई हुई सी लगती थी। नियमित रूप से छंटाई करने के बावजूद हवा चलने पर वे मुश्किल से ही हिल पाती थीं।

वैन ने अब मोड़ लिया और एक छायादार जगह पर रुक गई। मैंने चारों ओर का जायज़ा लेने के लिए बाहर झाँका, क्योंकि मुझे लगा कि हमें यहीं वैन से उतरना

पड़ेगा। हमारे सामने पेड़ों से घिरा एक विशाल भूभाग था। यहाँ की घास लॉन की तरह कटी हुई नहीं थी। यह जगह हमारे निवास स्थान से कुछ-कुछ मिलती-जुलती थी।
दरअसल, मैंने अभी तक यह नहीं देखा था कि यह भूमि, हालांकि विशाल है, इसमें कुछ जगहों पर लोहे की बाड़ लगी हुई है, जो पेड़ों के पीछे आंशिक रूप से छिपी हुई है, और जो पूरी हरी-भरी भूमि को कुछ छोटे-छोटे भूखंडों में विभाजित करती है।
अचानक वैन की गर्दन तक ऊंची लकड़ी की दीवार खुल गई, और हमने देखा कि कुछ आदमी खुले हिस्से के दोनों ओर खड़े थे, मानो वे हमारे आगे बढ़ने का रास्ता तय कर रहे हों। हर तरफ एक आदमी के हाथ में एक छड़ी थी और वह कभी-कभी उसे अपने सामने ज़मीन पर पटक रहा था, मानो हमें यह संदेश दे रहा हो कि अगर हमने उसकी बात नहीं मानी तो वह हमें बुरी तरह पीटेगा।
किसी ने बाहर से वैन की दोनों ऊंची दीवारों पर जोर से दस्तक दी, मानो हमें वैन खाली करने का इशारा कर रहा हो। सारे हिरण एक-दूसरे को असमंजस भरी निगाहों से देख रहे थे, यह तय नहीं कर पा रहे थे कि पहले कौन उतरेगा। बल्कि वे सब खुले द्वार से दूर जाने की कोशिश कर रहे थे, मानो यह तंग और बंद जगह दुनिया की सबसे सुरक्षित जगह हो।
बिना सोचे समझे, मैं वैन से कूद गया और एक गेट से होते हुए उस ज़मीन पर पहुँच गया जिसे मैं जानता था कि अब से वही मेरा घर होगा। कुछ और छोटे हिरण भी मेरे पीछे-पीछे आए, लेकिन कम से कम दस हिरण उतरने में आनाकानी कर रहे थे। लकड़ी की दीवारों पर एक बार फिर से थपथपाहट की गई, ताकि हिरण वैन से उतर जाएँ। लेकिन डर से काँपते हुए वे इस आदेश को समझ नहीं पाए।
अब छड़ी पकड़े हुए लोगों में से एक ने एक युवक को इशारा किया, जो किसी निर्देश की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था, कि वह जानवरों के वाहन के पिछले डिब्बे में भयभीत होकर खड़े हिरण को सबक सिखाए।
युवक तुरंत डिब्बे में कूद गया और एक-एक करके हिरणों को उनकी गर्दन से पकड़कर बाहर खींचने लगा। संभवतः उसका इरादा उन्हें नीचे उतारने के लिए बल प्रयोग करने का नहीं था, लेकिन उनकी स्पष्ट अनिच्छा ने उसे कोई विकल्प नहीं छोड़ा।
कुछ ही देर में सारे हिरण चुपके से अपने नए घर में घुस गए। जैसे ही उन्हें अपने सिर के ऊपर पत्तों की छांव मिली, उनमें से अधिकतर ज़मीन पर गिर पड़े। यहाँ की ज़मीन नरम थी, और घास भी। मैंने अपने लगभग सभी साथियों को गहरी साँसें लेते देखा,

मानो वे अभी-अभी मौत के मुँह से वापस आए हों। अभी तक उनमें से किसी को भी यह नहीं पता था कि उन्हें आज सुबह से इतने लंबे कष्ट से क्यों गुज़रना पड़ा।
मुझे अपने बाकी साथियों से कम चिंता है, शायद इसलिए क्योंकि मुझे पहले से ही कुछ अंदाजा है कि अचानक हमें क्यों पकड़ा गया और इस जगह पर लाया गया है। लेकिन अपनी बात को पुख्ता करने के लिए, सबसे पहले मुझे उस जगह के चारों ओर घूमना पड़ा जो अब से हमारा घर होगा।

अध्याय 7

जीवन के साथ एक प्रेम संबंध

जीवन के सबक हमेशा हमारे रास्ते में बिखरे होते हैं। हमें बस उन्हें देखने के लिए आंखें और उन्हें महसूस करने के लिए दिल चाहिए।

दोपहर ढल रही थी। हालांकि बादलों से घिरे आसमान ने सूरज को ढक रखा था, लेकिन मेरी जैविक घड़ी के अनुसार मैं आसानी से समझ सकता था कि दिन का कौन सा समय है। मैंने अपना सिर घुमाकर हमारे पीछे वाले गेट की ओर देखा। हम सबके अंदर आने के बाद गेट को बाहर से बंद कर दिया गया था। गेट लंबा था और उसके ऊपर धातु के तीर लगे थे, जो ऊपर की ओर इशारा कर रहे थे, मानो गेट पार करने की हिम्मत करने वाले किसी भी व्यक्ति के अंगों को चीर देने की धमकी दे रहे हों। गेट के दूसरी तरफ से आसानी से देखा जा सकता था क्योंकि वह पतली धातु की पट्टियों का जाल था। उस पर चढ़ना नामुमकिन था।

मैं तार की बाड़ के किनारे-किनारे चलता रहा, यह जानते हुए कि बाड़े की सीमा के साथ-साथ चलने से मैं वहीं पहुँच जाऊँगा जहाँ से मैंने शुरुआत की थी। अब मैंने अपने शरीर से बाड़ को छुआ। छूने पर वह ठंडी थी। मैंने उसे अपने शरीर से दबाने की कोशिश की। लचीली तार की बाड़ मेरे द्वारा लगाए गए दबाव को सोखने के लिए थोड़ी सी हिली, फिर स्थिर हो गई, जिससे मुझे यह एहसास हुआ कि हज़ारों हिरणों का दबाव भी उसे झुकाने के लिए पर्याप्त नहीं है।

मैंने तार की बाड़ से अपना संपर्क हटाया और देखा कि वह अपनी मूल जगह पर लौट आई है। तार की जाली से मुझे बाड़ के दूसरी तरफ का स्पष्ट दृश्य दिखाई दे रहा था। वह भी घास का एक टुकड़ा था, लेकिन वहाँ कोई जीव-जंतु दिखाई नहीं दे रहे थे।

मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा। जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि यह छोटा सा जंगल जैसा इलाका आयताकार था, और इसी तरह के कई बाड़े, तार की बाड़ों से घिरे हुए, यहाँ मौजूद थे। हवा चल रही थी, हमारे आस-पास के पेड़ सरसरा रहे थे और उनके पुराने पत्ते, जिनकी हरी चमक और चिकनी बनावट फीकी पड़ चुकी थी, उड़कर धरती पर गिर रहे थे।

अचानक मुझे अपना जंगल याद आ गया, जहाँ मैंने अनगिनत बार तेज़ हवा की ऐसी चंचलता देखी थी। एक पल के लिए, मुझे भ्रम हुआ और लगा कि यह जगह भी मेरे जंगल जैसी है। मैंने गहरी साँस ली और एक ऐसा झटका लगा जिससे मेरा मन तुरंत उदास हो गया। यहाँ की हवा की गंध हमारे जंगल की सुगंधित हवा से कितनी अलग थी। यह कैसी गंध है? मैंने खुद से सवाल किया और पूरी जागरूकता के साथ धीरे-धीरे गहरी साँस ली। यह मेरी माँ द्वारा सिखाई गई सबसे अनमोल सीखों में से एक थी। अगर किसी काम में लग जाते ही आपके मन में भ्रम और संदेह के बादल छा जाएँ, तो

अपनी गति धीमी कर दें और हर छोटे काम को अधिक ध्यान और जागरूकता के साथ करें।

और फिर कुछ ही समय में आपके मन से संदेह और भ्रम के बादल छंट जाएंगे।

मैंने इसे एक अनमोल सबक कहा क्योंकि जब भी मैंने इसकी प्रभावशीलता के साथ प्रयोग करने की कोशिश की, मुझे सफलता मिली।

हवा सुहावनी थी, फिर भी उसमें कुछ ऐसी कमी थी जिसे महसूस नहीं किया जा सकता था। मैं बस इतना ही कह सकता था कि जंगल की हवा कहीं अधिक जीवंत और स्फूर्तिदायक थी। अब मैं अपने वर्तमान निवास के दूसरे छोर पर पहुँचा और वहाँ मुझे लगभग सुनसान पानी का एक तालाब मिला।

पानी पर काई की एक परत जमी हुई थी और उस पर कुछ पत्ते तैर रहे थे। तालाब चौकोर आकार का था और कृत्रिम रूप से बनाया गया था। उसके एक कोने से पाइप जैसी किसी चीज से पानी की बूंदें तालाब में गिर रही थीं।

पानी की गिरती बूंदों से उसके चारों ओर छोटी-छोटी लहरें बन रही थीं, जहाँ काई नहीं पहुँच पा रही थी। बाद में मुझे पता चला कि इस उपकरण को नल कहते हैं और यह पानी का कुंड साल भर हमारी प्यास बुझाने के लिए और गर्मियों में ठंडक पाने के लिए डुबकी लगाने के लिए उपलब्ध रहता है।

मैं आगे बढ़ता गया, यह जानते हुए कि मुझे अपने वर्तमान घर के हर पहलू को जानने-समझने के लिए असीमित समय मिलेगा।

फिलहाल, मेरा उद्देश्य यह पता लगाना होना चाहिए कि क्या यह जगह वास्तव में हमारे रहने लायक है। मैंने अपने नए घर के चारों ओर लगी तार की बाड़ का निरीक्षण किया। वे सभी एक जैसी थीं।

यहां के पेड़ रणनीतिक रूप से लगाए गए प्रतीत हो रहे थे क्योंकि वे ज्यादातर तार की बाड़ के किनारे ही दिखाई दे रहे थे। जल्द ही मैं उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ से मैंने कुछ देर पहले अपनी यात्रा शुरू की थी। मैंने अपने साथी हिरणों पर एक नज़र डाली। वे इस घने पत्तों वाले स्थान के बीच में एक साथ huddled थे। शाम ढल रही थी और आश्चर्यजनक रूप से, हिरणों के ऊपर और आसपास का अंधेरा आसपास के अन्य स्थानों की तुलना में अधिक घना था।

कुछ आश्चर्यचकित होकर मैंने उन्हें दोबारा देखा और एक ऐसी बात देखकर दंग रह गया जिसे मैंने अब तक नज़रअंदाज़ कर दिया था। जिस जगह वे पास-पास बैठे या

खड़े थे, वह आयताकार थी और उसके नीचे एक उठा हुआ आधार था।
यह स्थान एक सुरक्षित आश्रय का वादा करता था क्योंकि इसके ऊपर नालीदार चादरें बिछी हुई थीं, जो संभवतः किसी धातु की बनी थीं, और चारों तरफ नीचे की ओर झुकी हुई थीं, जिन्हें चारों कोनों पर ऊंचे सहारे द्वारा सहारा दिया गया था, जो कि लकड़ी के लट्ठों के अलावा और कुछ नहीं थे।
उस शेड का उद्देश्य क्या हो सकता है? मैं सोचता हुआ धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा। वहाँ पहुँचकर मैंने अपना दाहिना अगला पैर उस घुटने से भी कम ऊँचे चबूतरे पर चढ़ने के लिए उठाया, लेकिन मेरा पैर कुछ बाधाओं से टकरा गया। पूरी तरह से अचंभित और हताश होकर, मैं यह समझने की कोशिश करने लगा कि आखिर किस चीज़ ने मुझे उस ऊँचे स्थान तक पहुँचने से रोक रखा था।
कुछ पल बीतते-बीतते मुझे समझ आया कि इस आश्रय स्थल की तीनों तरफ़ किसी पारदर्शी पदार्थ से ढकी हुई थी, और केवल एक तरफ़ ही एक दरवाज़ा था जिससे हम अंदर जा सकते थे। लेकिन इस खोज से मेरी जिज्ञासा ज़रा भी कम नहीं हुई।
मैं उछलते हुए ऊंचे इलाके की ओर बढ़ा। सारे हिरण मुझे सवालिया निगाहों से देख रहे थे, और शायद थोड़ा विनती भरे अंदाज़ में भी, जैसा कि मैंने सोचा। उन्होंने मुझे इस इलाके की तार की बाड़ पर चलते हुए ज़रूर देखा होगा। हालाँकि उनमें से किसी ने भी मेरे साथ आने की इच्छा नहीं जताई, फिर भी वे सब जानना चाहते थे कि मैंने इस जगह के बारे में क्या खोजा और सीखा है।
क्या मुझे उन्हें इस जगह के बारे में अपनी खोज बतानी चाहिए? क्या इससे उन्हें कोई मदद मिलेगी? मैं सोच में पड़ गई और फिर मुझे लगा कि शायद मेरे शब्द उनके दिलों में कुछ उम्मीद और हिम्मत जगा सकें। मैंने उन सभी पर चिंता भरी नज़र डाली और अचानक मुझे एक बात समझ में आई। यहाँ मौजूद हर कोई उस प्रार्थना में शामिल था जो हमने कुछ दिनों पहले की थी, जब शिकारी जानवरों ने हम सबको बुरी तरह डरा रखा था।
हम सभी, जिनमें मैं भी शामिल हूं, जंगल से दूर एक ऐसी दुनिया का हिस्सा बनना चाहते थे जहां हमारी सुरक्षा की गारंटी हो, जहां भोजन की कमी न हो, जहां हमें अपने प्रियजनों का खून बार-बार न देखना पड़े, जहां हमें बार-बार अपनी कमजोरी और नश्वरता की याद न दिलाई जाए।
खैर, हमारा यहाँ पहुँचना, भले ही थोड़ा जबरदस्ती से हुआ हो, एक तरह से हमारी

प्रार्थना के सच होने जैसा था। फिर भी, विडंबना यह थी कि हम सभी दुख की स्थिति में थे।

मैंने आश्रय के एक कोने में पड़े आधे खाए हुए भूसे के गट्ठे पर एक नज़र डाली और गहरी आह भरी। मुझे भी इसे खाना पड़ेगा, हालाँकि जंगल में इस तरह की सूखी घास खाना सबसे कम पसंद किया जाता है। लेकिन अपना पेट भरने से पहले, मुझे उनमें आशा और साहस भरना होगा, मैंने सोचा और बोलना शुरू किया, सभा में मौजूद सभी लोगों की ओर देखते हुए ताकि किसी को यह न लगे कि मैं उपेक्षित हूँ।

'मुझे लगता है कि हम सब यहाँ सुरक्षित हैं। मुझे नहीं पता कि हमें क्यों पकड़ा गया और यहाँ लाया गया है, लेकिन मैं आपको इतना आश्वासन दे सकता हूँ कि यह स्थान वह सुरक्षा प्रदान करता है जो हमारा जंगल कभी नहीं दे सकता।'

'आपको ऐसा क्यों लगता है?' यह सवाल लगभग सभी हिरणों ने एक साथ पूछा।

क्योंकि मुझे लगता है कि हमें यहाँ मारने के लिए नहीं लाया गया है। यहाँ पानी का एक कृत्रिम कुंड है ताकि हम हमेशा पानी पी सकें, चाहे गर्मी हो या सर्दी।

इस जगह के चारों ओर एक मजबूत तार की बाड़ लगी है ताकि कोई दूसरा जानवर अंदर न आ सके, और ज़ाहिर है, ताकि हम भी बाहर न जा सकें। तार की बाड़ बहुत ऊंची है इसलिए यहां से भागना लगभग नामुमकिन है,' मैं रुका और अपने श्रोताओं के चेहरों पर शांति का भाव देखकर मुझे खुशी हुई। उन्हें अगला सवाल पूछने का मौका दिए बिना, मैंने फिर बोलना शुरू किया, 'एक और बात, मुझे नहीं लगता कि यहां हमें खाने की कमी होगी, क्योंकि मेरी समझ से हमारे बंदी बनाने वाले चाहते हैं कि हम मजबूत और स्वस्थ रहें।'

'लेकिन क्यों? वे हम सबको एक-एक करके खा सकते हैं। हो सकता है यह हमारे लिए बनाया गया एक अस्थायी आश्रय हो,' एक युवा हिरण ने संदेहपूर्वक पूछा; उसकी छोटी पूंछ अधीरता से हिल रही थी।

'नहीं, ऐसा नहीं हो सकता,' मैंने शांत भाव से उत्तर दिया। 'अगर उनकी हमें मारने की योजना होती, तो हमें रहने के लिए यह आरामदायक झोपड़ी नहीं दी जाती। मुझे लगता है कि यह हमारी सुविधा के लिए है।'

लेकिन हमें खुली जगह में रहने की आदत है जहाँ धूप आती है। हमें कभी भी अपने सिर पर छत की ज़रूरत महसूस नहीं हुई। वैसे भी हमें इसकी ज़रूरत क्यों है?

मैं एक उपयुक्त जवाब ढूंढने की कोशिश कर ही रहा था कि अचानक हल्की-हल्की

बारिश शुरू हो गई। सहज ही सभी हिरण इधर-उधर भागने लगे, मानो किसी घने पेड़ के नीचे जाना चाहते हों जहाँ बारिश उन्हें आसानी से भिगो न सके। लेकिन फिर उन्हें एहसास हुआ कि जब तक वे इस छोटे से घर से बाहर नहीं निकलेंगे, बारिश की एक बूँद भी उन तक नहीं पहुँचेगी। इतना ही नहीं, यहाँ से हम इस जगह की पारदर्शी दीवारों से बारिश की बूंदों को नीचे बहते हुए देख सकते थे। देखते ही देखते हल्की बारिश तेज बारिश में बदल गई और बारिश की बूँदें पारदर्शी दीवारों पर पड़ने लगीं।

बारिश ने मेरे सभी साथियों के जीवन में अचानक और चमत्कारिक बदलाव ला दिया। वे सभी राहत और उत्साह से भरे हुए लग रहे थे। हममें से किसी के साथ ऐसा कभी नहीं हुआ था कि बारिश में हम भीगे न हों। मेरी माँ अक्सर मुझसे कहती थीं कि बरसात के दिनों में हमारा सबसे पहला लक्ष्य ऐसी जगह खोजना होता था जहाँ हम सबसे कम भीगें। इसलिए, ऐसी जगह खोजना जहाँ से हम बारिश को देख सकें और बिल्कुल भी भीगे न हों, हमारी कल्पना से परे था।

शाम ढल रही थी, और चारों ओर अलग-अलग पेड़ों और लंबे खंभों की काली परछाइयाँ छाई हुई थीं, जो उस सड़क के किनारे खड़े थे जो हमें यहाँ तक ले आई थी। ये लंबे खंभे बिना शाखाओं वाले चीड़ के पेड़ों जैसे दिख रहे थे, हालाँकि मुझे पक्का पता था कि वे पेड़ नहीं थे। खंभों के हर जोड़े के बीच की दूरी बराबर थी, और मैं समझ नहीं पा रहा था कि वे यहाँ किस काम के लिए लगे थे। लगभग उसी क्षण, हर खंभे के ऊपर लगी कोई गोलाकार वस्तु, मानो उसका इकलौता फल हो, एक खामोश धमाके के साथ हरकत में आई और चमकने लगी। हर गोलाकार वस्तु से निकलने वाली रोशनी चारों ओर फैल गई, जिससे सड़क रोशन हो गई। कुछ रोशनी हमारे घर तक भी पहुँची, जिससे घर पर परछाइयाँ बन गईं, जो हवा के चलते खुशी से झूम रही थीं।

अचानक मेरी नज़र ऊपर उन खंभों के पास गिरती बारिश की बूंदों पर पड़ी, जिनके ऊपर एक चमकता हुआ गोला लगा था। बारिश की हर बूंद उस चमकते गोले की रोशनी में एक पल के लिए जगमगा उठी, फिर सड़क ने उसकी क्षणिक सुंदरता को ओझल कर दिया। मंत्रमुग्ध होकर मैं काफी देर तक बारिश को देखता रहा, जो लयबद्ध और मधुरता से गिरती रही।

मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि बारिश की हर बूंद में इतनी सुंदरता समाई होती है। लेकिन आज रात उन खंभों के ऊपर चमकते इन गोलों की बदौलत, मैं बारिश की

ऐसी रहस्यमयी सुंदरता का साक्षी बन सका, ऐसा महसूस कर सका कि बारिश की हर बूंद अपने आप में जीवित है और गिरती हुई बारिश द्वारा रचित भावपूर्ण संगीत में सक्रिय रूप से भाग ले रही है।

मुझे पता था कि इन चमकते गोलों वाले खंभों का आविष्कार उन दो पैरों वाले प्राणियों, यानी इंसानों ने किया था, जिन्होंने हमें यहाँ कैद करने में अहम भूमिका निभाई थी। यह आश्रय, यह कृत्रिम पानी का कुंड, यह तार की बाड़—ये सब उन्हीं का आविष्कार होना चाहिए, मैंने सोचा और अचानक इंसानों के प्रति श्रद्धा से भर गया।

अब मैंने अपने सभी साथियों पर ध्यान दिया। वे सभी बाहर गिरती बारिश को विस्मय से देख रहे थे। धीरे-धीरे उनके चेहरों पर एक अजीब सा बदलाव आया। चिंता, घबराहट और बेबसी की जगह राहत का भाव आ गया। बाहर बरसती बारिश ने उन्हें यह दृढ़ विश्वास दिलाया कि वे यहाँ कहीं अधिक सुरक्षित हैं।

फिर भी उनके चेहरों पर 'संदेह', 'क्यों' और 'क्या होगा अगर' के भाव झलक रहे थे। संदेह, जिसका पसंदीदा काम हमारे मन को उलझन में डालना है, विश्वास और प्रेम के सामने आसानी से हार नहीं मानता और अपनी आखिरी सांस तक लड़ता है। हालांकि, बाद में मुझे पता चला कि हमारे मन पर छाए संदेह के बादल को दूर करने का एकमात्र साधन समय और जागरूकता है। जैसे-जैसे मेरी यह अनोखी कहानी आगे बढ़ेगी, यह अपने आप स्पष्ट हो जाएगी कि मैं इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचा।

कुछ समय बाद बारिश रुक गई, अचानक नहीं, बल्कि धीरे-धीरे, ठहरते हुए, मानो धरती पर सभी जीवित और मृत प्राणियों को यह बता रही हो कि जल्द ही वह फिर आएगी, जल्द ही वह उन सभी को फिर से ताज़ी बारिश की बूंदों से नहलाएगी, और उन्हें जीवन, आनंद और शांति से भर देगी।

बारिश रुकते ही, तार की बाड़ के किनारे उगी छोटी-छोटी झाड़ियों में से झींगुर और छिपकलियाँ हरकत में आ गईं। उनकी फुफकारती आवाज़ों के बीच-बीच में मेंढकों की टर्राहट सुनाई देती थी। कभी-कभी उनकी गूंजती हुई आवाज़ें लंबी होती थीं और कभी-कभी एक साथ सुनाई देती थीं।

वे क्या कहना चाह रहे हैं? क्या वे बारिश से बात कर रहे हैं, क्योंकि बारिश शुरू होने से पहले मैंने उनकी टर्राहट नहीं सुनी थी? क्या वे बारिश का स्वागत कर रहे हैं, उसे बार-बार आने का न्योता दे रहे हैं? या फिर वे बारिश को कोस रहे हैं क्योंकि उसने उनके घरों को रहने लायक नहीं छोड़ा? मैं मन ही मन मुस्कुराते हुए सोच रहा था,

क्योंकि मुझे पता था कि मेंढकों की टर्राहट का रहस्य मेरे लिए हमेशा एक रहस्य ही रहेगा।

पास के खंभों से आती रोशनी हमारे घर में प्रवेश कर रही थी, और ऊंचे पेड़ों की गीली पत्तियां जैसे ही उस रोशनी को ग्रहण कर रही थीं, मानो खुशी से खिलखिला रही हों। वे सभी अब हरे-भरे और चमकदार दिख रहे थे।

हल्की-हल्की हवा चलने लगी, जो अक्सर तेज़ बारिश के बाद चलती है, और इसका हम सब पर नींद लाने वाला असर हुआ। हम सब वहाँ पड़े भूसे पर लेट गए और बेफिक्र होकर गहरी नींद में सो गए। इस तरह कैद में हमारी पहली रात गुज़री।

कोयल की मधुर आवाज से मेरी नींद खुली और कुछ क्षणों के लिए मुझे लगा जैसे मैं जंगल में हूँ। सूरज अभी-अभी उग रहा था, आसमान के पूर्वी किनारे को सुनहरी रोशनी से जगमगा रहा था। हमारे चारों ओर का अंधेरा छंट रहा था और आसपास के पेड़ अनिच्छा से जागते हुए प्रतीत हो रहे थे। अब मेरी नज़र उसी झोपड़ी के नीचे सो रहे मेरे सभी दोस्तों पर पड़ी और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मुझे पिछले दिन की लंबी पीड़ा याद आ गई और यह भी कि अब हम सब कैद में थे। कोयल ने फिर पुकारा, एक प्रेम भरी और जोशीली पुकार। यह कोयल इतनी चंचल क्यों है? क्या इसे कैद का एहसास परेशान नहीं करता? मैंने एक पल सोचा और फिर याद आया कि कोयल हमारी तरह कैद में नहीं है। किसी भी क्षण वह इस तार की बाड़ के अंदर या बाहर किसी भी पेड़ पर उड़ सकती है।

मैं वहीं लेटा रहा और देखता रहा कि दूसरे हिरण नींद से जाग रहे हैं और इस नई जगह पर आकर अचानक चौंक रहे हैं। सूरज थोड़ा और ऊपर चढ़ चुका था, लेकिन अब उसकी चमक इतनी तेज़ नहीं थी कि उसे देखा न जा सके।

मैं उसे कुछ देर तक निहारती रही, मुझे याद आया कि मेरी माँ ने मुझे रोज़ सूर्योदय और सूर्यास्त के कारण के बारे में क्या बताया था। एक बार फिर, माँ से हमेशा के लिए बिछड़ जाने का दर्द मेरे दिल में चुभ उठा। मैं जानती थी कि मुझे इस दर्द के साथ अपनी मृत्यु तक जीना होगा।

अचानक मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। कोई पशु वाहन या उससे मिलता-जुलता कोई दूसरा वाहन सड़क पर चलते समय ऐसी ही घरघराहट की आवाज़ करता है। मैंने

सड़क पर नज़र डाली और पाया कि एक बड़ा वाहन हमारे घर के गेट के पास रुका है। एक हट्टा-कट्टा आदमी वैन से बाहर निकला और उसके पीछे की तरफ गया। कुछ पल बाद उसने उसमें से भूसे का एक लंबा गट्ठा निकाला। उसने गेट खोलने की ज़हमत नहीं उठाई और पूरी ताकत से भूसे का गट्ठा गेट के ऊपर से फेंक दिया। उसकी ताकत उसके हट्टे-कट्टे शरीर के अनुरूप ही थी। भूसे का गट्ठा एक पल के लिए हवा में उछला और एक परवलयिक चाप बनाते हुए धड़ाम से शेड के पास गिर गया।

सभी हिरणों ने उस पर एक नज़र डाली और उनके चेहरों पर राहत के भाव आ गए। थोड़ी देर में, वैन के आगे बढ़ने से पहले, भूसे के दो और ढेर पहले वाले के पास आ गए। जैसे ही वैन थोड़ी दूर गई, वह डिब्बा दिखाई दिया जहाँ से भूसे के गट्ठे हम पर फेंके गए थे, और मैं वहाँ भूसे के कई और ढेर देखकर चकित रह गया। अब मैंने वैन के रुकने की घरघराहट सुनी। थोड़ी देर बाद फिर वही आवाज़ सुनाई दी और फिर धीमी पड़ गई। मेरे मन में एक अजीब सा विचार आया। क्या इसका मतलब यह है कि वैन कहीं आस-पास रुकी है ताकि किसी और जानवर को भूसे के कुछ और ढेर बाँट सके? क्या इसका मतलब यह है कि हम ही यहाँ अकेले बंदी जानवर नहीं हैं? मैंने सोचा।

तब तक बाकी सभी हिरण छोटे-छोटे समूहों में हमारे घर के आसपास फैल चुके थे, ताकि वे अपने-अपने तरीके से इस जगह का पता लगा सकें और शायद कल शाम इस जगह के बारे में मेरी बातों की सच्चाई की पुष्टि भी कर सकें। मुझे उनमें से किसी के साथ जाने का मन नहीं हुआ और मैं शेड के अंदर बैठकर इधर-उधर उड़ते पक्षियों को देखता रहा। शायद आज़ादी सिर्फ उन्हीं के लिए है जिनके पास उड़ने के लिए पंख हैं, मैंने सोचा जब मैंने एक तोते को असामान्य रूप से लंबी पूंछ के साथ पेड़ की एक शाखा पर बैठे देखा। वह पूरी एकाग्रता से उसी शाखा पर किसी चीज़ को देख रहा था। और फिर अचानक ही उसने अपनी चोंच से कुछ पकड़ा और उड़ गया, तार की बाड़ वाले इलाके से निकलकर सड़क के दूसरी ओर चला गया और एक दूसरे पेड़ की शाखा पर बैठ गया। यह मेरे जीवन का पहला ऐसा क्षण था जब ईर्ष्या की भावना ने मेरे दिल को छलनी कर दिया। इससे पहले मैंने कभी किसी से ईर्ष्या नहीं की थी, चाहे वह जानवर हो या पक्षी। मैं उस तोते को देखता रहा, जो अब अपने शिकार को खाने में मग्न था।

ईर्ष्या की भावना हमें तभी घेरती है जब हममें कुछ ऐसी शारीरिक या चारित्रिक

कमियाँ होती हैं जो दूसरों में स्पष्ट नहीं होतीं। क्या कोई पक्षी कभी हमसे ईर्ष्या करता है? मैंने एक पल के लिए सोचा, इससे पहले कि एक अधिक व्यावहारिक प्रश्न ने मुझे मेरे विचारों की दुनिया से बाहर निकाल दिया।

'हममें से किसी के पास भी इस बात का संतोषजनक जवाब नहीं है कि हमें यहाँ क्यों लाया गया है। क्या आपके पास है?' उस हिरणी ने पूछा जिसने कभी प्रार्थना की प्रभावशीलता पर संदेह जताया था। वे सभी अभी-अभी इस जगह के हर कोने की खोजबीन करके लौटे थे। मैंने उसकी ओर देखा। एक रात कैद में बिताने से वह काफी शांत हो गई थी। उसका घमंड गायब हो गया था और उसकी जगह बेबसी का भाव आ गया था।

मैंने घुमा-फिराकर जवाब दिया, 'क्या हम सबने कभी न कभी एक सुरक्षित जगह के लिए प्रार्थना नहीं की थी जहाँ साल भर भोजन उपलब्ध हो? तो एक तरह से हमारी प्रार्थना का उत्तर मिल गया है।'

"लेकिन यहाँ हम सब कैद हैं; हम इस तार की बाड़ से बाहर नहीं जा सकते। इसके अलावा, यहाँ हमें जो भोजन दिया जाता है वह केवल भूसा और पुआल है, जो उस ताजी घास और पत्तियों का घटिया विकल्प है जिनका आनंद हम अपने जंगल में लिया करते थे," एक शिकायत करते हुए हिरण ने कई हिरणों के मन की बात कही।

मैंने तर्क देने की कोशिश की, 'मुझे लगता है कि भले ही हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिल जाए, लेकिन इससे हमारे जीवन में कुछ नई चुनौतियाँ आ जाती हैं। यहाँ हमारी चुनौती वर्तमान स्थिति के अनुसार खुद को ढालना है।'

"मुझे नहीं लगता कि हमारी कैद का हमारी प्रार्थना से कोई संबंध है। क्योंकि प्रार्थना में हमारे साथ और भी कई हिरण थे। उन्हें क्यों नहीं पकड़ा गया और यहाँ लाया गया?" एक अन्य हिरण ने चुनौती भरे स्वर में पूछा।

उसके सवाल ने मेरे मन में भी संदेह का भाव पैदा कर दिया। मेरे पास इसका कोई संतोषजनक जवाब नहीं था।

मैंने स्पष्टवादिता से कहा, 'मुझे नहीं पता। हम बस धैर्य और सतर्कता बनाए रख सकते हैं। समय ही हमारे सभी संदेहों को दूर कर सकता है।'

सभी हिरणों ने अनिच्छा से ही सही, लेकिन एक हल्की सी आह भरी। सुबह का समय आलस्य से बीतता रहा और हम सब में बेचैनी छा गई। कैद का एहसास हम पर भारी पड़ने लगा था।

सभी हिरण बाड़े में बेचैनी से इधर-उधर चक्कर लगा रहे थे। हालाँकि जंगल में हमारा एक निर्धारित क्षेत्र था, लेकिन वह इतना विशाल था कि वहाँ रहना और जंगल में घूमना हमेशा हमें आज़ादी का एहसास दिलाता था। इसके अलावा, वहाँ ताज़ी घास की तलाश में हमारा काफी समय बीत जाता था। लेकिन इस सीमित जगह में, जहाँ हमें भोजन की तलाश नहीं करनी पड़ती थी, समय बहुत धीरे-धीरे बीतता था।

दोपहर ढलने के बाद, सभी हिरण एक पेड़ की सुखद छाया में बैठ गए। हल्की हवा चल रही थी, हालाँकि वह हमारे जंगल की हवा की तरह सुगंधित नहीं थी। हम सब आपस में विचार कर रहे थे, एक-दूसरे को बता रहे थे कि हमें सबसे ज़्यादा किस बात की कमी खल रही है। अधिकांश हिरणों के रिश्तेदार जंगल में ही रह गए थे। वे सभी अपने प्रियजनों के साथ बिताए गए गहरे प्रेम के पलों और घटनाओं को बयान कर रहे थे, जो अब जंगल में थे। मैं यहाँ अकेला हिरण था जिसका कोई रिश्तेदार जंगल में नहीं था। लेकिन मुझे भी अपने जंगल की उतनी ही याद आ रही थी जितनी मेरे साथियों को अपने रिश्तेदारों की। मुझे धरती की याद आ रही थी, उन पेड़ों की याद आ रही थी जिनसे मैं अक्सर अपने शरीर को रगड़ता था, उन पत्थरों की याद आ रही थी जिन पर मैं अक्सर टेक लगाकर दिन को बीतते देखता था। मुझे जंगल की ठंडक की याद आ रही थी, उन लंबे संकरे रास्तों की याद आ रही थी जिन पर दौड़ना मुझे बहुत पसंद था।

जंगल में बिताए मेरे दिनों की हर छोटी-छोटी खुशी की घटना अब मेरी यादों के खजाने में एक अनमोल रत्न की तरह प्रतीत हो रही थी। मैं चुपचाप सुनता रहा जबकि बाकी सभी हिरण भावनाओं से कांप रहे थे; उनकी आंखें नम और विचारशील थीं, और कभी-कभी उनके नथुने फैल रहे थे।

हम अपनी खट्टी-मीठी यादें साझा करते हुए दोपहर गुजारते रहे। बीच-बीच में कोई हिरण कृत्रिम पानी के कुंड के पास जाकर अपनी प्यास बुझाता।

अचानक हमारी बातचीत रुक गई जब हमने अपने घर के गेट के पास एक पशु वाहन को रुकते हुए सुना। कुछ लोग वाहन के पास जमा हो गए, और एक आदमी ने अपने हाथ में एक मजबूत छड़ी लिए हमारे घर का गेट खोल दिया। यह स्पष्ट था कि खुले गेट से भागने की कोशिश करने पर कोड़े मारे जाएंगे।

उत्सुकता और सांस रोककर हम अपनी आंखों के सामने घट रही एक अप्रत्याशित घटना को देखते रहे। वैन का पिछला दरवाजा खुला और उस डिब्बे के अंदर हम सभी

के जाने-पहचाने चेहरे थे— हमारी माताएं, बेटियां या बहनें।

हम सभी उन्हें पशु-वाहिनी में देखकर समान रूप से प्रसन्न और दुखी थे। लेकिन वे सभी अपने सामान्य जीवन में आए इस अचानक बदलाव से भयभीत प्रतीत हो रहे थे। पास में हिरणों के झुंड की एक झलक मिलते ही उनके चेहरे पर राहत के भाव आ गए। वे सभी वाहन से उतर गए; उनमें से लगभग सभी ने वहीं रहने की पूरी कोशिश की, जैसा कि हमने पिछले दिन किया था।

उनकी बेबसी देखकर धीरे-धीरे मुझे समझ आने लगी। दरअसल, हम सभी जीवन में बदलाव से डरते हैं, भले ही हमें यह पता न हो कि बदलाव हमारे जीवन में सौभाग्य लाएगा या मुसीबत। हम शायद ही कभी उस जीवन को बदलना चाहते हैं जिसे जीने के हम आदी हो चुके हैं।

जल्द ही सभी हिरणों को उनके नए घर में ले जाया गया। एक-दो छोटे हिरणों ने शरारत की, जिन्हें छड़ी से दंडित किया गया। उनकी दर्द भरी चीखें सुनना बहुत कष्टदायक था। सभी हिरण अपने नए घर में पहुँच गए, हालांकि वे अभी भी सदमे में थे, तभी फाटक ज़ोर से बंद हो गया। हमारे नए घर में, एक भावुक और आँसूभरी मुलाकात हुई। सभी हिरण एक-दूसरे के दिलों में हिम्मत भरने के लिए अपने रिश्तेदारों को चाट रहे थे, एक-दूसरे के शरीर से रगड़ रहे थे, अपने प्रियजनों को अपनी शारीरिक गर्माहट देने की कोशिश कर रहे थे, और एक-दूसरे के कानों में आशा के शब्द फुसफुसा रहे थे।

थोड़ी दूरी पर खड़े होकर, मैं इस भावुक मुलाकात को देख रहा था और मेरा मन भारी हो गया था। मैं वास्तव में उन सभी से प्यार करता था। लेकिन किसी एक के लिए मेरे मन में कोई विशेष प्रेम नहीं था, जैसा कि उनके अपने रिश्तेदारों के लिए था। हर हिरण की तरह, मैं भी अपने जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति को चाहता था जिसे मैं दिल से प्यार करूं और जो मुझे भी पूरे दिल से प्यार करे। अचानक मुझे अपनी माँ की बहुत याद आने लगी।

मैं अकेलापन और निराशा महसूस कर रहा था, शायद जीवन में पहली बार। चुपचाप मैं पानी के कुंड के पास गया और वहाँ बैठकर मैंने अपनी जलती हुई आँखों से आँसू बहने दिए। मेरे कुछ आँसू पानी की चिकनी सतह पर चुपचाप 'प्लॉप' की आवाज़ के साथ गिरे।

शाम की शांति में वहाँ बैठे-बैठे मुझे एहसास हुआ कि जब हम माँ-बेटी, बहनों या सभी

रिश्तेदारों के बीच प्यार और स्नेह का आदान-प्रदान देखते हैं, तो हम अपने बिछड़े हुए प्रियजनों को और भी गहराई से याद करते हैं। हर किसी के लिए प्यार महसूस करना जीवन को सार्थक बना सकता है, लेकिन जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति का होना, जो आपके अस्तित्व का हिस्सा हो, जिसकी धड़कनें और विचार आपके जैसे हों, जिसका दर्द आप शारीरिक रूप से महसूस कर सकें, जिसकी खुशी आपकी आँखों में आनंद की चमक ला दे, जिसकी उपस्थिति को आप आँखें बंद करके भी महसूस कर सकें, जिसकी सुगंध आपको नींद में सुला दे, वही आपके जीवन को पूर्ण बनाता है।

मेरे सिर के ठीक ऊपर से एक कोयल की आवाज़ आई। यह कोयल की अपने साथी को बुलाने की सामान्य आवाज़ से अलग थी। पेड़ की शाखा की ओर देखते हुए, मुझे एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। एक मादा कोयल अपने दो बच्चों को बीज या छोटे दाने खिला रही थी। जब भी उनकी माँ उनके मुँह में दाने डालती, दोनों बच्चे संतुष्टि भरी आवाज़ निकालते। उनकी माँ जो भी उनके मुँह में डालती, वे बिना किसी संदेह या प्रश्न के उसे ग्रहण कर लेते।

जैसे ही वे अनाज या बीज कुतर रहे थे, उनकी माँ उन्हें प्यार से निहार रही थी, उनके नन्हे शरीर को चंचलता से चोंच मार रही थी, जबकि नन्हे पक्षी अपनी कोमल पंखों वाली देह को फुला रहे थे, अपनी माँ के दुलार से लाड़-प्यार पा रहे थे। माँ और दोनों नन्हे पक्षी अपनी छोटी सी दुनिया में इतने खोए हुए थे कि वे अपने आसपास की किसी भी चीज़ से पूरी तरह बेखबर थे।

चाहे हमारी दुनिया कितनी भी छोटी क्यों न हो, एक बार प्रेम से भर जाने पर, वह अपने आप में ही पूरी दुनिया के समान पूर्ण हो जाती है। यही प्रेम की सुंदरता है, यह हर चीज को पूर्ण और अधिक सुंदर बना देता है, मैंने सोचा। मैंने उन्हें कुछ देर तक निहारा, मेरी आँखों से बहते आँसू सूख गए और मेरी धुली हुई आँखों में प्रेम और विश्वास की चमक आ गई।

मुझे पहले ही बताया गया था कि मेरी आँखों में एक अनोखी चमक है, लेकिन हाल की चिंताओं ने शायद मेरी आँखों में संदेह और निराशा की एक परत चढ़ा दी थी। अब जीवन और प्रेम में मेरा विश्वास फिर से मजबूत हो गया। चुपचाप, मैंने खुशहाल कोयल परिवार को धन्यवाद दिया।

मैंने खुद से कहा, जल्द ही मेरे जीवन में कोई ऐसा होगा जो मेरी हर सांस का हिस्सा होगा, जिसकी मौजूदगी मेरे जीवन को रंगीन बना देगी, जिसकी उपस्थिति में मैं किसी

और का साथ नहीं चाहूंगी।
मैं पानी के कुंड के पास अपनी जगह से उठा और बाकी हिरणों की ओर चल पड़ा। मैं जानता था कि हिरणों और उनके साथियों के बीच प्रेम का यह नजारा देखकर मुझे फिर कभी अकेलापन और उदासी महसूस नहीं होगी। बल्कि इससे जीवन को और भी भरपूर जीने की मेरी इच्छा और भी बढ़ जाएगी, क्योंकि अब हमारे संसार में इतना प्रेम विद्यमान है।

अध्याय -8

आनंद की खोज में

जीवन के बारे में मेरी सारी समझ तीन शब्दों में समाहित है: आशा, विश्वास और धैर्य।

~अनाम

इस तंग जगह में कैद हुए हमें एक हफ्ता बीत चुका था। अब तक हममें से लगभग सभी लोग अपनी मौजूदा जीवनशैली के आदी हो चुके थे। जैसे-जैसे दिन बीतते गए और हमारे अपहरणकर्ताओं ने हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया, जो एक तरह से हमारी देखभाल कर रहे थे, वैसे-वैसे हमारे मन से मारे जाने का डर कम होता गया।

आज सुबह मैं कृत्रिम पानी के कुंड के किनारे बैठा था और सोच रहा था कि पानी की सतह पर जमी काई की परत को कैसे हटाया जाए। जब भी मैं उसके पास बैठता था, मुझे हमेशा यह ख्याल आता था कि काई के नीचे का पानी सूरज की रोशनी की एक झलक पाने के लिए तरस रहा है।

‘आपने हमें सही कहा था कि केवल समय और धैर्य ही हमारे मन से शंकाओं को दूर कर सकते हैं,’ अचानक मेरे पास से एक आवाज़ आई। मैंने सिर घुमाकर देखा तो एक दुबली-पतली हिरणी मेरे पास बैठी थी। पहले तो मुझे याद नहीं आया कि उसने यह बात किस संदर्भ में कही थी।

मेरे जिज्ञासु चेहरे को देखकर उसने फिर कहना शुरू किया, 'हम सभी, जिन्होंने जंगल में सुरक्षित जीवन के लिए प्रार्थना की थी, अब यहाँ हैं। इसका सीधा सा मतलब है कि हमारी प्रार्थनाएँ हमेशा सच होती हैं। यह केवल समय की बात है जब यह वास्तविकता में बदल जाएगी।'

मैं चुप रहा, अपने जंगल को याद करते हुए।

मेरे साथी हिरण ने पूछा, 'तुम क्या सोच रहे हो?'

मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि जैसे-जैसे दिन बीत रहे हैं, हममें से लगभग सभी को अपने जंगल की याद कम आ रही है।'

‘क्या आप इसे हम सभी के लिए एक अच्छा बदलाव मानते हैं?’ उसने पूछा।

मुझे नहीं पता। मैं इसे अच्छा-बुरा कह सकता हूँ।'

मुझे इसके अच्छे होने के कई कारण पता हैं। लेकिन आप इसे बुरा क्यों मानते हैं?

'इसे समझाना मुश्किल है। लेकिन मुझे लगता है कि इस सुरक्षित, सीमित जगह में रहते हुए हम धीरे-धीरे सुस्त और आलसी होते जा रहे हैं।'

लेकिन इसमें गलत क्या है?

मैंने एक गहरी आह भरी। ‘शायद हम जितने आलसी होते जाते हैं, जीवन की सुंदरता को उतना ही कम देख पाते हैं। है ना?’

“लेकिन ज्यादातर हिरणों को सिर्फ सुरक्षित जीवन की चिंता है। इसके अलावा, अगर वे चाहें भी तो अब वे अपना जीवन बदल नहीं सकते। इस जगह से भागना लगभग नामुमकिन है,” हिरण ने समझाने की कोशिश की।

मैंने चिंतनशील भाव से सिर हिलाया।

‘मुझे जाना होगा। तुम्हें भी मेरे साथ आना होगा। देखो, हमारे लिए भूसे के नए गट्ठे

लाए गए हैं,' वह उठते हुए बोली।

'आप कृपया आगे बढ़ें। मैं जल्द ही आपके साथ आ जाऊंगी,' मैंने उससे टालमटोल भरे लहजे में कहा, जब वह मेरी तरफ मुस्कुराई।

थोड़ी दूरी पर बैठकर मैंने देखा कि मेरे साथी हिरण अभी-अभी फाटक के ऊपर फेंके गए भूसे के गट्ठों पर दावत उड़ा रहे थे। दूसरे हिरणों के विपरीत, मुझे भूसा और घास बिल्कुल पसंद नहीं थी, और मेरा मन हमेशा ताज़ी घास और पत्तियों के लिए तरसता रहता था, जो यहाँ बहुत कम मिलती थीं। कभी-कभार, कटे हुए खेतों की घास हमें दे दी जाती थी, लेकिन वह मुश्किल से दो-चार हिरणों के लिए ही काफी होती थी। इसलिए हम सब उसे बराबर बाँट लेते थे, और हममें से हर एक के लिए मुश्किल से एक या दो कौर ही बचते थे।

मैंने मन ही मन सोचा, समय ही बताएगा कि हमें यहाँ क्यों लाया गया है।

समय वास्तव में दुनिया की सबसे शक्तिशाली और ताकतवर चीज है। यह हमारे सभी सवालों के जवाब देता है, लेकिन अपने ही तरीके से। और इसकी सबसे मजेदार बात यह है कि कभी-कभी यह आपको आपके सवाल का जवाब तब देता है जब आप सवाल ही भूल चुके होते हैं। भविष्य में कुछ हासिल करने का हमारा प्रयास, समय द्वारा हमारे लिए निर्धारित घटनाओं में हमारा योगदान मात्र है। लेकिन हमारा पूरा प्रयास आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना हमारा भविष्य वैसा नहीं होगा जैसा समय ने हमारे लिए तय किया है।

हालांकि, अगली सुबह समय ने हमें यह बता दिया कि हमें इस तार की बाड़ वाली जगह के अंदर क्यों लाया गया था।

आज सुबह उठते ही मुझे हवा में हलचल महसूस हुई। पुरुषों का वह समूह, जिन्हें हम हर रोज वैन चलाते, सड़क किनारे पेड़ों की छंटाई करते और हाथ में छड़ी लिए घूमते देखते थे, आज बहुत व्यस्त लग रहे थे और बड़े-बड़े कदमों से चल रहे थे। इतना ही नहीं, वे सब एक जैसे दिख रहे थे क्योंकि उन्होंने एक ही तरह के कपड़े पहने थे, जिसे बाद में मुझे पता चला कि वर्दी कहते हैं। हम सभी को लग रहा था कि कुछ

असाधारण होने वाला है, और हमारा अनुमान सही निकला।

सुबह ढलते ही हमने देखा कि पुरुषों का एक समूह सड़क पर चलते हुए हमारी ओर आ रहा है। वे लंबे-छोटे, पतले-मोटे, छोटे-बड़े, सभी तरह के थे और रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए थे। वे हमारे घर के सामने खड़े हो गए, ज़मीन के समानांतर, तार की बाड़ के ठीक पीछे लगी धातु की छड़ों को पकड़े हुए। चित्तीदार हिरणों के झुंड को देखकर उनके मुँह से खुशी और आश्चर्य की चीखें निकल रही थीं। हम सब अचंभित होकर उन्हें देखते रहे। हमने सपने में भी नहीं सोचा था कि कोई हमें एक साथ देखकर इतना खुश और आनंदित होगा।

मैंने एक-दूसरे की आँखों में देखा। दरअसल, शुरुआत में मैंने जैसा सोचा था, वे सभी पुरुष नहीं थे। जैसे हमारे बीच नर हिरण और मादा हिरण होते हैं, वैसे ही इस दो पैरों वाले विचित्र प्राणी में भी नर और मादा होते हैं। यह पहचानना काफी आसान था कि कौन नर है और कौन मादा। नर में मर्दानापन और स्वाभाविक आक्रामकता झलकती थी। मादा में स्त्रीत्व और एक प्रकार की शांति थी। उनके बाल लंबे थे, और उनका पूरा व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेम और चिंता से भरा हुआ था।

अचानक मुझे यह बात समझ में आई कि सभी प्रजातियों की मादाओं में कुछ उल्लेखनीय समानताएँ हैं। वे सभी अपनी संतान की अधिक देखभाल करती हैं। वे ही अपने बच्चों को जन्म से ही भोजन कराती हैं, उनका पालन-पोषण करती हैं और उन्हें बड़ा करती हैं, जबकि प्रत्येक प्रजाति के नर लगभग एक जैसे ही होते हैं।

लेकिन तार की बाड़ के दूसरी तरफ खड़े उन सभी दो पैरों वाले प्राणियों में एक बात आश्चर्यजनक रूप से समान थी। उनकी आँखों में खुशी की चमक थी। हममें ऐसा क्या खास था कि वे हमें इतनी प्रसन्नता से देख रहे थे? क्या ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्हें हिरण रोज़ देखने को नहीं मिलते? मैंने तर्क करने की कोशिश की। यह अनुमान सही प्रतीत हुआ क्योंकि जब हमने पहली बार इंसानों को देखा तो हम आश्चर्य से फूले नहीं समा रहे थे।

दोपहर ढलने तक लोग हमसे मिलने आते रहे। वे बूढ़े थे या जवान, पुरुष थे या महिला, तनाव में थे या शांत—लेकिन एक बात जो मैं और बाकी सभी हिरण महसूस कर सकते थे, वह यह थी कि हमारे पास आकर वे सब अधिक जीवंत और प्रसन्न हो गए। उनमें से कुछ ने आगे बढ़ने से पहले हमें हाथ हिलाकर अभिवादन किया। कुछ बच्चों ने तार की बाड़ में बने छेद से हम पर कुछ खाने की चीज़ें फेंकने की कोशिश

की, लेकिन लाठी लिए घूम रहे आदमियों ने उन्हें रोक दिया।
मैंने यह उम्मीद करते हुए कान लगाए कि शायद मुझे उनकी बातों में से कुछ समझ आ जाए, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वे बिल्कुल समझ से परे हैं। लेकिन एक बात जो मैंने महसूस की, वह यह थी कि बात करते समय ये दो पैरों वाले प्राणी, पुरुष और महिलाएं, अपने हाथों को बहुत ज़्यादा हिला रहे थे।
कई माता-पिता की जोड़ियाँ हमारे घर के सामने से गुजरीं; वे सभी कुछ मिनटों तक हमारे घर के सामने रुकी रहीं और मैंने हर माँ-बच्चे की जोड़ी को बड़ी उत्सुकता और ध्यान से देखा। लेकिन किसी भी माँ-बच्चे की जोड़ी में मुझे आँखों के माध्यम से संवाद होता हुआ नहीं दिखा।
उन्हें देर तक देखते हुए मुझे अपनी माँ के साथ आँखों से आँखों में आँखें मिलाकर की जाने वाली बातचीत याद आ गई। वह कितनी खामोश बातचीत थी, फिर भी एक-दूसरे का हर एक शब्द हमारे अंतर्मन की गहराई तक पहुँच जाता था। मैं पहले से ही उन मनुष्यों के प्रति विस्मय से भरा हुआ था जो अब तक देखे गए किसी भी जानवर से कहीं अधिक उन्नत और बुद्धिमान थे।
लेकिन अगर वे इतने बुद्धिमान और चतुर हैं, तो वे अपने प्रियजनों से आँखों के इशारों में संवाद क्यों नहीं कर सकते? मैंने सोचा, और तुरंत ही मेरे मन में इसका उत्तर आ गया। आँखों के इशारों में मौन संवाद के लिए चतुराई और बुद्धिमत्ता की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं होती। इसके लिए केवल गहरे प्रेम की आवश्यकता होती है।
अब मेरा ध्यान एक माँ और उसके बच्चे पर गया। माँ ने अपने छोटे बच्चे को गोद में लिया हुआ था। बच्चा इतना छोटा था कि अपनी माँ की भाषा समझ नहीं पा रहा था, हालाँकि कुछ शब्दों की मदद से माँ उसका ध्यान हमारी ओर खींचने की कोशिश कर रही थी। लेकिन हिरणों का झुंड, जो उसके बहुत करीब था, बच्चे को आकर्षित नहीं कर पाया। वह रोने लगा। माँ उसे आसपास की मज़ेदार और दिलचस्प चीज़ें दिखाने की जितनी कोशिश करती, वह उतना ही ज़ोर से रोने लगता।
माँ पूरी तरह से व्याकुल थी, तभी अचानक उसे एक विचार आया। बिना कुछ कहे, उसने बच्चे को कसकर अपनी छाती से लगा लिया। बच्चे का रोना धीरे-धीरे म्याऊँ-म्याऊँ में बदल गया और फिर पूरी तरह से बंद हो गया।
अब माँ ने बच्चे का चेहरा ऊपर उठाया और उसे अपने करीब ले आई। बच्चा मुस्कुरा रहा था, उसकी बिना दाँतों वाली मसूड़ी दिखाई दे रही थी। फिर कुछ देर तक माँ और

बच्चे के बीच कोई संवाद नहीं हुआ, लेकिन दोनों की आँखों में चमक थी। कुछ ही पलों में उनके बीच इतने भाव और बिना आवाज़ के शब्द आ गए कि सुरक्षित महसूस करते हुए नन्हे बच्चे ने फिर से अपना सिर माँ के कंधे पर रख दिया, और माँ ने उसे दिलासा देते हुए उसकी पीठ थपथपाई।

जब माँ अपने बच्चे को स्नेह से देख रही थी, तो मुझे उसके चेहरे और मेरी माँ के चेहरे में कुछ सूक्ष्म समानता दिखाई दी। यह क्या था? मैंने खुद से पूछा। क्या यह उसकी प्रेम भरी आँखें थीं या उसके चेहरे का शांत भाव? मैं ठीक से समझ नहीं पाई, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि हमारे जीवन में गहरे प्रेम के क्षणों में, सभी प्राणियों में, मनुष्यों सहित, कुछ बहुत समान होता है। भीतर से, हम सभी प्रेम, स्नेह और देखभाल के लिए तरसते हैं, और एक ऐसी जगह की तलाश करते हैं जहाँ हम हमेशा के लिए सुरक्षित रहें।

मैं मन में एक सुखद अनुभूति लिए चुपचाप शेड की ओर चल पड़ा। मेरे पास कई मीठी यादें होंगी, लेकिन केवल अतीत में खोए रहने का कोई फायदा नहीं। ऐसा करने से मैं वर्तमान की उन सभी सुंदरताओं को देखने से वंचित रह जाऊंगा जो शायद उसने मेरे लिए संजो रखी हों।

और चाहे मेरा बचपन कितना भी अनमोल क्यों न हो, वर्तमान हमेशा जीवन का एक नया आयाम, उसकी सुंदरता और सच्चाई मेरे सामने प्रस्तुत करने के लिए मौजूद रहता है... नींद में डूबते हुए मेरे मन में विचारों की एक श्रृंखला कौंध गई।

कुछ और सप्ताह तेज़ी से बीत गए। जब से मुझे इस जगह लाया गया था, मैंने दिन गिनना शुरू कर दिया था। इस सीमित जगह में बिताए दिनों को गिनना मेरे लिए मनोरंजन बन गया था, एक सुखद शगल था क्योंकि मेरे पास करने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं था।

मैं ज्यादातर समय पेड़ की छांव में बैठकर बिताता था, और जब बारिश होती थी, तो मैं शेड के नीचे रहना पसंद करता था। वहां बैठकर मैं आलस से दिन बीतते देखता रहता था।

अब मेरी शारीरिक गतिविधि काफी सीमित हो गई थी, इसलिए मुझे पहले की तुलना में आधे भोजन की भी आवश्यकता नहीं थी। इसके अलावा, अधिकांश हिरणों के

विपरीत, अब मुझे वह भूसा या घास पसंद नहीं आ रही थी जो हमें हर दिन दी जाती थी।

मैं अक्सर सोचता था कि हममें से इतने सारे लोग इतने चाव से भूसा खाना कैसे शुरू कर देते हैं। एक दिन, मैंने यही सवाल एक हिरण से पूछा, जिसने यहाँ आने के शुरू से ही भूसा और घास खाना शुरू कर दिया था। वह मुझसे काफी बड़ी थी और शायद मेरी माँ की उम्र की थी।

“शुरुआत में, थोड़ी सी भूसी चबाने के बाद मेरा गला भी सूख जाता था। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि दिन भर मुझे अपने पेट को आसपास मिलने वाले किसी भी खाने योग्य चीज़ से भरना पड़ता है। मुझे किसी स्वादिष्ट भोजन का इंतजार करने का कोई अधिकार नहीं है,” उसने मुझे शांत भाव से बताया।

उसकी बातों से कुछ हद तक हैरान होकर मैंने उससे पूछा, 'क्यों? क्या मैं तुम्हें सच में समझ नहीं पा रहा हूँ?'

उन्होंने मुझे ममता भरी मुस्कान दी, “मेरे भीतर एक जीवन है, जो जल्द ही दुनिया की पहली झलक पाने के लिए उत्सुक है।” वह थोड़ी देर रुकीं और अनमने ढंग से बोलीं, मानो खुद से ही बात कर रही हों, “मुझे लगता है, वे दो हैं। मैं उन्हें आधा-अधूरा खाना कैसे खिला पाऊँगी?” उनके शब्दों ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। मैंने जीवन के इस पहलू के बारे में कभी सोचा ही नहीं था।

‘सिर्फ मैं ही नहीं, बल्कि कुछ और हिरण भी हैं जो भूसा और घास बड़े चाव से खाते हैं, क्योंकि वे अपने भीतर जीवन लिए हुए हैं। यह इतनी सुंदर ज़िम्मेदारी है कि इसे शब्दों में समझाना नामुमकिन है। देखिए, आप अपने जीवन की परवाह सिर्फ अपने लिए ही नहीं, बल्कि अपने भीतर मौजूद जीवों के जीवन की भी करते हैं।’ उनके विदाई के ये शब्द मेरे दिल में बस गए और हमेशा के लिए वहीं रहेंगे।

कुछ हद तक शर्मिंदा और पश्चाताप करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि मैं दूसरों के इरादों और उद्देश्यों के बारे में ज्यादा कुछ जाने बिना ही कितनी आसानी से निष्कर्ष पर पहुंच जाता था।

और अब, जब मैंने देखा कि अधिकांश हिरण बड़े चाव से भूसा चबा रहे हैं, तो मुझे अपने जीवन की वे सुनहरी सुबहें याद आ गईं जब लंबे सींगों वाले हिरणों का एक झुंड जंगल में हमारे इलाके में आया करता था। मुझे दूर खड़े होकर उनके मिलन को देखना याद आ गया।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, गर्भ धारण किए हिरणों को आसानी से पहचाना जा सकता था। उनकी चाल धीमी हो गई। पहले चाहे वे कितने भी आक्रामक क्यों न रहे हों, अब वे शांत भाव से घूमते थे। वे ज़्यादा आराम करने लगे और अक्सर मैं उन्हें बिना किसी कारण के मुस्कुराते हुए देखता था। मैं अक्सर उन्हें अपना फूला हुआ पेट चाटते हुए पाता था और सोचता था कि क्या यह उनके अजन्मे बच्चों को सहलाने का एक तरीका था।

हम अपने हिरणों के छोटे से झुंड में नए आने वालों का स्वागत कैसे करेंगे? क्या हम जंगल में निभाई जाने वाली पुरानी परंपराओं का पालन करेंगे?

मैं अक्सर सोचता रहता था, लेकिन इस बारे में मैंने कभी किसी से बात नहीं की, क्योंकि मुझे लगता था कि मेरे अलावा बाकी सब लोग रोज़मर्रा की ज़िंदगी की खुशियों और संघर्षों में मग्न थे। गर्भवती हिरणियाँ तो मानो अपनी खुशियों की दुनिया में खोई हुई थीं, और हाल ही में, मेरी उम्र के लगभग सभी हिरणियों ने एक खेल खेलना शुरू किया, जिसमें वे सुबह से लेकर देर दोपहर तक व्यस्त रहते थे।

कुछ ही समय में सभी हिरणों को यह यकीन हो गया कि उन्हें काटा या मारा नहीं जाएगा। लेकिन यह सवाल बना रहा कि हमें यहाँ क्यों कैद रखा गया था। हालांकि, कुछ समय बाद, सभी हिरण समझ गए कि उन्हें वास्तव में यहाँ प्रदर्शन के लिए रखा गया था। हर दिन, सुबह से लेकर दोपहर तक, अपने बच्चों के साथ कई पुरुष और महिलाएं हमें देखने आते थे।

हमें पास से देखकर उनका मन प्रसन्न हो गया, और कभी-कभी, हालांकि यह मज़ेदार था, उन्होंने अपनी भाषा में हमसे संवाद करने की कोशिश की। हालाँकि उनकी भाषा हम सभी के लिए पूरी तरह से समझ से परे थी, लेकिन उनके शब्दों में छिपी भावना को हम आसानी से महसूस कर सकते थे। हम समझ सकते थे कि वे हमसे मज़ाकिया अंदाज़ में कुछ पूछ रहे हैं।

हम भली-भांति जानते थे कि उनका इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं था और अगर हम उनके सवालों का जवाब देते तो उन्हें अच्छा लगता। हालाँकि हममें से कोई भी निश्चित नहीं था कि वे सवाल किससे पूछ रहे थे, क्योंकि हिरण यहाँ भी झुंड में घूमते थे—जंगल में यह एक आम बात है—हालाँकि यहाँ शिकारियों का कोई डर

नहीं था।

हालांकि, हर हिरण को यह भ्रम था कि वही दर्शकों का आकर्षण केंद्र है। स्वाभाविक रूप से, उसे हमारे बाड़े के सामने मौजूद दर्शकों को खुश करने की तीव्र इच्छा हुई। वह खुशी से उछल-कूद करता या दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए तीखी आवाज निकालता। जाहिर है, जब हर हिरण दर्शकों के सामने एक ही तरह की भूमिका निभाता, तो वह नजारा वाकई अद्भुत होता। इतने सारे हिरणों को एक साथ उछल-कूद करते देख, पुरुष, महिलाएं और उनके बच्चे आश्चर्य और खुशी से सीटी बजाते और ताली बजाते। इससे मेरे सभी युवा साथी हिरणों को अपने दर्शकों को और भी अधिक उत्साह से लुभाने की प्रेरणा मिली।

लेकिन इन दर्शकों को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनका ध्यान देना और बीच-बीच में ताली बजाना और सीटी बजाना, ज्यादातर हिरणों के बीच एक अजीब तरह की प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा कर रहा था। इससे पहले हिरणों के बीच कभी भी ऐसी प्रतिद्वंद्विता नहीं देखी गई थी। हालांकि, अब भी यह उनके बीच उतनी स्पष्ट या प्रमुख नहीं थी, फिर भी एक हिरण आसानी से समझ सकता था कि वे सभी हिरण इंसानों का ध्यान अपनी ओर खींचने की होड़ में लगे हुए थे।

वे अतिरंजित ढंग से उछल-कूद करते थे; कुछ क्षणों के लिए अपने अगले पैर उठाने की कोशिश करते थे, शायद उन दो पैरों वाले बुद्धिमान प्राणियों की नकल करने के लिए। उन सभी के भीतर हमेशा एक-दूसरे के प्रदर्शन को मात देने की इच्छा रहती थी। पेड़ की छाया में बैठकर, मैं दिन भर उन्हें अपने-अपने किरदारों को पूरी कुशलता से निभाते हुए देखता रहता था।

मैं कभी भी लोगों का ध्यान खींचने और उनसे वाहवाही पाने के लिए उनके खेल में शामिल नहीं हो सका। उन्हें दिन भर व्यस्त देखकर मेरे मन में मिली-जुली भावनाएँ थीं। मैं एक साथ खुश और दुखी था। मैं खुश था क्योंकि उन्हें आनंदमय जीवन जीने का एक कारण मिल गया था। लेकिन साथ ही मैं दुखी भी था, क्योंकि वे इतनी जल्दी जंगल में बिताए हमारे सुनहरे दिनों को भूल गए थे, जो खतरे के साथ-साथ हमें एक अद्वितीय आनंदमय जीवन प्रदान करते थे।

दिनभर की मेहनत के बाद सभी युवा हिरण जल्दी सो जाते थे, और बूढ़ी गर्भवती हिरणियाँ भी ऐसा ही करती थीं, क्योंकि हमारे बीच यह मान्यता थी कि माँ हिरण जितना अधिक आराम करती है, उसका बच्चा उतना ही स्वस्थ होता है। लेकिन मैं देर

रात तक जागता रहा और मेरे साथ शांत पेड़, टिमटिमाते तारे, चाँद और कभी-कभी आकाश में दौड़ते काले बादलों का समूह होता था। और मुझे अक्सर ऐसा लगता था कि हमारे बीच बिना शब्दों के संवाद हो रहा है।

अध्याय-9

सपने हकीकत जितने ही वास्तविक होते हैं।

आप अपने सामने मौजूद चीजों को देखते हैं और पूछते हैं 'क्यों', और मैं उन चीजों के सपने देखता हूं जो मौजूद नहीं हैं और पूछता हूं 'क्यों नहीं'।

जी. बी. शॉ

रात की खामोशी ने हमें अपने आस-पास की कई बातों का एहसास कराया, वो भी तब जब हम सचेत रहते। जैसे-जैसे रात गहरी होती जाती, मुझे अक्सर कुछ जानी-पहचानी आवाज़ें सुनाई देतीं। ये आवाज़ें मोर, नीलगाय, बंदर और कुछ अन्य जानवरों की थीं जिन्हें हम अपने जंगल में देखते थे। लेकिन उनकी पुकारों में एक तरह की बेचैनी थी, मानो वे अपने प्राकृतिक आवास में लौटने के लिए तड़प रहे हों। उनकी पुकारें, ज़ाहिर तौर पर, मेरे दिल को छू जाती थीं, और कभी-कभी, मेरा भी मन करता था कि मैं भी एक धीमी, तीखी आवाज़ में चिल्लाऊं ताकि उन्हें पता चले कि पास में ही एक हिरण है जो अपने जंगल में लौटने के लिए तड़प रहा है। लेकिन मैंने हमेशा चिल्लाने के प्रलोभन को रोका, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने साथी हिरणों को उनकी शांतिपूर्ण नींद से जगा दूं।

लेकिन देर रात को कभी-कभार सुनाई देने वाली अन्य जानवरों की आवाज़ों ने मुझे कुछ और बातें समझाईं। हिरणों का झुंड ही एकमात्र आकर्षण नहीं था जो हर दिन इतने सारे पुरुषों और महिलाओं को यहाँ खींच लाता था। इस सुरक्षित और संरक्षित क्षेत्र में और भी कई जानवर देखने को मिलते थे। और फिर मेरे जिज्ञासु मन ने एक और निष्कर्ष निकाला। हमारे नए घर के आस-पास के स्थान अवश्य ही मनुष्यों से आबाद होंगे और इतने सारे प्रकार के जानवरों को एक साथ देखना हमारे आगंतुकों के लिए मनोरंजन का स्रोत था।

मुझे यह थोड़ा अजीब लगा क्योंकि हमने कभी किसी जानवर को पकड़कर अपने मनोरंजन के लिए कैद में रखने के बारे में सोचा भी नहीं था। रात की खामोशी और बहती ठंडी हवा ने मुझे तुरंत जवाब दे दिया। हम अपने प्राकृतिक आवास में इतने आनंदित और परिपूर्ण थे कि हमें कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि दूसरे जानवरों को बाड़े में रखना हमारे लिए खुशी का स्रोत हो सकता है।

अब मैंने एक रात्रि रक्षक को हमारे घर के पास से गुजरने वाली सड़क पर चुपचाप टहलते हुए देखा। अब तक मैं सभी रक्षकों की गतिविधियों से भली-भांति परिचित हो चुका था। मुझे पता था कि आधी रात के बाद कोई भी रक्षक चिड़ियाघर का अपना नियमित चक्कर नहीं लगाता और सोना पसंद करता है।

आज रात पहरेदार अचानक हमारे घर के सामने रुक गया। मुझे अकेले जागते हुए देखकर उसने मुझे देर तक देखा, और फिर उसके होठों पर एक मुस्कान आ गई जो हल्की चाँदनी में भी साफ़ दिखाई दे रही थी। उसने हाथ हिलाकर मुझे अपने पास आने

का इशारा किया। मैं थोड़ा उत्सुक होकर उसकी ओर बढ़ा, और मैंने देखा कि वह सावधानी से चारों ओर देख रहा था, मानो यह सुनिश्चित करना चाहता हो कि कोई हमें साथ में देख तो नहीं रहा है।

मैं उसके पास, तार की बाड़ के करीब पहुँच गया। उसने अपनी जेब में हाथ डाला और एक छोटी बोतल निकाली। उसने बोतल का ढक्कन खोला और तुरंत ही एक मदहोश कर देने वाली गंध हवा में फैल गई। उसने अपना मुँह चौड़ा खोला, सिर ऊपर उठाया और मुझे भी उसकी नकल करने के लिए उकसाया। मैं बहुत उत्सुक था, इसलिए मैंने भी उसकी नकल करते हुए अपना मुँह खोला और ऊपर देखा, जबकि उसने तार की जाली के बीच से बोतल मेरे मुँह के पास लाकर उसमें से रंगीन तरल पदार्थ डाल दिया। इससे पहले कि मैं कुछ प्रतिक्रिया कर पाता, अधिकांश तरल पदार्थ मेरे अंदर चला गया, मेरे गले से नीचे उतर गया और उसमें जलन पैदा कर दी। जो भी बचा था, मैंने उसे तुरंत थूक दिया।

मेरी कल्पना से परे था कि कोई चीज़ पीने में इतनी घिनौनी हो सकती है। मैं तुरंत पानी के कुंड की ओर भागा, क्योंकि केवल पानी पीने से ही मेरे गले की जलन शांत हो सकती थी और उस दुर्गंध से छुटकारा मिल सकता था। मैंने रात के पहरेदार पर तिरछी नज़र डाली और पाया कि वह दबी हुई हंसी हंस रहा था, मानो मेरी बेचैनी उसे मज़ेदार लग रही हो।

मैंने पानी के कुछ घूंट पी लिए और थूकने से पहले पानी को मुंह में घुमाया। यह प्रक्रिया कई बार दोहराई गई, तब जाकर मुझे महसूस हुआ कि मादक गंध अब मुझ पर नहीं टिक रही है। तब तक गार्ड भी हमारे बाड़े के पास से गुजर चुका था।

अब मैं एक पेड़ के नीचे बैठ गया। बाकी हिरणों के विपरीत, अब मुझे पेड़ों के नीचे सोना अच्छा लगता था, जैसा कि हम अपने जंगल में किया करते थे। मैं केवल तेज बारिश होने पर ही झोपड़ी में सोता था।

जैसे-जैसे मिनट बीतते गए, मुझमें एक प्रकार का सुखद आनंद भर गया। यह एक बेहद आनंददायक नींद थी। मुझे पता था कि यह उस रंगीन तरल पदार्थ के कारण था जिसे मैंने कुछ देर पहले अनजाने में पी लिया था।

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं ताकि मैं अपने अंदर व्याप्त शांति और सुस्ती को महसूस कर सकूँ। धीरे-धीरे, जड़ता ने मेरे सभी अंगों को जकड़ लिया, और अंत में, धीरे-धीरे और लयबद्ध तरीके से, मेरा मन एक अलग ही दुनिया में पहुँच गया, जहाँ मेरी बंद

आँखों के सामने धीरे-धीरे नए चित्र बनने लगे। वे चित्र इतने स्पष्ट और जीवंत थे कि मुझे अपनी आँखें खोलकर उन चित्रों के वास्तविक अस्तित्व को प्रमाणित करने का मन ही नहीं हुआ। यह एक सपने जैसा था जो वास्तविकता से भी अधिक वास्तविक प्रतीत हो रहा था।

मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अपनी जान बचाने के लिए बहुत तेज़ी से भाग रहा हूँ, मेरे शरीर में झुलसा देने वाली गर्मी महसूस हो रही थी। मेरे पीछे लगातार चटकने की आवाज़ और तेज़ रोशनी थी, जो उसी गति से मेरा पीछा कर रही थी। मेरे चारों ओर घनी झाड़ियाँ थीं, मानो डर से पसीना बहा रही हों, अपने साथियों को अंतिम विदाई दे रही हों, क्योंकि वे जानती थीं कि उनका अंत निकट है।

मुझे पता था कि यह जगह मेरा अपना जंगल है। लेकिन मैं इतनी तेज़ी से क्यों दौड़ रहा था, कभी-कभी ऊँची झाड़ियों को भी पार कर रहा था? मुझे नहीं पता कि मैं कितनी देर तक दौड़ा, लेकिन जब मुझे लगा कि तेज़ गर्मी अब मुझे झुलसा नहीं रही है, तो मैं रुक गया और राहत की साँस ली। अब मैं पीछे मुड़ा, और एक भयानक दृश्य ने मेरी साँस रोक दी। जंगल में आग लगी हुई थी। लपटें लालच से ऊपर उठ रही थीं, रात के अंधेरे आसमान तक पहुँचने की कोशिश कर रही थीं। हवा में जले हुए पेड़ों की गंध फैली हुई थी। बीच-बीच में राख के छोटे-छोटे टुकड़े आसमान में उड़ते हुए दिखाई दे रहे थे।

हालांकि मैं पसीने से तरबतर था और आग की भयावहता देखकर बुरी तरह डरा हुआ था, फिर भी मैं उससे अचंभित भी था। आसपास कोई पेड़ या लंबी घास न होने के कारण आग मुझ तक नहीं पहुंच सकी। लेकिन आग आगे बढ़ती रही। मैं चारों ओर से आग से घिरा हुआ था, फिर भी मुझे पता था कि मैं सुरक्षित हूं। स्तब्ध होकर मैंने आग को देखा और अचानक कुछ अविश्वसनीय देखा, लेकिन उसकी सुंदरता और भव्यता का वर्णन करना मेरे बस की बात नहीं थी।

आग की गहराई से एक चमकती हुई आकृति उभरी, जो धीमी लेकिन सधी हुई चाल से मेरी ओर बढ़ रही थी। जैसे-जैसे वह आग से दूर होती जा रही थी, उसकी चमक धीरे-धीरे कम होती जा रही थी और वह एक नश्वर प्राणी की तरह दिखने लगी थी। अब वह थोड़ी दूर खड़ी थी।

मुझसे कुछ दूर। वह बिल्कुल दूसरे हिरणों जैसा दिख रहा था, फर्क सिर्फ इतना था कि उसकी आंखें चमक रही थीं और उनसे एक सुखदायक रोशनी निकल रही थी। मैं

स्तब्ध और अवाक रह गया, इस अद्भुत आकृति से अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था। अचानक मुझे लगा कि उसकी चाल और हावभाव मुझे कुछ-कुछ जानी-पहचानी सी लग रही है।

‘तुम कौन हो?’ मेरी आवाज श्रद्धा और अज्ञात भय से कांप रही थी।

‘कैसे हो मेरे बच्चे?’ हिरण ने पूछा।

मैं उसकी आवाज पहचानने में कैसे गलती कर सकता था?

भावनाओं से मेरा गला भर आया था, लेकिन मुझे अपनी माँ से बात करने के लिए अपना मुंह खोलने की जरूरत नहीं थी...

'तुम्हारे बिना, मेरा एक हिस्सा बहुत पहले ही मर चुका है।'

‘इसीलिए मैं तुमसे मिलने आया हूँ। मैं तुम्हारे साथ ही हूँ, मेरे बच्चे। बस फर्क इतना है कि मैं उस रूप और आकार में नहीं हूँ जैसा तुमने मुझे पहले देखा था।’

‘तो फिर मुझे आपकी उपस्थिति का एहसास क्यों नहीं हो रहा? पहले, जब आप मेरे साथ होते थे, तो मैं सिर्फ एक गहरी सांस लेकर ही आपकी उपस्थिति का एहसास कर सकता था।’

'मुझे बाहर मत ढूंढो। बल्कि अधिकाधिक शांत रहो, और एक दिन तुम मुझे अपने भीतर जीवित पाओगे।'

लेकिन मैं यहाँ कैसे आ गया? मुझे एक चिड़ियाघर में बंदी बनाकर रखा गया है जहाँ पुरुष और महिलाएं हमें देखने आते हैं।

‘मेरे बच्चे, तुम फिर से अपने जंगल में होगे। मैं तुम्हें बस यही बताने आया हूँ।’

लेकिन कैसे? इस तार की बाड़ वाले इलाके से निकलना नामुमकिन है।

‘धैर्य रखो, एक दिन तुम फिर से बाहर आ जाओगे।’

‘सिर्फ मुझे ही क्यों? वहां तो बहुत सारे हिरण भी हैं।’

क्योंकि तुम चुने हुए कुछ लोगों में से एक हो।

‘मैं उन चुनिंदा लोगों में से एक क्यों हूँ?’

बहुत समय पहले तुमने मुझसे यही सवाल पूछा था, मैंने तुमसे कहा था कि इसका जवाब तुम्हें खुद ही ढूंढना होगा। लेकिन आज रात मैं तुम्हें जवाब दूंगा, क्योंकि इससे तुम्हें कैद के दिनों में हिम्मत मिलेगी।

क्या कोई भी हिरण उन चुनिंदा लोगों में से एक हो सकता है?

दरअसल, हम सभी चुने हुए कुछ लोगों में से एक हैं। लेकिन हम सभी के पास यह

विकल्प और स्वतंत्रता है कि हम यह तय कर सकें कि हम चुने हुए कुछ लोगों में से एक बनना चाहते हैं या नहीं।

'चुने हुए कुछ लोगों में से एक कैसे बना जाता है? मेरे जन्म के कुछ ही मिनटों बाद आपको कैसे पता चल गया कि मैं उन चुने हुए कुछ लोगों में से एक हूँ?'

'चुने हुए लोगों में से एक बनने का एकमात्र तरीका अपने दिल की आवाज़ सुनना है। यह हमेशा सत्य से गूंजता रहता है। लेकिन इसे सही ढंग से सुनने के लिए आपको शांत और स्थिर रहना होगा, अन्यथा आप अपने भीतर केवल अपने संदेह और भ्रम की बड़बड़ाहट ही सुन पाएंगे। याद रखें, सत्य कभी संदेह, ईर्ष्या या जलन के साथ नहीं रहता। यह अपने आप में शुद्ध, पवित्र और उदात्त है। हे मेरे बच्चे, जन्म के तुरंत बाद ही तुमने अपने भीतर की आवाज़ सुनने और पूरी शक्ति और क्षमता से उसका अनुसरण करने का साहस दिखाया, इस डर के बिना कि तुम्हारा प्रयास असफल हो सकता है। मैं यह कैसे न समझ पाऊं कि मेरा बच्चा चुने हुए लोगों में से एक है?'

उसके शब्दों ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। 'मैं आपके पास रहना चाहती हूँ, माँ। मैं आपको एक बार छूना चाहती हूँ, एक बार आपकी सुगंध से भर जाना चाहती हूँ,' मैंने कहा, मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे। धीरे-धीरे मैं उसकी ओर बढ़ी।

'अपनी बारी का इंतज़ार करो, मेरे बच्चे। एक दिन हम फिर मिलेंगे, लेकिन तब तक अपना जीवन पूरी तरह से, आनंदपूर्वक, बिना किसी अपराधबोध के जियो। हमारे जीवन का इसके सिवा कोई उद्देश्य नहीं है।'

अब वह मुझसे दूर जा रही थी, आग की ओर वापस कदम बढ़ा रही थी।

'माँ!' मैंने ज़ोर से चीख मारी। वह अब मुझसे इतनी दूर थी कि आँखों से बात करना मेरे लिए मुमकिन नहीं था।

लेकिन उसने मेरी पुकार अनसुनी कर दी। धीरे-धीरे उसके शरीर के हर हिस्से से प्रकाश निकलने लगा और उसका स्वरूप क्षीण हो गया। वह केवल प्रकाश का एक पिंड थी और कुछ ही क्षणों में वह आग में विलीन हो गई। और फिर, अचानक एक असाधारण घटना घटी। अचानक आग बुझ गई और जंगल में घना अंधेरा छा गया। मेरी बंद आँखों के सामने जंगल का अस्तित्व धीरे-धीरे लुप्त हो गया, शून्य में विलीन हो गया, और मेरे सामने केवल घोर अंधकार ही रह गया।

मैंने तुरंत अपनी आँखें खोलीं और एक सुखद आश्चर्य का अनुभव किया। मैं चिड़ियाघर में एक पेड़ के नीचे बैठा था। ऊपर बादलों से घिरा आकाश था, और मेरे चारों ओर

कई पेड़, एक छोटा तालाब, सोते हुए हिरणों का झुंड और कई अन्य वस्तुएँ थीं जो अब मुझे परिचित लग रही थीं। मैंने गहरी साँस ली यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या मेरी दृष्टि का वास्तविकता से कोई संबंध है और हवा में जले हुए पेड़ों की एक अलग सी गंध पाकर मैं चौंक गया। क्या यह किसी प्रकार की चेतावनी है? मैंने सोचा, अपनी माँ के प्रेत से हुई बातचीत को याद करते हुए। जल्द ही सुखद नींद ने मुझे पूरी तरह से घेर लिया, और मैं बिना किसी प्रतिरोध के नींद में डूब गया।

अगली सुबह जब मैं उठा तो पिछली रात की असाधारण घटना मुझे सपने जैसी लगी। मैंने उस दृश्य की तार्किक व्याख्या खोजने के बजाय, और अधिक शांत होने का फैसला किया, किसी भी तरह का निर्णय न लेने का, बल्कि अपने आसपास घटित हो रही हर चीज को एक दर्शक की तरह देखने का।

धीरे-धीरे मैं अकेलेपन के आनंद में डूबता जा रहा था, हालाँकि मुझे अपने अकेलेपन का लुत्फ़ उठाने के लिए किसी एकांत स्थान की आवश्यकता नहीं थी। बार-बार मेरी माँ की उस छवि से हुई बातचीत मेरे मन में आती और मेरा विश्वास बढ़ाती कि मैं सही दिशा में आगे बढ़ रहा हूँ। दिन बीतते गए, सप्ताह गुज़रे और इस तरह बरसात के दिन समाप्त हो गए। दिनों के बीतने के साथ-साथ मेरे आस-पास के सभी हिरण चिड़ियाघर में हमारे जीवन में और अधिक मग्न होते चले गए।

हालांकि, नशे की हालत में आए उस अजीब सपने ने मेरे अंदर इस जगह से एक दिन भागने का साहस और इच्छाशक्ति बरकरार रखी। फिर भी मैं कुछ और हफ्तों तक इस तार की बाड़ वाले इलाके में ही रहना चाहता था। कुछ गर्भवती हिरणियाँ गर्भावस्था के अंतिम चरण में थीं और जल्द ही बच्चे देने वाली थीं। मैं उनके प्रसव को देखने के लिए उत्सुक था।

इस बीच, मेरी उम्र के हिरण दिन भर हमारे आगंतुकों का मनोरंजन करने में व्यस्त रहे। उनकी उछल-कूद, उछल-कूद और कभी-कभार की चीखें हमारे चिड़ियाघर को जीवंत बना देती थीं। लेकिन हमारे आगंतुकों को यह पता नहीं था कि जब चिड़ियाघर में अंधेरा छा जाता था और रात की खामोशी कभी-कभी रात के पहरेदारों के कदमों की आहट और उल्लुओं की आवाज से टूटती थी, तो सभी युवा हिरण आपस में इस बात पर बहस करने लगते थे कि आज उनके प्रदर्शन को सबसे ज्यादा तालियां मिली हैं। मैं

हमेशा उनकी चर्चा चुपचाप सुनता रहता था।

एक सुबह, मैं रोज़ से थोड़ा जल्दी उठा और तुरंत अपनी आदत के अनुसार टहलने निकल गया। मैंने हर सुबह उठते ही तार की बाड़ के किनारे टहलने की आदत बना ली थी। अपना रोज़ का चक्कर पूरा करने के बाद, मैं पानी के कुंड के पास बैठ गया। कुंड लगभग पानी से लबालब भरा हुआ था, लेकिन उस पर जमी काई की परत अभी भी बरकरार थी। जब भी हममें से कोई पानी पीने के लिए कुंड पर जाता, काई की परत थोड़ी हट जाती जिससे हम पानी पी सकें, और जैसे ही हमारा पानी पीना खत्म होता, वह फिर से पानी की पूरी सतह पर जम जाती।

कई बार, पूल के किनारे बैठे-बैठे मैंने मन में कीचड़ हटाने का विचार किया, लेकिन फिर उसे किसी और दिन करने का सोचा। पर आज सुबह अचानक मुझे प्रेरणा मिली। मैं पूल में उतर गया। पानी की ठंडक ने मेरे शरीर को छुआ और मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई। पूल में पानी मेरी ऊंचाई तक था, और मुझे सांस लेने के लिए अपना सिर ऊपर रखना पड़ा। मैंने पूल की लंबाई और चौड़ाई में कई बार चक्कर लगाया, लेकिन मुश्किल से थोड़ा सा कीचड़ ही हटा पाया।

अब मुझे समझ आ गया था कि इससे हमेशा के लिए छुटकारा पाने के लिए मुझे कोई और ही अनोखा तरीका अपनाना होगा। अचानक, बिना किसी पूर्व सूचना के, मेरे मन में एक विचार आया। मैं पानी के कुंड से बाहर निकला और तार की बाड़ की ओर बढ़ा। जल्द ही मेरी नज़र उस चीज़ पर पड़ी जिसकी मुझे तलाश थी। वे एक पेड़ के मज़बूत और सूखे पत्ते थे। यह पेड़ हमारे घर के अंदर नहीं था, लेकिन कभी-कभी हवा इतनी मेहरबान होती थी कि उन पत्तों को उड़ाकर हमारे घर तक ले आती थी।

मैंने कुछ सूखे पत्ते उठाए और तालाब की ओर चल पड़ा। मैंने सावधानी बरती कि अपने होंठों को ज्यादा कसकर न दबाऊं, कहीं पत्ते फट न जाएं। तालाब तक पहुँचकर मैंने उन्हें तालाब में छोड़ दिया और देखा कि वे तैरते हुए नीचे जा रहे हैं और कीचड़ पर जम रहे हैं।

अब मुझे अपनी योजना का सबसे नाजुक हिस्सा पूरा करना था। मैं तालाब के पास गया और एक पत्ते को अपने दांतों के बीच दबाकर उसके दूसरे किनारे को चिपचिपी परत पर रगड़ने लगा। धीरे-धीरे पत्ते के दूसरे किनारे पर थोड़ी-थोड़ी चिपचिपी परत जमा होने लगी। जब मुझे यकीन हो गया कि सूखा पत्ता बिना टूटे इतना वजन सहन कर सकता है, तो मैं उसे तालाब के पास घास पर रख देता था। कई बार जब मैंने

उससे चिपचिपी परत हटाने की कोशिश की तो पत्ते टूटकर बिखर गए। लेकिन मैंने हार नहीं मानी। कई सूखे पत्तों से थोड़ी-थोड़ी चिपचिपी परत हट गई, जबकि कई असफल रहे। सुबह देर तक तालाब का पानी पूरी तरह साफ हो गया था, उस पर चिपचिपी परत का एक भी कण नहीं बचा था!

जीत का एहसास लिए, जब मैं तालाब से बाहर निकल रहा था, तभी आगंतुकों का पहला समूह हमसे मिलने आ चुका था। लेकिन बाकी दिनों के विपरीत, आज सुबह मेरे साथी हिरण उन्हें अपने नृत्य से प्रभावित करने में रुचि नहीं रखते थे। वे बल्कि मुझे हैरानी से देख रहे थे। शायद उन्हें कभी यह ख्याल ही नहीं आया था कि एक हिरण पानी के तालाब को कीचड़-मुक्त बना सकता है।

जब तक हम अपने लक्ष्य को पूरी ईमानदारी से हासिल करने की कोशिश नहीं करते, तब तक हममें से कोई भी यह नहीं जान पाता कि हम वास्तव में क्या कर सकते हैं। दरअसल, प्रकृति हमें केवल उन्हीं कार्यों को पूरा करने का सपना देखने देती है, जिन्हें सफलतापूर्वक पूरा करने की शक्ति भी वह हमें प्रदान करती है। मुझे बस इतना ही चाहिए कि हम यह विश्वास कर सकें कि हम अपने सभी प्रिय सपनों को साकार कर सकते हैं, ये विचार मुझे तालाब के किनारे खड़े होकर आ रहे थे।

इस नन्हे से तालाब में मैंने पहली बार अपना प्रतिबिंब देखा। बहुत समय हो गया था जब मैंने अपने जंगल के किनारे बहने वाली उस छोटी सी धारा में अपना प्रतिबिंब देखा था। महीनों बीतने के साथ मेरा आकार बढ़ गया था, और अब मेरे शरीर पर धब्बे अधिक स्पष्ट और उभरे हुए दिखाई दे रहे थे। मेरी गर्दन लचीली हो गई थी, और मेरी आँखों की चमक भी मेरे प्रतिबिंब में साफ झलक रही थी।

फिर मुझे यह एहसास हुआ कि इतने लंबे समय बाद सूर्य की किरणें पड़ने से तालाब का पानी प्रसन्न था। मुझे लगा कि कीचड़ की परत के नीचे पानी उदास और निराश था, लेकिन अब सूर्य की किरणों के स्पर्श और हवा के हल्के-हल्के झिलमिलाने से वह आनंदित था।

क्या ऊब की एक परत अक्सर हमारे मन को इस तरह उदासी से भर देती है कि खुशी की किरणें वहाँ तक नहीं पहुँच पातीं? अगर ऐसा है, तो क्या हमें कभी-कभी मनपसंद काम करके ऊब की इस परत को दूर नहीं करना चाहिए, ताकि सूरज और हवा हमेशा हमारे मन तक पहुँच सकें और हमें खुशमिजाज बनाए रखें? मैंने सोचा। काश मैं अपने इस विचार को किसी और हिरण के साथ साझा कर पाता, लेकिन चारों ओर देखने पर

मैंने पाया कि सभी हिरण अपने-अपने काम में व्यस्त थे।

अध्याय-*10*

एक नए प्राणी का जन्म

हर जन्म हमारी पृथ्वी को और अधिक सुंदर बनाने का एक सशक्त अवसर है।

आखिरकार, वो दिन आ ही गया जिसका मुझे लंबे समय से बेसब्री से इंतज़ार था। दरअसल, वो दिन नहीं, बल्कि एक रात थी। फिर भी, सुबह से ही मुझे ये आभास हो रहा था कि आज रात हमारे हिरणों के झुंड में एक नया सदस्य शामिल होगा। जैसे ही सूरज की पहली किरण हमारे चिड़ियाघर में पड़ी, मैंने उस हिरणी पर ध्यान दिया जिसके ज़रिए बहुत जल्द एक नई ज़िंदगी आने वाली थी। वो चल रही थी, थोड़ी बेचैनी से, लेकिन उम्मीद भरी निगाहों से। उसकी निर्मल आँखों में थोड़ी चिंता झलक रही थी।

अचानक मेरी नज़रें जल्द ही माँ बनने वाली हिरणी से मिलीं, और उसने मुझे एक शांत

और संतुष्ट मुस्कान दी। मैंने सोचा, आज उसका जीवन किसी न किसी रूप में पूरा हो जाएगा, और मुझे बहुत पहले का वह एहसास याद आया कि मेरा जीवन किसी न किसी रूप में तब तक अधूरा रहेगा जब तक मैं माँ नहीं बन जाती और अपने बच्चों का पालन-पोषण नहीं कर लेती। जब से मुझे चिड़ियाघर लाया गया था, मैंने एक दिन माँ बनने की उम्मीद खो दी थी। बाड़े के अंदर, मेरा मुख्य उद्देश्य माँ हिरणियों को अपने बच्चों को जन्म देते और अत्यंत सावधानी से उनका पालन-पोषण करते देखकर परोक्ष संतुष्टि प्राप्त करना था।

सुबह धीरे-धीरे बीत रही थी, और जल्द ही माँ बनने वाली हिरणी एक पेड़ के नीचे आराम कर रही थी, जहाँ पत्तों की घनी छाया से छनकर ठंडी धूप उस पर पड़ रही थी। सभी हिरण, जवान और बूढ़े, उस हिरणी का आज सुबह स्वागत कर रहे थे, क्योंकि मेरी तरह वे भी जानते थे कि आज हमारे समूह में एक नया सदस्य शामिल होगा।

दो दिन पहले तीन आदमी हमारे तार की बाड़ वाले घर के अंदर आए थे। हमारे घर में शायद ही कभी कोई आदमी आता था, क्योंकि वे बाहर से ही भूसे या पुआल के गट्ठे फेंकते थे। उनमें से एक के हाथ में लाठी थी और दूसरे हट्टे-कट्टे दिखने वाले आदमी के हाथ में पतली छड़ी। ऐसा लग रहा था कि वे दोनों यह देखने आए थे कि हम सब ठीक से व्यवहार कर रहे हैं या नहीं, जबकि तीसरा आदमी अपना काम कर रहा था। हमने पहले दो आदमियों को पहले भी देखा था, लेकिन तीसरा आदमी हमारे लिए बिलकुल अजनबी था।

जैसे ही वे हमारे घर में दाखिल हुए, हमारे हाथ-पैर तन गए और साँसें तेज़ हो गईं, क्योंकि हमें पता नहीं था कि तीसरा आदमी क्या करने वाला है। उसने घुटनों तक लंबा सफ़ेद लबादा ओढ़ा हुआ था और उसका चेहरा गंभीर था। उसके लबादे की एक जेब से एक यंत्र झाँक रहा था। दृढ़ कदमों से वह जल्द ही माँ बनने वाली हिरणी की ओर बढ़ा, जबकि बाकी आदमी आज्ञाकारी भाव से उसके पीछे-पीछे चल रहे थे।

माँ बनने वाली हिरणी को यह समझने में ज़रा भी देर नहीं लगी कि तीनों आदमी उसकी तरफ आ रहे हैं। तुरंत ही उसे डर सताने लगा। जब भी वे उसकी तरफ आते, वह भागने की कोशिश करती, लेकिन तभी उस हट्टे-कट्टे आदमी की दिल दहला देने वाली चीख ने उसे वहीं रोक दिया। उसे एहसास हो गया कि अब और भागने से वह मुसीबत में पड़ जाएगी।

जब वह बिना हिले-डुले खड़ी थी, पास आते आदमियों की आकृतियों को भय से घूर

रही थी, तो मैंने देखा कि उसके पैर कांप रहे थे, जबड़े फड़क रहे थे और आंखें फैल रही थीं। तभी मेरा ध्यान उसके पेट के उभार पर गया। मैं उसे भी कांपते हुए महसूस कर सकती थी, हालांकि लगभग न के बराबर। क्या एक बच्चा अपनी माँ के गर्भ में रहते हुए उसकी चिंता और घबराहट को महसूस कर सकता है? मैंने सोचा।

सफेद लबादा ओढ़े उस व्यक्ति ने होने वाली माँ हिरणी को दिलासा देते हुए अपना हाथ उठाया। उसका चेहरा शांत था, और जब उसने बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज़ मधुर थी। हालाँकि उसके शब्द समझ से परे थे, फिर भी उनमें निहित कंपन को आसानी से महसूस किया जा सकता था।

हम सभी को यह स्पष्ट था कि उसका कोई नुकसान पहुंचाने का इरादा नहीं था और वे दोनों व्यक्ति केवल उसके साथ आने के लिए यहां थे।

जल्द ही मां बनने वाली हिरणी के पास पहुँचकर, सफेद लबादा पहने वह आदमी उसके पास बैठ गया। उसने अपनी उंगलियों से हिरणी के पेट पर धीरे से हाथ फेरकर उसके उभरे हुए पेट को महसूस किया। फिर उसने उसके कान, आंखें और मुंह की जांच की। ऐसा लग रहा था कि वह हिरणी की हालत से संतुष्ट था, क्योंकि मैंने उसे सहमति में सिर हिलाते हुए देखा।

जैसा कि मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था, उसने सभी गर्भवती हिरणियों की जाँच की। जाँच के दौरान कोई भी हिरणी ज़रा भी नहीं हिली। पूरी जाँच शांतिपूर्वक संपन्न हुई, और जब वे तीनों हमारे घर से चले गए, तो हम सबने राहत की साँस ली। हम सब समझ गए थे कि यह जाँच यह सुनिश्चित करने के लिए थी कि सभी गर्भवती हिरणियों का प्रसव सहज होगा या नहीं।

और अंततः, वह शुभ समय आ गया जब हमारे चिड़ियाघर में हिरण के पहले बच्चे का जन्म हुआ। माँ हिरणी का चेहरा सिकुड़ गया, उसका पेट फड़कने लगा और वह अपने गर्भ से बच्चे को बाहर निकालने के लिए ज़ोर-ज़ोर से प्रयास कर रही थी। अगले कुछ मिनटों तक उसका प्रयास जारी रहा, जब तक कि गर्भनाल द्रव से ढका हुआ नवजात शिशु चिड़ियाघर की ज़मीन पर नहीं गिर गया। यह जुड़वाँ बच्चे नहीं थे जैसा कि उसने उम्मीद की थी, बल्कि केवल एक स्वस्थ हिरण का बच्चा था।

नवजात शिशु ने माँ से अलग होने पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने के लिए तुरंत एक तीखी चीख निकाली। हम सभी, माँ-बच्चे के चारों ओर खड़े होकर, हमेशा की तरह बच्चे का स्वागत किया। माँ हिरणी ने अपने बच्चे का बारीकी से निरीक्षण किया, और

जब उसे यकीन हो गया कि वह अन्य नवजात हिरणियों जैसा ही दिखता है, तो उसने राहत की साँस ली।

लेकिन मुझे कुछ शंका थी। जंगल में जब भी कोई हिरण पैदा होता है, तो उसकी माँ सबसे पहले उसके शरीर पर जमे तरल पदार्थ को चाटकर साफ करती है। लेकिन यहाँ हिरणी अपने बच्चे को चाटकर साफ करने में न तो जल्दी में थी और न ही उसे चलना सिखाने में कोई दिलचस्पी थी। कुछ समय बाद, सारे हिरण इधर-उधर चले गए और माँ और नवजात शिशु को अकेला पाकर, मैं जिज्ञासु होकर दबे पांव उनके पास गया। मुझे पास देखकर हिरणी ने अपना चेहरा ऊपर उठाया।

मैंने मादा हिरण से पूछा, 'जंगल में हम जिस तरह से इसके शरीर के आसपास के तरल पदार्थ को साफ करते थे, वैसे तुम क्यों नहीं कर रही हो?'

क्या आप जानते हैं कि हम जंगल में अपने नवजात शिशुओं को चाटकर साफ क्यों करते हैं?

'हां,' मैंने हकलाते हुए कहा। 'क्योंकि उस तरल पदार्थ की गंध से शिकारी को नवजात शिशु को ढूंढने में मदद मिल सकती है।'

'बिल्कुल सही,' मादा हिरण ने कहना शुरू किया। 'इसी कारण से, हम हमेशा अपने बच्चों को जल्द से जल्द अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद करने की कोशिश करते हैं। जब तक वे तेज़ दौड़ नहीं सकते, जंगल में उनका जीवन असुरक्षित है,' वह रुकी और बोली, 'लेकिन देखो, यहाँ आसपास कोई शिकारी नहीं हैं। हर पल मारे जाने का डर नहीं है। तो अपने बच्चे को चाटकर साफ करने या उसे अपने पैरों पर खड़ा करने की जल्दी क्यों करें। देर-सवेर वह सब कुछ सीख ही जाएगा।'

मैंने हिरण के बच्चे पर ध्यान दिया, जो भयभीत होकर इधर-उधर देख रहा था, इस नई दुनिया में खुद को पाकर पूरी तरह से असमंजस में था।

'मेरे बच्चे,' हिरणी ने फिर कहना शुरू किया। 'मैं जानती हूँ कि तुम दूसरे हिरणों से बहुत अलग हो। मैं जानती हूँ कि तुम अपनी उम्र के दूसरे हिरणों की नकल नहीं करते, बल्कि अपनी शर्तों पर जीते हो, लेकिन जब तक तुम माँ नहीं बन जाते, तब तक तुम्हें बच्चे पालने का मतलब कैसे समझ आएगा?'

मैंने उसकी बात से सहमति जताते हुए सिर हिलाया और फिर पूल के पास अपनी पसंदीदा जगह पर लौट गई। पूल साफ करने के बाद, पानी की सतह पर एक पतली सी काई जमने लगी थी। एक मजबूत पत्ते से उसे अच्छी तरह साफ करना ही काफी

था।

इस शांत रात में, पूल का पानी एकदम स्थिर था क्योंकि हवा इतनी धीमी चल रही थी कि उसमें कोई लहर नहीं उठ रही थी। शांत पानी में मुझे आकाश का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई दे रहा था। ऊपर देखे बिना ही मैं शांत चंद्रमा, टिमटिमाते छोटे-छोटे तारे, आकाश में बिखरे हुए तारे और चांदी की परत वाले बादलों को आकाश में सहजता से तैरते हुए देख सकता था। दूसरों को अपनी स्वतंत्रता का भरपूर आनंद लेते हुए देखकर मुझे अक्सर यह बात और भी गहराई से याद आ जाती थी कि इस तार की बाड़ वाले क्षेत्र में मेरी गतिविधियाँ सीमित थीं।

तभी मुझे एक कर्कश आवाज सुनाई दी और मैंने चारों ओर नजर घुमाई। हिरणी अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। स्वाभाविक रूप से, नन्हा हिरण भी वही तरीका अपना रहा था जो मैं अपनी माँ से अधिक दूध निकालने के लिए इस्तेमाल करता था।

मां और नवजात बच्चे को देखते हुए मेरे मन में विचारों की एक लंबी धारा दौड़ गई... चिड़ियाघर में पैदा हुए हिरणों को शायद कभी मौत का डर नहीं सताएगा, और इसीलिए वे जीवन को एक पुरस्कार के बजाय एक सामान्य बात मानेंगे। उन्हें भोजन की तलाश के सुख-दुख का अनुभव नहीं होगा। सबसे बढ़कर, उनके लिए इस तार की बाड़ से बाहर की दुनिया की कल्पना करना असंभव होगा। अगर उनकी माताएं उन्हें जंगल में बिताए अपने दिनों की कहानियां सुनाएंगी, तो उन्हें वे कहानियां किसी परी कथा जैसी लगेंगी। शायद वे जंगल में पलने वाले हिरणों से कमजोर होंगे।

अचानक एक चिड़िया पानी के कुंड के ऊपर से उड़ती हुई गुजरी और उसने पानी में पत्थर का एक छोटा टुकड़ा गिरा दिया। इससे पानी में छोटी-छोटी लहरें उठ गईं, जिससे पानी में आकाश का पूरा प्रतिबिंब विकृत हो गया। मैंने फिर से असीम तारों से भरे आकाश की ओर देखा। वह हमेशा की तरह शांत और स्थिर था।

अपनी छवि के क्षणिक रूप से विकृत हो जाने से उसे ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ा। आकाश, स्थिर वृक्षों को देखते हुए और रात की खामोशी को महसूस करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि जीवन और संसार के रहस्य को समझना असंभव है। अगर चिड़ियाघर में कुछ हिरणों का जन्म होना है, तो इसके पीछे कोई न कोई कारण ज़रूर होगा।

अचानक मुझे यह अहसास हुआ कि विशाल आकाश में मौजूद सभी प्राणी मुझे देख रहे थे और मौन रूप से जीवन के प्रति मेरी समझ को स्वीकार कर रहे थे। आशा से

भरे हृदय के साथ, मैं जल्द ही गहरी नींद में सो गया।

अध्याय-*11*

दूसरे ग्रह से आए आगंतुक

हर दिन एक छोटा जीवन है, हर जागना और उठना एक छोटा जन्म है, हर नई सुबह एक छोटी जवानी है, और हर आराम करना और सोना एक छोटी मृत्यु है।

~आर्थर शोपेनहावर

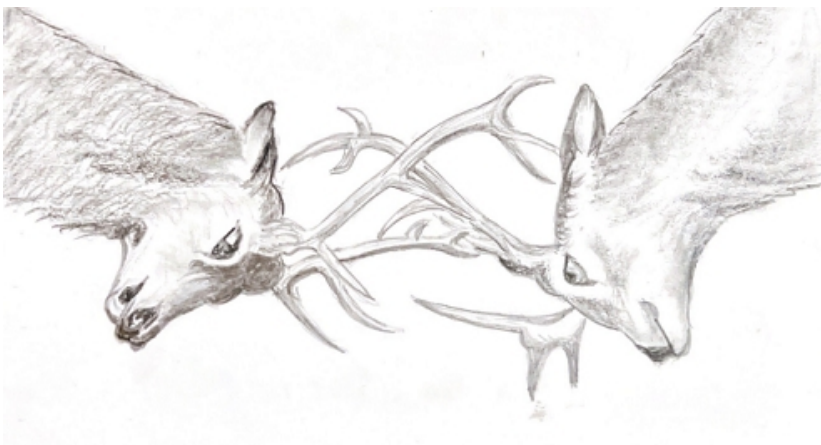

अगले महीने के दौरान, उन तीनों आदमियों ने कुछ और बार दौरा किया, और सफेद लबादा पहने आदमी हमेशा गर्भवती हिरणियों का निरीक्षण करता था। हर बार आने पर हिरणियों का जन्म होता था, और अब तक हमारे घर में बारह नए सदस्य आ चुके थे। हालाँकि हर माँ अपने बच्चे के जन्म के बाद खुशी से फूली नहीं समा रही थी, लेकिन बाकी छोटे हिरणियों को यह अच्छा नहीं लग रहा था। उन्हें अब कई और छोटे और कोमल हिरणियों के साथ बाड़ा साझा करना पड़ रहा था। अंत में, जब आखिरी गर्भवती माँ ने एक बच्चे को जन्म दिया, तो सभी छोटे हिरणियों ने राहत की गहरी साँस ली।

मेरे दिन निराशाजनक रूप से एक जैसे और कुछ हद तक नीरस भी हो गए थे। इसके अलावा, आने वाली सर्दी ने मुझे थोड़ा आलसी बना दिया था। मैं सुबह भर धूप में बैठा

रहता था। जीवन को पूरी तरह से जीने के मेरे संकल्प के बावजूद, अक्सर मुझे ऊब महसूस होती थी। मुझे नहीं पता था कि यह मुझे कहाँ ले जाएगा, लेकिन अचानक एक दिन हमारे जीवन में एक बड़ा बदलाव आ गया।

हमारा घर आयताकार था और उसकी लंबाई उसकी चौड़ाई से कम से कम दोगुनी थी। घर की चौड़ाई के समानांतर दो सड़कें थीं। हमारे सामने एक चौड़ी सड़क थी जहाँ लोग खड़े होकर हमें देख सकते थे और हमारे पीछे एक अपेक्षाकृत संकरी सड़क थी, जहाँ केवल चिड़ियाघर के कर्मचारी, हमारे लिए भोजन से लदी हाथगाड़ियाँ और कभी-कभार ही कोई पशु वाहन दिखाई देते थे। यहाँ एक ऊँचा द्वार था - हमारे घर में आने-जाने का एकमात्र रास्ता - जो हमेशा बाहर से बंद रहता था।

हमारे घर के दोनों ओर एक ही आकार और प्रकार के तार की बाड़ से घिरे क्षेत्र थे, जिनमें एक जैसे पानी के कुंड थे। ये व्यवस्थाएँ अन्य जानवरों को रखने की योजना के साथ की जाती थीं, और ऐसे जानवरों की कमी के कारण दोनों विशाल बाड़े खाली पड़े थे। हालाँकि, दोनों के अपने-अपने शेड थे और हमारे शेड से उनमें केवल यही अंतर था कि उनकी दीवारें पारदर्शी नहीं थीं और वे चारों ओर से खुले थे।

लेकिन अब कुछ बदलाव आया। सर्दियों की शुरुआत में, एक सुहावनी सुबह, मैंने कुछ आदमियों को हमारे घर के दाहिनी ओर तार की बाड़ वाले इलाके में घुसते देखा। उनके पास कुछ औजार थे, जिनमें वह भी शामिल था जिसे मैंने चिड़ियाघर ले जाते समय जानवरों वाली वैन में उन्हें इस्तेमाल करते देखा था। वह एक लॉनमॉवर था। पहले लंबी घास काटी गई और फिर पूरे इलाके की घास काटी गई। कटी हुई घास को इकट्ठा करके हमारे घर के पास छोड़ दिया गया।

उसके बाद पारदर्शी चादरें लाई गईं और शेड के तीनों तरफ उनसे ढक दिया गया। और देखते ही देखते, सूर्यास्त से काफी पहले, हमारे बाड़े के दाहिनी ओर का तार से घिरा हुआ हिस्सा हमारे घर की तरह रहने लायक हो गया।

हमें इस बात का ज़रा भी संदेह नहीं था कि जल्द ही किसी अन्य प्रजाति के जानवरों को भी इस विशाल पिंजरे में कैद कर लिया जाएगा। लेकिन दोपहर ढलते ही हमें एक ज़बरदस्त झटका लगा। दो आदमियों ने दोनों बाड़ों के बीच लगी तार की बाड़ का एक टुकड़ा काट दिया। यह इतना बड़ा था कि दो हिरण आसानी से इसके बीच से गुज़र

सकते थे। फिर कटे हुए हिस्से के किनारों को पतली धातु की चादर से ढक दिया गया ताकि खुले हुए नुकीले तार किसी की त्वचा को खरोंच न सकें।

जब उनका काम पूरा हो गया, तो तार की बाड़ का कटा हुआ हिस्सा एक प्रवेश द्वार जैसा लग रहा था, मानो हमें पास के पिंजरे में जाने का न्योता दे रहा हो। कहने की ज़रूरत नहीं, दोपहर ढलने के बाद जब वे लोग पिंजरे से चले गए, तो हममें से ज़्यादातर लोग पास के बाड़े में गए और उसकी लंबाई-चौड़ाई में घूमे। हम सभी के मन में एक जायज़ उम्मीद जगी कि पिछले कुछ महीनों में हमारी संख्या में हुई बढ़ोतरी को देखते हुए, यह पिंजरा हमें ही दिया गया है। ज़्यादातर युवा हिरणों को यकीन हो गया था कि उनका घर दोगुना बड़ा हो गया है और वे आपस में चर्चा करने लगे कि वे दोनों बाड़ों को कैसे बाँटेंगे।

शाम ढल रही थी और वे सभी नई मिली आज़ादी की खुशी से उछल-कूद कर रहे थे। मैं भी बाकी हिरणों की तरह पास के पिंजरे की तार की बाड़ के किनारे-किनारे चल रहा था, और धीरे-धीरे मेरे मन में एक चिंता की भावना घर कर गई। मुझे लगा कि यह पिंजरा हमारे लिए खास तौर पर सजाया-संवारा नहीं गया था, हालांकि दोनों पिंजरों के बीच एक प्रवेश द्वार बनाया गया था। मैं ऐसा क्यों महसूस कर रहा था, यह समझाना मुश्किल था, लेकिन मैं उनके जश्न में शामिल नहीं हो सका। हालांकि, किसी भी हिरण को मेरे उनके उल्लास में शामिल न होने की परवाह नहीं थी। वे हमेशा मुझे शांत और अंतर्मुखी स्वभाव का समझते थे।

उस रात कुछ हिरण के बच्चे शेड के ऊंचे चबूतरे पर बने नए पिंजरे में सो गए, ताकि वे उस पर अपना अधिकार और आधिपत्य जता सकें। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि अगले दिन इस शेड और इस पिंजरे पर मालिकाना हक जताने का उनका सपना चकनाचूर हो जाएगा।

अगले दिन दोपहर के कुछ समय बाद, मैं लगभग सो ही रहा था कि एक वैन की घरघराहट ने मुझे जगा दिया। सभी हिरण, जो अलग-अलग कामों में व्यस्त थे, उन्होंने भी घरघराहट की आवाज़ की दिशा में ध्यान दिया।

यह हमारे पड़ोसी पिंजरे के मुख्य द्वार से आ रही थी। यह एक पशु वाहन था। वाहन बगल वाले बाड़े के द्वार के सामने रुका, और फिर वाहन का पिछला दरवाजा खुल

गया।
वैन के पिछले हिस्से वाले डिब्बे में कम से कम दस हिरण थे। हिरणों के बारे में सबसे पहली बात जिसने मेरा ध्यान खींचा, वो थीं उनकी आँखें। वे डर से पागल हो रही थीं। सभी हिरणों के सींग लंबे और उभरे हुए थे, जो देखने में पत्तों से रहित पेड़ की शाखा जैसे लगते थे; एक ऐसी शाखा जिसमें कई उपशाखाएँ हों। वे सभी नर हिरण थे!
सहज ही मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। लेकिन अब मुझे पिछली वसंत ऋतु में हिरणों के हमारे झुंड और नर हिरणों के एक समूह के बीच हुई संक्षिप्त मुठभेड़ स्पष्ट रूप से याद आ गई।
इन नर हिरणों ने भी वैन से बाहर आने में अनिच्छा व्यक्त की, जैसा कि हमने किया था, जबकि चिड़ियाघर के परिचारकों और देखभालकर्ताओं ने उन्हें वैन से उतरने के लिए मजबूर किया।
चिड़ियाघर का कर्मचारी धीरे-धीरे सभी नर हिरणों को उनके लिए निर्धारित पिंजरे की ओर ले गया। उनके पीछे तुरंत ही गेट बंद कर दिया गया और कुछ घास के गट्ठे अंदर फेंक दिए गए।
नर हिरणों का पूरा झुंड स्तब्ध था, लेकिन जैसे ही उन्हें पता चला कि बगल के पिंजरे में चालीस से कम हिरण नहीं हैं और वे सभी जीवन से संतुष्ट प्रतीत होते हैं, वे सभी कम उत्तेजित हो गए।
अपने जिज्ञासु स्वभाव के कारण, नए घर में पहुंचने के कुछ ही मिनटों के भीतर उन्होंने वह प्रवेश द्वार खोज लिया जिससे उन्हें पड़ोसी बाड़े तक आसानी से पहुंच मिल गई।
जैसे ही एक नर हिरण हमारे घर में दाखिल हुआ, बाकी हिरण भी उसके पीछे-पीछे आ गए। शायद हमारे घर की हवा सूंघकर ही उन्हें पता चल गया था कि पिंजरे में हाल ही में पैदा हुए कुछ छोटे हिरणों को छोड़कर हम लगभग सभी मादा हैं। इस खोज का उन पर कुछ अजीब सा असर हुआ।
लगभग यंत्रवत ही, उन सभी ने वीर भाव दिखाने की कोशिश की। उन्होंने अपने सिर उठाए, अपने शरीर को फुलाया और उनकी चाल पहले से कहीं अधिक दृढ़ और लंबी हो गई। मेरे साथी हिरणों में भी कुछ बदलाव आया। हालाँकि उन्हें यह जानकर निराशा हुई कि पास वाला पिंजरा उनके लिए नहीं है, लेकिन नर हिरणों के एक छोटे से झुंड के इस अप्रत्याशित आगमन ने उनके दिलों में उत्साह भर दिया। मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि इससे मेरे अंदर भी एक अजीब सी हलचल मच गई।

आज रात कोई भी मादा हिरण पास के पिंजरे में सोने नहीं गई, जैसा कि उन्होंने कल रात किया था। सूर्यास्त के बाद कोई भी नर हिरण हमारे घर पर नहीं रुका। नर और मादा हिरणों ने अपने-अपने तरीके से अपना कार्यक्षेत्र निर्धारित कर लिया था।

लेकिन आज रात, कोई भी हिरण बाकी रातों की तरह जल्दी नहीं सोया। बल्कि हमारे पिंजरे के शेड के अंदर, इस बात पर ज़ोरदार बहस चल रही थी कि नर हिरणों को हमारे बगल वाले बाड़े में क्यों लाया गया और दोनों पिंजरों के बीच प्रवेश द्वार क्यों बनाया गया। मैं भी चुपचाप सुनने के लिए शेड के एक कोने में बैठा रहा।

हममें से अधिकांश युवा हिरण, मेरी ही तरह, नर हिरणों से पूरी तरह अपरिचित थे और उनके बारे में हमें जो कुछ भी पता था, वह हमारी माताओं द्वारा साझा की गई जानकारी थी। फिर भी अब वे हमें किसी दूसरे ग्रह के प्राणियों की तरह प्रतीत होते थे जो केवल प्रजनन के मौसम में ही हमसे मिलने आते थे।

एक युवा हिरणी ने कहा, 'मुझे लगता है कि उन्होंने भी हमारी तरह शिकारियों से दूर रहने के लिए प्रार्थना की होगी।' वह अपने इतने करीब नर हिरणों को देखकर बहुत उत्साहित लग रही थी।

“लेकिन इससे यह स्पष्टीकरण नहीं मिलता कि तार की बाड़ में वह छेद क्यों किया गया था।” यह एक अन्य हिरण की प्रतिक्रिया थी।

एक अन्य युवा हिरण ने मजाकिया लहजे में सुझाव दिया, 'शायद चिड़ियाघर के अधिकारी चाहते हैं कि वसंत आने से पहले हम एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जान लें।'

कुछ हिरणों ने एक साथ कहा, 'यही सबसे तर्कसंगत कारण है।'

एक बूढ़े हिरण ने धीमी, लगभग चेतावनी भरी आवाज़ में कहा, 'कृपया धीरे बोलिए। हालाँकि इस बात की बहुत कम संभावना है कि वे हमें सुन और समझ पाएँगे, लेकिन जोखिम क्यों लेना? क्या आप नहीं जानते कि अगर उन्हें पता चल गया कि हम उनके बारे में बात कर रहे हैं, तो वे कितने घमंडी हो जाएँगे?'

उसके शब्दों का तुरंत असर हुआ और बाकी की बातचीत दबी आवाज़ में फुसफुसाते हुए चली। बातचीत का अंत सबसे उम्रदराज हिरणों में से एक की एक और सलाह के साथ हुआ।

प्रिय सभी, हमेशा याद रखना कि हम नर हिरणों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कभी भी इतराते या अकड़ते नहीं हैं। वे शारीरिक रूप से हमसे अधिक बलवान हो

सकते हैं, लेकिन याद रखना, हम ही तय करते हैं कि किसे अपने साथ अंतरंग होने की अनुमति देनी है। वास्तव में, उन्हें हमारा दिल जीतने के लिए अपनी योग्यता साबित करनी होगी। इसलिए, बच्चों, चूंकि आपको नर हिरणों का कोई अनुभव नहीं है, मैं आप सभी से अनुरोध करता हूं कि उनके सामने चुप और गंभीर चेहरे के साथ रहें। उनकी आंखों में कभी मत देखो। उन्हें कभी यह आभास मत होने दो कि वे तुम्हारे मन में बसे हुए हैं। उन्हें अपना पूरा प्रयास करने दो ताकि वे तुम्हारा ध्यान आकर्षित कर सकें। सबसे वरिष्ठ हिरणों में से एक होने के नाते, मैंने जंगल में कई वसंत ऋतुएं बिताई हैं। मेरी बातें सुनना आपके लिए लाभदायक होगा।

सभी युवा हिरणों ने चुपचाप सिर हिलाया। लेकिन मुझे ऐसा लगा कि वे बूढ़े हिरण की बातों से सहमत नहीं थे।

चर्चा समाप्त होने के बाद, सभी हिरण अपनी सामान्य जगह पर सोने चले गए, और मैं पेड़ के नीचे अपनी पसंदीदा जगहों में से एक पर लौट आया।

जैसे-जैसे रात गहरी होती गई और चारों ओर सन्नाटा छाता गया, मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई कि अधिकांश हिरण जाग रहे थे, जबकि उनके सोने का समय काफी पहले ही बीत चुका था। मैंने उन सभी पर चुपके से नज़र डाली। उनमें से अधिकांश के कान कभी-कभार फड़फड़ा रहे थे और वे बीच-बीच में नर हिरण के सींग की ओर चोरी-छिपे देख रहे थे। संयोगवश, अब तक जाग रहे सभी हिरण युवा थे।

मुझे पूरा यकीन था कि जल्द ही हमारा घर और भी चहल-पहल और उत्साह से भर जाएगा। लेकिन क्या मैं भी इसका हिस्सा बन पाऊँगी? मैंने सोचा।

अगले दो सप्ताह पलक झपकते ही बीत गए। अचानक सभी युवा हिरणों में एक नया उत्साह दिखाई दिया। जब भी कोई आगंतुक हमारे पिंजरे के सामने आता, वे दोगुनी ऊर्जा के साथ नाचने और उछलने लगते। मैं समझ गया कि अब आगंतुकों का ध्यान आकर्षित करना उनकी मुख्य चिंता नहीं रही। बल्कि वे चाहते थे कि नर हिरण उनके लचीले शरीर, उनकी स्वाभाविक फुर्ती और प्रेम भरी निगाहों पर ध्यान दें।

थोड़ी दूरी पर अपने पिंजरे में बैठा नर हिरण, हमारे झुंड के युवा हिरणों को मौन भाव से देखता रहता था।

इसी बीच, हमारे पिंजरे में मौजूद कुछ नर हिरण, जिनकी उम्र मुश्किल से दो महीने

थी, ने महसूस किया कि पड़ोसी पिंजरे के हिरण उनके जैसे ही हैं और वे स्थायी रूप से वहीं चले गए। उनकी माताओं ने कभी भी उन पर यह ज़िद नहीं की थी कि वे अनजान नर हिरणों के झुंड के बजाय उनके साथ रहें।

बहुत कम समय में ही युवा नर हिरणों में स्वाभाविक रूप से अड़ियलपन और आक्रामकता का भाव आ गया। उनकी चाल अधिक दृढ़ और प्रभावशाली हो गई। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह थी कि अन्य नर हिरणों की उपस्थिति में उनके सींग तेजी से बढ़ने लगे, जिससे उनका व्यक्तित्व और भी प्रभावशाली हो गया।

दिन बीतते गए, लेकिन नर हिरण ने हमारे घर में पहली बार आने के बाद से एक बार भी हमारे पिंजरे में कदम नहीं रखा। उन्होंने किसी भी मादा हिरण को अपने परिसर में आने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया, हालांकि हमारे घरों के बीच का प्रवेश द्वार हमेशा खुला रहता था।

सर्दी के अंत में, जब वसंत ऋतु ठंड और कोहरे से भरे दिनों के आवरण से झाँक रही थी, तभी सभी हिरणों में अचानक एक बदलाव आया। कोयल की आवाज़ और हवा में व्याप्त स्फूर्तिदायक ऊर्जा वसंत के आगमन के पहले संकेत थे। इसने हम सभी में इतना ज़बरदस्त बदलाव लाया कि इससे पहले कि हम इसे महसूस कर पाते, इसने हमें पूरी तरह से अपने वश में कर लिया, हमें आनंदमय उत्साह से सराबोर कर दिया और हमारे शरीर में रक्त प्रवाह को तेज़ कर दिया। प्रकृति का यह उत्सव मनाने का इतना शक्तिशाली निमंत्रण था कि इसका जवाब न देना असंभव था।

पिछले साल, वसंत ऋतु के दौरान, जब मैं बहुत छोटा था, तब मैंने वसंत के इन अजीब प्रभावों को महसूस नहीं किया था। मैंने नर हिरणों में भी कुछ स्पष्ट बदलाव देखे थे। वे अधिक बेचैन हो गए थे, और पहले की तरह दिन का अधिकांश समय आलस में नहीं बिताते थे। वे अपने पिंजरे में इधर-उधर चक्कर लगाते रहते थे; कभी-कभी अपने सींगों को ऊँचे पेड़ों से टकराते थे मानो उन्हें मजबूत कर रहे हों।

लेकिन उन्होंने कभी भी अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए द्वंद्वयुद्ध नहीं किया। शायद उन्हें एहसास हो गया था कि यहाँ मादा हिरणों की संख्या उनसे कहीं अधिक थी और उन्हें उन्हें प्रभावित करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, जैसा कि उन्हें आमतौर पर जंगल में करना पड़ता था।

लेकिन वसंत ऋतु से पहले से ही उत्साहित युवा मादा हिरणों के झुंड ने, बड़े हिरणों की बातों पर ध्यान दिए बिना, नर हिरण का ध्यान आकर्षित करने में कोई कसर नहीं

छोड़ी। मुझे लगा कि सभी युवा मादा हिरणों के मन में डर बैठा हुआ था। उनकी संख्या नर हिरणों से कहीं अधिक थी, और इसलिए शायद उन्हें यह डर सता रहा था कि उनमें से कुछ नर हिरण के स्पर्श से वंचित रह सकती हैं, और जाहिर है कि उनमें से कोई भी अभागी नहीं बनना चाहती थी।

हालांकि, उनके प्रयास से कुछ उत्साह और आशा की किरण जगी, क्योंकि एक दिन नर हिरणों का एक जोड़ा हमारे घर में प्रवेश करने से पहले कुछ देर तक प्रवेश द्वार पर खड़ा रहा। अंदर आते ही सभी युवा हिरणों ने आहें भरकर और भावुक निगाहों से उनका स्वागत किया।

कुछ समय बाद, नर हिरणों ने दो युवा और चंचल मादा हिरणों को संकेत दिया कि वे ही चुने गए हैं और अपने पिंजरे की ओर चल पड़े, मानो उन्हें उम्मीद थी कि मादा हिरण उनका पीछा करेंगी। वे इतने आश्वस्त थे कि उन्होंने मादा हिरण की सहमति की पुष्टि करने का भी इंतजार नहीं किया। हालाँकि मुझे नर हिरण का व्यवहार थोड़ा आपत्तिजनक लगा, फिर भी दोनों मादा हिरण उत्साह से कांपते हुए तुरंत नर हिरण के पीछे चल पड़ीं।

लेकिन जंगल के विपरीत, यहाँ उनके पास संभोग के लिए कोई एकांत स्थान नहीं था। और फिर, यहाँ कैद में रहने के बाद पहली बार हम सभी ने प्रेम-प्रसंग देखा। लेकिन यह सब हमारी आँखों के सामने हुआ और सामान्य से कहीं अधिक जल्दी समाप्त हो गया।

जब उनका मिलन समाप्त हो गया, तो हिरणों के जोड़े एक-दूसरे को सूंघते हुए, एक-दूसरे के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कुछ समय साथ नहीं बिताया, जैसा कि मैंने उन्हें जंगल में करते देखा था। बल्कि वे अपने साथी की ओर एक नज़र भी डाले बिना तुरंत अलग हो गए।

शायद, पास के बाड़े में रहने से उन्हें यह अहसास होता था कि वे हमेशा एक-दूसरे के लिए उपलब्ध हैं। हालाँकि, मुझे लगा कि उनके प्रेम-संबंध बनाने की पूरी प्रक्रिया में लय, नवीनता और परमानंद का अभाव था, जो जंगल में होने वाले हर मिलन में व्याप्त होता है।

जंगल में, मैंने हमेशा हिरणों के जोड़े को चरम सुख प्राप्त करने के बाद, आनंद के उन दुर्लभ क्षणों में अपनी आँखें बंद करते हुए देखा था।

लेकिन चिड़ियाघर में, मेरे साथी हिरणों के मिलन में वह अलौकिक सुंदरता नहीं थी जो

मैंने जंगल में हर प्रेम-प्रसंग में देखी थी। जंगल में, यह हमेशा एक धीमी और कलात्मक क्रिया होती थी, लेकिन यहाँ चिड़ियाघर में, यह जल्दी और बिना किसी पूर्व-क्रिया के हो जाती थी।

जब मैथुन समाप्त हो गया, तो दोनों मादा हिरणों को लगा कि अब उन्हें अपने घर वापस जाना चाहिए क्योंकि अचानक उनके साथी अन्य कामों में व्यस्त हो गए और अपने सामने मौजूद दोनों मादा हिरणों की उपस्थिति को अनदेखा कर दिया।

एक ऊंचे पेड़ की छांव में अपनी पसंदीदा जगह पर बैठे हुए, मैंने देखा कि कुछ देर पहले प्रेमालाप कर चुके दोनों हिरणों को युवा हिरणों ने घेर लिया था और वे अपना अनुभव दूसरे हिरणों को सुना रहे थे। हालांकि, कोई भी बूढ़ा हिरण युवा हिरणों की सभा में शामिल होने में दिलचस्पी नहीं दिखा रहा था।

मेरे भीतर एक आंतरिक संघर्ष चल रहा था; मेरा शरीर तो उन्हें सुनने के लिए जाना चाहता था, लेकिन मेरा मन कह रहा था कि ऐसा करना आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाने जैसा होगा। दो परस्पर विरोधी भावनाओं के बीच फँसी हुई मैं असमंजस में बैठी रही, तभी मेरे पास से एक आवाज़ सुनाई दी।

‘तुम जाकर उनके साथ क्यों नहीं शामिल हो जाते? क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम इस झुंड में सबसे आकर्षक हिरण हो?’

मैंने तुरंत गर्दन घुमाई और देखा कि एक बूढ़ी हिरणी मेरे पास बैठी है। वह बाड़े के अंदर बच्चे को जन्म देने वाली पहली मादा हिरणी थी। दुर्भाग्य से, उसका बच्चा नर था, और नर हिरण के हमारे बगल वाले पिंजरे में चले जाने के कुछ ही समय बाद, वह वहीं चली गई, मानो हमेशा के लिए। लेकिन मैंने उसकी माँ को अपने बच्चे के लिए इतना तड़पते कभी नहीं देखा था।

मैंने कहा, 'मुझे नहीं पता,' और फिर जोड़ा, 'दरअसल, मैं खुद को वह करने के लिए तैयार नहीं कर पा रही हूँ जो वे नर हिरणों का ध्यान आकर्षित करने के लिए करती हैं। इस तरह का व्यवहार करना मेरे स्वभाव से नहीं आता।'

‘और तुम हमेशा अपने अंतर्मन की आवाज सुनना चाहते हो?’ उसने पूछा।

उसकी आवाज में व्यंग्य का कोई अंश नहीं था।

मैंने अपने दिल की बात, अपनी सच्ची भावना व्यक्त करते हुए कहा, 'ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा अपनी अंतरात्मा की आवाज या अपने दिल की बात सुनना और उसके अनुसार कार्य करना चाहता हूं, बल्कि वास्तव में, मैं चीजों को किसी और तरीके से

नहीं कर सकता।'
बड़े हिरण ने हल्की सी मुस्कान दी। यह एक सौम्य मुस्कान थी।
क्या आपने कभी सोचा है कि यहाँ मौजूद कोई और युवा हिरण अपने दिल की सुनता है? क्या केवल वही है जो उसके दिल की तमन्ना है?
मुझे नहीं पता। मैंने इसके बारे में कभी सोचा ही नहीं। लेकिन मुझे उन चीजों से खुशी नहीं मिलेगी जो वे दिन भर करते रहते हैं।
'मेरे प्रिय, इनमें से कोई भी अपने दिल की नहीं सुनता। अगर वे ऐसा करते, तो वे एक-दूसरे की नकल करने की कोशिश न करते; वे एक ही खेल में श्रेष्ठ बनने की कोशिश न करते। लेकिन इसके अलावा भी एक कारण है कि वे अपने दिल की क्यों नहीं सुनते।'
मैंने उसे प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा, क्योंकि यह मेरे लिए एक नई जानकारी थी।
मैंने पूछा, 'यह क्या है?'
'अकेले रह जाने का डर। जब आप हिरणों के ऐसे झुंड के साथ होते हैं जो एक ही तरह से सोचते और व्यवहार करते हैं, तो हमेशा एक सुरक्षा का एहसास होता है। इसीलिए अपने अंतर्मन की आवाज़ सुनने के लिए साहस की आवश्यकता होती है।'
मैंने उससे गंभीरतापूर्वक पूछा, 'तुम्हें ये सब बातें कैसे पता हैं? क्या तुम हमेशा अपने दिल की सुनती हो?'
'मैं आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर पहले दूंगी। मैंने शायद ही कभी अपने दिल की सुनी हो,' बूढ़ी हिरणी थोड़ी देर रुकी। वह ध्यानमग्न थी और जब उसने बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज़ धीमी और भारी थी, 'हालाँकि मैं हमेशा अपनी इच्छा और सपने के अनुसार काम करना चाहती थी, फिर भी मुझे डर लगता था; अकेले रह जाने और अलग-थलग पड़ जाने का डर। और इसी से मुझे पता चला कि उनमें से कोई भी अपने दिल की नहीं सुनता,' उसने स्पष्टवादिता से कहा।
मैंने सोच-विचार करते हुए सिर हिलाया। और फिर मेरे मन में एक सवाल आया।
मैंने पूछा, 'आपके अनुसार कौन सा जीवन अधिक संतोषजनक है? अपने दिल की इच्छा के अनुसार जीवन जीना या अपने सभी साथी हिरणों की तरह जीवन जीना?'
'इस सवाल का कोई मतलब नहीं है। चाहे जीवन का कोई भी रूप अधिक संतोषजनक हो, आप जीवन को दूसरे तरीके से जी ही नहीं सकते। लेकिन केवल कुछ चुने हुए लोगों को ही अपने दिल की सुनने, अपनी अंतरात्मा की शक्ति पर भरोसा

करने और अपने दिल की पुकार पर चलने का साहस प्राप्त होता है। क्या आप इसका कारण जानते हैं?'

जब मैंने सिर हिलाकर 'नहीं' कहा, तो वह मेरे जवाब का इंतजार कर रही थी।

गला साफ करने के बाद उसने फिर बोलना शुरू किया, 'क्योंकि वे हमेशा हमारी छोटी सी दुनिया में बदलाव लाते हैं। वे हमारे लिए नई चीजें, नए खाने-पीने की चीजें और रहने के लिए नई जगहें खोजने के लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं।'

मैं चुप रहा, मुझे वह अजीब सपना याद आ रहा था जो मुझे एक महीने से भी अधिक समय पहले आया था, जिसमें मेरी माँ की आत्मा ने भविष्यवाणी की थी कि एक दिन मैं इस विशाल घेरे से मुक्त हो जाऊंगा क्योंकि मैं चुने हुए कुछ लोगों में से एक था।

कुछ देर बाद उसने कहना शुरू किया, 'दरअसल, मैं आपसे एक और कारण से भी मिलने आई हूँ। क्या आपको अपना जन्म याद है?'

'हां, मुझे याद है, बिल्कुल वैसे ही जैसे कल ही हुआ हो,' मैंने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया।

'मुझे पता होना चाहिए कि तुम्हें यह याद होगा, क्योंकि तुम हम सब में अनोखे हो,' उसने गहरी सांस लेते हुए कहा और आगे बोली, 'तुम्हें पता है, जन्म के तुरंत बाद, जब तुमने अपनी माँ की मदद के बिना, खुद से खड़े होने की कोशिश की, तो तुम कई बार गिरे, इससे पहले कि तुम आत्मविश्वास से अपने पैरों पर खड़े हो सको। तुम्हारे और तुम्हारी माँ के आसपास कई हिरण थे, और तुम्हारी इस हिम्मत को देखकर शुरू में लगभग सभी हिरण तुम्हारा मज़ाक उड़ाते थे,' वह थोड़ी देर रुकी।

'हां, मुझे वे पल अच्छी तरह याद हैं,' मैंने कहा, हालांकि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहना चाह रही थी।

'मैं भी उनमें से एक थी जिन्होंने तुम्हारा मजाक उड़ाया था,' उसकी आवाज धीमी पड़ गई।

मैं चुप रहा, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।

लेकिन बाद में, जब तुमने बार-बार अपने कार्यों से यह साबित कर दिया कि तुम बाकी हिरणों से कितने अलग हो, तो धीरे-धीरे मेरे मन में तुम्हारे लिए सम्मान की भावना जागृत हुई। और आज, जब मैंने तुम्हें उन फिजूलखर्ची में शामिल न होते देखा जिनमें बाकी सभी हिरण अपना समय बिताते हैं, तो तुम्हारे प्रति मेरा सम्मान और भी बढ़ गया। लेकिन आज मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि तुमने मुझे जीवन का एक गहरा सबक सिखाया है। मुझे बड़ों का आदर करना सिखाया गया था, लेकिन छोटों का भी आदर

करना किसी ने नहीं सिखाया था। तुमने मुझे यह एहसास दिलाया कि छोटों का आदर करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मैं इसके लिए तुम्हारा आभारी हूँ और उस समय नवजात हिरण के प्रति इतना असभ्य व्यवहार करने के लिए क्षमा भी माँगता हूँ। बाकी हिरणों की नकल करना मेरी मूर्खता थी।

मैंने मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'तुमने मुझसे जो कुछ भी कहा है, मुझे वह सब बहुत पसंद आया।'

'आपसे बात करके मुझे भी राहत मिली। आप जानते हैं, हम किसी को भी, जिसे हमने किसी न किसी तरह से ठेस पहुंचाई हो, माफी मांगने से पहले सैकड़ों बार सोचते हैं। माफी मांगना हमारे अहंकार को ठेस पहुंचाता है क्योंकि यह अपनी कमियों को स्वीकार करने जैसा है। लेकिन माफी मांगने में हमारी झिझक हमें लंबे समय तक पछतावे का बोझ ढोने पर मजबूर कर देती है। काश मैं दूसरों को बता पाती कि किसी को, जिसे आपने पहले ठेस पहुंचाई हो, उससे माफी मांगने के बाद आप कितना हल्का और खुश महसूस करते हैं।'

मैंने कहा, 'ऐसा कहने वाले आप पहले व्यक्ति हैं।'

'मुझे अब जाना होगा। भूख लग रही है,' उसने उठते हुए कहा।

मैंने उसकी ओर सिर हिलाकर जवाब दिया।

अध्याय-*12*

अत्यंत प्रकाशमान...

पीड़ा प्रेम का एक प्राचीन नियम है; बिना पीड़ा के कोई खोज नहीं होती; बिना सच्चे प्रश्न के कोई उत्तर नहीं होता।

हेनरिक सुसो

एक और सप्ताह बीत गया, और अब तक सभी युवा हिरणों ने कम से कम एक बार संभोग कर लिया था। चाहे उनका प्रेम-प्रसंग कितना भी सरल, भद्दा और जल्दबाजी वाला क्यों न हो, यह उन सभी के लिए सौभाग्य की बात थी कि कम से कम एक नर हिरण ने उनमें से प्रत्येक को आकर्षक पाया था। शायद सभी युवा हिरण कम से कम एक नर हिरण द्वारा पसंद किए जाने की इच्छा रखते हैं, क्योंकि इससे उन्हें यह विश्वास होता है कि वे सुंदर और आकर्षक हैं, मैंने सोचा।

आजकल, आगंतुकों के लिए उछल-कूद और नृत्य करने के अलावा, वे नर हिरणों को लुभाने के लिए कई कल्पनाशील करतब दिखाने में भी संकोच नहीं करते थे। उनके करतबों में दो पिछले पैरों पर खड़े होना शामिल था, जबकि उनके दोनों अगले पैर दोनों पिंजरों के बीच लगी तार की बाड़ का सहारा लेते थे। इस मुद्रा से उन्हें नर हिरणों को अपना बेदाग पेट दिखाने का मौका मिलता था।

कभी-कभी वे इससे भी अधिक चतुराईपूर्ण तरकीब अपनाते और नर हिरण के बाड़े के

पास खड़े होकर एक-दूसरे को कामुक रूप से चाटते, ताकि नर हिरण को कामुक रूप से आकर्षित कर सकें। युवा हिरणों में यह सबसे प्रचलित धारणा बन गई थी कि वे जितनी बार पास के पिंजरे में जाते, उतने ही आकर्षक और वांछनीय माने जाते।

पहले वे आगंतुकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करते थे, लेकिन अब उनकी मुख्य चिंता नर हिरण और उनकी रुचि को जगाना था। हर दिन, उनके बीच प्रतिस्पर्धा और भी तीव्र होती गई और अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए वे नए-नए हथकंडे अपनाते, उन पर प्रयोग करते, उन्हें स्वीकार करते या त्यागते रहे।

सभी युवा हिरणों के बीच ईर्ष्या की भावना व्याप्त थी। बूढ़े हिरण कुछ हद तक अलग-थलग और एकांत में रहते थे, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि जब तक इतने सारे युवा और स्वस्थ हिरण आसपास मौजूद रहेंगे, नर हिरण उन पर ध्यान नहीं देंगे।

लेकिन इन उमंग से भरे युवा हिरणों में एक प्रकार की उद्दंडता थी। उनके उत्सव में न तो शांति थी, न मौन और न ही उमंग। संभवतः दुनिया का हर जंगली और उग्र उत्सव क्षणभंगुर होता है, और उनका यह उत्सव भी ऐसा ही था। जैसे-जैसे वसंत अनिच्छा से ग्रीष्म ऋतु में परिवर्तित होता गया, सभी नर हिरणों में संभोग की इच्छा समाप्त हो गई। कितना भी लुभाने का प्रयास उन्हें उत्तेजित नहीं कर सका।

वे दिन का अधिकांश समय पेड़ की छाया में बैठकर चिंतन करते हुए बिताना पसंद करते थे, और अक्सर अपनी आँखें आधी बंद करके दिन को बीतते हुए देखते रहते थे। उनके कान हमारे कानों से बड़े थे, और कभी-कभी मैं उन्हें अपने कानों को फड़फड़ाते हुए देखता था, मानो वे खुद को हवा दे रहे हों।

अचानक युवा मादा हिरणों के व्यस्त जीवन में सन्नाटा छा गया। इससे वे न केवल बेचैन हुईं बल्कि परेशान भी हो गईं। उन्हें उपेक्षित और अनदेखा महसूस होने लगा। जैसे-जैसे वसंत ऋतु समाप्त हुई, नर हिरण के साथ संभोग करने की मेरी तीव्र इच्छा भी धीरे-धीरे कम होती गई। अब मुझे उनके पिंजरे के पास जाने के प्रलोभन को रोकना नहीं पड़ता था।

लेकिन हमारे झुंड के बाकी हिरणों में कोई बदलाव नहीं आया। मुझे नहीं लगता कि उनकी संभोग की इच्छा का उनकी शारीरिक ज़रूरत से कोई लेना-देना था। बल्कि यह आपस में अपनी श्रेष्ठता साबित करने की एक खामोश लड़ाई थी। जल्द ही उनकी अनदेखी का एहसास बेबसी भरे गुस्से में बदल गया।

वे उत्तेजित होकर हमारे बाड़े में इधर-उधर चक्कर लगाने लगे; कभी-कभी अपने शरीर

से हमारे चारों ओर लगी तार की बाड़ पर प्रहार भी करते। लेकिन इन व्यर्थ प्रयासों से उन्हें शांति नहीं मिली। फिर अचानक उनमें एक अजीब सी शत्रुतापूर्ण भावना जागृत हुई और वे मुझ पर कटु और दुर्भावनापूर्ण टिप्पणियाँ करने लगे।

शुरू में उनकी तीखी टिप्पणियाँ सीधी नहीं थीं, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ उनके हमले और भी सीधे और तीखे होते गए, मानो मैं ही उनके गुस्से को निकालने का सबसे आसान जरिया था। उनकी असभ्य टिप्पणियों से मैं इतना हैरान और स्तब्ध था कि मैं मुश्किल से ही कोई प्रतिक्रिया दे पाया।

उनमें से दो या तीन जानबूझकर मेरे पास आकर बैठ जाते, ऐसा उन्होंने पहले कभी नहीं किया था, और इतनी जोर से बातें करने लगते कि मैं उन्हें आसानी से सुन सकूं।

“मुझे उन बेचारे प्राणियों पर तरस आता है जो अब भी उन पुरानी मान्यताओं पर विश्वास करते हैं कि नर हिरण उसे प्रभावित करने और उसके साथ संभोग करने के लिए आमंत्रित करने आएगा। ऐसा हठी मूर्ख सोचता है कि परंपरावादी होने का अर्थ है एक गुणी हिरण होना जिसकी सभी हिरण प्रशंसा करें,” एक हिरण ने कहना शुरू किया।

‘लेकिन इस तरह की सोच रखने वाला हिरण तो हारने वाला ही साबित होता है। आखिरकार, दिन भर अकेले बैठे रहना और आलस करना किसी को गुणी नहीं बना देता, जैसा कि हममें से कुछ लोग सोचते हैं,’ एक और हिरण ने जवाब दिया।

'अगर आप दुनिया के सबसे बड़े आनंद को पाने का मौका ठुकरा देते हैं तो जीने का क्या मतलब?' एक और हिरण शायद टिप्पणी करे।

और इस तरह वे तब तक बातें करते रहते जब तक उन्हें मेरे चेहरे पर उदासी का भाव दिखाई नहीं देता।

हालांकि, मैंने उन्हें यह जताने की कोशिश की कि मुझे उनकी बातों से ज़रा भी परेशानी नहीं हुई है। लेकिन इससे वे और भी ज़्यादा चिढ़ गए और मुझे बेरहमी से चिढ़ाने लगे।

वे मुझे पूरे हिरणों के झुंड में 'एकमात्र अभिशापित' कहते थे, क्योंकि अब तक मैं अकेली कुंवारी हिरण थी। उनके शब्द मुझे अंदर तक चोट पहुँचाते थे। देर रात, जब मैं अकेली जागती रहती थी, तो अक्सर सोचती थी कि वे मुझे चोट पहुँचाना क्यों पसंद करते हैं और मुझे पीड़ा देने में आनंद क्यों लेते हैं।

कभी-कभी मेरे मन में बदले की भावना जागती और मैं किसी एक हिरण से तब तक

लड़ना चाहता था जब तक उसे हरा न दूं। लेकिन मेरे भीतर की कोई अजीब सी झिझक मुझे हमेशा किसी भी युवा हिरण पर हमला करने से रोकती थी। हालांकि, मुझे यह पक्का पता था कि मैं उन सभी से कहीं ज्यादा ताकतवर था।

मैंने 'छोड़ने' का अभ्यास करने की कोशिश की, जो मेरी माँ ने मुझे बहुत पहले सिखाया था। 'छोड़ने' का सीधा सा मतलब था दूसरों के बुरे कर्मों को अपने मन से निकाल देना और उन्हें सुख-दुख की दुनिया में घुलने देना। लेकिन 'छोड़ने' के अभ्यास में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह भीतर से, स्वाभाविक रूप से, आपके अस्तित्व के सबसे गहरे कोने से आना चाहिए, और तभी किसी दुखद घटना को सही मायने में छोड़ना संभव है।

मैंने उनकी चुभती बातों और कड़वी टिप्पणियों को भुलाने की पूरी कोशिश की। लेकिन कितना भी समझाने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ, और दिन-रात मेरे दिल में दर्द का भाव बना रहता था। यह भाव बहुत गहरा था, क्योंकि बार-बार मैं खुद को याद दिलाता रहता था कि मैं निर्दोष और निर्दोष हूँ और मैंने कभी किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाई है।

मुख्यतः रात के समय, जब दोनों बाड़ों में सभी हिरण गहरी नींद में सो रहे होते थे, मैं तालाब के पास बैठ जाता था। बार-बार मेरे मन में एक सवाल उठता था। हम किसी ऐसे प्राणी को चोट पहुँचाने में आनंद क्यों लेते हैं जिसने हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया? प्रकृति ने हमें जो इतनी सारी खूबसूरत चीजें दी हैं, उनसे हम आनंद और खुशी क्यों नहीं पाते?

उनकी तीखी टिप्पणियाँ मुझे हर दिन चोट पहुँचाती रहीं, और एक ही सवाल मुझे बार-बार परेशान करता रहा। फिर, पूर्णिमा की रात, जब आसमान बिल्कुल साफ था और पूर्णिमा के पास के एक तारे के अलावा कोई तारा दिखाई नहीं दे रहा था, तब मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई। पूर्णिमा के चाँद को देर तक निहारने से मुझे एक अनोखा सुकून मिला। मुझे लगा जैसे मेरे अंदर का दर्द कुछ पल के लिए कम हो गया हो, और अचानक मुझे जीवन का बड़ा सत्य समझ आ गया।

मुझे यह बात समझ में आई कि केवल उदास और दुखी प्राणी ही किसी निर्दोष प्राणी को दुख पहुँचाने में आनंद पाते हैं। इसका सीधा सा कारण यह था कि निर्दोष प्राणी हमेशा अकेले रहना पसंद करते हैं, और उन्हें परेशान करने से न केवल उनके उत्पीड़कों को अपना क्रोध निकालने का मौका मिलता था, बल्कि उन्हें खुश अकेले

प्राणियों की आंतरिक खुशी को नष्ट करने का क्रूर आनंद भी मिलता था। किसी भी युवा हिरणी ने मुझे तब तक परेशान नहीं किया था जब तक कि वे उत्तेजित, परेशान और नर हिरण द्वारा उपेक्षित नहीं की गई थीं।

फिर मेरे मन में एक और विचार आया, जो इससे कहीं अधिक समझदारी भरा था। चाहे क्रूर लोगों और उनके कुकर्मों के बारे में मेरी समझ कितनी भी सही और गहरी क्यों न हो, उससे यह पता नहीं चल पा रहा था कि एक निर्दोष प्राणी क्रूर प्राणियों के एक समूह के हिंसक हमलों से खुद को कैसे बचा सकता है। क्या इसका मतलब यह था कि एक निर्दोष प्राणी को जीवन भर कष्ट भोगना ही पड़ेगा?

यह सवाल काफी देर तक मेरे मन में खटकता रहा, जब तक कि मेरा थका हुआ मन नींद में डूब नहीं गया। देर रात, अचानक मेरी नींद टूट गई क्योंकि मुझे लगा कि एक सुहावनी हवा और पत्तों की सरसराहट मुझे उठने के लिए प्रेरित कर रही है। मैं उठ बैठा और चारों ओर सरसरी नजर डाली। दोनों बाड़ों में सभी हिरण शांति से सो रहे थे। अब मैंने आकाश की ओर देखा और वहाँ के भव्य दृश्य को देखकर चकित रह गया।

एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं सपना देख रही हूँ। मैंने गहरी साँस ली और अपने अंदर उस जानी-पहचानी गंध को महसूस किया, जो मुझे पता था कि हमारे पिंजरे से जुड़ी हुई थी। तो यह सपना नहीं हो सकता, मैंने खुद से कहा और बिना पलक झपकाए आसमान की ओर देखती रही।

पूर्णिमा का चाँद धीरे-धीरे बड़ा होता जा रहा था और उसकी रोशनी तेज़ होती जा रही थी। कुछ पल ऐसे ही बीत गए, और फिर मुझे लगा कि चाँद वास्तव में बड़ा नहीं हो रहा है, बल्कि धरती की ओर, या अधिक सटीक कहें तो उस चिड़ियाघर की ओर आ रहा है जहाँ एक हिरण अपने साथियों के साथ रहता था। मैं एक बेसुध अवस्था में था। लेकिन अचानक चंद्रमा नीचे की ओर चलना बंद कर दिया, और अप्रत्याशित रूप से, उसमें से एक ऐसा प्राणी प्रकट हुआ जो घोड़े जैसा दिखता था, जिसकी पीठ पर दो पंख लगे हुए थे। वे चमकीले थे और घोड़े के आकाश में नीचे की ओर सरकते हुए बिना किसी आवाज़ के फड़फड़ा रहे थे। आश्चर्य से मेरी आँखें उस उड़ते हुए घोड़े पर टिकी रहीं, जो हमारे पिंजरे की तार की बाड़ के बाहर बिना किसी आवाज़ के उतरा। उसका पूरा शरीर प्रकाश बिखेर रहा था, लेकिन वह सूर्य के प्रकाश की तरह चकाचौंध करने वाला प्रकाश नहीं था। उसके अस्तित्व से एक दिव्य सुगंध निकल रही थी।

उसने मेरी आँखों में देखा और मुस्कुराया। अनजाने में ही मैंने घुटने टेक दिए, मानो उस

मुद्रा में मैं उस संदेश को आसानी से ग्रहण कर सकूँ जो स्वर्ग लोक से आया यह उड़ने वाला घोड़ा मेरे लिए लाया था।

'मेरे प्रिय, तुम्हारा सवाल सिर्फ तुम्हारा ही नहीं, बल्कि कई और लोगों का भी है। अनंत काल से निर्दोष प्राणी अज्ञानी और दुखी लोगों के क्रूर हमलों और कटु टिप्पणियों के शिकार होते आ रहे हैं।'

इसमें कुछ भी नया नहीं है, और आने वाले दिनों में भी यह घटना घटती नहीं रहेगी। जब भी कोई निर्दोष व्यक्ति बिना किसी गलती के पीड़ित होता है, तो उसे बार-बार एक ही सवाल सताता है। अच्छाई के मामले में मुझसे कहीं कमतर लोगों ने मुझ पर हमला क्यों किया या मुझे क्यों चोट पहुंचाई?

आपका मन इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता, क्योंकि यह तर्क और सिद्धांत की सीमा से परे है। केवल मौन और प्रेम ही आपको वहाँ तक पहुँचा सकते हैं। संक्षेप में कहें तो, क्या आप केवल एक ही बात पर विचार नहीं कर रहे हैं कि अच्छे और दयालु प्राणियों के साथ बुरा और निर्दयी व्यवहार क्यों किया जाता है? शायद आप जैसे किसी व्यक्ति के साथ?' सम्मोहक आवाज रुक गई, पहली बार मुझे बोलने का अवसर दिया।

लेकिन एक अनुभवहीन हिरणी इतने भव्य प्राणी के सामने कैसे बोल सकती थी? उसका गला पहले ही सूख चुका था। उसे बस इतना पता था कि यह उड़ने वाला घोड़ा यहाँ एक ऐसे प्रश्न का उत्तर देने आया है जिसका उत्तर, उसके विचार में, कोई नहीं दे सकता। इतना ही नहीं, यह शानदार प्राणी अपने मन में उठने वाले हर विचार को भलीभांति समझता प्रतीत होता था।

मैं बस हां में सिर हिलाकर जवाब दे सका। मेरे सामने मौजूद दिव्य प्राणी मुस्कुराया; होठों से नहीं, बल्कि आंखों से। उसकी मुस्कान भेदक और गहरी थी।

'तुम्हारी पूरी समझ में एक छोटी सी खामी है। सभी निर्दोष और हानिरहित प्राणी अज्ञानी और दुखी प्राणियों से परेशान या विचलित नहीं होते। अधिकांश निर्दोष प्राणी एक शांत और चिंतामुक्त जीवन जीते हैं और इस विश्वास के साथ मरते हैं कि निर्दोष और हानिरहित रहना ही सबसे बड़ा सद्गुण है, क्योंकि कोई भी कभी उनके इस विश्वास को चुनौती नहीं देता।' दिव्य प्राणी कुछ देर रुका, क्योंकि मेरे मन में एक विचार कौंध गया।

मैं इस बात से असहमत नहीं हो सकता था कि मैं भी हमेशा से यही मानता आया हूँ कि मासूमियत, निर्दोशता और मददगार होना सबसे सराहनीय गुण हैं। मैं उसके

चमकते चेहरे को निहारता रहा, उसके मुख से निकलने वाले और शब्दों के मेरे हृदय में समा जाने की प्रतीक्षा करता रहा।

वास्तव में, केवल कुछ निर्दोष और बेगुनाह प्राणियों को ही परेशान किया जाता है, उनका उपहास किया जाता है और उन पर हमला किया जाता है। इसके पीछे एक गहरा कारण है। निर्दोष प्राणियों के विरुद्ध किए गए ये सभी दुराचार ईश्वरीय षड्यंत्र के सिवा कुछ नहीं हैं।

उन सभी क्रूर कृत्यों के माध्यम से ईश्वर उन निर्दोष प्राणियों को यह संदेश देना चाहता है कि जीवन में कई उच्च स्तर हैं जिन्हें प्राप्त किया जा सकता है और जब तक वे एक और उच्च स्तर तक नहीं पहुँच जाते, उनकी समस्या का समाधान नहीं होगा। यह हमें सुखी जीवन जीने के सबसे महत्वपूर्ण संकेतों में से एक देता है। किसी भी स्तर की समस्या का समाधान करने के लिए, कम से कम एक उच्च स्तर तक जाना आवश्यक है। और उच्च स्तर तक पहुँचने का आनंद केवल अनुभव से ही प्राप्त किया जा सकता है।

मैं अवाक होकर उड़ते हुए घोड़े की वाणी को ध्यानपूर्वक सुन रहा था। उसके शब्दों ने मेरे लिए विचारों के नए आयाम खोल दिए। इससे पहले मैंने कभी इस तरह नहीं सोचा था।

'जीवन में उच्च स्तर तक कैसे पहुंचा जाए? कृपया मेरा मार्गदर्शन करें, और मैं वहां पहुंचने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ूंगा,' मैंने स्वयं को उस दिव्य प्राणी से कहते हुए सुना।

"यह तो तुम्हें स्वयं ही पता लगाना होगा, मेरे प्रिय। हमारे जीवन का यही उद्देश्य है, जीवन में लगातार ऊंचाइयों को छूना। इसीलिए आकाश असीम है। अब तुम्हें ताला पता चल गया है। वह ताला जीवन में कम से कम एक ऐसे स्तर तक पहुंचना है जहां तुम्हारे वर्तमान जीवन की सारी परेशानियां स्वतः ही दूर हो जाएंगी। तुम्हें सच्चे मन से खोजकर ताला खोलने की चाबी ढूंढनी होगी। लेकिन याद रखना, मेरे बच्चे, मैं केवल उन्हीं से मिलता हूं जिनमें चाबी ढूंढने की क्षमता होती है। अब चाहे तुम चाबी ढूंढना चाहो या इस वर्तमान दुखी और अपूर्ण जीवन से संतुष्ट रहना चाहो, यह तुम्हारी मर्जी है। यह तुम्हारी स्वतंत्रता है।"

दिव्य अश्व ने अब अपने पंख फड़फड़ाना शुरू कर दिया। मैं चाबी के बारे में और अधिक जानने के लिए बेताब था, लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि अब मुझे और कोई

संकेत नहीं मिलेगा।

बिना मुझे विदाई दिए या कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर दिए, वह दिव्य प्राणी उड़ने लगा। हमारी मुलाकात कुछ ही मिनटों तक चली। मैंने फिर देखा कि चंद्रमा उसे अपने साथ ले जाने के लिए नीचे आ रहा है, और जल्द ही उस दिव्य घोड़े का अस्तित्व चंद्रमा में विलीन हो गया। लेकिन उसके शरीर से निकलने वाली सुगंध उसके जाने के बाद भी काफी देर तक बनी रही, और वह इतनी मादक थी कि मुझे नींद आ गई, जब तक कि सुबह की एक किरण मेरी आँखों पर नहीं पड़ी।

अगली सुबह जब मैं उठा तो पिछली रात की घटना मुझे सपने जैसी लगी। मैं इसे सपना ही मान लेता अगर मैंने हिरणों के एक झुंड को आपस में बात करते हुए न सुना होता कि पिछली रात किसी चकाचौंध भरी रोशनी ने उनकी नींद तोड़ दी थी और वह रोशनी इतनी तेज थी कि उनमें से कोई भी अपनी आंखें नहीं खोल पा रहा था।

मैंने चुपचाप उनकी बातें सुनीं और इस बात पर आश्चर्य किया कि जिसे वे चकाचौंध भरी रोशनी बता रहे थे, वह मेरे लिए बहुत सुखद थी। अगर उन सभी ने पिछली रात किसी प्रकाश की उपस्थिति महसूस की थी, तो मेरा अनुभव कोई सपना या मतिभ्रम नहीं हो सकता, मैंने सोचा और उस खगोलीय पिंड द्वारा कही गई हर बात को याद किया।

मैंने मन ही मन कहा, मेरी वर्तमान समस्या का एकमात्र हल जीवन में उच्च स्तर प्राप्त करना है। दिव्य सत्ता ने इसके बारे में मुझे ज्यादा कुछ नहीं बताया। कुछ देर सोचने के बाद मैंने निष्कर्ष निकाला कि यह जीवन के हर आयाम में उच्च स्तर प्राप्त करने जैसा ही होगा।

गर्मी की एक दुर्लभ सुबह थी, हल्की हवा चल रही थी। मैंने पिंजरे के बाहर सड़क की ओर देखा। सड़क के दोनों ओर छोटे-छोटे फूल लगे थे और तितलियाँ एक फूल से दूसरे फूल पर मंडरा रही थीं। हमारी तितलियों के विपरीत, उनकी गतिविधियाँ किसी सीमित स्थान तक ही सीमित नहीं थीं।

हमारा घेरा चाहे कितना भी बड़ा और आरामदायक क्यों न हो, यहाँ हमारी आवाजाही सीमित थी। चारों ओर फिर से देखते हुए, मैंने देखा कि हमसे कहीं छोटे-छोटे जीव अपनी स्वतंत्रता का जश्न मना रहे थे, तभी अचानक मेरे मन में यह विचार आया कि

जीवन में उच्च स्तर तक पहुँचने के लिए, सबसे पहले मुझे स्वयं को इस स्थान से मुक्त करना होगा।

शायद दिव्य प्राणी का यही तात्पर्य था जब उन्होंने उस ताले की चाबी ढूंढने की बात कही जिससे अधिक आनंद और खुशी का द्वार खुलता है।

जैसे-जैसे मैं इस बंद जगह से बाहर की ज़िंदगी के बारे में सोचने लगी, वैसे-वैसे मेरी बेचैनी बढ़ती गई कि मैं यहाँ से जल्द से जल्द भाग जाऊँ। अचानक, यह सोचना किसी बुरे सपने जैसा लगने लगा कि मैंने इतने दिन पिंजरे में कैसे बिता दिए और खुद को आज़ाद करने के लिए कोई ठोस कोशिश नहीं की।

अब मैंने दोनों पिंजरों में मौजूद अपने सभी साथी हिरणों को देखा। वे सभी अपने वर्तमान जीवन से पूरी तरह संतुष्ट प्रतीत हो रहे थे। शायद आराम की भावना ने पिछले कई महीनों से मुझ पर अपना प्रभाव जमा लिया था, और मैं स्वभाव से आलसी हो गया था और एक बहुत ही निम्न स्तर के जीवन से संतुष्ट हो गया था।

और मैं अपने निरंतर, सचेत और सच्चे प्रयास के बिना अपने जीवन में बदलाव की उम्मीद नहीं कर सकता था। शायद आकाशीय पिंड का चाबी ढूंढने का यही मतलब था, मैंने यह निष्कर्ष निकाला और अपने चारों ओर लगी अभेद्य तार की बाड़ को ध्यान से देखा। ऐसा लग रहा था कि सिर बाहर निकालने लायक भी जगह मिलना असंभव है, पूरे शरीर को बाहर निकालना तो दूर की बात है। मैं इस जगह से कैसे बच निकलूँ, यह सोचकर मैं सोचने लगा, लेकिन मैंने ठान लिया कि जब तक मुझे खुद को मुक्त करने का रास्ता नहीं मिल जाता, तब तक मैं खोज जारी रखूंगा। इतना ही नहीं, मैंने अपने इस प्रयास को गुप्त रूप से अंजाम देने का भी फैसला किया।

अचानक, इस योजना ने पिछले कई महीनों से चल रहे मेरे नीरस जीवन में रोमांच और उद्देश्य की भावना भर दी। आज सुबह मैं अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि मुझे इस बात की भी परवाह नहीं थी कि कोई छोटा हिरण मुझे छेड़ रहा है या नहीं।

आज रात से, जब मेरे सभी साथी हिरण गहरी नींद में सो जाएंगे, मैं अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जी-जान से मेहनत करूंगा, मैंने मन ही मन उत्साह से सोचा। कई महीनों बाद अचानक मुझे अपना एक लक्ष्य मिल गया था।

अध्याय-*13*

प्रयास और समर्पण का मिश्रण

हमारे सारे परिश्रम व्यर्थ हैं, चाहे वे कितने भी हों, जब तक प्रकृति आशीर्वाद न दे।

~रॉबर्ट हेरिक

जैसे ही मैंने अपना लक्ष्य तय किया, बाकी सब कुछ मेरे लिए महत्वहीन लगने लगा। सारा दिन मैं भागने का रास्ता खोजने की योजना बनाता रहा। रात होते ही मैं बेसब्री से सभी हिरणों के सोने का इंतजार करने लगा।

फिर वो दुर्लभ क्षण आया जब मैंने अपना साहसिक कार्य शुरू किया। मैं अपने बाड़े के हर कोने पर लगी तार की बाड़ को दबाता, जहाँ दो तार की बाड़ धातु के तारों से बंधी हुई थीं और एक ऊँचे धातु के खंभे से सुरक्षित थीं। ऐसे ही ऊँचे धातु के खंभे पिंजरे के

चारों ओर लगे हुए थे, और उनके साथ-साथ तार की बाड़ लगी हुई थी।
हालांकि, जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि धातु के तारों से इतनी कसकर बंधी हुई तार की बाड़ को खोलना असंभव था। फिर भी मैंने अपना प्रयास जारी रखा और दृढ़ता से अपने पिंजरे के चारों कोनों पर तार की बाड़ को तोड़ता रहा।
मेरा दिमाग सुन्न पड़ गया था क्योंकि मैंने ठान लिया था कि जब तक मैं अपने लिए भागने का रास्ता नहीं बना लेता, तब तक रुकूंगा नहीं। मुझे पसीना आ रहा था, मेरा सिर चकरा रहा था, और अचानक मुझे अपने माथे से किसी गीले पदार्थ की एक पतली धारा बहती हुई महसूस हुई जो मेरे मुंह तक आ रही थी। उसका स्वाद नमकीन पानी जैसा था, लेकिन वह पानी से गाढ़ा था। मैंने उसका रंग देखने के लिए अपनी जीभ बाहर निकाली। उसे छूते ही मेरी जीभ लाल हो गई। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा जब मुझे एहसास हुआ कि मेरे माथे से जो बह रहा था वह पसीने की धारा नहीं बल्कि मेरा अपना खून था।
काफी देर तक तार की बाड़ को ज़ोर से धकेलने से मेरे सिर से खून बहने लगा होगा। बुरी तरह थककर और लगभग पसीने से भीगकर, मैंने आराम करने का फैसला किया। मैं देर रात अपने पसंदीदा स्थान पर लौटा। मेरे माथे में तेज़ दर्द हो रहा था और चेहरे पर गुदगुदी सी महसूस हो रही थी, क्योंकि खून और पसीने की धारें मेरे चेहरे से बह रही थीं। फिर भी, इससे मेरा थका हुआ शरीर नींद से नहीं रुका।
मुझे यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि पसीने के विपरीत, खून जहाँ भी जाता है, अपनी छाप छोड़ जाता है, भले ही स्थायी रूप से न हो, लेकिन कम से कम कुछ समय के लिए तो ज़रूर। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि सूखे खून के कुछ निशान मेरे लिए वरदान साबित होंगे।

अगली सुबह जब मैंने आंखें खोलीं, तो एक चौंकाने वाला आश्चर्य मेरा इंतजार कर रहा था। मेरे चारों ओर दस से कम युवा हिरण नहीं थे। वे सभी उसी झुंड के थे जो मुझे चिढ़ाने और मेरा अपमान करने में आनंद लेते थे। मैंने उन सभी पर सरसरी नज़र डाली और उनकी आंखों में भय और विस्मय देखकर मैं दंग रह गया।
मैंने उठते हुए सोचा, "इनमें अचानक यह बदलाव क्यों आया?" तभी आसपास के हिरण डरकर एक तरफ हट गए और मुझे चलने का रास्ता दे दिया। मैं लंबे-लंबे कदम

बढ़ाते हुए आगे बढ़ा, उनमें से किसी पर भी ध्यान नहीं दिया, हालांकि मुझे महसूस हो रहा था कि वे सब मुझे ही देख रहे हैं।

मैं मुश्किल से कुछ कदम ही चल पाया था कि मेरे माथे में तेज दर्द होने लगा। मुझे पिछली रात की मेहनत और खून-पसीने की वो बूँदें अभी तक याद नहीं आ रही थीं। दर्द से तुरंत राहत पाने का सबसे अच्छा उपाय था कि मैं अपना माथा कुछ देर के लिए तालाब के पानी में डुबो लूँ। जंगल में मैंने कई हिरणों को अपने घायल अंगों को साफ पानी के तालाब में डुबोते देखा था, क्योंकि इस तकनीक से उन्हें तुरंत आराम मिलता था।

मैं पानी के कुंड तक पहुँचा। मैं उसके पास खड़ा हो गया और अपना सिर झुकाकर पानी में अपनी परछाई देखने लगा ताकि मुझे अपने असहनीय दर्द का कारण पता चल सके। ठीक उसी क्षण, पानी में एक अनजान और भयानक चेहरा देखकर मैं चौंक गया।

पानी में जो चेहरा मैंने देखा, वह खून से सना हुआ था; चेहरे के आसपास के बाल जगह-जगह चिपके हुए थे। सींगों के पास दो मामूली घाव थे। उनके आसपास थोड़ा खून जमा हुआ था। अब मेरा ध्यान हिरण की दोनों आँखों पर गया। वे चमकीली थीं और दृढ़ संकल्प और उद्देश्य से दमक रही थीं। भला मैं इन आँखों को पहचानने में कैसे गलती कर सकता था? पलक झपकते ही मुझे पिछली रात की सारी घटना याद आ गई।

मुझे यह समझने में ज़रा भी देर नहीं लगी कि सारे छोटे हिरण मुझे भयभीत होकर क्यों देख रहे थे। अचानक मेरे खून से लथपथ चेहरे और चोटिल सिर ने मेरे हाव-भाव में एक रहस्यमयता जोड़ दी, और वे समझ नहीं पा रहे थे कि मैं आखिर क्या कर रहा हूँ। अब उन्हें मेरे आस-पास मेरी मौजूदगी डरावनी लगने लगी थी। मैं अपना सिर पानी में डुबोने ही वाला था कि तभी मेरे मन में एक विचार आया। अगर खून का यह धब्बा हिरणों के इस झुंड को मुझसे दूर रख रहा है, तो इसे मेरे चेहरे और सिर पर तब तक रहने दो जब तक यह अपने आप न झड़ जाए।

मैं एकांत में एक पेड़ की छाँव में जाकर बैठ गया। आज सुबह, एक महीने से भी अधिक समय बाद, किसी भी हिरण ने मुझे परेशान करने की हिम्मत नहीं की, बल्कि वे आगंतुकों और नर हिरणों का ध्यान आकर्षित करने के लिए नाचने और उछल-कूद करने जैसे अपने सामान्य कामों में व्यस्त थे।

उन्हें तटस्थ भाव से देखते हुए मुझे एक अहसास हुआ। जो लोग बिना किसी उकसावे के दूसरों को परेशान या नुकसान पहुंचाते हैं, वे असल में डरपोक होते हैं। चाहे वे साहस का कितना भी आवरण ओढ़ लें, वास्तव में वे कायर होते हैं। अनजाने में ही मेरे होंठों पर एक मुस्कान आ गई, और काफी समय बाद मैं मुस्कुराया था। मैं उठा और तिनकों के ढेर की ओर चल पड़ा। चाहे वह कितना भी बेस्वाद क्यों न हो, मुझे अभी पेट भरना ही था। अब मुझे हर रात अपना प्रयास जारी रखने के लिए काफी ऊर्जा की आवश्यकता थी, जब तक कि मुझे भागने का रास्ता न मिल जाए।

तार की बाड़ में छेद करने की मेरी पूरी कोशिश लगभग दस रातों तक चली, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। जिस दृढ़ संकल्प के साथ मैंने यह मिशन शुरू किया था, वह अब कमजोर पड़ता जा रहा था। आज सुबह फिर से मैं तालाब के पानी में अपना चेहरा देखकर चौंक गया। मेरा चेहरा मुरझाया हुआ था, और मेरे घाव अभी तक भरे नहीं थे। मेरे चेहरे पर बस एक ही चीज थी जो नहीं बदली थी, वो थीं मेरी चमकती आंखें।

जब आपका सर्वोत्तम प्रयास भी ज़रा सी भी सफलता नहीं दिला पाता, तो अपने लक्ष्य पर आपका भरोसा डगमगाने लगता है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। हर रात जब मैं कड़ी मेहनत के बाद पूरी तरह थककर पानी के कुंड के पास आराम करने बैठता था, तो मुझे लगता था कि मैं अपनी सारी शक्ति खो चुका हूँ और एक असंभव काम को पूरा करने की कोशिश कर रहा हूँ। फिर भी, पूर्णिमा की रात से लगातार घटते चाँद को देखकर मुझे हमेशा लगता था कि ईश्वर का संदेश गलत नहीं हो सकता। कौन जाने, बस एक और कोशिश से मुझे रास्ता मिल जाएगा, मैं खुद को हिम्मत देने के लिए यही कहता था।

फिर भी, हर रात की असफलता ने मुझ पर बेबसी का साया डाल दिया था। मेरे जीवन में एकमात्र सकारात्मक बदलाव, जब से मैंने हर रात तार की बाड़ को धकेलना शुरू किया था, यह था कि अब कोई हिरण मुझे परेशान नहीं करता था। वे मुझसे दूर रहना ही पसंद करते थे।

और फिर एक ऐसी मनहूस रात आई जिसने मुझे घोर निराशा के अथाह सागर में धकेल दिया। पूर्णिमा की रात के ठीक दो सप्ताह बाद मेरी एक दिव्य शक्ति से

संक्षिप्त मुलाकात हुई थी।

आज रात मैं बाड़े के कोनों में, जहाँ दो तार की बाड़ें मिलती थीं और आपस में बंधी हुई थीं, इतनी ज़ोर से टक्कर मार रहा था मानो मैं तब तक हार नहीं मानूंगा जब तक कि धातु के तार की गांठें टूटकर खुल न जाएं और बाड़ों के बीच इतना बड़ा गैप न बन जाए कि मैं बाहर निकल सकूं।

आधी रात का सन्नाटा था, और मैं लगभग बेहोशी की हालत में थी जब एक तेज़ दर्द ने मुझे होश में ला दिया। मैं दर्द से चीखना चाहती थी, लेकिन अपनी आवाज़ दबानी पड़ी, कहीं मेरी चीख से दूसरे हिरण जाग न जाएँ। मैं नहीं चाहती थी कि किसी को मेरे दर्द या मेरी नाकामी का पता चले। मैंने उस चीज़ को देखा जिससे मुझे दर्द हो रहा था। यह एक मज़बूत धातु का तार था, जो बाड़ के इस कोने से बाहर निकला हुआ था। घोर अंधेरे में, मैं उसे अपने खून से लाल देख सकती थी। मेरा दर्द इतना असहनीय था कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैं बाड़े के इस कोने के पास बैठी रही, और दर्द के आँसू मेरे चेहरे से बहकर नीचे ज़मीन पर गिरते रहे। गर्मी ने धरती को प्यासा बना दिया था, और उसने मेरे आँसुओं की हर बूँद को सोख लिया, जो मेरे दर्द, निराशा और बेबसी से भरी हुई थी।

पूरी तरह निराश होकर मैंने आसमान की ओर देखा, चाँद से आशा की एक किरण पाने की उम्मीद में। लेकिन वहाँ भी एक और निराशा मेरा इंतज़ार कर रही थी। आज रात चाँद कहीं छिप गया था। आसमान साफ़ और बादलों से रहित होने के बावजूद मैं उसे नहीं ढूंढ पा रहा था। अचानक मुझे लगा जैसे पूरे ब्रह्मांड ने मुझे धोखा दिया हो। आँसुओं और खून की धाराएँ मेरे चेहरे से बहती रहीं और तुरंत धरती में समा गईं। मैंने चारों ओर देखा और महसूस किया कि चारों ओर लगी तार की बाड़ मेरी मूर्खता का मज़ाक उड़ा रही है। सिर में असहनीय दर्द के कारण मैं ज़मीन पर गिर पड़ा, और कुछ सोच नहीं पा रहा था।

अगली सुबह थकान के कारण मैं देर से उठा। इस जगह से निकलने का रास्ता खोजने की मुझमें अब कोई हिम्मत या उत्साह नहीं बचा था। सिर में असहनीय दर्द के कारण मेरा दिमाग सुन्न हो गया था। मुझे यह भी नहीं पता था कि मेरी आँखें अब भी चमक रही हैं या नहीं, और न ही मुझे इसकी परवाह थी।

लेकिन बाकी हिरण के बच्चे हमेशा मुझसे दूर रहना पसंद करते थे। सारा दिन मैं लगभग निष्क्रिय और निर्जीव अवस्था में बैठा रहा, जबकि मेरे बचपन के दिन मेरे सामने नाचते रहे, जिससे मेरे दिल में एक चुभन भरी पीड़ा हुई।

दिन आलस से बीत रहा था, और मैंने एक बात ठान ली थी कि आज रात मैं किसी भी कीमत पर अपना प्रयास जारी नहीं रखूंगा।

लेकिन शाम ढलते ही एक अद्भुत घटना घटी। साफ आसमान में एक छोटा सा अर्धचंद्राकार चाँद दिखाई दिया। पिछली रात आसमान में चाँद नहीं था, और मुझे ऐसा लगा था जैसे मैंने धोखा खा लिया हो। पिछली रात मुझे ऐसा लग रहा था कि अब आसमान में चाँद नहीं दिखेगा। लेकिन मेरा यह भ्रम गलत साबित हुआ, क्योंकि आज रात वह आसमान में था।

चांद को निहारते हुए मुझे एक अजीब सा नशा सा महसूस हुआ। ऐसा लगा मानो पिंजरे का वह कोना, जहां मैं कल रात बेहोश होकर गिर पड़ा था, मुझे अपनी ओर बुला रहा हो, मानो वहां छिपे किसी रहस्य को सुलझाने के लिए उकसा रहा हो। उस कोने में दोबारा न जाने की अपनी कसम को भूलकर, मैं लड़खड़ाते कदमों से उसी जगह चला गया। वहां पहुंचकर मैं चुपचाप बैठ गया, उस कोने को देखता रहा जहां तार की बाड़ आपस में उलझी हुई थी और जहां से एक धातु का तार बाहर निकला हुआ था, जिस पर मेरे खून की एक परत चढ़ी हुई थी।

मैं घंटों तक वहाँ बैठा रहा, मानो असहाय होकर पूरे ब्रह्मांड के सामने आत्मसमर्पण कर रहा हो, क्योंकि मुझे एहसास हो गया था कि मेरे अकेले प्रयास मेरे लक्ष्य को पूरा करने के लिए कभी पर्याप्त नहीं होंगे। इस अहसास ने मेरे भीतर एक अविश्वसनीय हलचल पैदा कर दी, और धीरे-धीरे मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।

ऊपर से, चाँद का छोटा सा टुकड़ा और गुनगुनाते तारे मुझे देख रहे थे। पिंजरे के इस कोने के पास की धरती ने मेरे आँसू सोख लिए। यही वह जगह थी जहाँ कल रात मेरे आँसू धरती में समा गए थे। क्या धरती जानती थी कि मेरे हर आँसू में मेरा दर्द, मेरा दुख और मेरी उम्मीद भी समाई हुई थी?

शायद हमेशा अटूट आशावान बने रहना थोड़े पागलपन की निशानी है, लेकिन इस थोड़े से पागलपन के बिना जीवन बहुत नीरस हो जाता है।

पिछली रात से मुझमें एक जादुई बदलाव आया। मेरे भीतर की बेचैनी धीरे-धीरे कम होने लगी। मैं दिन का अधिकांश समय सोता रहता था। जैसे ही अंधेरा होता, मुझे बाड़े के उस कोने में जाने की तीव्र इच्छा होती, जहाँ धरती हमेशा मेरे आँसुओं को बड़े चाव से सोख लेती थी। मैं सोचता कि अगर एक दिन मेरा अस्तित्व समाप्त हो जाए, तो मेरे दर्द, पीड़ा और खुशी की सारी कहानियाँ यहीं रह जाएँगी।

हर रात ऊपर से चाँद और उसके चारों ओर अनगिनत तारे मुझे एक उदासीन भाव से देखते रहते थे। हर रात चाँद बड़ा होता जा रहा था, मानो उसे पूर्ण और एकदम गोलाकार होने की तीव्र इच्छा हो। हर रात लंबे समय तक आँसू बहाने से मुझे बहुत सुकून मिलता था। फिर अगली पूर्णिमा की रात एक असाधारण घटना घटी।

धातु के तार से बुरी तरह घायल हुए मुझे ठीक दो सप्ताह हो गए थे। आज फिर पूर्णिमा की रात थी। पिछली पूर्णिमा की रात मेरा दिव्य अश्व से एक अद्भुत दर्शन हुआ था। आज रात मैं अपने पिंजरे के उसी कोने के पास बैठा था, लेकिन पिछली रातों की तरह मेरी आँखों में आँसू नहीं आए। धीरे-धीरे एक सुखद अनुभूति मुझ पर छा गई कि अब मुझमें आँसू या दर्द नहीं बचा था, बल्कि केवल परम आनंद और परमानंद का भाव था।

मैंने सामने एक नज़र डाली और सुखद आश्चर्य हुआ। ठीक उसी जगह के कोने पर, जहाँ पिछले कई दिनों से मेरे आँसू गिरकर धरती में समा रहे थे, वहाँ से एक छोटा सा पौधा निकला। मुझे अच्छी तरह याद था कि कल रात तक उसका कोई निशान नहीं था। इतना छोटा पौधा एक ही दिन में कैसे उग सकता है? मैं सोचने लगी और पौधे को ध्यान से देखने लगी।

अचानक ही, एक और अद्भुत दृश्य ने मुझे पूरी तरह से चकित कर दिया। हमारे पिंजरे के बाहर, जहाँ तार की बाड़ बंधी हुई थी, ठीक उसके बगल में, एक और छोटा सा पौधा था, जिसकी लंबाई और आकार लगभग वैसा ही था। आश्चर्य से भर कर, मैं उन दोनों छोटे पौधों को काफी देर तक देखता रहा और मुझे एहसास हुआ कि वे बिल्कुल एक जैसे थे और उनमें पत्तियों की संख्या भी बराबर थी। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह थी कि हवा चलने पर वे दोनों एक ही तरह से हिल रहे थे। उनकी छोटी पत्तियाँ पीली थीं, और मैंने पहले कभी ऐसे पौधे नहीं देखे थे।

क्या मेरे आंसुओं ने इन्हें अचानक यहाँ उगा दिया? क्या ये पौधे किसी जादुई तरीके से मुझे मुक्ति दिलाने के लिए अस्तित्व में आए हैं? मैं सोच रही थी, और ठीक उसी क्षण, ज़ोरदार बिजली कड़की और एक लंबा, चमकीला सर्प एक पल के लिए आकाश में चमक उठा। क्या यह गर्जना मेरे लिए कोई दिव्य संदेश है...?

अगले ही घंटे में आकाश में एक जबरदस्त परिवर्तन हुआ। लंबे समय से छिपे हुए काले बादलों के विशाल समूह नई ऊर्जा के साथ चारों दिशाओं से निकले और आकाश को ढक लिया। मुझे लगा कि अचानक हुई गड़गड़ाहट ने उन्हें यह संदेश दे दिया है कि अब उन्हें पूरे आकाश में फैल जाना चाहिए।

अचानक हवा ठंडी और सर्द हो गई। जल्द ही हवा की ठंडक ने मुझे नींद की ओर धकेल दिया, जबकि बाड़े के इस कोने के दोनों ओर खड़े पौधे नाचते रहे, मानो अपने जन्म का जश्न मना रहे हों। वे आने वाले मानसून से ज़रा भी भयभीत नहीं थे।

अगले ही दिन बारिश शुरू हो गई। पहले हल्की बूंदा-बांदी हुई, लेकिन जल्द ही मूसलाधार बारिश होने लगी। हमारा पिंजरा पूरी तरह से गीला हो गया। आजकल हमारे यहाँ बहुत कम ही लोग आते थे, और दोनों बाड़ों में मौजूद अधिकांश हिरण पारदर्शी दीवारों वाले शेड के अंदर ही समय बिताना पसंद करते थे।

हालांकि हमारे बाड़े में बना शेड खचाखच भरा हुआ था, फिर भी कोई भी कभी-कभार सुखद बारिश में भीगने का आनंद नहीं लेना चाहता था।

लेकिन मैं अपना सारा समय अपने पसंदीदा हरे-भरे पेड़ के नीचे ही बिताता था। मुझे पूरा यकीन था कि मानसून के दौरान अगर मैं झोपड़ी में चला जाऊँगा तो कोई मुझे परेशान नहीं करेगा। यह सच था कि कभी-कभी जब बारिश बहुत तेज़ होती थी, तो मेरा मन करता था कि झोपड़ी में शरण ले लूँ, लेकिन कुछ न कुछ हमेशा मुझे अपनी भलाई की परवाह करने से रोक देता था।

जब वे दोनों पौधे तेज हवाओं से जूझ रहे थे और मूसलाधार बारिश में भीग रहे थे, तब मैं सुरक्षा के लिए कैसे भाग सकता था? चूंकि वे दोनों पौधे अस्तित्व में आए थे, मुझे ऐसा लग रहा था कि कई रातों तक मेरे आंसुओं ने ही उन्हें जन्म दिया है।

सबसे हैरान करने वाली बात यह थी कि अब तक मैंने जितने भी नए पौधे देखे थे, उनसे बिल्कुल अलग, ये पौधे मानसून या तेज़ हवाओं से ज़रा भी नहीं डरते थे। बल्कि

हवा चलने पर दोनों पौधे खुशी से झूम उठते थे और मूसलाधार बारिश होने पर ताज़गी और स्फूर्ति से भर जाते थे। मुझे कभी-कभी डर लगता था कि कहीं कोई हिरण बाड़े में लगे इस पौधे को देख न ले और इसकी पत्तियों और कोमल तने को चबाने की कोशिश न करे। मैं दिन भर इसकी देखभाल करता रहता था, ठीक वैसे ही जैसे मेरी माँ बचपन में मेरी देखभाल करती थीं।

इन वृक्षों में एक और अनूठी विशेषता थी जिसने मुझे उन्हें अपने अस्तित्व का हिस्सा महसूस कराया। हालांकि मैं जानता था कि हर दिन एक वृक्ष बढ़ता है, लेकिन उसका दैनिक विकास कभी प्रत्यक्ष नहीं होता था। लेकिन, आश्चर्य की बात यह थी कि ये दोनों वृक्ष इतनी तेजी से बढ़ रहे थे कि हर सुबह मैं उन्हें और लंबा और बड़ा पाता था। इतना ही नहीं, वे दोनों दिखने में भी काफी हद तक एक जैसे थे।

जब भी बारिश होती, मैं पेड़ों के पास बैठकर उन्हें प्यार से निहारता रहता। बारिश का मौसम शुरू हुए एक महीना भी नहीं बीता था कि दोनों पेड़ लगभग हमारे चारों ओर लगी तार की बाड़ जितनी ऊँचाई तक पहुँच गए थे। अब तार की बाड़ का मिलन स्थल पेड़ों के विशाल तनों के पीछे छिप गया था। अब मुझे वे धातु के तार के गुच्छे दिखाई नहीं देते थे क्योंकि वे अब दोनों पेड़ों के तनों के बीच दब गए थे।

एक और महीना जल्दी बीत गया, और मानसून की चकाचौंध और उग्रता काफी हद तक कम हो गई। हमारे आसपास वास्तव में कुछ भी नहीं बदला, सिवाय उन दो पेड़ों के, जो हमारे बाड़े के एक कोने में शान से खड़े थे। वे अन्य पेड़ों जितने ही विशाल दिखते थे, लेकिन उनमें एक युवा जोश था।

हमारी आम धारणा के विपरीत कि पेड़ों के पत्ते हमेशा हरे रंग के होते हैं, इन पेड़ों के पत्ते सुनहरे रंग के थे जिनमें बैंगनी रंग की झलक थी। हर शाम अंधेरा होने पर, सभी पेड़ एक जैसे और साधारण से दिखते थे। लेकिन इन दो पेड़ों का अस्तित्व रात में भी बहुत स्पष्ट दिखाई देता था। बादलों से घिरी रात की थोड़ी सी रोशनी भी इनके सुनहरे पत्तों को चमकाने के लिए काफी थी।

दिन के समय, सैकड़ों पक्षी आकर उनकी शाखाओं पर बैठते और बरसात के दिनों के समाप्त होने पर मधुर गीत गाते थे। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था कि हमारे आसपास के अन्य पेड़ इन दो दुर्लभ पेड़ों को देखकर ईर्ष्या भरी निगाहों से देख रहे हैं, क्योंकि इन्हें लोगों और पक्षियों से इतना ध्यान और प्रशंसा मिलती थी।

अनजाने में ही, पेड़ों के पास घंटों बैठे-बैठे मुझमें गर्व की एक अनोखी भावना उमड़

आई। मैं यहाँ से भागने के अपने उद्देश्य को लगभग भूल ही गया था, लेकिन इन चमत्कारी पेड़ों ने मेरे लिए और भी आश्चर्य छिपा रखे थे। मैंने हमेशा देखा था कि संयोगवश, ऐसी सभी अविश्वसनीय घटनाएँ हमेशा पूर्णिमा की रात को ही घटित होती हैं।

आज दोपहर मैं अपने आगंतुकों को ध्यान से देख रहा था। बरसात के मौसम में आने वाले आगंतुकों की संख्या बहुत कम थी, लेकिन अब यह संख्या बढ़कर बाढ़ जैसी हो गई थी। हमारे पिंजरे के बाहर खड़े होकर आगंतुक ढेर सारे चित्तीदार हिरणों को खुशी से नाचते-कूदते देख रहे थे। थोड़ी देर बाद, बाड़े के अंदर पैदा हुए हिरण भी नाचते हुए हिरणों की नकल करने लगे। निस्संदेह, वे हमारे आगंतुकों का मनोरंजन और आनंद किसी बूढ़े हिरण या मुझसे कहीं अधिक कर रहे थे।

मुझे इस बात की बेहद खुशी थी कि पिछले कुछ महीनों से उन्होंने मुझे परेशान करना बंद कर दिया था। आज दोपहर मैं बिना किसी कारण के अचानक हल्का-फुल्का महसूस कर रहा था और यह भावना तब और तीव्र हो गई जब मैंने आकाश की ओर देखा जहाँ सफेद बादलों का समूह खुशी-खुशी इधर-उधर भाग रहा था। वे प्रसन्न और आनंदित लग रहे थे और मानो आकाश में अपनी यात्रा का जश्न मना रहे हों।

शायद वे अपनी आज़ादी का जश्न मना रहे हैं, मैंने सोचा और फिर से आसमान की ओर देखा, और फिर दोपहर के चमकते सूरज को, आँखें सिकोड़ते हुए। लेकिन यह पहली बार था जब मुझे लगा कि मैं खुली आँखों से सूरज को देख सकता हूँ। अब उसकी किरणें मेरी दृष्टि को अंधा नहीं कर रही थीं। बल्कि मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि सूर्य की किरणें मेरी आँखों के माध्यम से मेरे भीतर तक पहुँच रही हैं, मेरे शरीर की हर कोशिका को आशा, दृढ़ संकल्प और साहस से भर रही हैं।

मेरे सभी अंगों में इतनी शक्ति भरी हुई थी कि मुझे ऐसा महसूस होता था कि अगर मैं चाहूँ तो आकाश में उड़ भी सकता हूँ, कि मैं अपने वैसे तो हानिरहित खुरों से धरती खोद सकता हूँ, और मेरे छोटे सींग इतने मजबूत हैं कि दुनिया की सबसे मजबूत वस्तु को भी भेद सकते हैं।

बाहर से तो मुझमें कोई बदलाव नहीं आया, लेकिन भीतर से मैं खुशी और उत्साह से उबल रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं सर्दियों के आकाश में एक भारहीन,

सफ़ेद बादल हूँ।

लेकिन आज रात मेरे लिए एक और आश्चर्य इंतज़ार कर रहा था। सूरज डूबते ही और चाँद निकलते ही मुझे एहसास हुआ कि आज पूर्णिमा है। जैसे-जैसे शाम ढलती गई और रात होने लगी, आसमान में और भी तारे दिखाई देने लगे। कुछ तारे इतने छोटे थे कि उन्हें देखने के लिए काफी देर तक आसमान को निहारना पड़ता था। मुझे लगा कि आज रात मुझे सोना नहीं चाहिए, बल्कि आसमान की इस अनोखी सुंदरता में खो जाना चाहिए।

शायद इस सम्मोहक रात की सुंदरता ने बाकी सभी हिरणों को भी मदहोश कर दिया था, क्योंकि उनमें से अधिकांश सामान्य से बहुत पहले ही नींद की गहरी अवस्था में डूब गए थे। हल्की हवा चल रही थी और हमारे चारों ओर के सभी पेड़ आपस में मधुर ध्वनि और पत्तों की सरसराहट से आनंदित हो रहे थे।

अब मेरा ध्यान उन जुड़वां पेड़ों पर गया, और उनमें कुछ बहुत ही असामान्य बात मुझे तुरंत समझ में आ गई। मैं लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए उनकी ओर बढ़ा और अपनी हमेशा वाली जगह पर बैठ गया।

दोनों पेड़ों की शाखाएँ हवा से अन्य पेड़ों की शाखाओं की तरह नहीं हिल रही थीं; बल्कि अन्य पेड़ों के विपरीत, इन दोनों पेड़ों के तने लगभग न के बराबर हिल रहे थे। एक पल के लिए मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि यह सोचना असंभव था कि हवा इतने विशाल तनों को हिला सकती है।

इससे भी ज़्यादा हैरानी की बात यह थी कि दोनों पेड़ के तने बाड़े के कोने को विपरीत दिशाओं से दबा रहे थे, मानो तार की बाड़ और धातु के खंभे के बीच फंसे धातु के तार के गांठों को तोड़ने की कोशिश कर रहे हों। दोनों पेड़ों के तने खामोशी से एक-दूसरे से रगड़ खा रहे थे; उनके सुनहरे पत्तों पर अचानक लाल रंग की एक लकीर उभर आई, मानो वे किसी कारण से तार की बाड़ पर बहुत गुस्सा हों।

मैं अचंभित और अवाक होकर पेड़ों के तनों को देखता रहा। अचानक पेड़ों के तने आपस में रगड़ना बंद हो गए और स्थिर हो गए। धीरे-धीरे उनके पत्तों का सुनहरा रंग फिर से लौट आया। लेकिन मेरे और बाहर सड़क के बीच खड़ी तार की बाड़ में अचानक बदलाव आया। मजबूत दिखने वाली वह तार की बाड़ कमजोर और असहाय लग रही थी।

मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई कि मेरे सामने लगी तार की बाड़ अचानक सिकुड़

गई है। काफी देर बाद, मुझे लगा कि मैं उसे फिर से अपने सिर से धक्का दे दूं। सावधानी से मैं तार की बाड़ की ओर बढ़ा, और मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ कि वे दोनों पेड़ मुझे उत्सुकता से देख रहे हैं। अब मैंने तार की बाड़ को धक्का दिया। पहले धीरे से, और फिर थोड़ा ज़ोर लगाकर।

शुरू में तो तार की बाड़ जरा भी नहीं हिली, लेकिन जैसे ही मैंने कुछ देर तक जोर लगाया, अचानक मुझे खरोंचने की आवाज सुनाई दी।

मैंने आवाज़ की दिशा में देखा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि दो पेड़ों के बीच फंसी तार की बाड़ का एक सिरा, पेड़ों के तनों के बीच की संकरी जगह से थोड़ा बाहर निकल आया था, जिससे मेरे सामने वाली बाड़ बाहर की ओर मुड़ गई थी। हालांकि, तार की बाड़ का दूसरा सिरा मेरे प्रयास से बिल्कुल भी नहीं हिला।

मुझे पूरा यकीन था कि दोनों पेड़ों के तनों ने तार की बाड़ की गांठों को इतनी बुरी तरह जकड़ लिया था कि आखिरकार गांठें टूट गईं। मेरा अगला प्रयास था तार की बाड़ को तनों के बीच की संकरी जगह से बाहर निकालना। क्या मैं इस पल का इतने लंबे समय से इंतजार नहीं कर रहा था?

मेरे शरीर से बाड़ पर हल्का सा दबाव पड़ने से बाड़ और पिंजरे के बाहर पेड़ के बीच एक जगह बन गई। मेरे लिए बाहर निकलने के लिए यह काफी था।

मैं पिंजरे से चुपके से बाहर निकलने ही वाला था, लेकिन तभी मेरे मन में एक और विचार आया। मैं नहीं चाहता था कि किसी और हिरण को मेरे इस भागने के रास्ते का पता चले। मैंने चुपके से पीछे मुड़कर देखा और राहत की सांस ली, क्योंकि वे सब सो रहे थे। मुझे सभी छोटे हिरणों से बहुत गुस्सा था और बूढ़े हिरण से भी इस बात का मलाल था कि उन्होंने छोटे हिरणों को डांटा नहीं, जबकि वे मेरा बेरहमी से मज़ाक उड़ा रहे थे।

पिंजरे से धीरे-धीरे बाहर निकलते हुए मेरा पूरा शरीर रोमांच से भर गया था। बाड़े से बाहर आते ही मैंने सबसे पहले तार की बाड़ के ढीले हिस्से को उसकी मूल जगह पर धकेल दिया—जुड़वां पेड़ों के तनों के बीच की संकरी जगह में। यह अंदाज़ा लगाना नामुमकिन था कि वहाँ से भागने का कोई रास्ता ज़रूर होगा।

अब मैं पिंजरे से मुक्त होकर आज़ाद हो गया था! मैंने उस बाड़े पर एक नज़र डाली जो एक साल से ज़्यादा समय से मेरा घर था, जहाँ मैंने जंगल से भी ज़्यादा समय बिताया था। अचानक मेरे भीतर विरोधाभासी भावनाएँ उमड़ पड़ीं और इस बाड़े को

हमेशा के लिए छोड़ने की तीव्र पीड़ा महसूस हुई।

शायद अगर हमें लंबे समय तक बंधनों में रखा जाए, तो हम अपने कैद जीवन में इतना आनंद और सुकून पाने लगें कि एक दिन जब हम फिर से आज़ाद हों, तो हमारी आज़ादी ही हमें बोझ लगने लगे। मैंने सोचा और चिड़ियाघर से जल्दी निकलने का फैसला किया, इससे पहले कि रात के पहरेदारों में से कोई मुझे पकड़ ले। अपनी गति बढ़ाने से पहले, मैंने दोनों पेड़ों को धन्यवाद देते हुए प्रणाम किया। जवाब में, उनकी पत्तियाँ और छोटी शाखाएँ मेरी कृतज्ञता को स्वीकार करते हुए हिल उठीं।

अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं था, और मैं लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए चलता रहा। सड़क के दोनों ओर अलग-अलग आकार और प्रकार के कई बाड़े थे, जिनमें विभिन्न प्रजातियों के जानवरों को यहाँ आने वाले आगंतुकों के मनोरंजन के लिए कैद रखा गया था। मुझे यह सोचकर बहुत डर लग रहा था कि कहीं इनमें से कोई जानवर मुझे चलते हुए देखकर ज़ोर से रोने न लगे और रात के पहरेदारों में से किसी का ध्यान मेरी ओर आकर्षित न हो जाए।

मेरी मांसपेशियां तन गईं, सांसें लगभग खामोश हो गईं और कदम संभलकर रखे; मैं तब तक चलता रहा जब तक चिड़ियाघर के उस हिस्से में नहीं पहुँच गया जहाँ कोई पिंजरा नहीं था, बल्कि घास लंबी थी और लकड़ी के दरवाजों वाले कुछ कमरे कतार में खड़े थे। कमरों से तीखी दुर्गंध आ रही थी। कमरों के कुछ कदम पीछे, जिनका इस्तेमाल शायद आगंतुक शौच के लिए करते थे, घनी घास थी और जाहिर तौर पर कोई भी इन कमरों के पिछले हिस्से में नहीं जाता था।

मुझे लगा, ये तो इंसानी मल की बदबू होगी। मैं कमरों के पिछले हिस्से की तरफ गया जहाँ घास बिना कटी लंबी थी, और इस छोटे से घास के मैदान के पीछे एक ऊँची दीवार थी, जो किसी पत्थर की बनी थी और उसके ऊपर नुकीले कांच के टुकड़े लगे थे, जिससे किसी के लिए भी उसे पार करना नामुमकिन था। मुझे पूरा यकीन था कि चिड़ियाघर का पूरा परिसर इसी तरह की दीवार से घिरा हुआ था, सिवाय एक-दो जगहों के जहाँ चिड़ियाघर में प्रवेश करने के लिए ऊँचे द्वार बने थे।

क्या इसका मतलब यह है कि इस जगह से निकलना नामुमकिन है? मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा, लेकिन अगले ही पल, जीवन और उसके रहस्यों में गहरे विश्वास ने मेरे सारे संदेह दूर कर दिए। अगर ब्रह्मांड ने मुझे यहाँ से मुक्त करने की साजिश रची है, तो कोई भी मानव निर्मित बाधा मुझे मेरे सुनहरे दिन वापस पाने से नहीं रोक सकती।

एक मजबूत विश्वास ने मेरे दिल को भर दिया और मेरी आँखें खुशी से चमक उठीं, और ठीक उसी क्षण, हल्की रोशनी की एक किरण मेरी आँखों पर पड़ी। मैंने उस वस्तु को देखा जो मंद चमक रही थी, जिससे चाँदनी हल्की-हल्की परावर्तित हो रही थी। वह वस्तु लंबी घास से आंशिक रूप से ढकी हुई थी, और थोड़ी दूरी से यह अनुमान लगाना असंभव था कि वह क्या है।

जिज्ञासावश, मैं लंबी घास और थोड़ी दलदली ज़मीन को पार करते हुए उसकी ओर चल पड़ा। मैंने सोचा, यहाँ की ज़मीन इतनी गीली क्यों है? लेकिन चमकती हुई वस्तु तक पहुँचते ही मुझे जवाब मिल गया। वह एक मोटा पाइप था, और उसमें से जगह-जगह से पानी टपक रहा था। पाइप के अंदर से एक भिनभिनाने जैसी आवाज़ आ रही थी। मैंने सोचा, यह ज़रूर पानी का पाइप होगा, जो चिड़ियाघर में कई जगहों पर पानी पहुँचाता होगा, और मुझे अपने बाड़े में लगे पानी के नल की याद आ गई।

मैंने पानी के पाइप की लंबाई देखी। मोटे पाइप का एक सिरा एक छोटे से कमरे में जा रहा था, जहाँ से कई छोटे पाइप निकल रहे थे, और दूसरा सिरा पत्थर की दीवार की ओर जा रहा था। मैंने पाइप के सहारे पत्थर की दीवार की ओर चलते हुए समझा कि इसका सीधा सा मतलब था कि पाइप के ज़रिए चिड़ियाघर में बाहर से पानी आ रहा था। बेलें और लताएँ पत्थर की दीवार को भी ढके हुए थीं, जिससे कई जगह दरारें पड़ गई थीं, और दीवार की हर छोटी दरार से एक नई बेल निकलकर अपनी शाखाएँ चारों ओर फैला रही थी। ऐसा लग रहा था मानो यह पत्थर की दीवार बेलों और लताओं को अपने ऊपर पूरी तरह फैलने दे रही हो।

मैंने दीवार के उस हिस्से पर ध्यान दिया जहाँ से पानी का पाइप दीवार के बाहर जा रहा था। यह जगह घनी झाड़ियों से ढकी हुई थी और पाइपलाइन मुश्किल से दिखाई दे रही थी। यहाँ की ज़मीन बहुत गीली थी। पता नहीं क्यों, मैं छोटे-छोटे कदमों से पाइप के सहारे दीवार की ओर बढ़ता गया। घनी घास और झाड़ियों के पर्दे को पार करने में मुझे कुछ समय लगा। और उसके पीछे एक और आश्चर्य मेरा इंतज़ार कर रहा था।

दीवार में जहाँ से पानी का पाइप गुजरता था, वहाँ से लगातार पानी रिसने के कारण वह जगह कमजोर हो गई थी और कुछ पत्थर काफी घिस गए थे। वे अपनी जगह पर अस्थिर लग रहे थे और हल्का सा धक्का देने पर ही गिर सकते थे। भला मैं एक पल भी रुककर यह प्रयोग कैसे करूँ? मेरे सिर के धक्के से वे पत्थर न सिर्फ हिले बल्कि ज़ोरदार आवाज़ के साथ दीवार के दूसरी तरफ गिर पड़े।

अब दीवार में एक बड़ा सा छेद हो गया था। छेद के चारों ओर लगे पत्थर के टुकड़े आस-पास के पत्थरों से मजबूती से चिपके हुए थे और अपनी जगह से हिल नहीं रहे थे; चाहे मैं उन्हें हिलाऊं या अपनी पूरी ताकत लगा दूं, कोई फर्क नहीं पड़ता। एक सामान्य नज़र से देखने पर लग सकता है कि मेरे जैसे लंबे हिरण के लिए यह छेद इतना बड़ा नहीं है कि वह उसमें से निकल सके, लेकिन मुझे पता था कि मैं इस छेद का फायदा उठाकर कैसे भाग सकता हूं।

मैंने बड़ी सावधानी से अपना सिर उस दरार से बाहर निकाला; पहले अपना जबड़ा, फिर अपने जबड़े को नीचे झुकाते हुए, अपने सिर को लगभग ज़मीन के समानांतर रखते हुए, मैंने धीरे-धीरे और सतर्कता से अपना सिर आगे बढ़ाया। मैं नहीं चाहता था कि मेरा छोटा सा सींग दीवार की ऊबड़-खाबड़ और कठोर सतह से रगड़ खाए या खरोंच खाए। जल्द ही मेरा सिर बाहर आ गया! सबसे पहले मैंने एक गहरी सांस ली। बाहर की हवा आज़ादी की खुशबू से महक रही थी। मैंने गहरी साँसें लीं, और अपने पूरे अस्तित्व को आज़ादी की हवा से भर लिया। मैंने नीचे देखा और वहाँ घास की चादर देखकर खुश हुआ। शायद यहाँ की ज़मीन गीली होगी, और गिरने से मुझे चोट नहीं लगेगी, मैंने सोचा और धीरे-धीरे उस खाई से आगे बढ़ने लगा। कछुए की चाल से मेरा शरीर आगे बढ़ने लगा। यह आसान काम नहीं था, क्योंकि आगे बढ़ने के लिए मुझे पत्थर की खुरदरी सतह को अपने शरीर से धकेलना पड़ रहा था। इससे मेरी त्वचा पर कुछ खरोंचें आ सकती थीं, लेकिन इससे मुझे कोई फर्क कैसे पड़ता?

और फिर आया मेरे जीवन का दूसरा सबसे यादगार पल। पहला पल वो था जब मैं अपनी माँ से अलग होकर ज़मीन पर गिर गया था। अब मैं फिर से चिड़ियाघर की मज़बूत दीवार के दूसरी तरफ ज़मीन पर गिर गया। जैसे ही मेरा शरीर घास वाली ज़मीन पर पड़ा, मुझे एहसास हुआ कि कुछ मेरे शरीर से लिपट गया है। पतली-पतली लताएँ थीं, जो मेरे शरीर से लिपट गई थीं जब मैं दीवार से बाहर निकलने के लिए रेंग रहा था।

लताओं को देखकर मन में एक अजीब सी अनुभूति हुई। बहुत समय पहले, मेरी माँ ने मुझे मुक्त करने के लिए मेरी गर्भनाल काट दी थी ताकि मैं शारीरिक रूप से उनसे अलग हो जाऊँ और स्वतंत्र हो जाऊँ। और अब, मैं एक नए जीवन की शुरुआत करने जा रहा था, मानो मेरा पुनर्जन्म हुआ हो, और मुझे उन हरी लताओं से खुद को अलग करना था, जिन्होंने मेरे शरीर को गर्भनाल की तरह जकड़ रखा था।

मैंने सोचा, शायद हर बार जब हम एक नया जीवन शुरू करते हैं और स्वतंत्रता की एक और ऊंचाई तक पहुंचने की कोशिश करते हैं, तो हमें कुछ ऐसे धागे या डोरियां काटनी पड़ती हैं जो हमें हमारे अतीत से जोड़ती हैं।

मैं धरती पर खड़ा हुआ और आकाश की ओर देखा। मेरे लिए यह एक पुनर्जन्म था।

अध्याय-*14*

मेरी मातृभूमि, मेरा प्यार

जीवन कोई पहेली नहीं है जिसे सुलझाना हो, यह एक रहस्य है जिसे जीना है।

~ओशो

अगले कुछ मिनटों तक मैं अचंभित रहा। हालांकि मैं अब चिड़ियाघर के बाहर खड़ा था, फिर भी मेरा भाग निकलना मुझे किसी काल्पनिक कहानी जैसा लग रहा था। अगर आज सुबह किसी ने मुझसे कहा होता कि आज रात मैं चिड़ियाघर के उस बाड़े से इतने अविश्वसनीय तरीके से भाग निकलूँगा, तो मैं उसका मज़ाक उड़ा देता। मैंने फिर से तारों से जगमगाते पूर्णिमा के आकाश की ओर देखा और महसूस किया कि हम सब एक व्यक्ति के रूप में कितने असहाय हैं।

जीवन में हम चाहे कितनी भी शिद्दत से कुछ पाना चाहें, जीवन और ब्रह्मांड की इच्छा और आकांक्षा के बिना हमारे प्रयास व्यर्थ ही फलदायी होते हैं। लेकिन साथ ही यह भी उतना ही सच है कि जब तक हम किसी चीज को पाने के लिए जी-जान से मेहनत नहीं करते, ब्रह्मांड हमारा साथ नहीं देता।

जीवन की यह गहन समझ न तो मेरी मां और न ही किसी अन्य हिरण के पास थी, लेकिन यह मेरा प्रत्यक्ष अनुभव था।

अचानक जीवन और उसमें निहित हर चीज़ के प्रति मेरे मन में गहरा विश्वास जागृत हुआ। मैं बड़े-बड़े कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ने लगा, हालाँकि मुझे यह नहीं पता था कि मैं जंगल तक कैसे पहुँचूँगा। इससे पहले मैंने कभी इतना हल्कापन और उत्साह महसूस नहीं किया था। चिड़ियाघर की ऊँची दीवार को पीछे छोड़ते हुए, पानी की पाइपलाइन के किनारे चलते हुए मेरी आँखों से कृतज्ञता के आँसू बह रहे थे। शायद किसी दिन जहाँ मेरे कृतज्ञता के आँसू गिर रहे थे, वहाँ कुछ छोटे-छोटे पौधे उगेंगे, मैंने मन ही मन प्रसन्नता से सोचा।

आंतरिक आनंद ने मुझे अपने शारीरिक दर्द को भुला दिया, और मैं पाइप के साथ-साथ काफी देर तक चलता रहा, इस उम्मीद में कि यह मुझे किसी नदी तक ले जाएगा, जहाँ से मानव निर्मित मशीनरी द्वारा पानी निकाला जाता होगा, लेकिन कुछ दूरी के बाद पानी का पाइप जमीन के नीचे गायब हो जाने पर मुझे थोड़ी निराशा हुई।

लेकिन मेरी निराशा का यह भाव बहुत क्षणिक था, क्योंकि जल्द ही मैंने धरती के नीचे पानी के पाइप के गायब होने में एक दैवीय संदेश पढ़ा।

मुझे ऐसा लगा मानो कोई दिव्य मार्गदर्शक हो, पानी का पाइप मेरे साथ तब तक था

जब तक मैं सुरक्षित स्थान पर नहीं पहुंच गया, और अब जब उसका काम पूरा हो गया, तो वह जमीन के नीचे चला गया।

जीवन और प्रकृति पर नए सिरे से भरोसा करते हुए, मैंने चारों ओर देखा, यह जानते हुए कि मुझे वही रास्ता अपनाना चाहिए जहाँ सबसे कम मानव बस्ती दिखाई दे, क्योंकि यही एकमात्र रास्ता था जिससे मैं मानव बस्ती से दूर जा सकता था। मैं अपने जीवन की सबसे लंबी यात्रा शुरू करने वाला था, लेकिन मेरे शरीर ने मुझे संकेत दिया, और मैं समझ गया कि उसे भूख और थकावट का दावा करने का पूरा अधिकार था।

चारों ओर ताज़ी घास की कोई कमी नहीं थी, और मैंने चरना शुरू करने में ज़रा भी देर नहीं की। जैसे ही चबाई हुई घास का पहला टुकड़ा मेरी जीभों तक पहुँचा, मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई, मानो मैं कोई बेस्वाद चीज़ चबा रहा हूँ। कुछ ही पलों में मुझे एहसास हुआ कि एक साल से ज़्यादा समय तक सूखी घास और भूसा चबाने से ताज़े भोजन के प्रति मेरी स्वाद कलिकाएँ लगभग मर चुकी थीं।

कैद में बिताया जीवन हमारे भीतर की कई खूबसूरत चीजों को खत्म कर देता है, मैंने मन ही मन आह भरते हुए सोचा और चरना जारी रखा क्योंकि ताजी घास मेरे पेट में उतर रही थी। मुझे पूरा यकीन था कि कुछ ही समय में मेरी स्वाद कलिकाएं ताजे और जीवंत पौधों, पत्तियों और घास से फिर से उत्तेजित हो जाएंगी।

अब मैंने अपनी यात्रा शुरू करने से पहले थोड़ा आराम करने के लिए बैठ गया। लेकिन मेरा थका हुआ शरीर और भरा हुआ पेट मुझे तुरंत नींद में ले गया।

अचानक एक भयंकर शोर से मेरी नींद टूट गई। नींद से भरी आँखों से मैंने तुरंत चारों ओर देखा। लेकिन सामने का डरावना दृश्य देखकर मैं बुरी तरह हिल गया। नींद से भरे मेरे दिमाग ने जिसे शोरगुल समझा था, वह वास्तव में कुत्तों के झुंड का गुस्से में भौंकना था। हमारे जंगल में कुत्ते बहुत कम ही दिखते थे, फिर भी मैं यह अच्छी तरह जानता था कि वे हमारा मांस खाना पसंद करते हैं। वे थोड़ी दूरी पर खड़े होकर ज़ोर-ज़ोर से गुर्रा रहे थे, क्योंकि मेरी लेटी हुई और स्थिर आकृति को देखकर वे यह नहीं समझ पा रहे थे कि मैं कौन हूँ। उन्हें बस इतना पता था कि मैं उनके इलाके में बिन बुलाया मेहमान हूँ और उन्हें मुझे जल्द से जल्द भगाना है। अब जब उन्होंने देखा कि मैं उन्हें देख रहा हूँ, तो वे अचानक आक्रामक हो गए और मुझ पर हमला करने के लिए

तैयार हो गए।

बिना देर किए, मैं अपनी जान बचाने के लिए भागा, जितनी तेज़ी से दौड़ने की मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मैं उस रास्ते को भूल गया जहाँ इंसानी बस्तियाँ सबसे कम थीं और पीछा कर रहे आवारा कुत्तों के झुंड से बचने के लिए सरपट दौड़ रहा था। उनकी लगातार भौंक, मानो सिर्फ मेरा खून ही उन्हें चुप करा सकता हो, मुझे इतनी तेज़ी से दौड़ने के लिए प्रेरित कर रही थी। कुछ ही समय में मैं उन सभी आवारा कुत्तों को पीछे छोड़ देता। मुझे कभी पता नहीं था कि मैं इतनी तेज़ी से दौड़ सकता हूँ, और वो भी इतनी देर तक।

शायद हममें से किसी को भी यह पता नहीं होता कि हमारे भीतर कितनी शक्ति, ऊर्जा और क्षमता छिपी है, जब तक हम उसे पूरी ईमानदारी से खोजना नहीं चाहते, मैंने सोचा और उत्सुकता से चारों ओर देखा। काफी देर तक मैं बिना कुछ देखे ही दौड़ता रहा; कभी-कभी तो आँखें बंद करके भी।

लेकिन अब जब मेरी जान खतरे में नहीं थी, मैंने चारों ओर एक जिज्ञासु नज़र डाली और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गई कि मेरे चारों ओर हरे-भरे धान के खेत थे, जो क्षितिज तक फैले हुए थे। बैंगनी रंग का सूरज धीरे-धीरे आकाश के पूर्वी किनारे पर चढ़ रहा था, मानो धान के खेतों से ही उग रहा हो। धान के खेतों में एक सुहावनी हवा बह रही थी।

धान के खेतों के हर हिस्से को दूसरे से अलग करने वाली संकरी मेड़ें थीं। आसपास लंबे पेड़ बहुत कम और दूर-दूर थे। अब जैसे ही सूरज थोड़ा ऊपर चढ़ा और धान के खेतों में चावल के दानों को नहलाया, वे मुझे सुनहरे पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़ों जैसे लगने लगे, जिन्हें मैंने अक्सर जंगल के संकरे रास्तों पर पड़ा देखा था। अचानक मेरे दिल में अपने वतन की याद उमड़ पड़ी। मैं जानती थी कि अपने जंगल तक पहुँचने का रास्ता न जानने में मैं कितनी बेबस थी। मैंने सोचा, अगर मैं अपनी पसंदीदा जगह पर दोबारा नहीं जा सकी तो इस आज़ादी का क्या करूँगी?

उगते सूरज को ध्यान से देखते हुए, मुझे ऐसा लगा मानो मैं प्रकृति के चरणों में खुद को समर्पित कर दूं, उससे विनती करूं कि वह मुझे मेरे वतन तक पहुंचा दे। लगभग अनायास ही मेरी आंखें बंद हो गईं। यह मेरे जीवन का एक दुर्लभ क्षण था जब मेरा हृदय दर्द और सुख, आशीर्वाद और थोड़ी सी बेबसी से समान रूप से ग्रसित था। ठीक उसी क्षण, कुछ असाधारण घटित हुआ।

मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। दूर से आती हुई, साफ़ और तीखी, एक पुकार जिसने भोर की खामोशी को अचानक भंग कर दिया। यह किसी पक्षी की पुकार थी। क्या यह किसी नए दिन की शुरुआत का संकेत है, मैंने सोचा। लेकिन उस पुकार में कुछ ऐसा था जिसने मेरे मन में कुछ याद दिलाया। शायद यह उन्हीं पक्षियों में से किसी एक की पुकार थी जिन्हें मैंने अपने बचपन में कई बार सुना था, मैंने खुद से कहा।

फिर मुझे उसी पक्षी की आवाज़ दोबारा सुनाई दी। तुरंत ही मुझे समझ आ गया कि मुझे उस पक्षी की आवाज़ इतनी स्पष्ट रूप से क्यों याद थी। उस मनहूस दिन की यादें मेरे दिमाग में उमड़ आईं, जब मुझे जानवरों से भरी गाड़ी में चिड़ियाघर लाया गया था। मुझे उस अजीब पक्षी की छवि स्पष्ट रूप से याद आ गई, जो उस भयानक अनुभव के दौरान काफी देर तक मेरी पीठ पर बैठा रहा था।

आश्चर्य की बात है कि जंगल में बिताए दिनों और चिड़ियाघर में लंबे समय तक रहने के दौरान मैंने इस पक्षी की आवाज़ कभी नहीं सुनी थी, उसे देखना तो दूर की बात है। मुझे अपराधबोध हुआ क्योंकि मैंने पिछले कई महीनों में इस पक्षी के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। इसकी बार-बार की आवाज़ ने मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास जगा दिया कि यह पक्षी मेरी मदद करने, मुझे घर का रास्ता दिखाने आया है।

मैं धैर्यपूर्वक पक्षी की दूसरी आवाज सुनने की प्रतीक्षा करता रहा और उसे ढूंढने के लिए अपनी आँखें गड़ाए बैठा रहा, उस दिशा में लगातार देखता रहा जहाँ से आवाज आ रही थी। कुछ और पल बीत गए, और हर पल मेरे धैर्य की परीक्षा ले रहा था।

मैंने सोचा, शायद दूर किसी पेड़ की शाखा पर बैठा पक्षी मेरी बेचैनी को बड़े आनंद से देख रहा है, और ठीक उसी क्षण मुझे फिर से उसकी आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था जैसे वह आवाज़ मेरे पश्चिम की ओर खड़े एक ऊँचे पेड़ से आ रही हो। वह पेड़ लंबे पत्तों से घना था और उसकी शाखाएँ मोहक ढंग से मुड़ी हुई थीं।

बिना सोचे-समझे मैं पेड़ की ओर दौड़ पड़ा। इतने महीनों बाद उस दुर्लभ पक्षी को फिर से देखने की उम्मीद से मेरा दिल खुशी से झूम उठा था। पेड़ के पास पहुँचते ही एक और आश्चर्य मेरा इंतज़ार कर रहा था। मुझे फिर से उस पक्षी की आवाज़ सुनाई दी; उसकी आवाज़ का स्वर और लय वही थी, लेकिन वह कुछ दूरी पर खड़े दूसरे पेड़ से आ रही थी। यह कैसे संभव हो सकता है? मैं हैरान था, क्योंकि मैंने उस पक्षी को एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ते हुए नहीं देखा था।

संभवतः, शुरू से ही पक्षी उसी पेड़ पर बैठा था, लेकिन चूंकि मैं दोनों पेड़ों से थोड़ी

दूरी पर था, इसलिए मैं ठीक से यह पता नहीं लगा सका कि उसकी आवाज कहां से आ रही थी। मुझे यह तर्क काफी विश्वसनीय लगा और मैं उस पेड़ की ओर चल पड़ा जहां से रहस्यमयी पक्षी आवाज दे रहा था।

इस बार मेरी निगाहें उस पेड़ पर टिकी हुई थीं, क्योंकि पक्षी की एक झलक पाने की मेरी बेचैनी पल-पल बढ़ती जा रही थी। जिस पेड़ की ओर मैं बढ़ रहा था, वह मुझसे बस तीस कदम दूर था। वह पेड़ लगभग वैसा ही दिख रहा था जैसा मैंने पहले देखा था और सुबह के नीले आसमान में उसकी आकृति स्पष्ट रूप से उभर रही थी।

अब मेरे ध्यान में आए बिना पक्षी का इस पेड़ से उड़ जाना असंभव था, मैंने पेड़ की ओर कुछ और कदम बढ़ाते हुए सोचा।

लेकिन मेरा तर्क, मेरी समझ और मेरे निष्कर्ष—चाहे वे मुझे कितने भी गहन क्यों न प्रतीत हों—जीवन और प्रकृति के रहस्यों को समझने में हमेशा अपर्याप्त साबित हुए।

मैंने अभी कुछ ही कदम बढ़ाए थे कि दूसरे पेड़ से चिड़िया की आवाज़ फिर सुनाई दी। वहाँ पहुँचने के लिए मुझे लगभग उतनी ही दूरी तय करनी पड़ी जितनी मैंने पिछले पेड़ से इस पेड़ तक आने में तय की थी। एक और महत्वपूर्ण बात जो मैंने देखी वह यह थी कि मैं धीरे-धीरे उस जगह से दूर जा रहा था जहाँ पानी का पाइप ज़मीन में गायब हो जाता था।

अब मैंने उस पेड़ की ओर देखा जहाँ से मुझे चिड़िया की आवाज़ सुनाई दी थी, लेकिन मैं तुरंत उसकी ओर नहीं बढ़ा। मुझे ज़रा भी शक नहीं था कि जब तक यह रहस्यमयी चिड़िया मुझे देखने की अनुमति नहीं देगी, तब तक मैं उसे कभी देख नहीं पाऊँगा। इस विचित्र घटना का मेरे पास कोई स्पष्टीकरण नहीं था, लेकिन मैंने इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि यह पहली बार नहीं था जब मेरे साथ कोई ऐसी घटना घट रही थी जिसे समझाया नहीं जा सकता था।

क्या यह मुझे इस अनजान इलाके में रास्ता दिखाने के लिए यहाँ है? अगर ऐसा है, तो क्या इसे तब पता था जब मुझे चिड़ियाघर लाया गया था कि एक दिन यह मेरी मदद के लिए आएगा? इसे कैसे पता चला कि एक दिन मैं चिड़ियाघर से भाग जाऊंगा? ये अनसुलझे सवाल मेरे मन में उमड़ रहे थे, और मैं विस्मय से चारों ओर फिर से देखने लगा।

लेकिन पहले के कई मौकों के विपरीत, इस बार मेरे मन ने मुझे कोई जवाब नहीं दिया। बल्कि उसने मुझे बताया कि बहुत अधिक प्रश्न पूछने से इस पल की सुंदरता

और भव्यता का आनंद लेने का यह शानदार अवसर बर्बाद हो जाएगा।
जब से यह विचार मेरे मन में आया, तब से मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। मैं पूरी निष्ठा से उस दिशा का अनुसरण करता रहा जहाँ से पक्षी की आवाज़ आ रही थी। कभी वह आवाज़ किसी ऊँचे पेड़ से आती, कभी झाड़ियों से, कभी किसी उपेक्षित झील से भी, जो मानो सदियों से विद्यमान हो।
इससे मेरी जिज्ञासा जागृत हुई और मैं तुरंत झील की ओर गया, जहाँ मैंने देखा कि वह कमल के पत्तों से ढकी हुई थी। वे हरे रंग के, गोलाकार और किनारे से दांतेदार थे, पानी पर लगभग भारहीन होकर तैर रहे थे और उनकी गोद में सफेद कमल खिले हुए थे।
हालांकि रास्ते में मैंने जिन झीलों का दौरा किया, वे निर्जन थीं, फिर भी उनकी सुंदरता अतुलनीय थी। लेकिन मुझे कहीं भी वह पक्षी नहीं दिखा जिसे देखने के लिए मैं इतने लंबे समय से तरस रहा था।
मेरी इच्छा थी कि मैं उन झीलों में से किसी एक के किनारे खड़ा होकर उसकी सुंदरता का आनंद ले सकूँ, लेकिन हर बार लगभग पचास से सौ कदम दूर से आती रहस्यमयी पक्षी की आवाज मुझे याद दिला देती थी कि अब आगे बढ़ने का समय आ गया है।
जब भी मैं किसी ऐसी जगह से विदा लेता था जहाँ प्रकृति ने अपनी सुंदरता भरपूर मात्रा में बरसाई हो, तो मैं उससे कहता था कि एक दिन मैं फिर वापस आऊंगा और वहाँ अधिक समय बिताऊंगा।
अटूट विश्वास के साथ, मैंने पक्षी की पुकार का अनुसरण किया। मेरे मन में जरा भी संदेह नहीं था कि यह अदृश्य पक्षी मुझे गुमराह कर सकता है।
मैं कई शुष्क भीतरी इलाकों और अनजान जंगलों से गुज़रा, लेकिन रुका नहीं क्योंकि पक्षी की आवाज़ नियमित अंतराल पर आती रही। मैं जानता था कि मैं तब तक चलता रहूँगा जब तक पक्षी मुझे जहाँ चाहे वहाँ ले जाए। जिन जंगलों से मैं गुज़रा, वे मेरे वतन से कम रहने योग्य नहीं थे, फिर भी मुझे उनमें से किसी भी जगह बसने का मन नहीं हुआ।
मैं दलदली इलाकों, विशाल भूभाग में फैली झाड़ियों और जंगलों से गुज़रा; मैं पहाड़ियों पर चढ़ा, घाटियों में उतरा और लगातार मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रही एक चिड़िया की आवाज़। सूरज और चाँद दोनों मेरी निरंतर चाल के साक्षी रहे, जैसे वे आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करते हुए दिन के बाकी समय के

लिए अस्त हो गए, लेकिन मेरा लंबे-लंबे कदमों से चलना निरंतर जारी रहा।
दो दिन और दो रातें इसी तरह बीत गईं, और दूसरी रात के अंत में, वह बहुप्रतीक्षित क्षण आ ही गया जब पक्षी की आवाज़ बंद हो गई। पिछले दो दिनों में, मुझे पक्षी की आवाज़ नियमित अंतराल पर सुनने की इतनी आदत हो गई थी कि पहले तो मुझे लगा कि वह थोड़ी देर में फिर से आवाज़ देगा। लेकिन पक्षी की कोई आवाज़ नहीं आई। मैंने चारों ओर ध्यान से देखा, कान खड़े किए, सांस रोककर उसकी आवाज़ सुनने का इंतज़ार किया, लेकिन पक्षी ने आवाज़ नहीं दी।
मैंने सोचा, इस अनजान भूमि में यह मुझे क्यों छोड़कर चला गया? मेरे आस-पास सब कुछ अपरिचित था। मैंने धैर्यपूर्वक कुछ देर प्रतीक्षा की, लेकिन उस रहस्यमयी पक्षी ने दोबारा आवाज नहीं की।
क्या इसका मतलब यह है कि यह जगह चाहती है कि मैं यहीं रहूँ? हालाँकि यह जगह आरामदायक जीवन का वादा करती है, लेकिन मेरी इच्छा तो बस अपने जन्मस्थान लौटने की है। मैंने थोड़े दुखी मन से विचार किया और चारों ओर देखा। चारों ओर घना अंधेरा था, और पेड़-पौधे और झाड़ियाँ एकदम शांत और गंभीर लग रही थीं।
तभी मैंने इधर-उधर देखा और कुछ दूरी पर कुछ चमकता हुआ दिखाई दिया। लंबे पेड़ों से घिरा एक छोटा सा संकरा रास्ता उस चमकती हुई वस्तु की ओर जा रहा था। सबसे दिलचस्प बात यह थी कि वह चमकती हुई वस्तु धीरे-धीरे हिलती हुई प्रतीत हो रही थी। उत्सुकतावश, मैं पत्तों से भरे उस संकरे रास्ते पर चल पड़ा जो उस अजीब वस्तु की ओर जा रहा था। रात के सन्नाटे में सूखी पत्तियों के मेरे खुरों के नीचे चटकने की आवाज़ गूंज रही थी।
पेड़ों और घनी झाड़ियों के आवरण से बाहर निकलते ही जब मैं खुले मैदान में पहुँचा, तो सामने के अद्भुत दृश्य को देखकर मैं पूरी तरह से अभिभूत हो गया। मैं अवाक और अचंभित होकर वहीं खड़ा रह गया, मानो मेरे खुर ज़मीन से चिपक गए हों। मैं अपनी पूरी ताकत से खुशी का इज़हार करना चाहता था, लेकिन मेरे सामने की सुंदरता की भव्यता और सुंदरता ने मुझे अवाक और अचंभित कर दिया।
जिसे मैंने चमकती और लहराती हुई वस्तु समझा था, वह वास्तव में दो कंकड़युक्त नदी किनारों के बीच से होकर बहने वाली एक संकरी पहाड़ी धारा पर चंद्रमा का प्रतिबिंब मात्र थी। धारा के रेतीले और कंकड़युक्त किनारे पर पड़ा प्रत्येक छोटा पत्थर नरम चांदनी में नहाया हुआ था और अपनी-अपनी तरह से चमक रहा था।

बहती हुई धारा अपने दोनों किनारों से खामोशी से बातें कर रही थी। उसकी सुंदरता अतुलनीय थी, खासकर चांदनी रात में, लेकिन धारा का दूसरा किनारा मुझे अचंभित और अवाक कर देता था। मैं धारा के उस किनारे को कैसे नहीं पहचान पाया? वह किनारा उस जंगल की ओर ढलान पर था जहाँ मेरा जन्म हुआ था, जहाँ मैंने अपनी माँ को खोया था और मेरी कितनी ही खट्टी-मीठी यादें उससे जुड़ी हुई थीं।

मैंने चुपचाप धड़ाम से किनारे की सूखी रेत पर पैर रख दिया, और रात की शांति को भंग न करने के लिए एक पत्थर के टुकड़े का सहारा ले लिया।

मैंने जीवन में पहले कभी इतना सौभाग्यशाली महसूस नहीं किया था। विश्वास चमत्कार कर सकता है, वास्तव में, चमत्कार पूर्ण विश्वास का दूसरा नाम है— चिड़ियाघर से जंगल तक की मेरी यात्रा इसका जीता-जागता उदाहरण है, मैंने स्वयं से कहा।

मैंने इस दुर्लभ क्षण के आनंद को और अधिक गहराई से महसूस करने के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन जैसे ही मैंने अपनी आँखें बंद कीं, मुझे बहुत पास से किसी पक्षी के पंख फड़फड़ाने की आवाज़ सुनाई दी।

मैं पूरी तरह से स्तब्ध रह गया, मैंने अपनी आँखें खोलीं और एक और अद्भुत दृश्य देखा। मेरे सिर के ठीक ऊपर, आकाश में उड़ता हुआ वह पक्षी था जिसे मैं पिछले दो दिनों से देखने के लिए बेहद उत्सुक था।

मैं अवाक होकर आकाश की ओर देखता रहा और पक्षी को ऊपर उड़ते हुए देखा। इस पक्षी में कुछ बहुत ही असामान्य था जो मैंने पिछली बार इसे देखते समय ध्यान नहीं दिया था; शायद इसलिए कि तब दिन का समय था। इसकी पूरी आकृति, पूंछ से लेकर चोंच तक, इंद्रधनुषी रंग से जगमगा रही थी और उससे हल्की रोशनी फैल रही थी।

इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह थी कि अब तक मैंने जितने भी पक्षी देखे थे, उनसे अलग यह पक्षी आकाश में उड़ने के लिए अपने पंख बिल्कुल नहीं फड़फड़ा रहा था। बल्कि ऐसा लग रहा था मानो इसने अपने दोनों पंख फैलाकर अपने पीछे एक प्रकाशमान लकीर छोड़ दी हो। धीरे-धीरे आकाश में उड़ते हुए यह एक छोटी सी चमकती हुई गेंद की तरह लग रहा था, फिर आकाश में विलीन हो गया।

एक सुखदायक सम्मोहन के प्रभाव में, मैं सूखी रेत पर बैठा रहा। मैं समझ गया था कि चाहे मैं धरती पर कितने भी दिन बिताऊं या कितने भी अनुभव प्राप्त कर लूं,

जीवन का रहस्य मेरे लिए हमेशा अथाह रहेगा और हमारे जीवन में रहस्य और अनिश्चितता का यही तत्व इसे जीने लायक बनाता है।
जीवन के प्रति मेरी कृतज्ञता असीम थी। अंततः, मुझे दिव्य पक्षी, मेरे रक्षक देवदूत की एक झलक मिल गई थी। मेरी आँखें नींद से भारी हो रही थीं, और जल्द ही मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और गहरी नींद में डूब गई।

अध्याय-*15*

सुबह हो गई है, हिरण, उठो*!*

प्रेम और विश्वास हर भारी चीज को हल्का कर देते हैं।
~थॉमस ए केम्पिस

अगली सुबह मैं अपने सबसे प्यारे जंगल में था। मैं इधर-उधर भटकता रहा और पेड़ों से घिरे घास के मैदान के एक टुकड़े पर पहुँचकर रुक गया। यह याद करके मैंने गहरी

साँस ली कि यहीं मेरा जन्म हुआ था। मैं वहाँ चुपचाप बैठा रहा और गहरी साँसें लेता रहा। यह वही हवा थी जिसे मेरी माँ ने कभी साँस के रूप में लिया था। हवा में पत्तों और पेड़ों की खुशबू थी और सबसे बढ़कर आज़ादी की खुशी थी।

पहले मुझे कभी यह एहसास नहीं हुआ था कि हमारे जंगल की हवा इतनी सुगंधित है। अगर मैंने चिड़ियाघर में एक साल से ज़्यादा समय न बिताया होता, तो मुझे जंगल की हवा की अनमोल और शुद्धता का एहसास न होता, ऐसा मेरा मानना था। धीरे-धीरे मुझ पर एक सुखद आलस्य छाने लगा।

लेकिन तभी मेरे मन में एक विचार आया। हमारे झुंड के सभी हिरण हमारे चिड़ियाघर में कैद नहीं थे। हमारे झुंड के कई और हिरण, खासकर बूढ़े हिरण, चिड़ियाघर में नहीं थे। मैंने सोचा कि अगर मैं ईमानदारी से खोजूं तो वे मुझे यहीं मिल जाएंगे, और मुझे याद आया कि ज्यादातर बूढ़े हिरण प्रार्थना सभा में शामिल होने से कतराते थे।

मेरे होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई, क्योंकि मुझे यह विडंबना ही लगी कि चिड़ियाघर ने भले ही मुझे सुरक्षित और निश्चिंत जीवन दिया था, फिर भी मैंने स्वेच्छा से जंगल में लौटने का फैसला किया था। अब मैं उठा, उस सुखद सुस्ती को झटकते हुए, और बाकी हिरणों की तलाश में जंगल के कोने-कोने में घूमने का निश्चय कर लिया।

एक नन्हे हिरण के रूप में, मैं इस जंगल के हर कोने में और हर उस जगह पर बेतरतीब ढंग से घूमता था, जहाँ से मेरी कोई न कोई याद जुड़ी हुई थी। हर मोड़ पर मुड़ने के बाद, जो मुझे झाड़ियों के झुंड, पेड़ों के समूह, पानी के तालाब या बंजर ज़मीन के टुकड़े की ओर ले जाता था, मैं वहाँ रुक जाता और इन जगहों से जुड़ी अपनी ज़िंदगी की पिछली घटनाओं को याद करता।

मैं उस जगह को आसानी से पहचान सकता था जहाँ मेरी माँ की हत्या हुई थी और उस जगह को भी जहाँ मैंने पहली बार हिरण का वध होते देखा था। हालाँकि उन जगहों पर जाना वाकई दुखद था, फिर भी उस दुख में एक तरह की संतुष्टि भी थी।

यह एक ऐसी समझ थी कि जो बीत गया सो बीत गया, कि हमारे जानने वाले सभी लोग बिना किसी सूचना या चेतावनी के हमेशा के लिए हमें छोड़कर जा सकते हैं, तो किसी के प्रति कोई द्वेष रखने का क्या फायदा?

दिनभर मैं अपने साथियों की तलाश में अथक परिश्रम करता रहा। मैं बहुत सतर्क था क्योंकि हमारे शिकारियों को मेरे जितना करीब से किसी ने नहीं देखा था। धीरे-धीरे

दिन बीतता गया, पर मेरी खोज व्यर्थ गई। ऐसा लग रहा था मानो किसी जादूगर की जादुई छड़ी के स्पर्श से हमारे झुंड के सारे हिरण गायब हो गए हों।

क्या ऐसा हो सकता है कि जब मैं यहाँ उनकी तलाश कर रहा हूँ, तब वे जंगल के दूसरे हिस्से में हों और जब मैं अगली संभावित जगह पर पहुँचूँ, तब तक वे किसी और जगह के लिए निकल जाएँ? मैंने सोचा और हर कुछ मिनट बाद उन्हें ज़ोर से पुकारने का फैसला किया।

इससे शायद उन्हें यह जानकर अच्छा लगेगा कि उनके झुंड का एक खोया हुआ हिरण वापस आ गया है। अपनी अनोखी कहानी उन सभी को सुनाने की कल्पना करना मेरे लिए रोमांचकारी था।

मुझे पूरा यकीन था कि लंबे समय तक अपने साथी हिरणों को पुकारने से न केवल एक हिरण बल्कि हमारे शिकारी भी मेरी उपस्थिति से अवगत हो जाएंगे। इसलिए, एक तरह से यह मेरी जान को खतरे में डालने जैसा था। मैं एक पल के लिए दुविधा में पड़ गया और फिर मैंने अपने डर पर काबू पा लिया।

जल्द ही मैं अपने एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने पर जाते हुए दूसरे हिरणों को ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा। मैं पूरी तरह सतर्क था, और उन्हें पुकारने से पहले हर बार चारों ओर बहुत ध्यान से देखता था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई तत्काल खतरा तो नहीं है। कई ऐसी जगहें थीं जहाँ हिरणों का झुंड चरता, बैठता, जुगाली करता और कभी-कभी आपस में बातें भी करता था।

मैंने अपनी व्यापक खोज जारी रखी, लेकिन हर मुलाकात के स्थान पर पहुँचने के बाद मुझे निराशा ही हाथ लगी। एक भी हिरण का कोई निशान नहीं था। जैसे-जैसे मेरा प्रयास लगातार विफल होता गया, मैंने अपने साथियों को बुलाने के लिए अपनी आवाज़ को और भी तेज़ कर दिया।

दोपहर ढलने वाली थी और कुछ देर बाद शाम होने वाली थी। मैंने बहुत दिमाग लगाया, यह याद करने की कोशिश की कि क्या मैंने उन जगहों में से किसी को छोड़ दिया है जहाँ हमारे झुंड के हिरण इकट्ठा हो सकते हैं। लेकिन, दुर्भाग्य से, मुझे ऐसी कोई जगह याद नहीं आ रही थी।

अब मैं जंगल के सबसे सुनसान हिस्से में था। मेरे पैरों के नीचे की खुरदरी सतह मुझे चुभ रही थी। यहाँ झाड़ियाँ काँटेदार थीं और पेड़ पतले और लंबे थे। इससे पहले मैंने कभी भी जंगल के इस ऊबड़-खाबड़ इलाके में कदम नहीं रखा था।

मैंने सोचा कि यहाँ हिरण के आने का कोई कारण नहीं है, और मैंने जोर से चिल्लाकर कहा। लेकिन अगले ही पल, एक ऐसी असाधारण घटना घटी कि मैं कुछ क्षणों के लिए सदमे में आ गया।

मेरी तेज़ आवाज़ बंद होते ही मुझे एक और हिरण की आवाज़ सुनाई दी, बिल्कुल मेरी ही जैसी, लय, ताल और उच्चारण में, मानो कोई दूसरा हिरण भी अपने प्रिय को खोज रहा हो। फर्क सिर्फ इतना था कि आवाज़ दूर से आ रही थी। मैंने अपने साथियों को कोई और संकेत दिए बिना, लंबे और पतले पेड़ों के बीच से होते हुए आवाज़ की दिशा में चलना शुरू कर दिया।

मैं सचमुच उस हिरण को देखना चाहता था जिसकी आवाज़ बिल्कुल मेरी जैसी थी। ऊँचे पेड़ों की कतार पार करते हुए मैं एक खुले मैदान में पहुँचा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि हमारा पहाड़ी जंगल यहीं समाप्त हो जाता है और एक गहरी खाई की ओर ढलान पर उतरता है, लेकिन इसकी गहराई का अंदाज़ा लगाना लंबे समय तक मुश्किल था और संकरी घाटी के तल को विशाल पेड़ों ने ढक रखा था। खाई के दोनों ओर खड़ी ढलान पर घनी झाड़ियाँ और छोटे-छोटे पौधे थे। घाटी के दूसरी ओर एक और पहाड़ी जंगल था। हिरण की आवाज़ शायद वहीं से आ रही थी।

मैं अचंभित होकर कुछ देर तक अपने सामने फैले जंगल को निहारता रहा। उन विशाल वृक्षों के पीछे कम से कम एक हिरण तो जरूर होगा, यह सोचकर मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। मैं धैर्यपूर्वक कुछ देर तक इंतजार करता रहा, इस उम्मीद में कि हिरण फिर आवाज निकालेगा। लेकिन अचानक हिरण भी मेरे सामने फैले जंगल की तरह शांत हो गया।

तो मैंने दोबारा पुकारा; पिछली बार से भी तेज़ आवाज़ में और दूसरे जंगल में मौजूद हिरण को पारंपरिक अभिवादन किया। तुरंत ही उसने भी उसी स्वर में मेरे अभिवादन का जवाब दिया। मैं आश्चर्यचकित रह गया।

जहां तक मुझे पता था, हमारे झुंड के हिरणों के अलावा कोई भी मेरी भाषा नहीं समझ सकता था। क्या इसका मतलब यह है कि हमारे झुंड का कोई हिरण उस दूसरे जंगल में कहीं है? मैंने सोचा।

लेकिन मुझे लगा कि यह बिल्कुल असंभव है, क्योंकि हम हिरण अपने झुंड के मुखिया द्वारा निर्धारित सीमा क्षेत्र से कभी बाहर नहीं जाते। बहुत ही दुर्लभ अवसरों पर, वे सीमांकित क्षेत्र से परे जंगल में कहीं भी चले जाते हैं।

किसी दूसरे जंगल में जाना, और वह भी खाई की खतरनाक रूप से खड़ी ढलान को पार करना, किसी भी हिरण की कल्पना से परे था। इतना ही नहीं, मुझे अपने झुंड में से कोई भी ऐसा हिरण याद नहीं आ रहा था जिसकी आवाज़ बिल्कुल मेरी जैसी हो। नहीं, मैंने मन ही मन सोचा, यह हमारे झुंड का हिरण नहीं हो सकता। साथ ही, मैं यह भी जानता था कि जब तक मैं इस रहस्यमय घटना की गहराई में जाकर इसके पीछे की सच्चाई का पता नहीं लगा लेता, तब तक मेरे जिज्ञासु मन को शांति नहीं मिलेगी।
अपने सामने के रहस्यमय जंगल को एक पल के लिए निहारते हुए मैंने फिर से, जोर से, अपने झुंड की बोली में कहा, 'आप कैसे हैं? आप वहां क्या कर रहे हैं?' और यह सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया कि वही शब्द उसी लहजे में मुझे वापस सुनाई दिए। कहने की जरूरत नहीं, मेरी जिज्ञासा मुझ पर हावी हो गई और मैंने इस प्रयोग को काफी देर तक जारी रखा। चाहे मैं कुछ भी बोलता, चाहे इतनी जोर से कि खाई के दूसरी तरफ तक सुनाई दे, मुझे वही शब्द उसी स्वर में दोहराए जाते सुनाई देते थे, मानो दूसरे जंगल में हिरण सिर्फ सुनी हुई बातों को ही दोहराना जानते हों।
अगर मैं कुछ देर चुप रहता, तो वह एक शब्द भी नहीं बोलता, लेकिन जैसे ही मैं कुछ कहता, वह बिना समय बर्बाद किए, आश्चर्यजनक रूप से नकल करने की क्षमता के साथ उसे दोहरा देता।
जीवन में इससे पहले मुझे इतना आश्चर्य कभी नहीं हुआ था। मैं खाई के दूसरी ओर घने जंगल को निहार रहा था, धीरे-धीरे ढलती शाम ने धुंधले भूरे आसमान के सामने जंगल की एक परछाई बना दी। थोड़ी देर बाद अंधेरा छा गया और मेरे लिए, यह एक अभेद्य रहस्य की तरह था जिसने दूसरे जंगल को घेर लिया था।
मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि उस जंगल में बैठा हिरण मेरे जोर से कुछ बोलने का इंतजार कर रहा था और वही बात दोहराएगा। मैंने फैसला किया कि जब तक हिरण खुद कुछ नहीं बोलता, मैं चुप रहूंगा।
समय बीतता गया, और हम दोनों के लिए यह धैर्य की परीक्षा थी। मुझे नहीं पता था कि मुझे कितनी देर इंतजार करना पड़ेगा, लेकिन अचानक रात के सन्नाटे को एक पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट ने तोड़ दिया। मैं हिरण की आवाज़ सुनने में इतना मग्न था कि मैं लगभग उछल पड़ा।
मैंने चारों ओर नजर डाली। खुले मैदान के पास एक ऊंचे पेड़ की सबसे निचली शाखाओं में से एक पर एक मध्यम आकार का पक्षी बैठा था, जिसका रंग मैं रात के

अंधेरे में नहीं देख पा रहा था।
मैंने एक पल के लिए उसे देखा और महसूस किया कि उसकी आँखों में मनोरंजन की चमक थी, मानो वह अन्य हिरणों के साथ बातचीत शुरू करने के मेरे प्रयास और विफलता को देख रहा हो।
एक पक्षी! चिड़ियाघर से चमत्कारिक रूप से बच निकलने और जंगल तक की लंबी यात्रा के बाद से, पक्षियों ने मेरे दिल में एक विशेष स्थान बना लिया था। वास्तव में, मैं उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखने लगा था।
मेरी समझ के अनुसार, वे जीवन और उसके रहस्य के बारे में अन्य सभी जीवित प्राणियों की तुलना में कहीं अधिक गहराई से जानते थे जिन्हें मैं जानता था।
इस निष्कर्ष पर पहुँचने का मेरा कारण बहुत सरल था। अन्य जानवरों के विपरीत, यह उड़ सकता था, ऊपर से जंगल और आसपास के अन्य स्थानों को देख सकता था, और इसलिए यहाँ घटित होने वाली हर चीज़ को कहीं अधिक सटीक रूप से समझ सकता था।
हालांकि किसी बेहतरीन धावक, चाहे वह हिरण हो या बाघ, को खाई के दूसरी ओर स्थित पहाड़ी जंगल तक पहुंचने में काफी समय लगेगा, लेकिन एक पक्षी वहां पलक झपकते ही पहुंच सकता है।
अगर मैं पक्षी की तरह उड़ पाता, तो शायद मैं इस हिरण का रहस्य तुरंत सुलझा लेता। आकाश में तैरना कितना सुंदर होता... अचानक मेरे विचारों का सिलसिला पास से आती एक चिड़िया की तीखी आवाज से टूट गया।
इसके बाद एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, और फिर मुझे एक पक्षी की एक और तीखी आवाज सुनाई दी, बिल्कुल पिछली आवाज जैसी, लेकिन घाटी के दूसरी ओर के जंगल से।
मैं काफी देर तक अवाक रह गया। क्या दूसरे जंगल में भी कोई ऐसा पक्षी था जो पास के पेड़ पर बैठे पक्षी की तरह ही आवाज निकाल सकता था? मैंने सोचा और मुझे लगा कि मेरे पास बैठे उस पक्षी के अलावा कोई और इस रहस्य को सुलझाने में मेरी मदद नहीं कर सकता।
मैंने पक्षी को ध्यान से देखा। उसकी आँखें चमक रही थीं। बिना कोई जवाब दिए, अचानक उसने अपने पंख फड़फड़ाए और मेरे सिर के चारों ओर दो चक्कर लगाकर उड़ गया। मैंने अपनी पूरी कोशिश की, आँखें गड़ाकर उसका पीछा किया, लेकिन

जल्द ही वह अँधेरे में गायब हो गया।

जाने से पहले वह कुछ देर तक मेरे सिर पर क्यों मंडराता रहा? क्या वह यह जानने की कोशिश कर रहा था कि क्या मुझे दूसरे जंगल के रहस्य को जानने का अधिकार है? मैंने सोचा और अगली शाम उसी जगह पर लौटने का फैसला किया।

जंगल में यह मेरी पहली रात थी, और मैं उन जगहों में से किसी एक पर सोना चाहता था जिनसे मेरी यादें गहराई से जुड़ी हुई थीं। मैंने अपने कदमों के निशान पर चलना शुरू किया, और काफी दूर चलने के बाद, मैं उस जगह पर पहुँचा जहाँ मैं बचपन में सोया करता था।

लंबी पैदल यात्रा से मेरे होंठ और गला सूख गए थे, और मैं पानी के स्रोत की तलाश करने लगा। मुझे पानी का स्रोत आसानी से मिल गया क्योंकि मुझे जंगल के इस हिस्से के लगभग हर कदम की अच्छी जानकारी थी।

मैं एक पानी के कुंड के पास पहुँचा और उसकी दयनीय हालत देखकर निराश हो गया। इसने मुझे चिड़ियाघर में हमारे बाड़े के पानी के कुंड की याद दिला दी।

चिड़ियाघर के पानी के कुंड के विपरीत, यहाँ कोई कृत्रिम पानी का नल नहीं था, लेकिन दोनों कुंडों पर जमी काई की परत एक जैसी थी। कुंड के एक कोने से काई की परत हटाकर मैंने पानी पिया।

लेकिन जैसे ही पानी की पहली धारा मेरे गले से नीचे उतरी, एक अजीब सी अनुभूति ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। इसका स्वाद बिल्कुल चिड़ियाघर के तालाब के पानी जैसा था। हालांकि इसने मेरी प्यास बुझा दी, पर इसमें कुछ कमी सी थी। इसने मुझे वह स्फूर्ति नहीं दी जो मुझे आज सुबह जंगल के किनारे बहने वाली छोटी नदी का पानी पीने के बाद महसूस हुई थी।

जल्द ही मुझे एक बात समझ में आ गई। शायद ठहरा हुआ पानी समय के साथ अपनी अधिकांश आंतरिक जीवन ऊर्जा खो देता है, जबकि बहता पानी उसे सोख लेता है।

कल सुबह सबसे पहले मैं नदी पर जाऊँगा और जितना चाहूँ उतना पानी पीऊँगा। अब से मुझे केवल बहता हुआ पानी ही पीना है, मैंने अपने पसंदीदा विश्राम स्थलों में से एक में सोते हुए यह निर्णय लिया।

नींद आने से पहले ही मेरे मन में एक सुंदर विचार आया। हमारा मन भी पानी की तरह है। निष्क्रिय और स्थिर होने पर यह नीरस और निर्जीव हो जाता है, लेकिन सक्रिय, गतिशील और प्रवाहित होने पर यह जीवन से भर जाता है और हमारे जीवन में आशा और उत्साह भर देता है।

कंटीली झाड़ी के पास खड़े होकर मैंने नीचे ढलान पर गिरती हुई एक छोटी नदी को देखा। सुबह का समय था, और नदी देखने में नदी जैसी कम और चांदी की तरह लहराते हुए सर्प जैसी अधिक लग रही थी, जिसका आरंभ और अंत केवल नदी को ही ज्ञात था।

मेरे पीछे और नदी के दूसरी ओर के लंबे पेड़ शांत और ध्यानमग्न थे, मानो वे भी नदी के भव्य आकर्षण से मोहित हो गए हों। मैंने आकाश के पूर्वी भाग की ओर देखा। एक सुनहरा गोला धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था।

एक बार मेरी माँ ने मुझे बताया था कि सूरज को भी रात भर आराम करना पड़ता है ताकि वह अगली सुबह हम सबको फिर से रोशनी दे सके। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि यह जीवनदायिनी जलधारा एक पल के लिए भी विश्राम नहीं करती। यह निरंतर, बिना रुके और बिना थके बहती रहती है, फिर भी कभी थकी हुई नहीं लगती; बल्कि बरसात के दिनों में, मैंने अपनी माँ से सुना था, यह और भी शक्तिशाली दिखाई देती है। इसे यह कभी न खत्म होने वाली ऊर्जा कहाँ से मिलती है? मैंने सोचा, अचानक नदी के प्रति श्रद्धा से भर गया।

जैसे-जैसे मैं नदी को निहारता गया, मुझे यह एहसास होता गया कि मैं यहाँ सिर्फ पानी पीने ही नहीं, बल्कि कुछ देर नदी में मस्ती करने भी आया हूँ। मुझे बूढ़े हिरण के वे निर्देश स्पष्ट रूप से याद थे कि घुटनों से ज़्यादा गहरे पानी में न जाऊँ।

लेकिन फिलहाल, सारी सावधानी को दरकिनार करते हुए, मैं धीरे-धीरे और पूरी सावधानी के साथ नदी में उतर गया ताकि मैं अपने साथ होने वाली हर छोटी से छोटी घटना को महसूस कर सकूं।

मैं काफी देर तक घुटनों तक पानी में खड़ा रहा। जैसे-जैसे मिनट बीतते गए, मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई कि पानी के नीचे कोई चीज मेरे पैरों को शरारती ढंग से काट रही है। इससे मुझे एक सुखद झुनझुनी महसूस हो रही थी।

जिज्ञासावश मैंने लहरदार पानी की ओर देखा और एक अद्भुत दृश्य देखकर दंग रह गया। निर्मल पानी के नीचे, रंग-बिरंगी छोटी-छोटी मछलियाँ झुंड में खेल रही थीं और इधर-उधर तैर रही थीं। उनमें से कुछ मेरी टांगों पर चढ़ गईं और शरारती अंदाज़ में उन्हें काटने लगीं।

अब मैंने देखा कि मछलियों का एक बड़ा झुंड बड़े-बड़े पत्थरों से बनी एक छोटी सी गुफा में घुस गया। उनमें से कुछ नन्ही मछलियाँ उस छोटी सी गुफा के बाहर मंडरा रही थीं, मानो किसी चीज़ का इंतज़ार कर रही हों।

लेकिन उनका इंतजार व्यर्थ नहीं गया, और जल्द ही गुफा से ढेर सारी मछलियाँ तैरती हुई बाहर आ गईं। अधिकांश बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों के पास रुक गईं और उन्हें अपने मुँह में मौजूद कुछ खाने को खिलाने लगीं।

यह मुंह से मुंह मिलाकर भोजन कराने की प्रक्रिया थी, और भोजन कराने की इस पूरी अवधि के दौरान मछलियों का प्रत्येक जोड़ा एक ही स्थान पर रहा।

उन्हें देखकर मुझे मादा पक्षियों को अपने बच्चों को दूध पिलाते हुए, एक हिरणी को अपने बच्चे को दूध पिलाते हुए और उन सभी जानवरों को याद आ गया जिन्हें मैं जानता था, जो अपने नवजात और छोटे बच्चों को दूध पिलाते थे।

इन सभी अवसरों पर मैंने एक माँ और उसके बच्चे के बीच प्रेम का सबसे शुद्ध रूप देखा था। लेकिन मुझे कभी यह ख्याल नहीं आया था कि पानी के अंदर भी प्रेम का ऐसा गहरा बंधन मौजूद हो सकता है।

मैंने एक बार फिर विस्मय से नदी के पूरे विस्तार को देखा। कौन जाने यहाँ कितने और अनमोल खजाने छिपे हैं। नदी के किनारे खड़े रहकर पानी के नीचे छिपी सुंदरता से अनभिज्ञ रहना जीवन की व्यर्थता होगी, मैंने सोचा और नदी के प्रवाह के साथ-साथ चलने की तीव्र इच्छा मेरे मन में जागृत हुई।

परिणामों की परवाह किए बिना, मैं नदी के किनारे-किनारे चलने लगा। उसका तल समतल नहीं था, बल्कि कंकड़-पत्थर, छोटे-छोटे पत्थरों और बड़े-बड़े पत्थरों से भरा हुआ था। उन पत्थरों के टुकड़ों की एकमात्र अच्छी बात यह थी कि उनमें कोई नुकीला किनारा नहीं था।

कई बार मेरा एक पैर पत्थरों के बीच की संकरी दरारों में फंस गया, लेकिन उन्हें निकालना कभी दर्दनाक नहीं रहा। मैं चलने के आनंद में इतना खो गया था कि मुझे इस बात का जरा भी एहसास नहीं हुआ कि मेरा आधा पेट पानी में डूब चुका है और

जीभ बाहर निकालकर ही मैं नदी के पानी का स्वाद चख सकता हूँ।
मैं यहाँ रुका और आसपास के नज़ारों को निहारने लगा। यहाँ से थोड़ी दूर जाकर नदी अचानक दाईं ओर मुड़ गई। यहाँ धारा थोड़ी तेज़ थी, और कभी-कभी मुझे ऐसा लग रहा था जैसे वह मेरे पैरों से टकरा रही हो, मानो मुझे गिराने की कोशिश कर रही हो। तभी बाईं ओर, मुझसे थोड़ी दूर पर, एक काले रंग के पत्थर ने मेरा ध्यान खींचा। वह नदी से बाहर निकला हुआ था, और उसकी सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि उस पर सैकड़ों चमकीले बिंदु बने हुए थे, जो उसे खूबसूरती से सजा रहे थे।
मैंने उन धब्बों को करीब से देखने के लिए उसकी ओर कुछ कदम बढ़ाए। यहाँ पानी का स्तर थोड़ा अधिक था और लगभग मेरी नाक तक पहुँच रहा था।
मैंने कुछ देर तक उन चमकते बिंदुओं को देखा और महसूस किया कि वे वास्तव में छोटे-छोटे घोंघे थे, जो पत्थर से चिपके हुए थे। सूरज की रोशनी जब उनकी खोलों पर पड़ी तो वे झिलमिला उठे। मैंने उन्हें काफी देर तक देखा लेकिन उनमें कोई हलचल नहीं देखी।
अचानक एक ऐसी असामान्य घटना घटी जिसके लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं था। पत्थर के टुकड़े से टकराकर धारा से पानी का एक बड़ा हिस्सा ऊपर उठा और चारों ओर बिखर गया। जैसे ही पानी की बौछार मेरी आँखों पर पड़ी, मैंने अनजाने में ही अपनी आँखें बंद कर लीं और पीछे हट गया।
जैसे ही मैंने एक कदम पीछे लिया, मुझे एहसास हुआ कि यह एक गलती थी। इससे पहले कि मैं कोई सुधार कर पाता, मैं तेज़ धारा में बह गया। अचानक धारा बहुत उग्र हो गई।
लगभग डूबने की हालत में और सांस फूलने के कारण, मैंने सबसे पहले जो करने की कोशिश की वह थी गहरी सांस लेना, लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि मैंने नाक से पानी पी लिया।
डर मुझ पर हावी हो गया और मैंने नदी का तल खोजने की कोशिश की, अपने पैरों को हर दिशा में घुमाया, लेकिन मेरा प्रयास व्यर्थ साबित हुआ। इसके अलावा, नदी की धारा मुझे हर पल आगे बहा ले जा रही थी।
मुझे पता था कि मेरी मृत्यु बस कुछ ही मिनटों में होने वाली है, फिर भी मैंने अपनी पूरी ताकत से आखिरी कोशिश की।
मेरा प्रयास पूर्ण और संपूर्ण था, क्योंकि आंखें बंद करके मैंने अपनी मां को कहीं पास

में खड़े होकर मुझे हिम्मत देते हुए देखा, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने मुझे तब प्रोत्साहित किया था जब मैंने पहली बार उनकी मदद के बिना अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश की थी।

मैंने अपना सिर पानी से ऊपर उठाने की कोशिश की, जबकि मेरे चारों पैर एक साथ तालमेल बिठाकर पानी को कुशलतापूर्वक काटने का प्रयास कर रहे थे। कुछ क्षणों के कठिन प्रयास के बाद, अचानक मुझे अपने शरीर को ऊपर उठते हुए महसूस हुआ। कुछ ही देर में मैं तैरने लगा और मेरे सभी पैर पानी के भीतर एक साथ काम कर रहे थे।

जैसे-जैसे पल धीरे-धीरे बीतते गए, मुझे एक और आश्चर्यजनक बात समझ में आई। मैं आसानी से धारा के विपरीत तैर सकता था। अब मेरी खुशी असीम थी, और मैंने काफी देर तक धारा में तैरते हुए बिताई।

मैं पानी में डुबकी लगाकर तैर सकता था और थोड़ी दूरी पर जाकर फिर से सतह पर आ सकता था। मैं निडर होकर पानी में घूम सकता था और मुड़ सकता था, क्योंकि मुझे पता था कि मैं तैरने की इस तकनीक को कभी नहीं भूलूंगा। मैं पानी से तभी बाहर आता था जब मुझे लगता था कि मेरी सारी ऊर्जा खत्म हो गई है।

जब मैं नदी के किनारे बैठा, उसके बहने को देखता रहा और उस पत्थर को देखता रहा, जो धारा के उस हिस्से से बाहर निकला हुआ था जहाँ धारा अधिक तीव्र थी, तो मुझे एक गहरी समझ प्राप्त हुई।

अगर मैं उग्र धारा में न बह गया होता, तो मुझे कभी पता ही न चलता कि मैं तैर सकता हूँ। जीवन में सबसे महत्वपूर्ण सबक हमें तभी मिलते हैं जब हम सचमुच किसी मुसीबत में होते हैं या हमारी जान को खतरा होता है।

जब प्रकृति हमारे सामने अनजानी चुनौतियाँ पेश करती है, तभी हम अपनी असली ताकत और क्षमताओं को पहचान पाते हैं। लेकिन जीवन और प्रकृति हमें नई चुनौतियाँ तभी देते हैं जब हम अनजानी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होते हैं।

पहली बार मेरे मन में किसी के साथ अपनी समझ साझा करने की तीव्र इच्छा जागी। यह याद करके मैं निराशा से आह भरी कि अब जंगल में एक भी हिरण नहीं बचा था। लेकिन उस दूसरे जंगल में उस हिरण का क्या होगा, मैंने सोचा। मेरी बस यही उम्मीद है कि मुझे वह पक्षी आज शाम वहां मिल जाए, इससे पहले कि मेरा थका हुआ शरीर अनायास ही गहरी नींद में डूब जाए।

अध्याय-*16*

चट्टानें, पृथ्वी - ये सब जीवित हैं

जीवन के सबसे खूबसूरत चमत्कारों को देखने के लिए कभी-कभी अपनी आंखें और कान बंद रखें और दिल खुला रखें।

आज दोपहर मैं जंगल के उस किनारे पर पहुँच गया, जहाँ पिछली शाम मुझे वह पक्षी मिला था, थोड़ा जल्दी। मैंने उस पेड़ को देखा जहाँ मैंने पिछली शाम उसे बैठे देखा था। हालाँकि वहाँ उसका न होना मुझे थोड़ा निराश कर गया, फिर भी मैंने शाम ढलने तक इंतज़ार करने का फैसला किया। मुझे एक अजीब सी अनुभूति हो रही थी कि वह पक्षी अंधेरा होने के बाद ही दिखाई देगा।

मैंने घाटी के दूसरी ओर स्थित जंगल पर एक चिंतनशील नज़र डाली और धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ कि घना जंगल भी तारों भरे आकाश से कम रहस्यमय नहीं है, जहाँ

चंद्रमा हर रात अपना आकार और स्थान बदलता रहता है। मैंने पहली बार उसे विस्मय से देखा। मुझे पूरा यकीन था कि हिरण, जिसने कल शाम मेरी पुकार पर प्रतिक्रिया दी थी, कहीं पेड़ों के पीछे छिपा हुआ है और मेरे पुकारने का इंतज़ार कर रहा है।

अपनी बात की पुष्टि करने के लिए, मैंने अपनी स्थानीय बोली में एक सामान्य अभिवादन किया। जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, उसने मेरे अभिवादन का जवाब दिया और तुरंत मेरी आवाज़ में मेरे शब्दों की नकल की। मुझे उससे और कुछ कहने का मन नहीं हुआ और मैंने धैर्यपूर्वक पक्षी का इंतज़ार किया।

अब अंधेरा छा गया। मैंने आकाश में चाँद को ढूँढा और समझा कि आज रात चाँद घने बादलों के पीछे छिपा हुआ है और जल्दी दिखाई नहीं देगा। यह अमावस्या जैसी रात थी क्योंकि अँधेरा और भी घना था, और मुझे यह एक तरह से अच्छा लगा। आज शाम मैंने दूसरे जंगल में एक और अद्भुत चीज़ देखी।

घने अंधेरे को चुनौती देते हुए, हजारों नन्हे तारे उसके चारों ओर खुशी-खुशी और बिना किसी विशेष नियम का पालन किए इधर-उधर भाग रहे थे। कल शाम मैंने एक भी नन्हा तारा नहीं देखा था। पूरी तरह से आश्चर्यचकित होकर, मैंने उन्हें काफी देर तक देखा।

वे सभी प्रसन्न और संतुष्ट प्रतीत हो रहे थे। वे जुगनू थे। क्या वे असीम आकाश को यह संदेश दे रहे थे कि अमावस्या की रात में भी वे अपनी पूंछ में मौजूद थोड़ी सी रोशनी से अपने निवास स्थान को मंद रोशनी से रोशन रखेंगे? मैंने सोचा और उसी समय अपने पास कुछ हलचल महसूस की।

अपनी गर्दन दाईं ओर घुमाते ही मुझे एक और सुखद आश्चर्य हुआ। वह पक्षी! वह एक छोटे से पत्थर पर बैठा था, उसके पैर उसके पंखों के पीछे छिपे हुए थे, जो उसके शरीर के दोनों ओर ढीले लटके हुए थे, जिससे उसका रूप रहस्यमय लग रहा था। वह मुझे ध्यान से देख रहा था मानो मेरे अंदर झाँक रहा हो, मेरे विचारों का अध्ययन कर रहा हो।

उसकी आँखों में एक अजीब सा आकर्षण था, और मैं बिना पलक झपकाए उसे देखता रहा। जितनी देर हमारी आँखें एक-दूसरे पर टिकी रहीं, उतना ही गहरा मेरा यह एहसास होता गया कि वह पक्षी मेरे अंतर्मन के विचारों को आसानी से पढ़ सकता है। यह कितना अजीब है। मेरी माँ के अलावा कोई और हिरण मेरी आँखों में देखकर मेरे मन की बात नहीं पढ़ सकता था। यह पक्षी ऐसा कैसे कर सकता है? जैसे ही यह

विचार मेरे मन में आया, पक्षी ने एक कर्कश आवाज निकाली, जो मुझे ज़ोरदार ठहाके जैसी लगी। फिर वह उड़ गया।

जैसे ही चिड़िया उड़ गई, रात का सन्नाटा दोनों जंगलों में छा गया। चिड़िया के मेरे प्रति लापरवाह रवैये से मुझे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई, लेकिन साथ ही मुझे इस बात का भी पूरा यकीन था कि उसकी मदद के बिना मैं दूसरे जंगल के रहस्य को कभी नहीं सुलझा पाऊँगा। मैंने ठान लिया कि जब तक चिड़िया इस रहस्य पर कुछ रोशनी नहीं डालती, मैं हर शाम यहाँ लौटकर आऊँगा।

अगर कोई मेरी सहनशीलता की परीक्षा लेना चाहता, तो मैं आसानी से हार मानने वालों में से नहीं था और अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए पूरी कोशिश करता।

दिन बीतते गए। हर शाम वह चिड़िया मेरे पास सूखी ज़मीन पर बैठती, कुछ देर मेरी आँखों में देखती और फिर बिना किसी आहट या संकेत के उड़ जाती। मुझे नहीं पता था कि वह मेरे मन की बात समझ पाती थी या नहीं, फिर भी हर दिन, दोपहर ढलते ही, मुझे वह रहस्यमयी जगह अपनी ओर बुलाती हुई महसूस होती, मानो अज्ञात के परदे को हटाने का वादा कर रही हो।

एक और बात जिसने मुझे प्रेरित किया, वह यह थी कि हर शाम वह पक्षी मेरे थोड़ा और करीब आकर बैठ जाता था। कौन जाने, शायद उसके पंख छूते ही मुझे उसका संदेश समझ आ जाए, मैं अक्सर खुद से यही कहता था। लेकिन मुझमें कभी इतनी हिम्मत नहीं हुई कि मैं उसकी तरफ बढ़ सकूँ। उसके चारों ओर एक रहस्यमय सन्नाटा छाया रहता था, और जब वह मेरे पास आता था तो मैं हिलने की हिम्मत नहीं कर पाता था।

यह वाकई धैर्य की परीक्षा थी, और एक शाम मुझे लगा जैसे मैं जीत गई हूँ जब वह पक्षी मेरे इतने करीब आकर बैठ गया कि उसके पंखों और मेरे बीच लगभग कोई दूरी नहीं रह गई थी। मैं अपनी छोटी सी पूंछ हिलाने से भी डर रही थी, क्योंकि मुझे नहीं पता था कि कब और कैसे वह पक्षी मुझे कोई ऐसा रहस्य बता देगा जिसे जानने के लिए मैं बहुत बेताब थी।

संयोगवश, वह पूर्णिमा की रात थी, और इससे मेरी उम्मीद भी बढ़ गई। आखिरकार, मेरे जीवन में इससे पहले भी पूर्णिमा की रातों में कई ऐसी घटनाएं घटी थीं जिन्हें

समझना मुश्किल था।
मैं वहीं स्थिर बैठा रहा, पूरी एकाग्रता से। चिड़िया ने अपने पंख फड़फड़ाए; पहले शोर मचाते हुए और फिर लगभग खामोशी से। एक पल के लिए उसके पंख मुझे छू गए; एक पंख का स्पर्श और फिर अचानक जंगल में गहरी खामोशी छा गई।
कुछ पल धीरे-धीरे बीतते गए, और फिर मेरे जीवन के सबसे दुर्लभ पलों में से एक आया। एक खामोश आवाज़ ने पूछा, 'तुम दूसरे जंगल में रहने वाले हिरण के बारे में क्यों जानना चाहते हो?' यह पहली बार था जब मैं अपनी श्रवण शक्ति के बिना किसी चीज़ को इतनी स्पष्टता से सुन रहा था।
कुछ क्षणों के लिए मेरे मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। फिर मैंने खुद को बिना एक शब्द बोले कहते सुना, 'यह कितना अविश्वसनीय है कि उस जंगल में एक हिरण है जो बिल्कुल मेरी तरह बोल सकता है।' वास्तव में, ये शब्द मेरे मन में आए, लेकिन मैंने उन्हें ज़ुबान से नहीं कहा।
लेकिन एक ऐसा पक्षी भी है जो बिल्कुल मेरी तरह आवाज निकाल सकता है, और वह तभी आवाज निकालता है जब मैं ऐसा करता हूं। लेकिन मुझे इस विचित्र मामले के रहस्य को जानने की कोई जिज्ञासा नहीं है।
'शायद आप इस विचित्र घटना के रहस्य को जानते होंगे।'
‘कोई रहस्य नहीं है। वास्तव में, जीवन में आपको या तो हर चीज को रहस्य के रूप में स्वीकार करना होगा या फिर किसी भी चीज को रहस्य के रूप में नहीं। और यदि आप हर चीज को रहस्य के रूप में स्वीकार करते हैं, तो आपको उसका अनुभव करना होगा। इसके लिए आपको एक सच्चा हृदय चाहिए,’ पक्षी कुछ देर रुका और मुझे ध्यान से देखता रहा।
फिर से वही बात शुरू हुई, ‘अच्छा, दूसरे जंगल में हिरण से मिलने के लिए तुम एक काम कर सकते हो। कल सुबह दूसरे जंगल की यात्रा पर जाओ। वहाँ पहुँचने का कोई बना बनाया रास्ता नहीं है। तुम्हें अपना रास्ता खुद ढूँढना होगा। इसलिए सावधान और सतर्क रहना। दूसरे जंगल में पहुँचकर हिरण को मत ढूँढना। सबसे पहले, जहाँ तुम अभी बैठे हो, उस जंगल की ओर देखते हुए ज़ोर से आवाज़ लगाओ। देखो तुम्हारी आवाज़ के बाद क्या होता है। लेकिन सूर्यास्त से पहले यहाँ लौट आना। तुम मुझे यहीं पाओगे।’
मैंने मन ही मन कहा, ‘मैं कल नियत समय पर यहाँ उपस्थित रहूँगा।’

चिड़िया की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। वह कुछ देर वहीं रुकी रही, फिर अपने पंख फड़फड़ाए, जो मेरे कोट से हल्के से छू गए, और फिर चुपचाप उड़ गई। मैंने सामने फैली निर्जन घाटी और जुगनुओं से भरे जंगल को देखा, फिर चुपचाप जंगल के बीचोंबीच लौट आया। मेरा मन विचारों के भंवर में खो गया था।

अगली सुबह मैं फिर उसी जगह पर था जहाँ पिछली शाम मुझे वह पक्षी मिला था। मैंने नीचे गहरी घाटी की ओर जाती हुई तेज़ ढलान पर नज़र डाली, जहाँ प्रकृति ने अलग-अलग आकार और प्रकार के पेड़ों को एक साथ उगा रखा था। ढलान पर पहला कदम रखते हुए मैंने खुद से कहा, यह सफ़र आसान नहीं होने वाला।

ढलान पर छोटे-छोटे कंकड़ बिखरे हुए थे, और गलती से भी अगर मेरा पैर किसी कंकड़ पर पड़ जाता, तो वह लुढ़ककर नीचे गिरने लगता और मेरा संतुलन बिगड़ जाता। मुझे हर कदम सावधानी से उठाना पड़ा। कुछ जगहों पर तो कंटीली झाड़ियों ने मानो आगे बढ़ने का कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा था। लेकिन मैंने कभी हिम्मत नहीं हारी, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं सूर्यास्त से पहले अपना काम पूरा कर लूंगा।

हर बार जब भी मुझे घाटी की ओर बढ़ने का रास्ता मिलता, तो वह भी व्यापक खोज के बाद ही मिलता था। पेड़ों या बड़े-बड़े पत्थरों के पीछे छिपे हर संकरे रास्ते को ढूंढने से मेरा यह विश्वास और भी मजबूत हो जाता था कि जीवन और प्रकृति हमेशा मेरी सहायता के लिए मौजूद हैं। शायद इसी समझ ने मुझे थोड़ा आत्मसंतुष्ट बना दिया था, लेकिन प्रकृति, जो हमारे जीवन की सबसे बड़ी गुरु है, ने मुझे तुरंत ही इस आत्मसंतुष्टि से बाहर निकाल दिया।

तब तक मैं लगभग आधा रास्ता पार कर चुका था और मैंने गर्दन घुमाकर पीछे देखा। मैं अपनी प्रगति से बहुत खुश था।

मैंने कुछ मिनट आराम किया और फिर चल पड़ा। कुछ दूर चलने के बाद, आगे का रास्ता बेहद संकरा हो गया, और दोनों ओर की कंटीली झाड़ियाँ मुझे चुभन का एहसास करा रही थीं। अचानक रास्ता एक मध्यम आकार के पत्थर से अवरुद्ध हो गया। उस पर से कूदना मेरे लिए बहुत आसान था, और बिना सोचे समझे मैं कूद गया।

मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि इस चट्टान के पीछे एक गहरी खाई है। जब मैं चट्टान के ऊपर हवा में था, तब मुझे दूसरी तरफ की खतरनाक ढलान दिखाई दी। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। हालांकि मैं पथरीली धरती पर जोर से नहीं गिरा, क्योंकि मेरे प्रशिक्षित खुरों ने मुझे संभलकर उतरने का मौका तो दिया, लेकिन गुरुत्वाकर्षण बल के कारण वे धरती को मजबूती से पकड़ नहीं पाए। मेरा शरीर तुरंत नीचे की ओर खिंचा चला गया और अगर मैं तुरंत घाटी की ओर दौड़ना शुरू न करता, तो मैं लुढ़क कर खाई में बहुत तेज गति से गिर जाता।

हालांकि मैं दौड़ रहा था, लेकिन मेरी गति पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं था, जो हर पल बढ़ती जा रही थी। सहज ही, मैंने अपनी सारी ऊर्जा अपने पैरों में लगा दी और अपनी गति धीमी करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मेरी सांस लगभग फूल रही थी, मेरे खुरों में दर्द हो रहा था और गहरी घाटी को देखते हुए मेरी आँखों में भय का भाव था।

मेरी सांस लगभग फूल रही थी और मुझे लग रहा था कि किसी भी क्षण मेरी जान निकल जाएगी, तभी मानो किसी दैवीय चमत्कार से मेरी नज़र सामने एक पेड़ पर पड़ी। उसका तना बहुत विशाल था, और पहाड़ी जंगल की खड़ी ढलान पर ऐसा पेड़ शायद ही कभी देखने को मिलता है। मुझे तुरंत समझ आ गया कि मैं अपनी जान कैसे बचा सकता हूँ। पेड़ के पास पहुँचते ही मैंने खुद को उसके तने से टकरा दिया। एक झटके के साथ मेरा शरीर थम गया, लेकिन पेड़ से टकराने से मुझे बहुत दर्द हुआ। फिर भी मैं खुश था और राहत की सांस ली।

घाटी तक का मेरा बाकी का सफर भी बिना किसी घटना के गुज़रा। ऊपर से घाटी किसी घने जंगल जैसी लग रही थी, लेकिन वहाँ पहुँचकर मुझे एहसास हुआ कि वह मेरे जंगल से ज़्यादा घनी नहीं थी। घाटी में एक संकरी नदी टेढ़े-मेढ़े रास्ते से बह रही थी और उसे पार करना मेरे लिए बच्चों का खेल था। लेकिन उससे पहले, मैंने जी भरकर उसका पानी पिया। वह ठंडा और सचमुच जीवनदायी था।

अब मैंने घाटी के दूसरी ओर की खड़ी ढलान पर चढ़ना शुरू किया। धीरे-धीरे मेरे पैर भारी होने लगे और मेरी गति धीमी हो गई, फिर भी मैं लगातार ऊपर चढ़ता रहा। रास्ते में बड़े-बड़े पत्थर आते रहे, लेकिन पिछले अनुभव ने मुझे समझदार बना दिया था और मैंने उन पर से कूदने की कोशिश नहीं की।

जब मैं दूसरे जंगल के किनारे पहुँचा, तब तक दोपहर के ठीक 12 बजे भी नहीं थे।

इस जंगल के किनारे बैठे-बैठे मुझे एक और आश्चर्यजनक तथ्य का पता चला, जिसे शायद मैं इस जंगल में न आया होता तो कभी जान ही नहीं पाता। यहाँ से मेरा जंगल भी उतना ही रहस्यमय और विचित्र लग रहा था, जितना कि मेरे जंगल के किनारे से यह जंगल हमेशा दिखता था।

शायद दूर से हम सब एक जैसे ही दिखते हैं। जब हम किसी के करीब जाते हैं, तभी हमें पता चलता है कि हममें से हर कोई दूसरे से कितना अलग है, मैंने सोचा और पक्षी की बात याद कर ली। बिना देर किए, मैंने एक लंबी आवाज़ निकाली। यह हमारी भाषा में अभिवादन का एक आम तरीका था। पल भर में मैं दंग रह गया। मैंने अपने जंगल से उसी स्वर में अपने शब्द दोहराए जाते हुए सुने।

क्या इसका मतलब यह है कि नकलची हिरण हमारे जंगल तक पहुँच गया है? क्या इसका मतलब यह है कि उसे पता था कि मैं आज सुबह इस जंगल में आऊँगा? मैंने खुद से सवाल किया, और पहली बार मुझे यह एहसास हुआ कि दूसरे जंगल से मेरे शब्दों की पुनरावृत्ति का स्रोत कोई हिरण नहीं बल्कि कुछ और रहस्यमय था।

मुझे कोई नहीं पता था, सिवाय उस चिड़िया के जो मुझे जवाब दे सकती थी। मैंने तुरंत किसी को भी ज़ोर से अलविदा कहा और अपने जंगल की ओर वापस चल पड़ा। हालाँकि, मेरे जंगल ने भी मुझे तुरंत ही पूरे श्रद्धा से विदाई दी।

मैं अपने जंगल में सुरक्षित पहुँच गया और तय समय से काफी पहले अपने निर्धारित स्थान पर पहुँच गया। मैंने पहले कभी पक्षी का इतनी बेसब्री से इंतज़ार नहीं किया था। और उसने मुझे निराश नहीं किया। यह मेरे लिए सचमुच एक रहस्य था कि मैं कभी देख नहीं पाया कि पक्षी कब और कैसे मेरी ओर उड़कर आया, और मुझे उसकी उपस्थिति का एहसास तभी हुआ जब उसने अपने पंख फड़फड़ाए। जैसे ही उसने मुझे छुआ, मुझे अपने भीतर एक आवाज़ सुनाई दी।

क्या आप हिरण को ढूंढ सकते हैं?

'नहीं, मुझे नहीं लगता कि कोई हिरण मेरे शब्दों की नकल करता है,' मैंने बिना बोले ही कहा।

'तो फिर कौन बोल रहा है?' पक्षी ने मुझसे सहज भाव से पूछा।

'मुझे नहीं पता।' यही मेरा स्पष्ट जवाब था।

कुछ देर सन्नाटा छा गया। चिड़िया मुझसे थोड़ी दूर चली गई। मैंने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। धीरे-धीरे हमारे बीच का सन्नाटा अधिक सुखद होता गया और मेरा मन

ग्रहणशील होता गया। फिर एक ऐसा दुर्लभ क्षण आया जब मुझे लगा कि चिड़िया अपने ही अंदाज़ में मुझसे बात कर रही है।

'क्या आपने आज के अभियान से कुछ सीखा?'

मुझे अपना दिन याद था, लेकिन इस यात्रा के दौरान जीवन से मिली कोई गहरी सीख नहीं मिली। मैं चुप रहा, इस उम्मीद में कि पक्षी अपनी खामोश बातों से मुझे ज्ञान देगा।

क्या आपने कभी गौर किया है कि अगर आप कहीं से गिरते हैं तो बहुत तेजी से नीचे जाते हैं, लेकिन उसी ऊंचाई तक वापस चढ़ने के लिए आपको कहीं अधिक ऊर्जा और समय लगाना पड़ता है? याद रखिए, जीवन में, जीवन के हर क्षेत्र में, हम सभी के साथ ऐसा ही होता है।

मैं चुप था, मुझे आज सुबह हुई अपनी उस घटना की याद आ रही थी जब मैं बेहद तेज गति से नीचे गिर गया था और साथ ही उसी ऊंचाई पर दोबारा चढ़ने में मुझे हुई कठिनाई और थकावट की भी याद आ रही थी।

मैंने पक्षी से कहा, 'मैं तुम्हें पूरी तरह से समझ नहीं पाया हूं।'

जब भी ईर्ष्या, लोभ और घृणा जैसे गुण आप पर हावी होते हैं, तो वे आपको शीघ्र ही ऐसी अवस्था में खींच लेते हैं जहाँ हमेशा दुख व्याप्त रहता है। जब भी ये आपके अस्तित्व को जकड़ लेते हैं, तो आप आनंद और परमानंद की अवस्था से शीघ्र ही गिर पड़ते हैं। एक बार ईर्ष्या, घृणा, द्वेष और आत्मसंदेह की गिरफ्त में आ जाने पर, स्वयं को मुक्त करना और अपने वास्तविक सुखी और प्रेमपूर्ण स्वरूप में लौटना बहुत कठिन हो जाता है। इसलिए कभी भी उन भावनाओं को अपने ऊपर हावी न होने दें जो आपको दयनीय स्थिति में खींच सकती हैं। इसलिए हमेशा सचेत रहें; कुछ भी करने से पहले हमेशा स्वयं से पूछें कि क्या आप ईर्ष्या, घृणा, स्वार्थ या द्वेष से प्रेरित होकर कार्य कर रहे हैं। यदि उत्तर हाँ है, तो स्वयं को कुछ समय दें और जंगल, प्रकृति और नदी को ध्यान से देखें। आप हमेशा पाएंगे कि वे कभी भी ईर्ष्या, द्वेष या घृणा से प्रेरित होकर कार्य नहीं करते। कोई भी चीज़ उन्हें नीचा दिखाने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती। यहाँ तक कि यदि आप अपने जंगल और उसके किनारे बहने वाली नदी पर चिल्लाते हैं, या उन्हें किसी भी तरह से नुकसान पहुँचाने का प्रयास करते हैं, तो भी वे कभी प्रतिशोध नहीं लेंगे। बल्कि वे उसी तरह से कार्य और व्यवहार करेंगे जो उन्हें उचित लगता है। आप उन्हें कभी भी आपको नुकसान पहुंचाने या अपनी इच्छा के

अनुसार आपको पुरस्कृत करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकते। वे केवल अपने भीतर की आवाज़ सुनते हैं।

मैं चुप रहा और पहली बार मुझे यह एहसास हुआ कि वास्तव में जीवन ने मुझे उन चीजों से कहीं अधिक सबक सिखाए हैं जिन्हें मैं समझता हूं।

'दूसरे जंगल में ऐसा कोई हिरण या पक्षी नहीं है जो तुम्हारी और मेरी नकल करता हो।' ये शब्द मुझे भीतर सुनाई दिए।

तो फिर मेरी या तुम्हारी पुकार की नकल कौन करता है?

'पहाड़ी, उसकी चट्टान, उसका जंगल—आप उन्हें जो कुछ भी बताते हैं, वे सब प्रतिध्वनित हो जाते हैं।'

'यह कैसे संभव है? ये तो सब बेजान हैं।'

एक मुस्कान। और फिर मैंने पक्षी को अपने अनोखे अंदाज़ में कहते सुना, 'प्रकृति में कुछ भी निर्जीव नहीं है। यह केवल हमारे संदेह और भय के कारण है कि हम हर चीज़ में जीवन नहीं देख पाते। आपके भीतर जितना कम संदेह और भय होगा, उतना ही अधिक जीवन और उसका उत्सव आपके चारों ओर होगा।'

'तुमने यह रहस्य मुझसे छिपाने में इतने दिन क्यों लगा दिए?'

'मैंने और समय नहीं लिया। बल्कि मैं हर शाम आपके संदेह और अविश्वास के खोल से बाहर आने का इंतजार कर रहा था। जैसे-जैसे मुझ पर आपका अविश्वास कम होता जा रहा था, मैं हर शाम आपके करीब आता जा रहा था। यही मेरी एकमात्र शर्त है। मैं केवल उन्हीं लोगों से बात करता हूँ जिन्हें मुझ पर कोई संदेह नहीं है।'

एक बार फिर मेरी ओर से चुप्पी छाई रही।

अब से कभी यह मत सोचना कि तुम अकेले हो, क्योंकि इस जंगल में कोई हिरण नहीं है। हर चीज को देखो, चाहे वह पत्थर का टुकड़ा हो, घास का छोटा टुकड़ा हो, फूल हो या पेड़ से गिरता पत्ता हो, प्रेम और सम्मान से देखो। तुम पाओगे कि जीवन हर जगह है, हर चीज में है। और एक दिन तुम उन सभी से संवाद भी कर पाओगे।

मैं अवाक और अचंभित था, मेरे मुंह से बस एक ही शब्द निकला, 'कैसे?'

"हर सुबह ऐसे जियो जैसे तुम्हें नया जीवन मिला हो। आंखें खोलते ही अपनी आंखों के प्रति भी कृतज्ञ महसूस करो। किसी पक्षी का गीत सुनते ही उस पक्षी के साथ-साथ अपने कानों के प्रति भी कृतज्ञ महसूस करो। दिन की शुरुआत में अपने आस-पास की हर चीज को आश्चर्य से देखो। धीरे-धीरे तुम देखोगे कि धरती पर हर चीज जीवन से

स्पंदित है, चाहत पाने की लालसा रखती है, इच्छा की लालसा रखती है और प्रेम के लिए तड़पती है।"

'मैं आपसे पहले क्यों नहीं मिला? मैंने आपको पहले क्यों नहीं देखा?'

'मैं हमेशा वहीं था। लेकिन तुम्हारी आँखों में वो रोशनी नहीं थी जिसकी मुझे देखने के लिए ज़रूरत थी।'

अचानक मुझे चिड़ियाघर के दिन याद आ गए, जब एक दोपहर मैं बिना आंखें सिकोड़े चिलचिलाती धूप को देख सकता था। आज भी मुझमें वही गुण मौजूद है।

फिर मुझे वो दोपहर याद आई जब मैंने बिना हवा चले फूलों को नाचते हुए देखा था। मुझे बताया गया था कि उस शाम से मेरी आँखें चमक रही थीं। क्या यह संभव है कि मेरी आँखें हर दिन और भी ज़्यादा चमक रही थीं? मैंने सोचा।

मैंने इस शुभ क्षण को हाथ से जाने नहीं दिया और अपने मन में एक और रहस्य के बारे में सोचने लगा।

'जब हवा नहीं चल रही थी तब भी वे फूल कैसे हिल रहे थे?' मैंने पहले ही मान लिया था कि पक्षी को उस घटना के बारे में पता था।

"जब उनका अंतर्मन आनंद और प्रेम से परिपूर्ण था, तो उन्हें नृत्य करने के लिए हवा की सहायता की क्या आवश्यकता थी? क्या नृत्य शुरू करने के लिए हवा की आवश्यकता होती है? अपने भीतर को शांत और आनंदमय होने दें। एक दिन आप अपने जंगल की हर चीज में उत्सव देखेंगे; यहाँ तक कि उन चीजों में भी जो गतिहीन और निर्जीव प्रतीत होती हैं।"

मेरे मन में कृतज्ञता की गहरी भावना उमड़ आई। मैं पक्षी से अपने भावों को कैसे व्यक्त करूं? मेरी आँखों में आँसू भर आए थे।

चिड़िया ने कुछ और नहीं कहा और हमेशा की तरह उड़ गई। जल्द ही चांदनी और रात के अंधेरे ने अपने-अपने तरीके से जंगल को घेर लिया।

अध्याय-*17*

मौन की आवाज

मौन ही ईश्वर की भाषा है, बाकी सब उसका अधूरा अनुवाद है।

~जलालुद्दीन रूमी

उस पक्षी से मिलने के बाद से मुझमें एक स्वाभाविक उमंग भर गई थी। मेरे दिन चिंता और व्याकुलता से बीत रहे थे। इन दिनों जब भी मैं किसी पेड़ की छाँव में बैठता या उसके पास से गुजरता, तो उसे विस्मय से देखता। बार-बार उस पक्षी के शब्द मेरे मन में गूंजते रहते थे—धरती पर सब कुछ जीवित है। सब कुछ जीवन से स्पंदित है, सुने जाने की, खोजे जाने की, अन्य जीवित प्राणियों द्वारा पहचाने जाने की गहरी इच्छा से भरा है, ताकि वे जान सकें कि प्रकृति की यह कितनी अद्भुत रचना है।

आजकल मैं काफी देर तक पेड़ की छाँव में बैठा रहता था, इस उम्मीद में कि एक दिन मैं भी पेड़ों से संवाद स्थापित करने में सफल हो जाऊँगा। हालाँकि मैं कभी उन्हें मुझसे बात करते हुए महसूस नहीं कर पाता था, लेकिन जब भी मैं किसी पेड़ को प्रेमपूर्वक और कभी-कभी श्रद्धापूर्वक देखता था, तो मुझे पेड़ों की पत्तियाँ फुसफुसाती हुई सुनाई देती थीं।

उनकी फुसफुसाहट मुझे पेड़ की छांव में जितनी देर चाहूँ बैठने का निमंत्रण दे रही थी।

धीरे-धीरे मुझे यह एहसास होने लगा कि मैं उसकी फुसफुसाहट और सरसराहट से उसके भावों को समझ सकता हूँ। और फिर मेरे जीवन की एक यादगार सुबह आई, जब मैंने पहली बार एक पेड़ द्वारा दिए गए निर्देश को पढ़ा।

सुहावनी सुबह थी। सर्दी आ रही थी, और हवा की ठंडक हर सुबह मुझे आलस का एहसास कराती थी। मैं सूखे पत्तों और भूसे से बने अस्थायी बिस्तर पर लेट जाता और सूरज को धीरे-धीरे उगते देखता। मैं तभी उठता था जब सूरज थोड़ा ऊपर चढ़ जाता और मौसम थोड़ा सुहावना हो जाता।

आज सुबह मैं गहरी नींद से जागते हुए आसपास की झाड़ियों और पेड़ों को ऊंघते हुए देख रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वे सब नींद में डूबे हों, क्योंकि उनकी पत्तियों से धुंध की बूँदें धीरे-धीरे धरती पर गिर रही थीं। मैंने सोचा, इससे बेहतर शांति की अवस्था और क्या हो सकती है?

लेकिन जैसे ही मुझे शांति का अहसास हुआ, मुझे कुछ अजीब सा लगा। अचानक चारों ओर की शांत हवा थोड़ी हलचल भरी हो गई, और मेरे पीछे खड़ा लंबा पेड़, जिसके तने के पास मैंने आराम से बिस्तर बनाया था, उदास दिखने लगा। मैंने खुद से पूछा, इतनी सुहावनी सुबह में पेड़ इतना चिंतित क्यों दिख रहा है?

अब मेरा ध्यान पेड़ की सबसे ऊँची शाखाओं के एक समूह पर गया। वे सभी पेड़ का सबसे अशांत हिस्सा प्रतीत हो रही थीं। वे धीरे-धीरे काँप रही थीं मानो उन्होंने कोई भयानक घटना देखी हो।

अपनी ऊँचाई के कारण, इन शाखाओं को जंगल के अन्य हिस्सों को पेड़ की अन्य शाखाओं से बहुत पहले देखने का अतिरिक्त लाभ प्राप्त था। क्या उन्होंने जंगल के दूसरे हिस्से में कुछ भयानक देखा है? क्या वे इस बात से डरती हैं कि वह यहाँ पहुँचकर पेड़ को नुकसान पहुँचाएगा? लेकिन भला कोई चीज़ या कोई व्यक्ति इस विशाल पेड़ को कैसे चोट पहुँचा सकता है? मैंने सोचा और ऊँचाई पर स्थित शाखाओं को टकटकी लगाकर देखता रहा।

धीरे-धीरे मेरे मन में एक नई अनुभूति उत्पन्न हुई। मुझे लगा कि ऊपर की डालियाँ डर से काँप नहीं रही थीं; बल्कि वे मुझे सुरक्षा की ओर भागने का निर्देश दे रही थीं। क्या मैंने संदेश को सही समझा है या यह महज़ मेरी कल्पना है? मैंने सोचा और अपने अंतर्ज्ञान पर भरोसा करने का निर्णय लिया, क्योंकि इसने हमेशा मुझे जीवन में सही राह दिखाई थी।

बिना सोचे-समझे, मैं पेड़ से दूर चला गया और घनी झाड़ियों से घिरे एक लगभग अभेद्य स्थान में छिप गया। बाहर से किसी भी जानवर के लिए यह पता लगाना असंभव था कि वहाँ एक हिरण छिपा हुआ है। साथ ही, मुझे यह फायदा भी था कि मैं यहाँ छिपकर बाहर की हर गतिविधि पर नज़र रख सकता था।

मैंने अब पेड़ की ओर देखा और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि उसकी सभी शाखाएँ अब हिलना बंद कर चुकी थीं, मानो वह खतरे से बाहर हो। क्या इसका मतलब मेरे लिए कोई संदेश था? मैंने खुद से सवाल किया और एक गहरी साँस ली। वातावरण में आशंका और बेचैनी का भाव व्याप्त था। मैंने छिपकर रहने का फैसला किया।

लेकिन मुझे ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा, क्योंकि थोड़ी देर पहले जिस पेड़ के पास मैं धूप सेंक रहा था, उसके पास ही एक बाघ प्रकट हुआ। उसका शरीर विशालकाय था और मुझे ज़रा भी शक नहीं था कि अगर वह मुझे पकड़ लेता तो टुकड़े-टुकड़े कर देता। शिकार की तलाश में निकला बाघ दूर से ही उसकी गंध पहचान सकता है। उसने एक-दो बार उस घनी झाड़ी पर सरसरी नज़र डाली जिसमें मैं छिपा हुआ था। लेकिन मुझे ज़रा भी चिंता नहीं हुई, क्योंकि मैं जानता था कि उसका विशाल शरीर उसे कंटीली झाड़ियों में घुसने की हिम्मत नहीं करने देगा। थोड़ी देर बाद वह निराश होकर चला गया।

जब मैं पेड़ के तने पर लौटा तो मेरे मन में कृतज्ञता का गहरा भाव भर गया। मुझे फिर से उस पक्षी के शब्द याद आ गए। धरती पर हर चीज़ जीवन से भरपूर है। केवल हमारा डर और संदेह ही हमारी दृष्टि को अंधा कर देते हैं और हमें अधिकांश चीजों को 'निर्जीव' का ठेका देने पर मजबूर कर देते हैं। और फिर मुझे एक और बात समझ में आई। मुझे लगा कि अब से मैं किसी भी शिकारी की उपस्थिति को महसूस कर सकता हूँ, जब भी वह मेरे पास आएगा। मुझे लगा कि जब भी कोई शिकारी आसपास होगा, पेड़ मुझे उसकी उपस्थिति का संकेत देंगे। इस समझ ने मुझे साहस और सुरक्षा का एहसास दिलाया।

मैं बस यह जांचना चाहता था कि क्या मैं हर समय आस-पास किसी बाघ या भेड़िये की उपस्थिति को भांप सकता हूँ। हालांकि, एक सर्दी की रात को मुझे एक अवसर मिल गया। वह अमावस्या की रात थी, और घने कोहरे ने जंगल को इतना ढक रखा था कि दूर के तारों की थोड़ी सी रोशनी भी हमारे जंगल तक नहीं पहुँच पा रही थी।

यह मेरे लिए एक असली परीक्षा थी।

मुझे सर्दियों का मौसम इसलिए बहुत पसंद था क्योंकि इस दौरान मुझे सारा दिन आराम करना अच्छा लगता था। हालाँकि हमारे झुंड के सभी हिरण आलस्य को हमेशा एक अस्वीकार्य गुण मानते थे, लेकिन अब मुझे पता चल गया था कि मेहनत से कमाए गए इस आराम का आनंद असीम होता है।

मुझे सर्दियों की लंबी रातें बहुत पसंद थीं और मैंने एक विशाल पेड़ के नीचे अपना आरामदायक बिस्तर बनाया। एक तरह से उस पेड़ ने ही मेरे बिस्तर को आरामदायक बनाने में मेरी मदद की। सर्दियों की शुरुआत से ही पेड़ से बहुत सारे सूखे पत्ते गिरते थे, और मैं उनमें से अधिकतर को अपने बिस्तर के लिए इकट्ठा कर लेता था।

फिलहाल, यह पत्तों के एक छोटे से टीले में बदल गया था, और अधिकतर रातें मैं इसके अंदर, चारों ओर से पत्तों से पूरी तरह ढका हुआ सोना पसंद करता था। गहरी नींद में केवल मेरी नाक के छिद्र ही बाहर निकले रहते थे और सांस लेने का काम करते थे।

लेकिन उस मनहूस रात को, मेरी नाकें सांस लेने के अलावा और भी कई काम कर सकती थीं। आधी रात को अचानक मेरी नींद टूट गई क्योंकि मेरी नाक में एक अजीब सी सनसनी हुई। यह झुनझुनी जैसी चुभन थी, जैसे कोई कीड़ा मेरी नाक के पास चल रहा हो। नींद के धुंध में मैंने उस एहसास को पहचानने की कोशिश की और गहरी सांस ली।

अचानक एक अजीब सी अनुभूति ने मुझे जकड़ लिया। एक सर्दी की सुबह बाघ की मौजूदगी में मैंने ऐसा ही बेचैनी का अनुभव किया था। लेकिन आज रात शिकारी की गंध के साथ-साथ हवा में एक और गंध भी थी। यह घोर पीड़ा और बेबसी की गंध थी। शिकारी, पीड़ा और बेबसी की मिली-जुली गंध सचमुच हैरान कर देने वाली थी।

हर रहस्यमयी चीज़ मेरी जिज्ञासा जगाती थी, और यह विचित्र घटना भी अपवाद नहीं थी। मैंने इस उलझन भरे घटनाक्रम के पीछे की सच्चाई जानने का फैसला किया। मैंने हिम्मत जुटाई और अपनी सूंघने की शक्ति को मार्गदर्शक बनने दिया। इसने मुझे एक घुमावदार, संकरे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया।

धीरे-धीरे आसपास की हवा में शिकारी की गंध, दर्द और उदासी की महक भर गई।

मुझे पता था कि मैं गंध के स्रोत के बहुत करीब हूँ। मेरे अंदर रोमांच की लहर दौड़ गई। अब मैं एक पल के लिए रुका, यह पहचानने के लिए कि मैं जंगल के किस हिस्से में हूँ। चारों ओर घने कोहरे के कारण जंगल के संकरे रास्तों को पहचानना आसान नहीं था, हालाँकि आप इन रास्तों पर पहले भी कई बार चल चुके होंगे।

मैंने चारों ओर देखा और फिर ऊपर। निस्संदेह मैं इस जगह पर मुश्किल से तीन-चार बार ही आया था, लेकिन यहाँ का मेरा अनुभव इतना अनूठा था कि वह मेरे दिल में बस गया था। मैंने यहाँ एक हिरण की मृत्यु देखी थी। मैंने पेड़ों की उन ऊँची शाखाओं को देखा था, जो इस छोटे से खुले मैदान को घेरे हुए थीं, मानो किसी निराकार और अदृश्य चीज़ को ऊपर जाने दे रही हों, जब मरते हुए हिरण के शरीर से आखिरी साँस निकली।

अब मैंने कोहरे में जो कुछ भी दिखाई दे रहा था, उसे ध्यान से देखते हुए दबे पांव आगे बढ़ना शुरू किया। कुछ और कदम चलने के बाद, अचानक मेरी चाल रुक गई और मेरे कान खड़े हो गए।

एक बाघ मेरे ठीक सामने, कुछ ही कदमों की दूरी पर, मेरी ओर पीठ करके खड़ा था। सबसे पहले जिस चीज़ ने मेरा ध्यान खींचा, वह थी उसकी पूंछ। वह पूरी तरह से पीली थी, और उसका केवल आखिरी छोटा सा हिस्सा काला था, मानो पीली पूंछ पर काली टोपी पहनी हो।

मुझे तुरंत याद आ गया कि मेरी माँ के हत्यारे की भी ऐसी ही अनोखी पूंछ थी। क्या यह वही बाघ हो सकता है जिसने मेरी माँ को मुझसे छीन लिया था? यह ख्याल मेरे मन में आया, मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। वह अपने पिछले पैरों पर बैठा था और उसकी पीठ मेरी तरफ थी।

क्या मुझे पास जाना चाहिए? अगर वो मुझ पर झपट पड़े तो क्या होगा? मैंने सोचा और उसी क्षण हल्की हवा चली, और मुझे हवा में एक नई गंध महसूस हुई। इससे पहले मैंने सिर्फ एक बार इस गंध का अनुभव किया था, लेकिन इसका मुझ पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा था कि मुझे शक था कि मैं इसे कभी भूल पाऊँगी। यह मौत की गंध थी। क्या बाघ अब हमारे जंगल में सिर्फ कुछ मिनटों के लिए मेहमान है? मैंने खुद से पूछा, बाघ की ओर एक और कदम बढ़ाते हुए।

अचानक बाघ म्याऊं करने लगा। उसकी आवाज़ किसी छोटी बिल्ली की आवाज़ जैसी थी। बड़ी मुश्किल से उसने अपना सिर ऊपर उठाने की कोशिश की, आसमान की

ओर देखते हुए। क्या वह भी कुछ देर पहले मरते हुए हिरण की तरह कोई दिव्य संदेश पढ़ने की कोशिश कर रहा था? कुछ पल बाद बाघ ने अपना सिर नीचे कर लिया और अफ़सोस से झटक दिया। क्या यह संभव है कि चारों ओर घने कोहरे के कारण वह किसी खगोलीय पिंड या प्रकाश का संदेश नहीं पढ़ पाया? मेरा मन बाघ की हर हरकत का कारण ढूंढने में लगा हुआ था।

कुछ और पल बीत गए, और धीरे-धीरे मेरे मन में यह विश्वास पैदा हो गया कि अब बाघ मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

उसके पीछे खड़े होकर, मैं महसूस कर सकता था कि उसकी हरकतें उसे असहनीय पीड़ा दे रही थीं। मैं बिना किसी डर के उसकी ओर बढ़ा, और कुछ ही क्षणों में मैं उसके सामने खड़ा था।

लेकिन जैसे ही मेरी नज़र इस विशालकाय जीव की आँखों से मिली, मुझे एक भयानक झटका लगा। उसकी एक आँख बुरी तरह घायल थी, और उसके दोनों अगले पैर मवाद भरे घावों से भरे हुए थे। उन घावों पर मक्खियों का एक झुंड बैठा था, जो उनसे निकलने वाले स्राव को खा रहा था। उसकी घायल आँख से एक पीला तरल पदार्थ बह रहा था। यह आँख आधी बंद थी।

लेकिन उसकी दूसरी आँख मुझे अच्छी तरह से जानी-पहचानी थी, और मैंने उसे तुरंत पहचान लिया। बहुत समय पहले, वह आँख, मेरी घायल आँख के साथ, मुझ पर टिकी हुई थी। मेरा दिल अब और भी ज़ोर से धड़क रहा था। मैं अपनी माँ के हत्यारे के सामने खड़ी थी। अचानक उसकी सुंदर आँख में एक हल्की सी रोशनी चमकी और फिर बुझ गई। क्या उसने मुझे पहचान लिया? मैंने सोचा।

मैं उसके सामने बैठ गया। हैरानी की बात यह थी कि मुझे उसके प्रति कोई घृणा महसूस नहीं हुई। हालाँकि मैं यह कभी नहीं भूल सकता था कि वह मेरी माँ का हत्यारा था, फिर भी यह कमज़ोर और आंशिक रूप से विकलांग प्राणी उस बाघ से बिलकुल अलग दिख रहा था जिसने मेरी माँ को मारा था। बल्कि वह रहस्यमय ढंग से विचारशील और मौन लग रहा था। हमारे बीच की दूरी अब बस कुछ ही कदम थी। ऐसा लग रहा था जैसे एक ही हवा हम दोनों को छू रही हो; एक ही हवा हम दोनों साँस ले रहे थे।

धीरे-धीरे हमारे बीच का मनोवैज्ञानिक अंतर कम होता गया, हालांकि शारीरिक दूरी उतनी ही बनी रही। मैंने ठान लिया था कि मैं इस जगह को तभी छोड़ूंगा जब मैं बाघ

को मरते हुए देख लूंगा। धीरे-धीरे बेबसी, मौत और शिकारी के डर की गंध हवा से गायब हो गई।

‘तुम्हें इस जगह के बारे में कैसे पता चला?’ अचानक पास से एक आवाज़ आई, जिससे मैं लगभग डर के मारे उछल पड़ा। यह सिर्फ़ एक आवाज़ थी, समझ पाना नामुमकिन था कि यह पुरुष की है या स्त्री की। और तो और, ये शब्द मुझे अपने भीतर सुनाई दिए। ये किसी ऐसी भाषा में नहीं बोले गए थे जिसे मैं जानता था। इसने मुझे जंगल के किनारे किसी पक्षी से बात करने के अनुभव की याद दिला दी। यह एक तरह से विचारों के स्तर पर संवाद था जहाँ भाषा का कोई महत्व नहीं था।

मैंने मन ही मन बिना एक शब्द बोले सोचा, 'इस जगह में ऐसी क्या खास बात है जिसके बारे में मुझे पता नहीं है?'

बाघ ने एक गहरी आह भरी और मैंने उसके शरीर में एक हल्की सी कंपकंपी देखी।

क्या इसने मेरे मन के विचार समझ लिए? मैंने सोचा और फिर मुझे वह बात याद आई जो पक्षी ने मुझे एक बार सिखाई थी। हम सबके बीच एकमात्र बाधा भय, संदेह और घृणा है, और जब ये तत्व हमारे मन से दूर हो जाते हैं, तो हम दूसरों की बातें सुन सकते हैं, चाहे हम उनके संवाद का माध्यम जानते हों या नहीं।

क्योंकि यह जंगल में वह विशेष स्थान है जिसके बारे में व्यक्ति को तभी पता चलता है जब मृत्यु निकट होती है। लेकिन मृत्यु अभी आपके पास आने की संभावना नहीं है। इसलिए आपको यहां देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है।

‘आपको कैसे पता चलता है कि आप मौत के बहुत करीब हैं या मौत जल्द ही आपसे मिलने आने वाली है?’

एक हल्की सी मुस्कान। 'तुम ऐसे बोल रहे हो मानो मौत हमसे बार-बार मिलने आती हो। पर वह तो बस एक ही बार आती है। यह एक दुर्लभ एहसास है, लगभग अवर्णनीय, जब तुम मौत को अपने करीब महसूस करते हो। अचानक तुम्हारे आस-पास सब कुछ व्यर्थ लगने लगता है। तुम्हें लगने लगता है कि तुम्हारा शरीर बस एक वस्त्र है जिसे तुमने पहना हुआ है। तुम्हें इसे उतार फेंकने का मन करता है। और सबसे बढ़कर, चाहे तुम कितने भी वाचाल क्यों न हो, अचानक तुम्हें चुप रहने और बिल्कुल अकेले रहने का मन करता है, अचानक तुम्हें आसमान की ओर देखने का मन करता है, कहीं और देखने से ज़्यादा।'

'मरने के लिए यही जगह क्यों चुनी गई है?' मुझे नहीं पता था कि मेरे सामने मौजूद

उस विशालकाय प्राणी से मेरा संवाद इतना आसान और सहज हो सकता है।
क्योंकि यह जगह किसी को भी ज्ञात नहीं है, मृत्यु निकट आने तक किसी भी जानवर को इसके बारे में पता नहीं होता। हर जानवर एकांत में, दूसरों से दूर मरना पसंद करता है क्योंकि मृत्यु को देखना उसके साथियों के लिए कष्टदायक हो सकता है। हम सभी इस गलत धारणा में जीते हैं कि हम अमर हैं। और यह धारणा हमें बेहतर भविष्य की आशा करने के लिए जबरदस्त प्रेरणा और उत्साह देती है। यह जानना कि मृत्यु अपरिहार्य है, अन्य जानवरों के लिए निराशाजनक होगा।
'मैंने बहुत समय पहले यहाँ एक हिरण को मरते देखा था। मैं जानता हूँ कि मृत्यु अपरिहार्य है, भले ही कोई शिकारी मुझे न मारे। फिर भी मुझे जीवन से बहुत प्रेम है। मृत्यु का विचार मुझे भयभीत नहीं करता।'
एक और मुस्कान, लेकिन वह भी कमजोर सी। 'जब हम अपने जीवन का हर दिन पूरी तरह से, प्रेम और उल्लास के साथ, किसी के प्रति घृणा रखे बिना जीते हैं, तभी हम मृत्यु के भय पर विजय प्राप्त करते हैं। तभी हमें पता चलता है कि मृत्यु हम सभी का सड़क के उस पार इंतजार कर रही है। यदि तुमने अपनी माँ की हत्या के कारण मेरे प्रति अपने हृदय में कोई घृणा रखी होती, या यदि मेरे मन में तुम्हें किसी भी प्रकार से हानि पहुँचाने की कोई इच्छा होती, तो हम एक-दूसरे की भावनाओं को न समझ पाते और न ही एक-दूसरे को जान पाते। अब हम दोनों शांति से एक-दूसरे को देख रहे हैं।'
क्या आपको कभी निर्दोष हिरणों को मारने का अपराधबोध हुआ है?
एक विराम। 'क्या आपने पहले कभी पत्तियां, फूल या पौधे चबाते समय ऐसा ही महसूस किया है? क्या आपको लगता है कि वे निर्जीव हैं?'
मैं चुप रहा, जवाब देने के लिए मेरे पास शब्द नहीं थे।
'जीवित रहने के लिए हमें जीवित या कभी जीवित रहे किसी जीव को खाना पड़ता है। निर्जीव चीजों को खाकर हम जीवित नहीं रह सकते। हिरण मेरे भोजन का एक हिस्सा है। लेकिन मैंने कभी भी शौक के लिए किसी जानवर को नहीं मारा।'
'उस दिन तुमने मुझे क्यों नहीं मारा? एक और मौके पर, एक दूसरे बाघ ने मुझे नहीं मारा, जबकि मैं पास ही था।'
जब तक आप निडर होकर उसकी आँखों में गहराई से देख रहे हैं, तब तक कोई आपको मार नहीं सकता। यह आप पर तभी हमला कर सकता है जब आप भयभीत हो जाएँ या उससे भाग रहे हों।

अचानक वह खामोश आवाज थम गई। कुछ पल खामोशी में बीते, फिर मुझे एक आह सुनाई दी; पीड़ा की एक गहरी आह। क्या अब वह मुझसे बात नहीं करना चाहती? मैंने सोचा, लेकिन आखिरी सवाल पूछने से खुद को रोक नहीं पाया।

'आपने मुझे बताया था कि मृत्यु या मृत्यु के भय पर विजय पाने के लिए, व्यक्ति को अपना जीवन उसकी संपूर्णता में, प्रेम से, उल्लास से जीना चाहिए, किसी के प्रति कोई द्वेष नहीं रखना चाहिए। क्या आपने उस तरह से जीवन जीने का प्रयास किया?'

फिर एक मुस्कान, थकी हुई सी।

कुछ देर बाद मुझे अपने भीतर वह आवाज सुनाई दी; अब वह लगभग सुनाई नहीं दे रही थी।

जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था, हम सभी जानवरों की तरह, मुझे भी यह पता नहीं था कि जीवन के अंत में मृत्यु जैसी कोई चीज़ भी होती है। तो मैं उसे जीतने के लिए क्या कर सकता था? वैसे भी, मृत्यु को जीतने के तरीके और साधन तभी पता चलते हैं जब वह इतनी करीब आ जाती है कि उससे बचना नामुमकिन हो जाता है। और चूंकि हम अकेले ही मरते हैं, इसलिए हममें से कोई भी इस अनमोल संदेश को अपने प्रियजनों तक नहीं पहुंचा सकता।

लेकिन मैं सचमुच भाग्यशाली हूँ, क्योंकि अंतिम साँस लेने से पहले मैं आपसे संवाद कर सका। अब मैं आपको एक महत्वपूर्ण कार्य सौंपना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि मृत्यु पर विजय कैसे पाई जा सकती है। आपका कार्य है इस संदेश को अधिक से अधिक जानवरों तक फैलाना। उन्हें मृत्यु के बारे में मत बताइए। बस उन्हें यह बताइए कि वे अपने जीवन के हर पल को पूरी तरह से और आनंदपूर्वक कैसे जी सकते हैं। जब मृत्यु उनके जीवन में दस्तक देगी, तो वह उन्हें डरा नहीं पाएगी।

याद रखो, तुमसे पहले किसी भी जानवर को इतना महान कार्य नहीं सौंपा गया था। इस संदेश को अपने सभी साथियों तक फैलाओ, और जल्द ही तुम्हारा जंगल शाश्वत उत्सव का स्थान बन जाएगा...' मूक आवाज धीमी पड़ गई।

मैं बाघ को यह बताने ही वाला था कि जंगल में अब कोई हिरण नहीं बचा है, लेकिन इससे पहले ही बाघ का मुँह एक पल के लिए चौड़ा खुल गया और उसके मुँह से हवा का एक झोंका निकला, जो बहुत तेज़ी से ऊपर की ओर बढ़ा। वह अदृश्य था, फिर भी एक अगोचर तरीके से, मैं उसकी उपस्थिति को महसूस कर सकता था।

मैंने अब बाघ की ओर देखा। वह बेजान पड़ा था। कुछ देर तक उसे घूरते हुए, मेरे मन

में एक अजीब सी भावना उमड़ आई।

मुझे ऐसा लगा मानो हवा का वह झोंका बाघ की वास्तविक जीवन शक्ति हो और वह ऊर्जा उसके शरीर में कैद होकर मुझे यह गहरा संदेश दे रही हो, इससे पहले कि वह बाघ के शरीर को छोड़ दे। धीरे-धीरे मेरे मन में इस लेटे हुए शरीर के लिए गहरा प्रेम उमड़ आया। वह अकेला था, उपेक्षित। मुझे उसे अकेला छोड़ने का मन नहीं हुआ, और उसके पास लेटकर मैंने नींद को अपने ऊपर हावी होने दिया।

जैसे ही मैं उठा, धुंध छंट गई और सुबह साफ और सुहावनी थी। पिछली रात बाघ के साथ हुई मुठभेड़ याद आते ही मैंने चारों ओर देखा। उसका बेजान शरीर कहीं भी नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो वह गायब हो गया हो।

मुझे काफी देर तक वहां से उठने का मन नहीं हुआ। पास के पेड़ों पर चिड़िया चहचहा रही थीं। उनकी चहचाहट सुनकर अचानक मेरे मन में यह ख्याल आया कि क्या उन्हें भी मृत्यु का आभास होता है? मुझे पता था कि मेरे इस सवाल का जवाब कौन दे सकता है, लेकिन उससे मिलने के लिए मुझे उस शाम तक इंतजार करना पड़ा।

संकरी पगडंडियों पर चलते हुए मैं जंगल के किनारे बहने वाली धारा की ओर बढ़ा। सर्दियों में वह पानी की एक संकरी नहर मात्र रह जाती थी, लेकिन मैं हमेशा वहीं से पानी पीना पसंद करता था। मैंने पूरी सुबह धारा के किनारे बैठकर सुहावने सूर्योदय का आनंद लिया।

दिन बड़ी सुखद ढंग से बीत गया। पिछली रात बाघ से हुई मेरी मुठभेड़ ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला था। अब मुझे शिकारियों से डर नहीं लगता था, क्योंकि मैं जानता था कि अब मैं उनकी उपस्थिति को दूर से ही महसूस कर सकता हूँ। इसके अलावा, मृत्यु के रहस्य का कुछ हद तक समाधान भी हो गया था। मुझे बार-बार उस कार्य की याद आती रही जो मरते हुए बाघ ने मुझे सौंपा था।

जब जंगल में हिरण ही नहीं थे तो मैं इसे कैसे अंजाम दे सकता था? मैंने कुछ देर सोचा और फिर महसूस किया कि बाघ के निर्देश को साकार करने का रास्ता केवल समय ही दिखा सकता है। कौन जाने, आने वाले महीनों में हिरणों के झुंड बड़ी संख्या में इस जंगल में आ जाएँ, मैंने खुद से कहा और सूर्यास्त से ठीक पहले जंगल के दूसरे छोर की ओर चलने लगा।

अपने मिलने के स्थान पर पहुँचकर मैंने चारों ओर देखा। आसपास सब कुछ जंगल के दूसरे हिस्से जैसा ही था। घास सूखकर पीली पड़ गई थी और पेड़ पत्तों से रहित थे। लेकिन अब मैंने पेड़ों के बारे में एक और सूक्ष्म बात देखी, जिसे मैं पहले नोटिस करने में विफल रहा था।

सूखे और लगभग पत्तों से रहित होने के बावजूद, कोई भी पेड़ या पौधा चिंतित या परेशान नहीं लग रहा था। बल्कि वे सभी वसंत की प्रतीक्षा में गहरी उत्सुकता से बैठे थे। प्रकृति पर उनका विश्वास हमसे कहीं अधिक गहरा था।

मेरे पास पंखों की फड़फड़ाहट ने अचानक मुझे मेरी मधुर कल्पना से बाहर निकाल दिया।

'आप जीवन के सभी रहस्यों के बारे में क्यों जानना चाहते हैं? इससे आपका जीवन इतना पूर्वानुमानित हो जाएगा कि जीने का सारा आनंद ही खत्म हो जाएगा।'

मैंने पक्षी को अपने अनोखे अंदाज में मुझसे बात करते हुए सुना।

'उस बाघ का बेजान शरीर अचानक उस निर्धारित मृत्युस्थल से कैसे गायब हो गया?' मैं अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं सका।

एक मुस्कान, एक स्नेह भरी मुस्कान।

इसका जवाब कोई नहीं दे सकता। अगली बार जब आपके पास एक निर्जीव शरीर पड़ा हो, तो नींद को अपने ऊपर हावी न होने दें। जीवन के सबसे बड़े रहस्य का उत्तर नहीं दिया जा सकता, बल्कि इसे जीना, महसूस करना और अनुभव करना पड़ता है।

क्या किसी पक्षी को पता चल जाता है कि उसकी मृत्यु कब होने वाली है? क्या वह मृत्यु से पहले किसी दैवीय संदेश को पढ़ने के लिए समय-समय पर आकाश की ओर देखता है?

एक ठहराव, सामान्य से अधिक लंबा। और जब मैंने अपने भीतर के पक्षी की आवाज़ दोबारा सुनी, तो वह बहुत दूर से आ रही थी।

'यह अच्छी बात है कि आज शाम आप मुझसे यह प्रश्न पूछने आए हैं।'

'क्यों?' मेरे भीतर एक 'क्यों' गूंज उठा और मेरा दिल कांप उठा।

"कल से मैं तुमसे दोबारा नहीं मिलूंगा। इसके अलावा, अब तुम्हें मुझसे कुछ सीखने को नहीं है। मैं वही दोहराता हूं जो बाघ ने तुम्हें कल रात कहा था। तुम्हें जो काम सौंपा गया है, उसे प्रेम, लगन और स्नेह से पूरा करो।"

'लेकिन तुम मुझसे दोबारा क्यों नहीं मिलोगे?' मेरे भीतर हताशा बढ़ती जा रही थी।

सबसे पहले तो मैं आपको बता दूं कि मृत्यु हमें उस तरह से नहीं घेरती जैसा आपने कहा है। उसका कोमल स्पर्श ही काफी है। लेकिन कोई भी पक्षी मृत्यु के समय आकाश की ओर नहीं देखता। अन्य जानवरों के विपरीत, उसके पास असीम आकाश में उड़ने के लिए पंख होते हैं, जबकि उसका शरीर धीरे-धीरे विघटित होकर पृथ्वी पर बिखर जाता है। इसीलिए आपको कहीं भी किसी पक्षी का निर्जीव शरीर नहीं मिलेगा, सिवाय कुछ आकस्मिक मृत्यु के।

मैं चुप रहा, जो कुछ मैंने अभी-अभी सुना था उसे समझने की कोशिश कर रहा था। अचानक हवा में एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। मैंने चारों ओर देखा और फिर ऊपर की ओर।

मेरे पास एक चट्टान पर बैठी चिड़िया अब ऊपर की ओर उड़ रही थी, उसके पंख लगातार फड़फड़ा रहे थे, लेकिन अब उसका उड़ना पहले के उड़ना से बिलकुल अलग था। अब वह सीधे आकाश की ओर उड़ रही थी, मानो तीर की नोक हो।

मैं यथासंभव देर तक बिना पलक झपकाए उसे देखता रहा, और तभी मैंने एक अविश्वसनीय दृश्य देखा। पक्षी अब इतनी ऊँचाई पर था कि वह एक नुकीली वस्तु मात्र लग रहा था। धीरे-धीरे उस नुकीली वस्तु के छोटे-छोटे टुकड़े उसके मुख्य शरीर से अलग होकर धरती की ओर गिरने लगे। यह प्रक्रिया कम से कम सात से आठ बार दोहराई गई, जब तक कि वह नुकीली वस्तु पूरी तरह से गायब नहीं हो गई।

तो इसीलिए उस पक्षी ने मुझसे कहा था कि कल से वह मुझसे दोबारा नहीं मिलेगा, मैंने यह निष्कर्ष निकाला, मेरा मन भारी था और साथ ही मेरे सामने घटी उस असाधारण घटना से मैं समान रूप से मंत्रमुग्ध भी था।

मुझे इस जगह को जल्दी छोड़ने का मन नहीं कर रहा था। वहाँ काफी देर बैठे-बैठे मुझे वह पहला पल याद आया जब घाटी के दूसरी ओर स्थित पहाड़ी जंगल से मेरे शब्द वापस मुझ तक पहुँचे थे।

मेरे मन में एक गहरी अनुभूति उत्पन्न हुई। अब से, जब भी मेरे मन में जीवन और उसके रहस्यों से संबंधित कोई प्रश्न उठता, मैं कुछ देर के लिए इस स्थान पर आकर बैठता, और उत्तर धीरे-धीरे स्वतः ही मेरे हृदय में प्रकट हो जाते। जीवन के प्रति कृतज्ञता का भाव मुझमें व्याप्त हो गया।

मैंने ज़ोर से कहा, 'आपने मुझे जो कुछ भी दिया है, उसके लिए धन्यवाद।' यह बात मैंने किसी खास व्यक्ति को संबोधित किए बिना कही। लेकिन घाटी के उस पार स्थित

पहाड़ी, जंगल, उसके पेड़, उसकी चट्टानें, सबने एक साथ, उन्हीं शब्दों में, उसी स्वर में मुझे धन्यवाद दिया।

मैं कुछ अनमने ढंग से मुस्कुराया, यह सोचकर कि एक नन्हा हिरण इस विशाल जंगल और पहाड़ी को क्या भेंट दे सकता है जो धन्यवाद के पात्र हैं। बहुत बाद में, जब मैं वहाँ से लौट रहा था, मेरा मन विचारों के जाल में उलझा हुआ था कि मैं उस कार्य को कैसे पूरा करूँ जो मुझे मरते हुए बाघ और पक्षी ने सौंपा था।

अध्याय-*18*

जीवन में जो भी आए, उसका स्वागत करो।

अपनी आत्मा को अनंत ब्रह्मांड के समक्ष शांत और संयमित रहने दो।

~वाल्ट व्हिटमैन

सर्दी के अंत में, एक सुबह मेरी शांतिपूर्ण नींद एक आशंका से टूट गई। मेरा पहला डर यह था कि कहीं कोई शिकारी आसपास न हो। मैंने गहरी सांस ली और मुझे यकीन हो गया कि मेरी जान को कोई खतरा नहीं है। मैंने चारों ओर एक नज़र डाली। पेड़, पौधे, पक्षी—सब कुछ मानो उत्सव के मूड में थे, सुबह की सुहावनी धूप उन्हें छू रही थी और वे गर्माहट महसूस कर रहे थे। मैंने फिर से चारों ओर गौर से देखा, और एक असाधारण सुंदरता ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

पास ही एक झाड़ी के किनारे लटकती कुछ अनमोल छोटी-छोटी वस्तुएँ चमक रही थीं। उनकी अद्भुत चमक ने मुझे तुरंत अपनी ओर खींच लिया। जैसे ही मैं झाड़ी के पास पहुँचा, मेरे होठों पर एक शर्मिंदगी भरी मुस्कान आ गई, जब मुझे एहसास हुआ कि वे झिलमिलाते छोटे मोती कुछ और नहीं बल्कि घने जालों में फँसी धुंध की बूँदें थीं, जिन्हें कुछ मकड़ियों ने बुना था।

मकड़ी के जालों में फंसी धुंध की बूंदों पर जब सूरज की रोशनी पड़ी, तो वे खुशी से चमक उठीं। न केवल मैं, बल्कि एक टिड्डा भी उन चमकती बूंदों की रहस्यमयी सुंदरता से मोहित हो गया था। लेकिन दुर्भाग्य से, वह मेरी तरह धुंध की बूंदों के बहुत करीब चला गया और मकड़ी के जालों में फंस गया। जैसे-जैसे वह अपने आंशिक रूप से पारदर्शी और आंशिक रूप से इंद्रधनुषी पंखों को तेजी से फड़फड़ाता गया, मकड़ी के जाले उसे और भी मजबूती से जकड़ते गए।

उसके पास खड़े होकर मैं उसका डर और दर्द महसूस कर सकता था और समझ गया कि आज सुबह उठते ही मुझे बेचैनी क्यों हो रही थी। टिड्डा ज़रूर काफी देर से मदद के लिए गुहार लगा रहा होगा। उसे पता था कि अगर कोई पक्षी उसे मकड़ी के जाले में फंसा हुआ पा लेता है, तो पल भर में वह उस पर झपट्टा मारकर उसे चट कर जाएगा। उसके कमजोर पंख अब फड़फड़ाना बंद कर चुके थे, शायद उसने यहाँ से मुक्त होने की उम्मीद छोड़ दी थी। कैद का दर्द मुझसे ज़्यादा कौन जानता था? धीरे से मैंने अपना एक अगला पैर उठाया और उसके खुर से टिड्डे को मकड़ी के जाले से धीरे से उठाकर पास ही ओस से भीगी घास पर रख दिया।

टिड्डा कुछ क्षणों के लिए सदमे में था, लेकिन जैसे ही उसे एहसास हुआ कि वह मकड़ी के जाले के जाल से मुक्त हो गया है, उसने अपने पंख कुछ देर तक लयबद्ध तरीके से फड़फड़ाए। फिर वह एक घास से दूसरी घास पर उछलता हुआ खुशी से गुनगुनाते हुए उड़ गया।

टिट्टे की आज़ादी की खुशी इतनी संक्रामक थी कि उसे करीब से देखकर मैं भी बहुत खुश हो गया। यह पहली बार था जब मैंने किसी को मौत के मुंह से बचाया था। यह अनुभव इतना सुखद और परिपूर्ण था कि सारा दिन मैं आनंदित रहा। हाँ, वह पुरानी कहावत बिल्कुल सच है कि निस्वार्थ भाव से दूसरों की मदद करना जीवन में सबसे बड़े सुखों में से एक है, मैंने सोचा।

वसंत ऋतु ने शीत ऋतु का पूर्णतया अनुसरण किया और जंगल में रंग, ऊर्जा, जीवंतता और उमंग का भाव भर दिया। इस वसंत ऋतु में पहली बार मैंने देखा कि इस मौसम में सभी पक्षियों के पंखों में एक नई चमक आ गई है।

आजकल मैं धीरे-धीरे चलता था और हर चीज़ को अधिक ध्यान से देखता था। इससे मुझे जंगल में और भी अधिक सुंदरता और आश्चर्य की बातें दिखाई देने लगीं।

मैंने चट्टानों के बीच से नन्हे-नन्हे पौधे उगते देखे; मैंने एक पेड़ और उस पेड़ को कसकर गले लगाए लता के बीच फुसफुसाहट सुनी। मुझे एक छोटा सा मेंढक मिला जो मेरी तरह लंबी छलांग लगा सकता था, मैंने एक फूल और तितली के बीच का प्रेम देखा, और जंगल के छोटे-छोटे तालाबों में नन्हे-नन्हे, नामहीन जीव-जंतुओं को आनंद से खेलते हुए पाया। शायद ये सभी चीजें सदियों से जंगल में मौजूद थीं, लेकिन प्रकृति की सुंदरता और रचनात्मकता को आत्मसात करने की ऐसी भावना मुझमें पहले कभी नहीं थी।

दिनभर मैं जंगल में इधर-उधर भटकती रहती थी, और दोपहर में मुझे झरने के पास समय बिताना अच्छा लगता था। हमेशा की तरह, इस वसंत ऋतु में भी मेरे मन में एक गहरी तड़प थी, और मैं चाहती थी कि कोई बलवान नर हिरण मुझे प्यार से सहलाए। कभी-कभी पेड़ की ठंडी छाँव में बैठकर मैं अपने मन में एक अंतरंग तस्वीर बना लेती थी, जिसमें मैं खुद को एक हट्टे-कट्टे नर हिरण के साथ प्रेम करते हुए देखती थी।

तस्वीर जितनी जीवंत होती जाती, उतना ही आनंदमय एहसास मुझे घेर लेता। ऐसे मौकों पर मैं अपनी आँखें बंद रखता, क्योंकि आसपास की चीजों को देखना मेरा ध्यान भटका सकता था। पल आनंद से बीतते चले जाते, और कुछ समय बाद जब मैं अपनी आँखें खोलता, तो एक मदहोश कर देने वाले आंतरिक आनंद से सराबोर होकर, मुझे ऐसा लगता जैसे आसपास के पेड़-पौधे मुझ पर मुस्कुरा रहे हों, मानो

चिढ़ाते हुए कह रहे हों कि मेरे इस आनंदमय शौक ने उन्हें खुश कर दिया है।
पेड़ों को देखते हुए, कभी-कभी मैं सोचता था कि क्या वे भी अक्सर प्यार और दुलार पाने के लिए तरसते हैं। मैं मन ही मन सोचता था कि अगर कभी मैं उनसे आसानी से संवाद कर पाऊँगा, तो मैं उनसे इस बारे में ज़रूर पूछूँगा।
हालांकि वसंत ऋतु सर्दियों जितनी लंबी थी, फिर भी मुझे यह हमेशा अल्पकालिक ही लगती थी, और इससे पहले कि मैं वसंत ऋतु का पूरी तरह से आनंद ले पाता, अनिच्छा से ही सही, इसकी जगह चिलचिलाती गर्मी ने ले ली।

कुछ देर भटकने के बाद, ताजी घास की तलाश में, जब मुझे कुछ नहीं मिला, तो थककर मैं एक बड़े पत्थर के पास बैठ गया। ऐसा लगता है जैसे वह पत्थर कई सालों से बारिश और गर्मी झेल रहा हो, और इन सब के निशान उसकी चिकनी सतह पर साफ दिख रहे थे। वह लगभग गोल था और ऐसा लगता था मानो सदियों से अपनी जगह से हिला ही न हो।
उसके पास बैठकर, मैं आराम से उस पर झुक गया और अपनी पीठ को झुलसते हुए महसूस किया। मैं तुरंत उठ खड़ा हुआ। मैंने डरते हुए अपने पास पड़े पत्थर के टुकड़े को देखा। अब मैंने सावधानी से अपना एक अगला पैर उठाया और कुछ पल के लिए उस पत्थर को छुआ। वह इतना गर्म था मानो उसने दिन भर की सारी धूप सोख ली हो।
मैं कुछ देर तक उस चट्टान के पास खड़ा रहा और उसे निहारता रहा। पल बीतते-बीतते मुझे ऐसा लगा मानो सूरज की तेज़ धूप से चट्टान क्रोधित हो गई हो। वह गर्म और क्रोधित थी, लेकिन दुर्भाग्य से उसे अपना क्रोध निकालने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। मैंने रात में फिर से उस चट्टान को देखने का फैसला किया।
आज सूरज बिल्कुल बेरहम था। एक लंबे पेड़ के पास से गुजरते हुए मेरा शरीर उसकी मुरझाई शाखाओं से छू गया और मुझे महसूस हुआ कि वे सब गर्म और पीड़ा से भरी हुई थीं। इस विशाल पेड़ के पास की हवा, बाकी मौसमों के विपरीत, शुष्क, गर्म और नमीहीन थी।
जंगल में हर चीज़ में बेचैनी का भाव था। ऐसा लग रहा था मानो सब कुछ बेबस गुस्से से भरा हो, किसी अशुभ घटना के घटित होने की प्रतीक्षा कर रहा हो। चारों ओर

देखते हुए, मैंने चुपचाप प्रार्थना की कि मेरा प्रिय जंगल और जंगल को अपना घर बनाने वाला हर जीव फिर से शांत और निर्मल हो जाए।

उस रात, जैसा कि मैंने पहले से योजना बनाई थी, मैं फिर से उस चट्टान के पास गया। रात का घना कोहरा था और हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी। चट्टान तक पहुँचकर मैंने उसे सावधानीपूर्वक छुआ।

इसे छूने में आराम महसूस हो रहा था। अब मैं इसके पास बैठ गया और दोपहर की तरह इस पर झुक गया। अपने आरामदायक स्पर्श से मैं उस चट्टान के टुकड़े को यह बताना चाहता था कि यह चिलचिलाती गर्मी हमारे जीवन का एक क्षणिक दौर है और जल्द ही यह ठंडी होकर तेज बारिश से साफ हो जाएगी।

मैं उस चट्टान में कुछ सुकून का एहसास जगाना चाहता था। मेरी कोशिश कुछ देर तक चलती रही। हालांकि, मैं अपनी सोने की सामान्य जगह पर नहीं लौटा, बल्कि आँखें बंद करके उसी से टिका रहा। रात की खामोशी काफी सुकून देने वाली थी, और धीरे-धीरे मुझे नींद आने लगी।

अचानक मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई कि जिस पत्थर के सहारे मैं टिका हुआ था, वह हमारे शारीरिक संपर्क के माध्यम से मुझे कोई संदेश दे रहा है। मैंने पत्थर से मुझ तक पहुँचने वाली हर हल्की सी कंपन को महसूस करने की कोशिश की और उन्हें समझने का प्रयास किया। यह पूरी तरह से मेरी समझ से परे था, फिर भी मुझे लगा कि मैं इसका कुछ अंश समझ सकता हूँ।

यह एक चेतावनी थी; इस जगह को जल्द से जल्द छोड़ने की चेतावनी, क्योंकि एक बड़ी विपत्ति, एक भीषण विनाशकारी घटना हमारे जंगल पर कहर बरपाने वाली थी।

जैसे ही मैंने उस चट्टान पर लिखी चेतावनी पढ़ी, मेरी नींद के बचे-खुचे अंश भी मेरी आंखों से गायब हो गए।

मैं खड़ा हुआ और उस चट्टान को हैरानी भरी नज़रों से देखा; मानो श्रद्धा से। यह सोचना भी मेरे लिए असंभव था कि एक दिन चट्टान का एक टुकड़ा मुझे कोई संदेश भेजेगा। क्या यह कोई सपना था जो मैंने किसी सुखद समाधि में देखा था, मैंने सोचा। अचानक मुझे एहसास हुआ कि इस जंगल में कई और रहस्य छिपे हैं जिनके बारे में मुझे अभी जानना बाकी है। शायद एक जीवन हमारे जंगल और बाहरी दुनिया में मौजूद हर ज्ञान को जानने के लिए पर्याप्त नहीं है।

मैंने अपने सोने की सामान्य जगह पर लौटने का फैसला किया। जैसे ही मैं वहाँ लेटा,

मुझे तुरंत नींद आ गई, लेकिन मेरे भीतर एक अनसुलझा संदेह और सवाल बना रहा क्योंकि उस पत्थर का संदेश मुझे पूरी तरह समझ में नहीं आया था।

अगले कुछ दिन बिना किसी घटना के बीत गए, लेकिन भीषण गर्मी और उमस से बचना नामुमकिन था। दिन के समय, जब मैं उस बड़े पत्थर के पास से गुज़रता, तो मुझे वही अजीब सा एहसास होता कि वह मुझे जंगल से दूर रहने की चेतावनी दे रहा है। यहाँ तक कि पेड़ भी खामोश थे, मानो तेज़ धूप ने उनकी सारी ऊर्जा छीन ली हो और उनमें बस एक बेबसी और हताशा ही बची हो।

ग्रीष्म ऋतु के अंत में एक रात, जब मैं गहरी नींद में सो रहा था, पेड़ों, पौधों, चट्टानों और बंजर धरती में संचित सारी गर्मी, क्रोध और लाचारी एक असाधारण घटना में परिणत हुई, जिसे मैंने न तो कभी देखा था और न ही अपनी माँ या किसी बूढ़े हिरण को आपस में चर्चा करते सुना था। केवल एक बार ही मैंने इस भयावह घटना का अप्रत्यक्ष अनुभव किया था।

मैं गहरी नींद में सो रहा था कि अचानक मेरी आँखें खुल गईं और चारों ओर तेज़ रोशनी फैल गई। साथ ही तेज़ चटकने की आवाज़ और असहनीय गर्मी भी थी। एक पल के लिए मुझे लगा कि सुबह का काफी समय हो गया है और चारों ओर जलती हुई रोशनी सूरज की रोशनी है। लेकिन पल भर में ही मेरा यह भ्रम दूर हो गया।

पूरा जंगल आग की चपेट में था। पेड़ों और पौधों से चटकने की आवाज़ आ रही थी, क्योंकि भयंकर आग की लपटें सब कुछ जलाकर राख कर रही थीं। इसकी लपटें जंगल के सबसे ऊंचे पेड़ों से भी ऊंची उठ रही थीं। मैंने ऊपर देखा। जंगल के ऊपर घना धुआं आसमान को ढक रहा था।

हवा में एक अजीब सी गंध थी। अगर आग इतनी जल्दी इतने सारे विशाल पेड़ों को राख कर सकती है, तो वह मुझे पल भर में निगल जाएगी, मैंने सोचा और जंगल के उस हिस्से की ओर भागा जो अभी तक आग की चपेट में नहीं आया था। लेकिन मुझे पता था कि आग बहुत तेज़ी से मेरा पीछा कर रही है, मेरी गति से कहीं ज़्यादा तेज़, क्योंकि रास्ते में हर सूखे पत्ते, झाड़ी और पौधे को जलाते हुए वह और भी ज़्यादा उग्र और शक्तिशाली होती जा रही थी।

अचानक कहीं से हवा चलने लगी। पिछले कई दिनों से हम हवा के चलने का बेसब्री से

इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन पूरा जंगल उसकी सुखद अनुभूति से वंचित था। हवा चलते ही आग और भी तेज़ी से फैलने लगी। मुझे पूरा यकीन था कि जल्द ही यह आग मुझे भी अपनी चपेट में ले लेगी। मैं भी पेड़ों और पौधों के साथ जलकर राख हो जाऊँगा। हालांकि मैं मौत के बेहद करीब था, फिर भी मैं आग से बचने के लिए पूरी ताकत से भाग रहा था। अचानक मेरे मन में एक विचार आया। अगर मौत अब वाकई अटल है, तो क्यों न उस जगह मरूं जिसे सभी जानवर अपने जीवन के अंतिम क्षण बिताने के लिए चुनते हैं। बिना सोचे-समझे, मैं ऊंचे पेड़ों से घिरे उस खुले मैदान की ओर दौड़ पड़ा, जहां मैंने एक बाघ और एक हिरण को अपनी आखिरी सांसें लेते देखा था। मुझे महसूस हो रहा था कि आग बहुत तेजी से यहां तक पहुंच रही है; मैं अपने शरीर पर उसकी गर्मी महसूस कर सकता था।

कुछ क्षण बीत गए। अब मैंने देखा कि उसकी लपटें खुले मैदान के करीब पहुँच रही थीं, मानो इस जगह के चारों ओर के पेड़ों को भस्म कर देने वाली हों। मैंने आसपास के पेड़ों को देखा; उन सभी में एक साथ कंपकंपी दौड़ गई, मानो वे जानते हों कि उनका अंत निकट है।

लेकिन एक अजीब सी भावना ने मुझे घेर लिया। अब मुझे मृत्यु से डर नहीं लग रहा था; बल्कि मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं मृत्यु का उसी तरह स्वागत करने के लिए तैयार हूँ जैसे मैं अपने जीवन की हर सुबह का स्वागत करता था। मेरे मन में कृतज्ञता का गहरा भाव था क्योंकि मुझे जीवन को इतने पूर्ण और संपूर्ण रूप से जीने का अवसर मिला था। मुझे कोई पछतावा या पश्चाताप नहीं था।

अचानक मुझे याद आया कि एक रात मरते हुए बाघ ने मुझसे क्या कहा था। अगर तुम अपना जीवन खुशी से, बिना किसी अपराधबोध के, अपनी शर्तों पर जीते हो, तो मृत्यु जब तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक देती है, तो तुम उसका स्वागत करते हो।

मेरे होठों पर एक सुखद मुस्कान खिल उठी, और निडर हृदय से मैंने आग की लपटों को देखा। आसपास के पेड़ अब आग की चपेट में थे। उनकी शाखाएँ टूटकर ज़ोरदार आवाज़ के साथ गिर रही थीं, और उनके विशाल तने निर्दयता से आग के आगे झुक रहे थे।

कुछ पल बीतते-बीतते, खुले मैदान के चारों ओर के सभी पेड़ आग की चपेट में आ गए, लेकिन चमत्कारिक रूप से आग मुझ तक नहीं पहुँची। मैं गोलाकार खुले मैदान के बीचोंबीच खड़ा था। मैदान की सूखी घास इतनी छोटी थी कि आग को इस हिस्से को

अपनी चपेट में लेने का मौका नहीं मिला। थोड़ी देर बाद, खुले मैदान के चारों ओर लगी आग अपने आप बुझ गई। खुला मैदान सुरक्षित रहा, और मैं भी।

पूरे जंगल को अपनी चपेट में लेने के बाद, आग की लपटें अपनी भयानक तीव्रता खो बैठीं और धीरे-धीरे कमजोर होकर अंत में बुझ गईं। लेकिन पेड़ सुलगते रहे, जबकि चारों ओर से धुएं के घने गुबार उठते हुए आकाश को काला कर रहे थे। जंगल के ऊपर चारों ओर कागज़ जैसी राख उड़ रही थी। मैं जंगल पार करना चाहता था, लेकिन जानता था कि मुझे उजाला होने तक इंतजार करना होगा।

अचानक मुझे चिड़ियाघर में बिताई एक रात की याद आ गई। किसी नशीले पदार्थ के असर में मुझे एक अजीब सा सपना आया था कि एक रात जंगल में आग लग जाएगी, लेकिन मैं बच जाऊँगा। मुझे अपनी माँ की एक चमकती हुई छवि दिखाई दी और उन्होंने मुझे बताया कि कैसे कोई उन कुछ चुने हुए लोगों में से एक हो सकता है। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि एक रात वह सपना, जिसे मैंने मतिभ्रम समझा था, सच हो जाएगा।

उस अनोखे दृश्य की याद ने मुझे आशा की एक किरण दिखाई। यद्यपि जंगल अब विलुप्त प्रतीत हो रहा था, मैंने सोचा कि यहाँ जीवन का एक नया अध्याय जल्द ही शुरू होगा।

अध्याय-*19*

विश्वास के साथ, हमेशा वसंत ऋतु रहती है।

आप जीवन की जितनी अधिक प्रशंसा और जश्न मनाएंगे, जीवन में जश्न मनाने के लिए उतना ही अधिक अवसर होगा।

~ओपरा विन्फ्रे

मेरी उम्मीद के विपरीत, अगली सुबह चिलचिलाती धूप नहीं थी, बल्कि आकाश उदास था, काले बादलों से ढका हुआ था, और सूरज कहीं उनके पीछे छिपा हुआ था, मानो उसे शर्म आ रही हो कि पिछली रात जंगल में आग लगने का कारण वही था।

मैं राख की मोटी परत से ढके जंगल से गुज़रा, जो पिछली रात की भीषण आग की याद दिला रही थी। जगह-जगह पेड़ों के आधे जले हुए तने उदासी का माहौल लिए खड़े थे। अन्य सुबहों के विपरीत, आज कोई पक्षी चहचहा नहीं रहा था, बल्कि गहरी खामोशी छाई हुई थी, जो बेहद गंभीर और बेचैन करने वाली थी।

मैं जहाँ भी पैर रखता, वहाँ से राख का एक बादल उठता और अक्सर मुझे छींक आने लगती। क्योंकि अब कोई भी पेड़ नहीं बचा था, इसलिए सभी संकरे रास्ते भी अपना स्वरूप खो चुके थे। मैं कुछ देर तक इधर-उधर भटकता रहा, मुझे ठीक से पता नहीं था कि मैं क्या खोज रहा हूँ, तभी मेरी टक्कर उस चट्टान से हो गई जिसने कुछ दिन पहले मुझे जंगल में आने वाले खतरे के बारे में आगाह किया था।

यह दो हिस्सों में टूट गया था, लेकिन अपने विशाल आकार के कारण आसानी से

पहचाना जा सकता था। मैं चट्टान के दोनों हिस्सों को देखकर अवाक रह गया। दोनों हिस्सों के बीच में एक अर्ध-गोलाकार खोखला स्थान था, जो मेरे सिर को समाहित करने के लिए काफी बड़ा था, और दोनों में दो अधजले घोंघे पड़े थे। वे हमारे नाले के किनारे दिखने वाले घोंघों से कहीं बड़े थे।

यह बात समझ से परे थी कि ये घोंघे, जो मेरी जानकारी के अनुसार जीवित प्राणी थे, इस चट्टान के अंदर कैसे आ गए। क्या ये यहाँ बहुत समय से थे? अगर हाँ, तो एक बड़े पत्थर के अंदर कैसे रह रहे थे? क्या यह संभव है कि कुछ जीव हर बड़े पत्थर के टुकड़े के अंदर आराम से रह रहे हों... अचानक बिजली की गड़गड़ाहट से मेरे विचारों का सिलसिला टूट गया। मैंने तुरंत ऊपर देखा। बादलों से भरे आकाश में बिजली की चमक कौंध रही थी और गरजता हुआ आसमान कान फाड़ देने वाली आवाज़ में दहाड़ रहा था।

मुझे पता था कि जल्द ही बारिश शुरू हो जाएगी, लेकिन साथ ही यह भी पता था कि जंगल में अब ऐसी कोई जगह नहीं बची थी जहाँ मैं बारिश के दौरान शरण ले सकूँ। फिर भी मैंने किसी भी कीमत पर, किसी भी परिस्थिति में अपने जंगल को न छोड़ने का फैसला किया।

काश जंगल को पता चले कि यहाँ एक हिरण रहता है जो इस जगह को बेहतर बनाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहता है, कि वह इस कठिन समय में भी इस जंगल को नहीं छोड़ेगा... मेरा मन दृढ़ था जब मैंने अपने ऊपर बारिश की पहली बूँद गिरते हुए महसूस की।

आकाश काले बादलों की घनी चादर से ढका हुआ था। वे भारी और उदास दिख रहे थे और कछुए की चाल से आगे बढ़ रहे थे। मैंने उन काले बादलों को चुनौती भरी निगाहों से देखते हुए सोचा, "भले ही ये बादल मूसलाधार बारिश बनकर धरती पर बरसें, मुझे इससे डर नहीं लगता।"

जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, वैसे ही एक तेज बारिश शुरू हो गई, मानो बादलों ने मेरे विचारों को पढ़ लिया हो और मेरी चुनौती स्वीकार कर ली हो।

एक सप्ताह तक हुई बारिश ने हमारे जंगल में एक अद्भुत बदलाव ला दिया। बारिश ने सारी राख धो दी थी, और उसके नीचे की मजबूत धरती एक बार फिर आशा भरी

निगाहों से आकाश की ओर देख रही थी, मानो उससे विनती कर रही हो कि उसे फिर से उपजाऊ, जीवंत और हरा-भरा बना दे। पूरा जंगल एक बार फिर आशा और गहरी लालसा से भर उठा था; एक ऐसी लालसा जिसमें नए जीवों को जन्म दिया जाए, उन्हें बारिश, सूरज और हवा की मदद से पाला-पोसा जाए।

जैसे-जैसे मैं जंगल को देखता गया, मुझे यह एहसास होता गया कि यह मुझसे और हम सब से कहीं अधिक साहसी और जीवन के प्रति आशावान है। यहाँ तक कि पूरी तरह से नष्ट हो जाने के बाद भी, यह बिल्कुल निर्भीक था, नए सिरे से शुरुआत करने के लिए तैयार था।

एक और सप्ताह बीतने के साथ ही हमारे जंगल में एक और आश्चर्यजनक परिवर्तन आया। गीली मिट्टी से नन्हे-नन्हे पौधे निकले, जो किसी की अनुमति का इंतजार किए बिना पूरे जंगल को हरे रंग की चादर से ढकने के लिए तैयार थे।

कुछ और दिन बीत गए, और मूसलाधार बारिश जारी रही। दिन भर मुझे जंगल में बारिश के पानी की छोटी-छोटी धाराएँ बहती हुई दिखाई देती थीं, जो उस झरने तक जाती थीं जहाँ मुझे तैरना बहुत पसंद था। बारिश रुकने के बाद, मैं जंगल में इधर-उधर भटकता रहता था। मैं कीचड़ भरी ज़मीन पर संभलकर कदम रखता था, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि कोई छोटा पौधा मेरे पैरों तले कुचल जाए।

बारिश, जीवन और नन्हे पौधों की सुगंध से सराबोर एक मदहोश कर देने वाली महक गीली मिट्टी से निकल रही थी। दिनभर तितलियों, टिड्डियों और मधुमक्खियों के झुंड एक पौधे से दूसरे पौधे पर मंडराते रहते थे। मैं अक्सर सोचती थी, क्या वे जंगल के पुनर्जन्म का जश्न मनाने आए हैं?

दो सप्ताह बाद, हर पौधा एक अलग इकाई बन गया और दूसरे से भिन्न दिखने लगा। वे अब घुटनों तक ऊँचे हो गए थे, और तितलियाँ आसानी से उनके आसपास लुका-छिपी खेल सकती थीं। बारिश ने इस जंगल में एक और ऐसा बदलाव ला दिया था जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

धीरे-धीरे जंगल की लंबाई और चौड़ाई में लताओं के जाल बनने लगे। वे तेजी से बढ़ रही थीं।

रातें भी पहले से कहीं अधिक जादुई हो गई थीं। सद्भावना के प्रतीक के रूप में, इस जंगल से आए किसी दयालु दूत ने घाटी के दूसरी ओर स्थित जंगल के जुगनुओं को यह सूचना दी होगी कि हमारा जंगल प्रतिदिन उत्सव के माहौल में रहता है क्योंकि

यहाँ सैकड़ों नए जीवन जन्म ले रहे हैं।
जुगनुओं ने ज़रा भी समय बर्बाद नहीं किया और हर रात हमारे जंगल में मौज-मस्ती करते हुए बिताई। कभी-कभी मैं पूरी रात जागकर उन्हें मस्ती करते देखता रहता था। कभी-कभी जुगनुओं का झुंड मेरे सिर के ऊपर मंडराता था। ऐसे दुर्लभ अवसरों पर, मैं बिना हिले-डुले इस हरे-भरे जंगल में उड़ते हुए जुगनुओं के झुंड को देखता रहता था।
एक रात जब मैं पूरी तरह से जागा हुआ था और जंगल की मनमोहक सुंदरता को निहार रहा था, तभी मुझे अपने बाएं कान में गुदगुदी का एहसास हुआ, मानो कोई कीड़ा मेरे कान में अपने पंख फड़फड़ा रहा हो।
सहज ही, मैंने अपने कान के लटकते हुए हिस्से को फड़फड़ाया। देखते ही देखते, कीड़ा मेरे कान से निकलकर मेरे सामने उड़ने लगा। उसे देखते ही एक अनजान सी सिहरन मेरे शरीर में दौड़ गई।
वह एक टिड्डा था। वह कुछ क्षणों के लिए मेरे चेहरे के सामने रुका रहा, अपने पंख फड़फड़ाता रहा, फिर सुहावनी हवा के साथ उड़ गया।
एक पल के लिए मैं पूरी तरह से अचंभित हो गया। क्या यह वही टिड्डा हो सकता है जिसे मैंने एक सुबह मकड़ी के जालों में फंसने पर बचाया था? लेकिन यह कैसे संभव हो सकता है? पूरा जंगल जलकर राख हो जाने के बाद वह टिड्डा कैसे जीवित रह सकता है? लेकिन अगर यह वही टिड्डा नहीं है, तो इसने ऐसा व्यवहार क्यों किया...? अनगिनत अनसुलझे सवाल मेरे दिमाग में उमड़ आए, और मैं जानता था कि उनकी असली खूबसूरती इसी बात में है कि उनके जवाब हमेशा अनसुलझे ही रहेंगे।
दिन बीतते गए, लेकिन हर सुबह जब मैं जागता, तो मेरे मन में हमेशा एक ही विचार आता था। वह और कुछ नहीं, बस वही बात जो कभी मरते हुए बाघ और उस पक्षी ने मुझे बताई थी, जिनसे मैं जंगल के किनारे अक्सर मिलता था।
मुझे अपने सभी साथी हिरणों को उदारतापूर्वक ये शिक्षाएं देनी चाहिए और उन्हें यह सिखाना चाहिए कि संपूर्ण और समग्र रूप से कैसे जीना है।
जागते ही मेरे मन में एक विचार आया और फिर मैंने खुद से काफी देर तक बातें कीं। मुझे चिड़ियाघर वापस जाने में कोई आपत्ति नहीं थी, हालांकि पकड़े जाने का खतरा हमेशा बना रहता था। मुझे उन्हें अपनी अनोखी कहानी सुनाने में भी कोई आपत्ति नहीं थी, और मुझे पता था कि इससे वे उस भूमि पर वापस आने के लिए राजी हो जाएंगे, जहां से वे वास्तव में संबंधित थे।

लेकिन क्या यह सब करना सार्थक था? मैं खुद से यह सवाल पूछता था। उन छोटे हिरणों के अलावा, जो मेरे प्रति बेहद असभ्य थे, मुझे बड़े हिरणों के प्रति भी गहरी नाराजगी थी, क्योंकि जब वे छोटे हिरण मेरा मजाक उड़ा रहे थे, तब वह मेरे साथ खड़ा नहीं रहा।

लेकिन शरद ऋतु की शुरुआत में मुझमें एक अजीब बदलाव आया; अब जंगल हरा-भरा हो गया था, दिन भर चहचहाता रहता था, उल्लास और जीवन से भरपूर था। यह पहले से कहीं अधिक घना था, और कोई भी आसानी से अपना रास्ता, एक नया मार्ग बनाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता था।

जैसे-जैसे मैंने इस नए जंगल में दिन बिताए, हर पल जीवन से भरपूर सांस लेते हुए, मेरे मन में एक गहरी समझ विकसित होती गई। वह यह है कि पृथ्वी पर कोई भी विनाश जीवन का अंत नहीं हो सकता। बल्कि, प्रत्येक भीषण विनाश जीवन में एक नई शुरुआत का संकेत है।

जीवन अपने आप में इतना शक्तिशाली है कि पृथ्वी पर कोई भी शक्ति इसे समाप्त नहीं कर सकती। हम जैसे व्यक्ति समय-समय पर अपना जीवन खोते रहेंगे, चाहे शिकारी के हाथों या प्राकृतिक मृत्यु से, लेकिन जीवन, समग्र रूप से, हमेशा बना रहेगा, और इसकी शाश्वत सुंदरता के गीत प्रकृति द्वारा गाए जाते रहेंगे।

इस गहरी भावना ने मेरे हृदय को इतनी तीव्रता से झकझोर दिया था जितना पहले कभी नहीं हुआ था; यहाँ तक कि मरते हुए बाघ या उस पक्षी की आवाज़ सुनते समय भी नहीं। मैं स्वयं को प्रकृति का अभिन्न अंग होने और उसके प्रेम और आनंद के गीत गाने में सक्षम होने के लिए सौभाग्यशाली मानता हूँ।

जैसे-जैसे मैंने जीवन को व्यापक परिप्रेक्ष्य से देखना शुरू किया, कैद में जी रहे हिरणों के प्रति मेरी नाराजगी धीरे-धीरे कम होती गई और कुछ समय बाद पूरी तरह समाप्त हो गई। मैंने शरद ऋतु के अंत में चिड़ियाघर की यात्रा पर जाने का फैसला किया।

शुरू में, जब भी मैं चिड़ियाघर वापस जाकर अपने सभी साथी हिरणों को जंगल में वापस लाने के बारे में सोचता था, तो मेरे मन में यही सवाल उठता था कि क्या वे सचमुच इसके लायक हैं। लेकिन अब मैं समझ गया हूँ कि मैं उन्हें इस जंगल में रहने का आनंद दिलाना चाहता हूँ और उन्हें अपनी आंतरिक शक्ति का एहसास कराना चाहता हूँ, इसलिए नहीं कि वे इसके लायक हैं, बल्कि इसलिए कि जीवन की सभी खूबसूरत चीजों को उनके साथ साझा करके मैं अपने आनंद को और बढ़ाना चाहता हूँ।

किसने सोचा था कि जंगल में उत्सव का माहौल इतना बढ़ जाएगा जब चारों ओर हिरणों की संख्या काफी बढ़ जाएगी? मैं शरद ऋतु के अंत का बेसब्री से इंतजार कर रहा था ताकि मैं अपनी यात्रा शुरू कर सकूं।

अध्याय-*20*

अंतिम कॉल

मैंने प्रेम को ही अपना मार्ग बनाने का निर्णय लिया है; घृणा एक बहुत बड़ा बोझ है जिसे सहन करना असंभव है।

~अनाम

चिड़ियाघर तक की मेरी वापसी की यात्रा, चिड़ियाघर से जंगल तक की यात्रा से कहीं अधिक लंबी थी। जंगल लौटते समय मैंने अपने रक्षक देवदूत पर आँख बंद करके भरोसा किया था। लेकिन अब, चिड़ियाघर लौटते समय मैं बिलकुल अकेली थी। मुझे रास्ता बताने वाला कोई नहीं था और न ही मुझे इसकी ज़रूरत थी। फिर भी, मैंने इस लंबी यात्रा पर धीमी गति से चलना शुरू किया, रास्ते में आने वाले सभी पेड़ों, जंगलों, भीतरी इलाकों, सुनसान झीलों, कई अनजान फूलों—हर चीज़ को निहारते हुए।

पेड़ों के एक समूह के पास से गुज़रते हुए मुझे याद आया कि मैंने उनसे वादा किया था कि एक दिन मैं उनसे मिलने ज़रूर आऊँगा। एक पल के लिए भी मुझे शक नहीं हुआ कि मैं सही रास्ते पर जा रहा हूँ। अपनी यात्रा शुरू करने के पाँचवें दिन रात को मैं उस जगह पहुँच गया जहाँ से उस रहस्यमयी पक्षी ने मुझे मेरे जंगल तक रास्ता दिखाया था। पानी का पाइप यहाँ से थोड़ी दूर ज़मीन से निकलकर आगे की ओर जा रहा था।

चार दिन का सफर थोड़ा थका देने वाला था और पानी के पाइप तक पहुँचकर मैं पाइप पर टेक लगाकर ज़मीन पर बैठ गया ताकि थोड़ा आराम कर सकूँ। शरद ऋतु की सुहावनी हवा चल रही थी और मैं थोड़ी देर के लिए सो गया।

अचानक मेरे सामने एक बेहद सुखद और आनंददायक दृश्य प्रकट हुआ। मैंने खुद को चिड़ियाघर की दीवार में बने संकरे छेद से आधी रात को कूदते हुए देखा। जल्द ही मेरे पीछे हिरणों का एक बड़ा झुंड भी कूद पड़ा, और कई महीनों बाद पहली बार उन्होंने कैद से मुक्त होने का आनंद चखा। उनकी आँखें शुद्ध आनंद से चमक रही थीं, जिसे मैं अंधेरी रात में भी देख सकता था। उन्हें देखकर मुझे लगा कि अगर मैं इतने सारे हिरणों के दिलों में खुशी का एहसास जगा सकूँ, तो मैं इस तरह की जोखिम भरी यात्रा पर दोबारा जाने में कोई संकोच नहीं करूँगा।

मन ही मन मुस्कुराते हुए, मैंने उन सभी को मुझ पर और मेरी बातों पर इतना भरोसा करने के लिए धन्यवाद दिया और उन्हें मेरे पीछे आने का इशारा किया। जल्द ही हिरणों की एक लंबी कतार, दृढ़ कदमों से चलते हुए, अपनी प्रेम की भूमि को वापस पाने के लिए आगे बढ़ी।

वह सपना इतना स्फूर्तिदायक और जीवंत था कि नींद से जागते ही मेरा पूरा शरीर उत्साह से भर उठा। मैं अपने साथी हिरणों तक पहुँचने में एक पल भी बर्बाद नहीं करना चाहता था। पुरानी दुश्मनी हमेशा के लिए भुला देने में एक अलग ही आनंद था। फिर मैं पानी की पाइपलाइन के किनारे-किनारे चलने लगा।

मैंने सोचा, जब मैं उस दीवार के पास खड़ा था जहाँ से पानी का पाइप चिड़ियाघर परिसर में प्रवेश करता था, कि इस जगह को छोड़े हुए बहुत समय हो गया है और तब से कुछ भी नहीं बदला है। दीवार में बना संकरा रास्ता अब जंगली वनस्पतियों से ढका हुआ था, लेकिन मुझे उसे ढूंढने में ज़रा भी समय नहीं लगा। दीवार के किनारे पड़े पत्थरों की वजह से ही मैं उस रास्ते की ऊँचाई तक पहुँच पाया। घनी वनस्पतियों को हटाकर और उस संकरे रास्ते से रेंगते हुए निकलना मेरे लिए कोई मुश्किल काम नहीं

था, क्योंकि मैं इसके लिए तैयार था।

चिड़ियाघर में प्रवेश करते ही उस भयानक दुर्गंध ने मेरा स्वागत किया। मुझे तुरंत वे बंद कमरे याद आ गए जहाँ से वह दुर्गंध आ रही थी। यह याद आते ही मेरे शरीर में रोमांच की एक लहर दौड़ गई कि मैं अपने जीवन के सबसे बड़े अभियान को पूरा करने के बेहद करीब था।

मैं सावधानी से दबे पांव अपने गंतव्य की ओर बढ़ा। जरा सी भी आवाज सुनाई देती तो मैं बड़े-बड़े पेड़ों के पीछे छिप जाता था।

जैसे ही मैंने उन जुड़वां पेड़ों को देखा, मेरे भीतर प्रेम की गहरी भावना उमड़ उठी। मुझे हमेशा से यही लगता था कि वे मेरे आंसुओं से पैदा हुए हैं। इस तार की बाड़ वाले इलाके से भागने के बाद से यहाँ कुछ भी नहीं बदला था।

अब मुझे वह शेड दिखाई दे रहा था जिसकी तीन तरफ से दीवारें पारदर्शी थीं, और जहाँ मैं अक्सर बारिश की बूंदों की सुंदरता देखा करता था। मेरे साथी हिरण गहरी नींद में सो रहे थे। अब बारिश की कोई संभावना नहीं थी, इसलिए उनमें से कुछ शेड के बाहर घास पर सो रहे थे। चारों तरफ घना अंधेरा था और सोते हुए हिरणों को निहारते हुए, जो मासूम और असहाय लग रहे थे, मेरे मन में उनके लिए प्रेम की लहर दौड़ गई। अब उनकी संख्या अधिक लग रही थी। शायद कुछ नए हिरणों के जन्म के कारण ऐसा हो रहा था, मैंने सोचा, मुझे पास के पिंजरे में मादा हिरण और नर हिरण के बीच हुए मिलन की याद आ गई। मैं अब और इंतजार नहीं कर सकती थी कि बाड़े के अंदर जाकर उन्हें अपनी अनोखी कहानी सुनाऊं। मैं उन दो पेड़ों की ओर चल पड़ी जो मुझे देखकर बहुत खुश हुए।

अब मुझे उनकी भावनाओं को समझने में कोई कठिनाई नहीं हो रही थी। मुझे अच्छी तरह याद था कि मुझे तार की बाड़ को कहाँ धकेलना है ताकि एक संकरा छेद बन सके। और थोड़ी देर बाद, मैं पिंजरे के अंदर था।

वे सब मेरे सामने बैठे थे, मुझे हैरानी से देख रहे थे, मानो उनके मन में सैकड़ों सवाल उठ रहे हों और वे जवाब पाने के लिए बेताब हों। उन्हें जगाने में मुझे ज्यादा समय नहीं लगा, लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि उनमें से कोई भी मुझे पहचान नहीं पाया।

लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मैं उन सभी को पहचान सकता था, सिवाय कुछ युवा

हिरणों के, जिनके बारे में मुझे पता था कि वे मेरे यहाँ से भाग जाने के बाद इसी पिंजरे में पैदा हुए थे।

वे सब कमोबेश एक जैसे ही दिखते थे, और इस घेरे से निकलने के बाद से समय बीतने का उन पर कोई खास असर नहीं पड़ा था। लेकिन क्या समय बीतने से मेरे चेहरे में इतना बदलाव आ गया है कि उनमें से कोई भी मुझे पहचान नहीं पा रहा है, मैंने सोचा।

मैंने उन सभी को देखा, कुछ क्षणों के लिए अपनी निगाहें उन पर टिकाए रखीं। अचानक मुझे लगा कि रात का अंधेरा उनसे आत्मीय बातचीत शुरू करने के लिए अनुकूल है। दिन के समय ध्यान भटकना अधिक होता है, और रात के समय, क्योंकि चीजें हमें कम स्पष्ट दिखाई देती हैं, हमारे कान अधिक सतर्क और ग्रहणशील हो जाते हैं।

'प्रिय मित्रों,' मैंने भावुकता से भरते हुए कहना शुरू किया। 'हालांकि आपमें से किसी ने मुझे पहचाना नहीं है, लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं आपमें से ही एक हूं, कि लगभग डेढ़ साल पहले एक रात मैं इस जगह से भाग निकला था।'

मैंने अपने बारे में संक्षेप में बताया और श्रोताओं की प्रतिक्रिया देखने के लिए कुछ देर रुका। उनमें से अधिकतर लोग सदमे और अविश्वास की स्थिति में थे। धीरे-धीरे उनके चेहरों पर बदलाव आया। कुछ पल पुरानी यादों में खो जाने पर वे सब मुझे पहचान गए। हालांकि, उनमें से अधिकतर लोग मुझे अविश्वास भरी निगाहों से देखते रहे, मानो मैं कोई असली हिरण नहीं बल्कि कोई परग्रही प्राणी हूँ।

मैंने उनके आश्चर्य को ध्यान में रखा क्योंकि मेरे बारे में, मेरे भागने के बारे में, पिछले डेढ़ साल के मेरे जीवन के बारे में और सबसे बढ़कर, इस तार की बाड़ वाले क्षेत्र में मेरी वापसी के बारे में उनके कई अनुत्तरित प्रश्न थे, जिससे वे पूरी तरह से हैरान रह गए होंगे।

'तुम इस जगह से कैसे भागे और अब वापस कैसे आ गए? हमें तो चारों ओर लगी तार की बाड़ में एक छोटी सी जगह भी नज़र नहीं आ रही।' एक युवा हिरण ने अपने मन में यह सवाल उठाया, जो शायद कई अन्य हिरणों के मन में भी रहा होगा।

मैंने आत्मविश्वास से कहा, 'मुझे इस जगह से निकलने का रास्ता खोजने में बहुत समय लगा, और हाँ, अब यह हम सभी के लिए आसानी से उपलब्ध है, जैसे ही हम इस जगह को छोड़ने का फैसला करते हैं।' मुझे उम्मीद थी कि मेरे शब्द इस जगह को

छोड़ने की उनकी उम्मीद को बढ़ाएंगे।
'यह कहाँ है?' एक जिज्ञासु हिरण ने तार की बाड़ के चारों ओर उत्सुकता से देखते हुए पूछा।
मैं बाड़े से निकलने का गुप्त रास्ता बताने ही वाला था कि तभी मुझे सूझबूझ सूझी। अगर मैं उन्हें तार की बाड़ का वह हिस्सा दिखा दूं, जो दो पेड़ों के बीच फंसा हुआ है और थोड़ा हिलता-डुलता है और पेड़ों के बीच की पतली सी जगह से तभी निकलेगा जब कोई उसे ज़ोर से धक्का देगा, तो वे शायद अभी ही उसे आज़माने लगें और रात के पहरेदारों में से किसी एक का ध्यान अपनी ओर खींच लें। ऐसे में तो हमारे यहां से निकलने का मौका ही हाथ से निकल जाएगा। नहीं, मैं किसी को भी बाहर जाने का रास्ता तब तक नहीं दिखाऊंगा जब तक वे मेरे साथ जाने के लिए तैयार न हों, मैंने सोचा। मैंने घुमा-फिराकर जवाब देने का फैसला किया।
'यह बिल्कुल वहीं है, मेरे दोस्त,' मैंने फिर से स्पष्ट स्वर में कहना शुरू किया। 'नहीं तो मैं बिना किसी चोट के अंदर नहीं आ पाता। लेकिन सबसे पहले, मैं आपको बता दूं कि मैं इतने लंबे समय के बाद एक खास मकसद से यहां वापस आया हूं। और वह मकसद है पिछले डेढ़ साल से हमारे जंगल में बिताए अपने जीवन की कहानी आप सभी को सुनाना।'
'क्या तुमने इस जगह से जाने के बाद अपना समय जंगल में बिताया?' एक हिरणी ने अविश्वास से पूछा। वह मुझसे थोड़ी बड़ी थी, और मुझे याद था कि वह हमेशा हिरणियों के उस झुंड में सबसे आगे रहती थी जिसने यहाँ रहते हुए मेरा बेरहमी से मज़ाक उड़ाया था।
'हां, मैं वहां मौजूद था,' मैंने सीधे-सादे शब्दों में कहा।
'तुम वहाँ कैसे पहुँचे?' उसी हिरण ने संदेहपूर्वक पूछा। 'यह यहाँ से बहुत दूर होगा।'
'हां, यह यहां से काफी दूर है। दरअसल, लगातार दो दिन चलने के बाद, मैं उस नाले के पथरीले किनारे पर पहुंचा जो हमारे जंगल के किनारे बहता था,' मैंने जवाब दिया।
'लेकिन तुमने हमें यह नहीं बताया कि तुम वहाँ कैसे पहुँचे। मेरा मतलब है, तुम्हें जंगल की ओर जाने वाला रास्ता कैसे पता चला?' हिरण ने ज़ोर देकर कहा। उसने जंगल को 'हमारा जंगल' कहने से परहेज़ किया, जैसा कि मैं हमेशा उसे कहता था।
सीधे शब्दों में कहें तो, मैं कोई पथप्रदर्शक नहीं था, बल्कि मुझे एक मार्गदर्शक मिला जिसने चमत्कारिक रूप से मुझे हमारे जंगल तक पहुँचा दिया, और इस पूरी घटना का

सबसे अजीब हिस्सा यह है कि मैं उसे केवल एक बार ही देख सका।
‘तो फिर इसने आपको दिशा कैसे दिखाई?’
‘उसकी पुकार से; एक तीखी चीख। जहाँ से भी वह पुकार आती, मैं उसी दिशा में चल पड़ता। एक पल के लिए भी मुझे यह संदेह नहीं हुआ कि मैं गुमराह हो सकता हूँ। और मेरा विश्वास सही साबित हुआ।’
‘वह कौन था?’ उसकी आवाज जिज्ञासा से भरी हुई थी।
मैंने अपने सामने बैठे हिरण पर एक सरसरी नजर डाली, जो मेरे जवाब को सुनने के लिए उत्सुकता से तड़प रहा था।
मैंने रुक-रुक कर बोलते हुए कहा, 'यह एक पक्षी था।'
तुरंत ही दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा; यह स्पष्ट हो गया कि वे मेरी कही बात पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे।
हां, मेरी कहानी इतनी अनूठी और अविश्वसनीय है कि अगर उन्हें इस पर गहरा अविश्वास है तो मैं उन्हें दोष नहीं दे सकती, मैंने खुद से कहा, बिना इस बात का बुरा माने कि वे मुझ पर और मेरे शब्दों पर अविश्वास कर रहे हैं।
मेरे मित्रों, आपकी बुद्धिमत्ता और कल्पना शक्ति के प्रति पूरे सम्मान के साथ, मैं आपसे स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ कि इस बाड़े में बैठे-बैठे चिड़ियाघर से जंगल तक की मेरी यात्रा की कल्पना करना वास्तव में बहुत कठिन है। इसलिए मैं आपसे केवल इतना ही निवेदन करता हूँ कि कृपया मेरी पूरी यात्रा को ध्यान से सुनें। जैसे-जैसे मैं इसका विस्तृत वर्णन करूँगा, आपको लगेगा कि यह असंभव सी लगने वाली यात्रा वास्तव में उतनी असंभव नहीं थी,’ मैंने भावुक होकर कहा।
अचानक मुझे उस बूढ़ी हिरणी की याद आ गई जिसने एक बार मुझसे कहा था कि वह मुझे बहुत मानती है क्योंकि मैं हमेशा अपने दिल की सुनती हूँ। मैंने झुंड में उसे ढूँढा। हैरानी की बात यह थी कि वह वहाँ नहीं थी। मैंने तुरंत उसके बारे में पूछताछ की।
“कुछ दिनों से उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। सफेद लबादा पहने एक आदमी कई बार उसका हालचाल पूछने आया, और फिर एक दिन वे उसे वैन में बिठाकर ले गए। तब से हमने उसे नहीं देखा है,” उसकी उम्र की एक बूढ़ी हिरणी ने बताया।
मैंने दर्द से गहरी आह भरी। मैं जानती थी कि उसका जीवन समाप्त होने वाला था, इसलिए चिड़ियाघर के कर्मचारियों ने उसे वहाँ से हटा दिया था। वे भी नहीं चाहते थे कि दूसरे हिरणों को पता चले कि उनके जीवन के अंत में प्राकृतिक मृत्यु जैसी कोई

चीज़ भी होती है। मैंने सभी हिरणों को स्नेह से देखा; मेरे मन में प्रेम की गहरी भावना उमड़ आई, और मुझे लगा कि चाहे वे मेरा मज़ाक उड़ाएँ, मुझे चिढ़ाएँ या भविष्य में मुझे शारीरिक रूप से नुकसान पहुँचाने की कोशिश करें, मैं उनमें से किसी के प्रति कभी कोई द्वेष नहीं रखूँगी। मेरे लिए फिर कभी किसी के प्रति दुर्भावना रखना असंभव था।

“अच्छा, तो आप अपनी कहानी शुरू कीजिए। आप हमारे मेहमान हैं, इसलिए हम आपको निराश नहीं करना चाहते। आपकी कहानी सुनने के लिए आज रात थोड़ी नींद कुर्बान करने में हमें कोई आपत्ति नहीं है,” एक हिरण ने कहा। वह लगभग मेरी ही उम्र का था और हिरणों के झुंड का स्वघोषित नेता लग रहा था।

‘सबसे पहले, मैं आपको उस पक्षी की याद दिलाना चाहूँगा जो अचानक कहीं से आया और चिड़ियाघर ले जाते समय एक पशु वाहन में मेरी पीठ पर बैठ गया। उसकी आवाज़ असामान्य रूप से तीखी और आसानी से पहचानी जा सकती थी। क्या आपको वह पक्षी याद है?’ मैंने उन सभी से पूछा, यह उम्मीद करते हुए कि उन्हें यह एहसास हो कि वे भी किसी न किसी रूप में हमारे जंगल तक की मेरी यात्रा का हिस्सा थे।

एक पल के लिए, मेरे साथ पशु वाहन में मौजूद सभी लोग चिंतनशील मनोदशा में थे, और फिर उन्होंने सामूहिक रूप से 'नहीं' कहने के लिए अपने सिर हिलाए।

‘कोई बात नहीं दोस्तों,’ मैंने कहना शुरू किया। ‘यह वही पक्षी था जिसने मुझे रास्ता दिखाया, मुझे हमारे जंगल तक की पूरी राह दिखाई। चलिए, उस पल से शुरू करते हैं जब मैं इस पिंजरे से बाहर निकला...’ मैंने इस तार की बाड़ वाले इलाके से निकलने का रास्ता बताए बिना अपनी बात जारी रखी।

मैंने काफी देर तक बातें कीं और बीच-बीच में अपनी आँखें बंद कर लीं, क्योंकि अपनी यात्रा के बारे में बताना उन दुर्लभ पलों को फिर से जीने जैसा था। एक समय ऐसा आया जब मैं अपनी कहानी में इतना मग्न हो गया कि आखिरकार मैं भूल ही गया कि मेरे सामने इतने सारे श्रोता बैठे हैं। मेरे शब्द मेरे प्यार और भरोसे से भरे हुए थे।

अपनी लंबी कहानी खत्म करते ही मेरी आँखें नम हो गईं। हिरणों के बीच एकदम सन्नाटा छा गया। फिर से एक-दूसरे की ओर देखने का सिलसिला शुरू हुआ, मानो वे मेरी कहानी पर एक-दूसरे की प्रतिक्रिया जानना चाहते हों। मैंने उन सभी को गंभीरता से देखा, उम्मीद थी कि वे मुझसे हमारे जंगल के बारे में कुछ पूछेंगे। लेकिन उन्होंने

मुझसे जो पहला सवाल पूछा, वह थोड़ा निराशाजनक था।
पिंजरे में मौजूद सबसे उम्रदराज हिरणियों में से एक ने अपनी आवाज में स्पष्ट हिचकिचाहट के साथ कहना शुरू किया, 'आपकी कहानी वाकई चौंकाने वाली है। लेकिन एक बात अभी तक हमारे लिए स्पष्ट नहीं है। जंगल से यहां आने की संभावना होने के बावजूद आप यहां क्यों आए?'
मैंने कांपती हुई आवाज़ में कहा, 'इसका सीधा सा कारण यह है कि मैं आप सभी से प्यार करता हूँ।'
काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा और फिर एक-दूसरे की ओर निगाहों का आदान-प्रदान हुआ।
'तो आप हमारे साथ रहने के लिए वापस आ गए हैं। मैं, हमारे पूरे झुंड की ओर से, आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ,' समूह के एक अन्य नेता ने कुछ आत्मसंतुष्टि भरे लहजे में कहा।
उसके शब्दों से स्तब्ध होकर मैं कुछ देर के लिए अवाक रह गया, और जब मेरे मुंह से शब्द वापस निकले तो वे धीमे और रुक-रुक कर निकल रहे थे।
नहीं, मैं यहाँ रहने नहीं आया हूँ, बल्कि आप सबको अपने साथ हमारे जंगल में ले जाने आया हूँ। वही हमारा असली घर है, जहाँ हम कहीं और से ज़्यादा आनंद से रह सकते हैं। पिछले डेढ़ साल से हमारे जंगल में रहने के दौरान मुझे इस बात का एहसास हुआ। अब मैं अपनी जान जोखिम में डालकर आप सबके साथ अपने इस अनुभव को साझा करने आया हूँ।
'यह तो बहुत अजीब है। क्या तुम्हें याद नहीं कि एक बार तुम्हारी माँ को उसी जंगल में एक बाघ ने बेरहमी से मार डाला था, तब से तुम उस जंगल से इतनी नफरत करने लगे थे कि उससे हमेशा के लिए दूर रहना चाहते थे?' नेता ने कुछ चुनौती भरे लहजे में पूछा, मानो जंगल में वापस आने का मेरा निमंत्रण उनके वर्तमान जीवन को नीचा दिखाने जैसा था।
मैं जवाब देने ही वाला था कि तभी एक हिरण बीच में आ गया।
अरे वाह, लंबी सैर के बाद तुम थक गए होगे। अब थोड़ा आराम कर लो, कल हम और बात कर सकते हैं। बस एक-दो बातें हैं जो मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ। हमें नहीं पता कि उस जंगल में वापस जाकर तुम्हें क्या मिला होगा, लेकिन यहाँ हमारा जीवन अब पहले जैसा नहीं रहा। यहाँ अब हमें आनंद और मनोरंजन का ऐसा स्रोत मिला है जिसकी

कल्पना तुम दुनिया के किसी भी जंगल में नहीं कर सकते। कम से कम दो दिन हमारे यहाँ मेहमान बनकर रहो और खुद देख लो। कौन जाने, शायद तुम्हें यह जगह रहने के लिए बेहतर लगने लगे,' वह रुकी और सभी हिरणों पर एक रहस्यमयी नज़र डाली, जबकि लगभग सभी ने उसे तिरस्कार भरी मुस्कान दी।

उसकी बातों से उत्सुक होकर मैंने चारों ओर एक नज़र डाली। पिंजरा बिलकुल वैसा ही दिख रहा था जैसा मेरे यहाँ से जाने के बाद था।

धीरे-धीरे सभी हिरण मुझे छोड़कर चले गए और शुभ रात्रि का अभिवादन किया। अकेला रह गया, हिरणों की इस प्रतिक्रिया से थोड़ा निराश होकर, मैं पानी के कुंड की ओर चल पड़ा। अब मैं बाड़े के अंदर अपनी पसंदीदा जगह पर बैठ गया। कुंड फिर से काई की एक परत से ढका हुआ था, सिवाय उस जगह के जहाँ दिन के एक निश्चित समय पर नल से पानी गिरता था। काई की परत मोटी हो गई थी, क्योंकि लंबे समय से किसी ने भी इसे हटाने की जहमत नहीं उठाई थी। मैंने पानी चखा। यह सुखद रूप से ठंडा था, लेकिन इसमें नदी के पानी जैसी ऊर्जा और प्रवाह की कमी थी।

पूल के पास बैठे-बैठे पुरानी यादें उमड़ पड़ीं। अचानक कदमों की आहट सुनाई दी। मैंने पिंजरे के बाहर सड़क की ओर देखा। वह रात का पहरेदार था। जैसे ही वह पिंजरे के पास पहुँचा, मैंने उसे पहचान लिया। यह वही आदमी था जिसने कभी मेरे मुँह में कोई नशीला पेय डाला था। यह कितनी अजीब बात है कि किसी नशीले पदार्थ के प्रभाव में आकर किसी को अपने जीवन के आने वाले दिनों की कोई महत्वपूर्ण घटना दिखाई दे सकती है, मैंने सोचा और उठकर सड़क को पिंजरे से अलग करने वाली तार की बाड़ की ओर चल पड़ा।

मुझे अपने पास आते देख, रात का पहरेदार पिंजरे के सामने रुक गया। उसके पास पहुँचकर, मैंने अपना मुँह ऊपर उठाया और किसी तीखे स्वाद वाले तरल पदार्थ के गले से नीचे उतरने का इंतज़ार करने लगा।

कुछ पल बीत गए, पर कुछ नहीं हुआ। क्या वह आज रात बोतल लेकर नहीं आया है या मेरा संदेश पढ़ नहीं पाया? मैंने सोचा और उसे देखने के लिए अपना सिर नीचे झुकाया। रात के पहरेदार ने मुझे देखकर मुस्कुराया, एक सौम्य और दयालु मुस्कान; जो उसके सुस्त स्वभाव से बिल्कुल अलग थी। उसके बाल घने और सफ़ेद थे, और झुर्रियों ने उसके चेहरे पर स्थायी निशान छोड़ दिए थे। अब मैंने देखा कि उसने अपनी जेब में हाथ डाला और ठीक वही बोतल निकाली। उसने ढक्कन खोला, दो घूंट पिए

और ढक्कन कसकर बंद कर दिया, फिर बोतल को अपनी पैंट की जेब में रख लिया। तुरंत ही, वही मनमोहक खुशबू हवा में फैल गई।

अब उसने तार की बाड़ में बने छेद से अपना हाथ अंदर डाला और मेरे सिर पर थपथपाया, मेरी गर्दन सहलाई और कोमलता से मेरे पूरे शरीर पर हाथ फेरा। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि चिड़ियाघर का एक गंभीर दिखने वाला रात्रि रक्षक मेरे प्रति इतना स्नेह दिखा सकता है। उसने दबी आवाज़ में मुझसे कुछ कहा। मैं जानती थी कि वे प्रेम के शब्द थे, क्योंकि चाहे वे किसी भी भाषा में बोले गए हों, उनमें एक ही भावना और कंपन थी।

कुछ देर बाद वह चला गया। उसने मुझे वह पेय क्यों नहीं दिया? क्या इसका मतलब यह है कि अब मुझे अपने भविष्य के बारे में जानने की ज़रूरत नहीं है ताकि मैं और अधिक प्रोत्साहित और एकाग्रचित्त महसूस कर सकूँ? अचानक मेरे विचारों का सिलसिला टूट गया क्योंकि मेरा ध्यान इस बाड़े के बाईं ओर स्थित पिंजरे की ओर गया।

जब मैं चिड़ियाघर से भागा था, तब से यह बाड़ा खाली पड़ा था। अब, यह बाड़ा अच्छी तरह से रखा हुआ लग रहा था, घास ठीक से कटी हुई थी और पेड़ छंटे हुए थे। हालाँकि इस पिंजरे में आरामदायक जीवन था, फिर भी इसमें कुछ ऐसा था जो हमारे पिंजरे से अलग था। जब मैंने कुछ देर तक इस बाड़े को देखा, तो मुझे सुखद आश्चर्य के साथ पता चला कि यह बाड़ा हिरणों के बाड़ों से थोड़ा अलग क्यों था।

यह चारों तरफ से ही नहीं बल्कि ऊपर से भी तार की बाड़ से घिरा हुआ था, जिससे यह एक विशाल बक्से जैसा दिखता था। इस पिंजरे में बने शेड के विपरीत, बगल वाले बाड़े में ईंट की दीवारों वाला एक छोटा सा घर था। आखिर यहाँ कौन सा जानवर हो सकता है जिसे इतनी अलग तरह की सुरक्षा और देखभाल की ज़रूरत हो? मैंने खुद से सवाल किया और ध्यान से देखा, लेकिन पिंजरे के अंदर कोई जीवित जानवर नहीं मिला। जो भी यहाँ रहता है, वह उस छोटे से घर के अंदर ही होगा और उनकी संख्या बहुत कम होगी, मैंने यही निष्कर्ष निकाला। जल्द ही मुझे नींद आ गई।

मुझे पता नहीं था कि मैं कितनी देर तक सोता रहा, लेकिन एक शोरगुल से मेरी नींद टूट गई, जिसने सुबह की सुखद शांति को भंग कर दिया। नींद के धुंधलेपन में मैंने

चारों ओर देखा और अचानक मेरे सामने एक असाधारण दृश्य देखकर मैं लगभग चौंक गया।

तार की बाड़ के पीछे, हमारे पिंजरे के बाईं ओर, दो बाघ थे, जो बेबसी भरी दहाड़ मार रहे थे और उस पिंजरे को घूर रहे थे, जहां तार की बाड़ के पास हिरणों का एक झुंड खड़ा था, जो बाघों का बेरहमी से मजाक उड़ा रहा था।

मेरी नींद तुरंत गायब हो गई, और मुझे यह समझने में कुछ पल लगे कि कल रात एक बूढ़े हिरण का अपने पिंजरे में खुशी और मनोरंजन के एक नए स्रोत के बारे में क्या मतलब था, जिसकी कल्पना दुनिया के किसी भी जंगल में नहीं की जा सकती थी।

वह बिल्कुल सही थी। भला कोई अपने शिकारियों के इतने करीब खड़े होकर उनका मजाक कैसे उड़ा सकता है, जबकि शिकारी गुस्से से आग बबूला हों और साथ ही अपने शिकार को सबक सिखाने में असमर्थ हों?

मेरे सामने घट रही इस घटना को देखकर मैं इतना स्तब्ध रह गया कि मेरी समझ ही स्तब्ध हो गई। जल्द ही कई और छोटी-छोटी बातें मेरी नजर में आईं। अब न केवल मादा हिरण बल्कि नर हिरण भी इस पिंजरे में आ गए थे और बाघों का मजाक उड़ा रहे थे। वैसे तो वे आमतौर पर अपने बाड़े में ही रहना पसंद करते थे।

दोनों बाघ उतने ही विशाल थे जितने मैंने पहले देखे थे। उनकी नम आँखों में निराशा और एक प्रकार की बेबसी झलक रही थी और उनका पूरा हावभाव बेचैनी से भरा था, मानो वे इस सीमित स्थान में रहने से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर कर रहे हों। मैंने उन्हें अपने पिंजरे के चारों ओर चक्कर लगाते देखा, मानो वहाँ से निकलने का रास्ता खोज रहे हों, और मुझे यहाँ से भागने की अपनी बेताब कोशिश याद आ गई। एक दिन, तुम भी यहाँ से निकलने का रास्ता खोज लोगे, मेरे दोस्तों, मैंने चुपचाप बाघों से कहा।

लेकिन हिरणों ने चिड़ियाघर में मिलने वाले मनोरंजन के साधनों का भरपूर इस्तेमाल करना जारी रखा। जब भी पास के पिंजरे में बंद बाघों का जोड़ा (एक बाघ और एक बाघिन) तार की बाड़ से दूर जाता, हिरणों का झुंड एक साथ तीखी आवाज निकालकर बाघों का ध्यान अपनी ओर खींचता। जब भी बाघ उनकी तरफ देखते, वे अपने कान जोर-जोर से फड़फड़ाते, जीभ बाहर निकालते और मुंह बनाते। उनमें से कुछ शिकारी जानवरों को चिढ़ाने के लिए कर्कश आवाज भी निकालते।

जब उनकी शरारतों से बाघ चिढ़ जाते, तो वे हिरणों पर झपटने के लिए उग्र रूप से हमला करते, लेकिन धातु के खंभों से समर्थित अभेद्य तार की बाड़ उनके प्रयासों को

विफल कर देती। धातु के प्रत्येक दो खंभों के बीच की दूरी लगभग बीस कदम थी।
जैसे ही बाघ तार की बाड़ की ओर दौड़े, सभी हिरण एक-दो कदम पीछे हट गए और बाघों के चेहरे पर साफ दिख रही हताशा को देखने लगे, क्योंकि उन्हें बाड़ के पास रुकना पड़ा था। बाघों की बेबसी भरी चीखों से हिरणों का मनोरंजन और भी बढ़ गया। कुछ बहुत छोटे हिरणों को छोड़कर, जिन्हें अभी इस खेल में आनंद का अनुभव नहीं हुआ था, सभी नर और मादा हिरण इस शोरगुल में खुशी-खुशी शामिल हो गए।
दिन बीतता गया और मैंने पाया कि न केवल हिरण बल्कि चिड़ियाघर में आने वाले दर्शक भी शिकारी और शिकार के बीच इस खेल को देखकर आनंद ले रहे थे। वे हिरणों का उत्साह बढ़ाते थे ताकि बाघ इतने क्रोधित हो जाएं कि वे बार-बार दहाड़ने लगें। अब इस पिंजरे के सामने जमा भीड़ पहले से कहीं अधिक थी।
शायद बाघ जितने उग्र होते थे, दर्शकों को उनकी परेशानी देखकर उतना ही आनंद आता था। इस तमाशे के एकमात्र अचंभित दर्शक मैं और कुछ हिरण के बच्चे थे, जो इतने छोटे थे कि उन्हें पता ही नहीं था कि शिकारी क्या होता है। पूरे दिन, किसी भी हिरण के पास मुझसे बात करने का समय नहीं था और न ही मुझे उनके पास जाने का मन हुआ।
हालांकि, दोपहर ढलते-ढलते, सभी थके-हारे हिरणों ने अपना निर्मम खेल रोक दिया। जल्द ही सभी नर हिरण अपने-अपने निर्धारित बाड़ों में चले गए। शाम ढल गई और चिड़ियाघर में एक शांत सन्नाटा छा गया।
मैंने अपने साथी हिरणों पर एक नज़र डाली और जान लिया कि जल्द ही नींद उन्हें अपनी गिरफ्त में ले लेगी। पिछली रात के विपरीत, शायद वे लंबे समय तक मेरी बात सुनने के लिए पर्याप्त विनम्र न हों। इसलिए मैंने बिना लाग-लपेट किए सीधे बोलना शुरू किया।
मैंने हल्के लहजे में पूछा, 'क्या बाघों का मजाक उड़ाना ही चिड़ियाघर का वह अनोखा मनोरंजन था जिसका जिक्र आपने कल रात किया था?'
उस बूढ़े हिरण ने, जिसने पिछली रात मुझसे यह बात कही थी, हाँ में सिर हिलाया।
लेकिन क्या बिना किसी उकसावे के किसी को शारीरिक या भावनात्मक रूप से प्रताड़ित करने और परेशान करने में सचमुच कोई आनंद है?' मैंने धीरे से पूछा, इस उम्मीद में कि मेरे शब्द श्रोताओं के मन में बैठ जाएंगे।
'बिना उकसावे के कहने का क्या मतलब है? क्या तुम बाघों के निर्मम व्यवहार से

अनजान हो?' एक हिरण ने गुस्से से कहा।

'क्या तुम्हें याद नहीं कि इस क्रूर बाघ जैसे प्राणी के धरती पर होने के कारण हममें से कितने लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है?' एक दूसरे हिरण ने लगभग चुनौती भरे लहजे में मुझसे पूछा। 'यहाँ हमारे पास उनसे जितना हो सके बेरहमी से बदला लेने का मौका है। इसके अलावा, तुम इतना बेतुका सवाल कैसे पूछ सकते हो? क्या तुम भूल गए हो कि तुम्हारी माँ को एक बाघ ने टुकड़े-टुकड़े कर दिया था? कौन जानता है, शायद वह उन्हीं में से एक हो?'

'नहीं,' मैंने शांत स्वर में कहना शुरू किया। 'मेरी माँ का हत्यारा यहाँ नहीं है। मेरी उससे जंगल में मुलाकात हुई थी,' मैं रुका और एक गहरी साँस लेते हुए बोला। 'और मैं आपको बस इतना ही बता सकता हूँ कि मेरे मन में उसके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी। मैंने उससे काफी देर तक बात की।'

'क्या तुमने अपनी मां के हत्यारे से बात की? क्या तुम्हें लगता है कि हम तुम्हारी इस मनगढ़ंत कहानी पर विश्वास कर लेंगे?' एक युवा हिरण ने घमंड से पूछा।

'नहीं, जब तक आप स्वयं इसका अनुभव न कर लें, तब तक मेरी किसी भी बात पर भरोसा न करें। मैं यहाँ अपने जंगल में हुए अपने अनुभव को आपके साथ साझा करने आया हूँ। मेरी माँ के हत्यारे से मिलना भी उनमें से एक था,' मैंने गरिमापूर्ण लहजे में कहा।

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, फिर एक बूढ़े हिरण ने कहा, 'अच्छा, हमें उस बाघ के साथ हुई अपनी मुठभेड़ के बारे में बताओ जिसने तुम्हारी माँ को मार डाला। लेकिन संक्षेप में बताओ।'

मैंने कुछ देर तक बात की और अपने भावपूर्ण भाषण का समापन उन सभी से एक अपील के साथ किया, 'मित्रों, हम सभी एक आनंदमय और परिपूर्ण जीवन जीने के लिए धन्य हैं। हम प्रकृति माता की संतान हैं और हमें उनके साथ ही रहना चाहिए क्योंकि वही हमारा असली घर है। हम अपने जंगल में बिना कुछ खोए बहुत खुश रह सकते हैं। हम प्रकृति के कई ऐसे आयामों का पता लगाएंगे जो अब तक हमारे लिए अज्ञात हैं। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं इतनी अच्छी तरह तैर सकता हूँ... आप सभी से मेरा हार्दिक निमंत्रण है कि कृपया आइए और अपने जंगल को अपना बनाइए क्योंकि वहाँ हमारा जीवन और भी रंगीन होगा। हम अधिक ऊर्जावान और जीवन से भरपूर होंगे।'

अपनी बात खत्म करते ही मैंने उन सभी को चिंता भरी नजरों से देखा, यह जानने के लिए उत्सुक था कि क्या मेरे शब्दों का उन पर कोई असर हुआ है। मुझे यह देखकर निराशा हुई कि उनमें से कुछ खर्राटे ले रहे थे। जो लोग शिष्टतापूर्वक जागते रहे, उन पर मेरे शब्दों का जरा भी प्रभाव नहीं पड़ा।

'लेकिन आप हमें जंगल में ले जाने पर इतने अड़े क्यों हैं जबकि हम सब यहाँ बहुत खुश हैं और हमारी सभी ज़रूरतें पूरी हो चुकी हैं?' एक हिरण ने संदेह से पूछा।

'यहाँ से भागने से पहले मैंने कुछ समय के लिए इस तार की बाड़ वाले इलाके में बिताया था। मैंने इस घेरे के अंदर और बाहर के जीवन को करीब से देखा है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी सच्ची खुशी वहीं है जहाँ स्वतंत्रता है, जहाँ हम हर दिन नई चीजें सीखते हैं और इसके लिए हमारे जंगल से बेहतर जगह और क्या हो सकती है?'

"लेकिन हमारे लिए खुशी वहीं है जहाँ कोई चिंता नहीं है। और यहाँ हमारा जीवन किसी भी चीज़ की चिंता से मुक्त है। यहाँ हमारी सभी ज़रूरतों का ख्याल रखा जाता है," एक और हिरण ने अपनी बात रखी।

मैंने उन्हें यह समझाने की जितनी कोशिश की कि हमारे जंगल की सुंदरता और भव्यता अतुलनीय है, उतनी ही अधिक प्रतिवाद वे यह साबित करने के लिए लेकर आए कि इस बाड़े से बेहतर जीवन प्रदान करने वाला कोई अन्य स्थान नहीं है।

अंततः, मैंने उस रात हार मान ली और अगली रात उनमें से कम से कम कुछ को अपने साथ जंगल में वापस चलने के लिए मनाने की योजना बनाने लगा। मैं पूल के पास अपनी पसंदीदा जगह पर लौट आया और वहाँ आराम से बैठ गया।

कल मैं उन्हें जंगल में लगी आग और एक बड़े पत्थर के अंदर रहने वाले घोंघों के बारे में बताऊँगा। उनमें से कुछ ज़रूर यह जानकर हैरान होंगे कि घाटी के दूसरी ओर, हमारे जंगल के पास वाली पहाड़ी, जो भी कहा जाता है, उसे दोहराती है। मैं उनके दिमाग में यह बात बिठा दूँगा कि जंगल में हर चीज़ किसी न किसी रूप में जीवित है... मैं सोच रहा था। कौन जाने, शायद कल मैं उनमें से कुछ को समझाने में कामयाब हो जाऊँ।

लेकिन अगली शाम मेरी कहानी सुनने वालों की संख्या और भी कम हो गई। मेरे खत्म होने पर, उनमें से अधिकांश ने राहत की सांस ली, मानो वे केवल शिष्टाचारवश ही मेरी बात सुन रहे थे और चाहते थे कि मैं जल्द से जल्द अपनी कहानी समाप्त कर दूं।

फिर भी मैं कुछ और प्रयास करूंगा। कौन जाने, शायद कम से कम एक हिरण को

मेरा यह साहसिक कार्य पसंद आ जाए, मैंने उस रात अपने सोने के स्थान पर लौटते समय खुद से कहा।

अगली सुबह, नर और मादा हिरण फिर से भोर होते ही अपने सबसे बड़े मनोरंजन में व्यस्त हो गए। उन्होंने सुबह-सुबह एक साथ तीखी आवाजें निकालीं, जो मानो उनके शिकारियों को जगाने की चेतावनी थीं। लेकिन मुझे यह चेतावनी कम और एक चेतावनी की घंटी ज़्यादा लगी, जो शिकारियों को बता रही थी कि अब उनका दिन भर का संघर्ष शुरू होने वाला है।

दिनभर, मैंने बार-बार वही नाटक अपनी आँखों के सामने दोहराते देखा। इस पूरे तमाशे के मूक दर्शक केवल मैं और कुछ हिरण के बच्चे थे। आज सुबह जब मैं अपने साथी हिरणों और बाघों को देख रहा था, तब मुझे एक नई बात समझ में आई।

नर हिरणों में भी बाघों के प्रति वैसी ही शत्रुता थी, भले ही वे मादा हिरणों से अधिक शक्तिशाली थे। अपने शिकारियों का मज़ाक उड़ाने के मामले में भी उनका व्यवहार एक जैसा ही था।

लेकिन बाघ हिरणों के इस झुंड को क्यों नहीं अनदेखा करते जो उन्हें हर दिन एक ही तरह से चिढ़ाते हैं? क्या उन्हें नहीं पता कि हिरण खतरे से बाहर हैं? अगर वे इस चिढ़ाने पर प्रतिक्रिया देना बंद कर दें, तो शायद हिरणों की उन्हें चिढ़ाने में रुचि ही खत्म हो जाए।

क्या यह संभव है कि बाघ जानबूझकर क्रोध का नाटक करते हैं और रोंगटे खड़े कर देने वाली दहाड़ें मारते हैं ताकि हिरणों को लगे कि वे बाघों को परेशान करने में सफल हो गए हैं, जबकि वास्तव में, अपने भीतर बाघ कभी अपना आपा नहीं खोते? कौन जानता है, शायद वे इस तमाशे को हमेशा जारी रखना चाहते हों। कौन जानता है, शायद उन्हें इतने सारे दर्शकों का ध्यान आकर्षित करना अच्छा लगता हो।

अगर यह बाघों की असली योजना थी, तो हिरणों ने पहले कभी इस तरह मूर्खता नहीं की थी, मैंने सोचा और आज शाम इस बारे में हिरणों से बात करने का फैसला किया। कौन जाने, शायद यह प्रस्ताव उन्हें समझ में आ जाए, मैंने सोचा और उम्मीद भी जताई। मैं उन सभी को अपने साथ ले जाना चाहता था, अगर सभी को नहीं तो जितने हो सके उतने को, और इसके लिए मैं कुछ भी करने को तैयार था।

उस शाम, जैसा कि मैंने पहले से योजना बनाई थी, मैंने उन्हें टिड्डे, जुगनू और तितलियों की कहानी सुनाई। और फिर मैंने उन्हें जंगल में लगी आग की कहानी एक नए अंदाज में, और भी अधिक तीव्रता और प्रेम के साथ दोबारा सुनाई।

'मेरे प्यारे दोस्तों,' मैंने खुद को कहते सुना, उनसे भावुक अपील करते हुए, 'यही हमारे जंगल की खूबसूरती है। मूसलाधार बारिश हो या भयंकर आग, कोई भी चीज़ इसकी आत्मा को हमेशा के लिए नहीं बुझा सकती। एक बार जब जंगल जलकर राख हो गया था, तो मैंने सोचा था कि अब वहाँ कोई पक्षी गीत नहीं गाएगा, लेकिन मेरा यह सोचना गलत साबित हुआ, नए पक्षी आए, नई तितलियाँ आईं—पता नहीं कहाँ से—और नए पौधे फिर से उगने लगे। यही हमारा जंगल है—अदम्य और इतना प्रेममय कि यह हमेशा किसी को भी अपनी गोद में समेटने के लिए तैयार रहता है। और इसकी गोद उपजाऊ है और हर ताज़ी और जीवंत चीज़ से भरी हुई है। पूरा जंगल जीवित है और इसके पत्थर और चट्टानें भी।'

मैंने गहरी सांस लेने के लिए थोड़ी देर रुककर फिर बोलना शुरू किया, 'आपको बार-बार जंगल में अपने साथ आने के लिए आमंत्रित करने में मेरा कोई स्वार्थ नहीं है। मेरा एकमात्र उद्देश्य आपको अधिक आनंदमय जीवन जीने का तरीका दिखाना है। और अगर आपको यह पसंद नहीं आता है, तो आप फिर से इस जगह पर आने के लिए स्वतंत्र हैं।'

'बातें इतनी आसान नहीं हैं जितनी आप कहते हैं,' एक नन्हे हिरण ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'कौन जाने, हमारी गैरमौजूदगी में, वे हिरणों का एक और झुंड ले आएं और उन्हें इस बाड़े में रख दें? ऐसे में, हम अपना घर खो देंगे, भले ही हम आपके जंगल में कुछ समय बिताने के बाद वापस यहाँ आना चाहें।'

'यह जंगल सिर्फ मेरा नहीं है, मेरे दोस्त। यह हम सबका है। और बिना जरा सा भी जोखिम उठाए हम अपने जीवन में बेहतर बदलाव की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?'

'हमारी जिंदगी पहले से ही बेहतरीन है। इसलिए इसे और बेहतर नहीं बनाया जा सकता। हम पहले कभी इतने खुश नहीं थे। क्या आपने नहीं देखा कि हम दिन भर उन कुख्यात दरिंदों का मजाक उड़ाते हुए कितने आनंदित रहते हैं? क्या कोई जंगल आपको ऐसा अवसर दे सकता है जहाँ आप अपने शिकारियों का इतनी नज़दीक से मजाक उड़ा सकें?'

मैं कुछ देर चुप रहा, अपने विचारों को इकट्ठा करता रहा, और फिर कहने लगा, 'क्या

कभी आपके मन में यह ख्याल आया है कि बाघ जानते हैं कि आप उनका मजाक उड़ा रहे हैं और वे अपने तरीके से इसका आनंद लेते हैं, कभी-कभी क्रोध और रोष का प्रदर्शन करते हैं जिससे आप दिन भर बाड़ों के बीच तार की बाड़ के पास खड़े-खड़े थक जाते हैं? वास्तव में, वे भी दिन भर आपके द्वारा किए जाने वाले हर काम में आनंद लेते हैं,' मैंने धीरे से कहा।

मेरे रुकते ही कई हिरण गुस्से से भड़क उठे। यहाँ तक कि यह सोचकर भी कि बाघ अप्रत्यक्ष रूप से उनका मज़ाक उड़ा रहे हैं, वे क्रोधित हो गए।

देखो, हमने तुम्हारी बेतुकी बातों को इतने लंबे समय तक महज़ पुरानी यादों के लिए बर्दाश्त किया है, सिर्फ़ इसलिए कि तुम लंबे समय से हमारे साथ हो, सिर्फ़ इसलिए कि तुम हमारे मेहमान बनकर आए हो। लेकिन यह मत सोचो कि अगर तुम हमारी खुशी को बिगाड़ने की कोशिश करोगे, हमारे मन में गलत शंकाएँ पैदा करोगे, तो हम तुम्हें लंबे समय तक सहन कर पाएँगे। जिस दिन से तुम यहाँ आए हो, पता नहीं कैसे, मुझे महसूस हुआ कि तुम हमारी खुशी से, हमारी उस छोटी सी दुनिया से जलते हो जहाँ दुख का कोई स्थान नहीं है।

तुम शुरू से ही जंगल की कहानी सुनाकर इसे बिगाड़ने की कोशिश कर रही हो, जिस पर हमें शक है कि तुमने सच में कभी जंगल देखा भी है या नहीं। फिर भी, अगर तुम हमें इस जगह को छोड़ने के लिए फिर से प्रभावित करने की कोशिश करो, हमारे वर्तमान घर के बारे में घुमा-फिराकर अपमानजनक बातें कहो, तो याद रखना कि हम जानते हैं कि जो कोई खुद को हमसे श्रेष्ठ साबित करने की कोशिश करता है, उससे कैसे निपटना है,' बूढ़ी हिरणी रुकी और सभी श्रोताओं की प्रतिक्रिया देखकर फिर बोली।

'यह मत सोचो कि मैं खुद को तानाशाह समझती हूँ और उम्मीद करती हूँ कि सभी हिरण मेरे आदेश का पालन करेंगे।' वह रुकी और पास में कतारों में बैठे हिरणों की ओर फिर से देखते हुए, संक्षिप्त और संयमित स्वर में बोली, 'अगर तुममें से किसी को भी लगता है कि वे बदमाश जानवर मेरा और तुम्हारा मज़ाक उड़ा रहे हैं, तो तुम उसके साथ उस आदर्श जंगल में जा सकते हो।'

किसी भी हिरण ने एक शब्द नहीं बोला; उनमें से कोई भी हिला तक नहीं।

बूढ़े हिरण ने मेरी ओर व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ देखा और दूसरे हिरण से दूसरा सवाल पूछा, 'क्या आपको लगता है कि इस दुनिया में रहने के लिए इससे बेहतर कोई

जगह हो सकती है?'

'नहीं,' हिरणों ने एक साथ कहा।

क्या कोई उसके साथ जाने को तैयार है? यदि हां, तो कृपया बेझिझक बताएं। हम आपके निर्णय का सम्मान करेंगे।

एक बार फिर मुझे सामूहिक स्वर में 'नहीं' सुनाई दिया। अंतिम पंक्ति में बैठे कुछ नन्हे हिरण ही चुप रहे और हम सभी को जिज्ञासा भरी निगाहों से देखते रहे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वास्तव में क्या हो रहा है।

अब उस बूढ़ी हिरणी ने मेरी ओर मुड़कर स्पष्ट स्वर में पूछा, "तो मेरे प्यारे देवदूत, क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हें यहाँ अपने जंगल की प्रशंसा करते हुए अपना समय बर्बाद करना चाहिए? क्या तुम्हें संदेश नहीं मिल गया?" उसके शब्दों में व्यंग्य स्पष्ट झलक रहा था।

सिर झुकाए, निराश होकर, मैंने धीरे से हां में सिर हिलाया।

मैंने खड़े होते हुए कहा, 'मैं जल्द ही निकल जाऊंगा,' और मैं पानी के कुंड की ओर चल पड़ा।

मैंने उदास मन से सोचा, "वे उन बाघों के साथ खेल में इतना क्रूर आनंद लेते हैं कि मैं उन्हें जो कुछ भी कहूँ, वे अनसुना कर देंगे।" अब मुझे इस बात की कोई उम्मीद नहीं थी कि उनमें से कोई अपना फैसला बदलेगा और मेरे साथ जंगल चलेगा। फिर भी, मुझे लगा कि उनके द्वारा मेरे साथ किए गए इस बुरे बर्ताव के बावजूद उनके प्रति मेरा प्यार ज़रा भी नहीं बदला। मुझे उन्हें दोष नहीं देना चाहिए। शायद जंगल की सुंदरता और जीवन का आनंद लेना उनकी नसीब में नहीं है, मैंने मन ही मन कहा।

मैंने अगली रात तब निकलने की योजना बनाई थी जब वे सब गहरी नींद में सो रहे हों। लेकिन जल्द ही मुझे भी नींद आ गई।

अगला दिन बेहद धीमी गति से बीता क्योंकि मेरे पास रात का इंतजार करने के अलावा और कोई काम नहीं था। दिन भर और शाम के समय, किसी भी हिरण ने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा; बल्कि वे मुझसे दूर रहना पसंद करते थे मानो मैं कोई अछूत हूँ।

फिर वो बहुप्रतीक्षित रात आ गई। तालाब के किनारे अकेले बैठे मैं गहरी और पीड़ादायक आहें भर रहा था। उन्हें खुश करने के मेरे सारे प्रयास व्यर्थ हो गए थे—मेरे लिए इससे अधिक निराशाजनक और क्या हो सकता था? देर रात, जब सभी हिरण

शांति से सो रहे थे, मैं धीरे-धीरे उन जुड़वां पेड़ों की ओर बढ़ा। तार की बाड़ को धकेलने से पहले, मैंने बाड़े के अंदर पेड़ के तने से अपना शरीर रगड़ा, उसे अपना स्नेह व्यक्त किया, अंतिम विदाई दी। लेकिन जैसे ही उसकी खुरदरी छाल मेरी त्वचा से रगड़ी, एक अजीब सी अनुभूति मुझ पर हावी हो गई।

"हिरण के न आने पर तुम इतने चिंतित और परेशान क्यों हो? क्या तुम्हें जीवन का वह सबसे महत्वपूर्ण सबक याद नहीं है जो तुमने पहले ही सीख लिया है कि तुम्हारा पूरा प्रयास अकेले तुम्हारे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है, चाहे वह लक्ष्य कितना भी महान क्यों न हो? तुम्हारा लक्ष्य तभी पूरा होगा जब ब्रह्मांड चाहेगा।"

आपने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की है। इसलिए किसी बात की चिंता मत कीजिए और अपनी सारी चिंताएं जीवन और ब्रह्मांड पर छोड़ दीजिए... अपने वतन जाइए और वहां अपने जीवन का जश्न मनाइए—मैं और मेरा जुड़वां भाई हमेशा उन सभी को प्रेरित और सहयोग करते रहेंगे जो एक दिन इस दुनिया को छोड़ना चाहते हैं। आपके आंसुओं से हमें आशीर्वाद मिला है; हम जन्म से ही आपके आभारी हैं।

मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे और मेरी सिसकी की आवाज़ नहीं निकल रही थी। पेड़ मुझे और भी बहुत कुछ बता सकता था, लेकिन मैं जल्द से जल्द पिंजरे से बाहर निकलना चाहता था। पिंजरे से आज़ाद होते ही मैंने तार की बाड़ को उसकी असली जगह पर, पेड़ों के बीच की जगह में वापस लगा दिया और पिंजरे के बाहर पेड़ से खुद को रगड़ा।

इससे मुझे वही संदेश मिला और मेरा यह विश्वास और पुख्ता हो गया कि अगर कभी कोई यहाँ से मुक्त होना चाहेगा, तो वह हर संभव तरीके से सहयोग करेगा। एक बार फिर मेरा दिल विश्वास से भर गया, और मैं उतना ही खुश और आनंदित था जितना कुछ दिन पहले बाड़े में प्रवेश करते समय था। अब जंगल की ओर मेरी वापसी की यात्रा शुरू हुई।

अध्याय-*21*

एक दैवीय संयोग

चीजों के प्रकाश में आओ, प्रकृति को अपना शिक्षक बनने दो।

विलियम वर्ड्सवर्थ

जब से मैं जंगल में पहुँचा था, तब से मैंने अपने साथियों को जंगल में न ला पाने की अपनी असफलता पर कभी शोक नहीं किया। बल्कि हर सुबह मेरी यही प्रार्थना होती थी कि वे अपनी इच्छानुसार सुखी और आनंदित रहें।

मैं अपना पूरा दिन जंगल में घूमते-फिरते, नए-नए पेड़-पौधे और फूल खोजते हुए बिताता था। मैं अक्सर तितलियों को देर तक देखता रहता था और सोचता था कि वे इतनी देर तक फूल पर कैसे बैठी रहती हैं। मेरे जीवन में कभी नीरसता या ऊब नहीं आई और हर रात सोते समय मैं अगली सुबह सूर्योदय देखने का बेसब्री से इंतजार करता था।

शरद ऋतु शांतिपूर्वक बीत गई और उसके बाद शीत ऋतु आ गई। इस शीत ऋतु में धूप सेंकने के अपने पसंदीदा शौक के अलावा, एक और चीज़ ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। हर सुबह मैं नाले के पास जाता और उसके किनारे कहीं लेट जाता। जैसे ही

सूरज की रोशनी नाले की सतह पर पड़ती, एक असाधारण घटना घटित होती।
नदी के किनारे घना कोहरा उठता और नदी के दूसरे किनारे को आंशिक रूप से ढक लेता। सूरज की रोशनी रहस्यमय ढंग से कोहरे के घेरों से होकर गुजरती और बिखरती हुई अनेक रंगों की किरणों के रूप में दिखाई देती, हालांकि उनका अस्तित्व क्षणभंगुर था। मंत्रमुग्ध होकर, मैं कोहरे से ढकी सुबह की सुंदरता को देखता रहता और आशीर्वाद की अनुभूति से भर जाता।
सर्दी के अंत में, एक सुबह तड़के मैं एक तीखी चीख सुनकर जागा। नींद से भरी आँखें मैंने आलस से खोलीं और चारों ओर देखा। आस-पास कोई भी जीवित प्राणी ऐसा नहीं था जो इतनी धीमी आवाज़ निकाल सके। तभी मुझे वह कमजोर चीख फिर सुनाई दी। वह दूर से, नदी की दिशा से आ रही थी। क्या कोई खतरे में है? क्या किसी को मेरी मदद की ज़रूरत है? मेरे सचेत मन ने सोचा और मैं तुरंत उठ खड़ा हुआ।
मैं तुरंत नदी की ओर भागा, और सिसकने की आवाज़ धीरे-धीरे लगभग सुनाई देना बंद हो गई। फिर भी, इसने मुझे और तेज़ दौड़ने के लिए प्रेरित किया, और जल्द ही मैं नदी के किनारे पहुँच गया। मैंने चारों ओर एक नज़र डाली, लेकिन वहाँ कोई भी जीवित प्राणी नहीं था जो सिसक सकता हो। मैं स्तब्ध रह गया और मुझे संदेह हुआ कि कहीं मैंने उस जगह को गलत तो नहीं पहचान लिया जहाँ से वह तीखी आवाज़ आ रही थी। मैं आस-पास की अन्य जगहों पर खोजने के लिए मुड़ने ही वाला था कि मुझे फिर से वही आवाज़ सुनाई दी।
आवाज इतनी धीमी थी कि अगर भोर के सन्नाटे का सन्नाटा न होता तो मैं उसे सुन ही नहीं पाता। अब मुझे पता चल गया था कि यह कमजोर रोने की आवाज कहाँ से आ रही थी; यह नदी के उस पार से आ रही थी।
घने कोहरे के कारण नदी का दूसरा किनारा यहाँ से दिखाई नहीं दे रहा था। बिना सोचे समझे, मैं नदी पार करके दूसरी तरफ पहुँच गया।
अब मैंने चारों ओर देखा और सामने के उस मार्मिक दृश्य को देखकर मैं स्तब्ध रह गया। एक छोटा हिरण मेरे पास ही पड़ा था, लगभग बेजान सा। वह ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था, मानो सर्दियों की रात की कड़ाके की ठंड ने उसे बुरी तरह थका दिया हो। इसके अलावा, ऐसा लग रहा था कि उसे ऐसे मौसम में रहने की आदत नहीं थी।
उस नन्ही सी जीव के लिए मेरे मन में प्यार उमड़ आया, और बिना एक पल भी बर्बाद किए, मैंने उसे अपने सीने से लगा लिया, और अपनी छुअन से उसे गर्माहट देने की

कोशिश की। मैंने अपनी जीभ से उसके शरीर को चाटा, और उसे भरोसा दिलाया कि उसकी पूरी देखभाल की जाएगी। धीरे-धीरे उसके शरीर की कंपकंपी रुक गई, और उसकी सांसें सामान्य हो गईं, लेकिन उसने अपनी आँखें नहीं खोलीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह थक गई हो और सो गई हो।

मैंने उसे कसकर अपने पास रखा और जागते हुए सतर्क रहा। जैसे ही नई सुबह हुई, जंगल और उसके आसपास की हर चीज जीवंत हो उठी, एकदम नई और सजीव दिखने लगी।

कुछ देर तक सूरज की रोशनी उस नन्हे हिरण पर पड़ती रही और धीरे-धीरे वह हिलने लगा। मैं तब तक उसे देखता रहा, उसके आँखें खोलने का इंतज़ार करता रहा। आखिरकार, उसने धीरे से अपनी पलकें खोलीं और मुझे एक सुखद आश्चर्य हुआ।

उसका चेहरा मुझे कुछ जाना-पहचाना सा लगा। उसने बड़ी मुश्किल से अपना सिर उठाया, और जैसे ही उसकी नज़र मुझ पर पड़ी, उसके चेहरे पर एक मुस्कान खिल उठी; मानो वह मुझे सदियों से जानती हो।

मुझे लगा कि उसे सबसे पहले ताजा भोजन की जरूरत है।

मैंने अपनी स्थानीय बोली में उससे पूछा, 'क्या तुम चल सकती हो?'

नन्हे हिरण ने हां में सिर हिलाया।

तो वह हमारी भाषा समझती है, मैंने सोचा और मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। मैं उसे पास के घास के मैदान में ले गई और उसे जितना चाहे चरने को कहा, और पास बैठकर उसे देखती रही, मेरे भीतर खुशी उमड़ रही थी।

सुबह देर तक, वह फिर से अपनी उम्र की एक तंदुरुस्त हिरणी की तरह हो गई थी।

वह मेरे पास बैठ गई और अचानक मुझसे पूछने लगी, 'क्या तुम्हें मैं याद नहीं हूँ?'

उसके सवाल से आश्चर्यचकित होकर, मैं मुश्किल से 'नहीं' कह पाया।

“मैं चिड़ियाघर से आया हूँ, जहाँ आप अपने साथी हिरणों को जंगल में ले जाने आए थे। लेकिन मुझे न याद रखने का कोई कारण ज़रूर होगा। तब मैं मुश्किल से एक महीने का था और जब आप बोलते थे तो मैं आखिरी पंक्ति में बैठता था। लेकिन मैं हमेशा आपकी बातें बहुत ध्यान से सुनता था। हालाँकि मैं कभी पिंजरे से बाहर नहीं गया था, फिर भी मैं महसूस कर सकता था कि आपके शब्द सच्चाई और आपके अपने अनुभव से भरे हुए थे। मुझे उस पिंजरे में बाघों को चिढ़ाने का वो मज़ा कभी पसंद नहीं आया। मुझे हमेशा लगता था कि बाहर एक बेहतर ज़िंदगी मेरा इंतज़ार कर

रही है। मुझे बस वहाँ पहुँचने के लिए हिम्मत और विश्वास की ज़रूरत थी," नन्हा हिरण रुक गया।

मैं क्या कह सकता था? मेरा गला सूख गया था और मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मैंने खुद को उससे पूछते हुए सुना, 'तुम वहां से कैसे मुक्त हुई?'

"खैर, यह इतना आसान नहीं था। दरअसल, एक समय ऐसा भी आया जब मैंने बाड़े से बाहर निकलने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। लेकिन फिर एक चमत्कार हुआ। क्या तुम्हें हमारे बाड़े के एक कोने में खड़े वे जुड़वां पेड़ याद हैं?" उसने मुझसे पूछा।

मैंने जोर से सिर हिलाकर हां कहा, मुझे उन जुड़वां पेड़ों का मुझसे किया गया वादा याद आ गया।

"एक रात मुझे ऐसा लगा जैसे जुड़वां पेड़ अपनी डालियाँ हिलाकर मुझे बुला रहे हों। तब तक मैं हिम्मत हार चुकी थी..." उसकी कहानी आगे बढ़ती गई, बिल्कुल मेरी कहानी की तरह... चिड़ियाघर से भागना भी बिल्कुल इसी तरह हुआ था, और वह रहस्यमयी पक्षी उसे पिछली रात यहीं छोड़कर चला गया था।

जब मैंने उसे यह कहते सुना कि पूरी यात्रा के दौरान उसने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी, क्योंकि उसे याद था कि मैंने चिड़ियाघर से भागने की कहानी अपने साथी हिरणों को सुनाई थी, तो मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। मेरे पास उन दोनों पेड़ों को धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं थे। आँसुओं से भीगी आँखों से उसे देखते हुए, मुझे एहसास हुआ कि अब तक स्वतंत्रता के बारे में मेरी समझ गलत थी।

मेरी समझ में स्वतंत्रता का अर्थ था कुछ भी करने, कहीं भी जाने और अपने मन की हर बात कहने की आजादी। अब मुझे एहसास हुआ कि स्वतंत्रता, आजादी नहीं बल्कि एक जिम्मेदारी है। जीवन का हर पल हमें अपने जीवन को आगे बढ़ाने के कई रास्ते दिखाता है। हम अपनी इच्छानुसार मार्ग चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। हमारी स्वतंत्रता उस मार्ग को चुनने में निहित है जो हमें और दूसरों को प्रेम और आनंद की ओर ले जाता है। लेकिन उस मार्ग को चुनना आसान नहीं है, क्योंकि इस रास्ते में कई बाधाएं आती हैं और केवल एक जिम्मेदार व्यक्ति ही इन बाधाओं का खुशी-खुशी सामना करेगा और अपने कार्यों के परिणामों के लिए तैयार रहेगा।

'मैं जीवन में इससे अधिक भाग्यशाली कभी नहीं रही। मैं बहुत लंबे समय से इस जंगल की सारी सुंदरता किसी को दिखाने के लिए उत्सुक थी। अब मैं धन्य हूं कि मैं यह जिम्मेदारी आपको सौंप सकती हूं,' मैंने पिघलती आंखों से उसकी ओर देखते हुए

कहा।

‘लेकिन अब मैं तैरना सीखना चाहती हूँ,’ उसने कहा। ‘चिड़ियाघर में आपने हमें जो कुछ भी बताया, उसमें तैरने का अनुभव मुझे सबसे ज़्यादा पसंद आया।’ उसकी आँखों में जीवन की चमक थी।

मैंने उससे कहा, 'आज थोड़ा आराम कर लो। कल से हम तैराकी का पाठ शुरू करेंगे।'

'मैंने जरूरत से ज्यादा आराम कर लिया है,' उसने संकरी धारा की ओर चलते हुए कहा।

अचानक मेरे मन में मातृत्व की चिंता उमड़ आई।

‘रुको, मेरे बच्चे, मैं तुम्हारे साथ आऊंगा। नदी का तल कुछ जगहों पर पथरीला है।’

‘क्या तुमने यह सब खुद से नहीं सीखा?’ उसने मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा। ‘मुझे भी अपने लिए ऐसा ही करने दो।’

‘ठीक है, मेरे बच्चे, जाओ,’ मैंने कहा। ‘मैं तुम्हारा यहाँ इंतजार कर रहा हूँ।’

जैसे ही मैंने उसे नदी की ओर चलते देखा, मुझे धरती पर अपना पहला दिन याद आ गया जब मैंने अपनी माँ से विनती की थी कि वह मुझे अपने पैरों पर खड़ा होना सीखने में मदद न करे।

‘उसे सब कुछ खुद ही जानने-समझने दो। मैं हमेशा एक ममतामयी माँ की तरह उसके साथ रहूँगी, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा सुरक्षात्मक नहीं।’ मैंने सोचा और अपने भीतर गहराई से महसूस किया कि यह सोचना पूरी तरह गलत था कि जब तक कोई हिरण अपने गर्भ से बच्चे को जन्म नहीं देती, तब तक वह माँ नहीं बन सकती या मातृत्व का आनंद नहीं ले सकती। वास्तव में, माँ बनना और मातृत्व का आनंद लेना बच्चे को जन्म देने से संबंधित नहीं है; इसका संबंध केवल प्रेम से है, इससे अधिक या कम कुछ नहीं।

अचानक मेरे विचार टूट गए जब मैंने उसे मुझे पुकारते हुए सुना, 'पानी के नीचे ये छोटी-छोटी चीजें क्या हैं, जो शरारत से मेरे पैरों को काट रही हैं?'

मैंने उससे कहा, 'मेरी नासमझ बच्ची, ये तो छोटी मछलियाँ हैं। जाओ, आगे बढ़ो; तुम्हारे लिए और भी कई आश्चर्य इंतजार कर रहे हैं।'

मेरी ओर चेहरा घुमाते हुए उसने मुझे मुस्कुराकर देखा; मैंने भी मुस्कुराकर जवाब दिया और मुझे लगा कि पूरा जंगल हमारे साथ मुस्कुरा रहा है।

≈ शुरुआत का अंत ≈

लेखक का नोट

लेखन की एक नई विधा का अन्वेषण करना हमेशा मुक्तिदायक और चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

अलौकिक अनुभवों के संग्रह 'द क्लैमी हैंड्स ऑफ द डार्क नाइट' को लिखने के बाद, 'पैराडाइज लॉस्ट एंड रीगेन्ड' पर काम करना एक स्फूर्तिदायक अनुभव है, और मैंने इसका भरपूर आनंद लिया है।

मैं उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक पर काम करने की लंबी अवधि के दौरान विभिन्न तरीकों से मेरी मदद और प्रोत्साहन किया।

पुस्तक के प्रारंभिक चरण में मीरा श्रीवास्तव, स्वर्गीय सुरोजित मोहन गुप्ता और स्वर्गीय भास्कर मैती के अथक योगदान के लिए मैं उनका आभारी हूं।

मेरी दोनों बहनें, मधुमिता और महुआ, हमेशा की तरह मेरी सभी रचनाओं को ध्यान से सुनती थीं, और उनकी कहानियों के प्रति रुचि ने हमेशा मुझे हर नई किताब पर धैर्यपूर्वक काम करने के लिए प्रेरित किया।

मैं अपने बीस वर्षों के मित्र, प्रतिभाशाली और कुशल डिज़ाइनर गोकुलराम सिंह का अत्यंत आभारी हूँ, जिन्होंने धैर्य और प्रेम के साथ निःसंकोच सहयोग किया। पुस्तक का पूरा कवर डिज़ाइन उन्हीं की रचना है। उनके बिना यह पुस्तक अधूरी रह जाती।

मैं प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर बनाए गए उन सभी शानदार चित्रों के लिए अत्यंत प्रतिभाशाली चित्रकार अभय जेमसे को तहे दिल से धन्यवाद देता हूं।

प्रतिभाशाली संपादन दल, जिन्होंने बड़ी सावधानी और धैर्य से इस कार्य का संपादन किया, उनकी उदार सहायता के लिए मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

अक्सोरा पब्लिकेशन्स के साथ सहयोग करने का अवसर मिलना निःसंदेह शानदार था। प्रणव ज़ेम्से, चार्ल्स रोसारियो और अल्बर्ट सोज के सभी प्रकार के सहयोग के लिए मैं उनका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरे बेटे आकाश और पत्नी सोफिया को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे यह काम करने के लिए शांत जगह और समय दिया। हमेशा की तरह सोफिया ने ही सबसे पहले किताब पढ़ी और पहले मसौदे को बेहतर बनाने के लिए कई सुझाव दिए।

काश मेरे माता-पिता, स्वर्गीय रंजीत कुमार आचार्य और लीला आचार्य, आज जीवित

होते। इस उपन्यास को प्रकाशित देखकर वे अत्यंत प्रसन्न होते।
और अंत में, आप पाठकगण, जिन्होंने मुझ पर और मेरी रचनाओं पर भरोसा किया है। आशा है कि मेरे इस नेक प्रयास ने आपकी अपेक्षाओं को भी पूरा किया होगा।
7 जुलाई, 2025
Mumbai

इस लेखक की पुस्तकें

अंडमान

एक सदी से भी अधिक समय से खूंखार सेलुलर जेल की दीवारों पर कौन से रहस्य छिपे हैं? 1912 ईस्वी: एक पुजारी स्वदेशी आंदोलनों के बवंडर में फंस गया, जो अंततः उसे कुख्यात सेलुलर जेल, पोर्ट ब्लेयर ले आया। वहाँ उसने जेल अधिकारियों द्वारा राजनीतिक कैदियों पर किए जा रहे अमानवीय अत्याचारों को देखा। उसने जेल से भागने की योजना बनाई और अपनी कोठरी की दीवारों पर कुछ प्रतीक छोड़ दिए, जो शायद किसी दिन किसी को उसकी कहानी समझने में मदद करें। 2004 ईस्वी: ग्रेट निकोबार द्वीप समूह में एक छोटा लड़का सुनामी से बच गया। अनाथ लड़के का नाम 'अंडमान' रखा गया और भविष्यवाणी की गई कि वह एक महान कार्य पूरा करेगा जो केवल वही कर सकता है। कई वर्षों बाद, घटनाक्रम उसे सेलुलर जेल की एक कोठरी में ले आया, जहाँ दीवारों पर कुछ अजीबोगरीब चिन्ह देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया, जिन्हें उसने पहले भी देखा था। जेल से निकलकर अंडमान के घने जंगलों, जरावा जनजाति के घर, की ओर उसकी खोज शुरू हुई, और धीरे-धीरे कई गहरे दबे रहस्य उजागर हुए, जिन्होंने अंडमान को सदियों पुरानी घटनाओं की एक श्रृंखला में जकड़ लिया; विश्वास, विश्वासघात और प्रतिशोध की एक लंबी गाथा, जिसमें उसकी भी एक भूमिका थी। लेकिन अंडमान जानता था कि वह पूरी कहानी तभी समझ पाएगा जब वह उस विचित्र दिखने वाले स्वास्तिक का रहस्य समझ पाएगा। अधिक जानने के लिए पढ़ें... अंडमान

बोलने वाला पत्थर

मुंबई, दिसंबर 2016: एक युवक को एक प्राचीन दिखने वाला पत्थर मिला जिस पर

अजीबोगरीब आकृतियाँ और संस्कृत शिलालेख खुदे हुए थे। पत्थर की उत्पत्ति जानने की जिज्ञासा उसे देश के एक सुदूर हिस्से तक ले गई। चंदननगर, दिसंबर 2016: एक उत्साही युवा इतिहासकार महिला देश के एक कम ज्ञात हिस्से की एक सदी पुरानी रहस्यमय कहानी पर एक पुरानी किताब पढ़ रही थी। उसकी जिज्ञासा इतनी बढ़ गई कि किताब पूरी होने से पहले ही रहस्यमय तरीके से गायब हो गई। अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए वह देश के एक शांत और एकांत राज्य में पहुँची। अंततः दोनों की मुलाकात हुई और शहर के संग्रहालय से लेकर एक दूर स्थित चट्टानी पर्वत तक उनकी खोज शुरू हुई, जिसने एक सदी पुरानी कहानी का खुलासा किया - एक मोहक नर्तकी, उसका रहस्यमय प्रेमी, उसके कई चाहने वाले, एक अद्भुत स्मृति वाला चित्रकार, कई आवाजों में बोलने वाला एक पक्षी, एक दयालु राजा और एक भयावह षड्यंत्र। और अंतिम रहस्य को सुलझाने का सबसे महत्वपूर्ण सुराग "बोलने वाले पत्थर" के गुमशुदा हिस्से में छिपा था। लेकिन पुराने रहस्यों को उजागर करने की इस प्रक्रिया में उनकी जान भी खतरे में पड़ गई... अधिक जानने के लिए पढ़ें... बोलने वाला पत्थर।

बुद्ध के अवशेष

प्राचीन बौद्ध स्तूपों में बुद्ध के अवशेषों के साथ आज भी कुछ रहस्य दबे हुए हैं... पच्चीस शताब्दियों से भी अधिक समय पहले, एक रहस्यमय आकर्षण वाले व्यक्ति ने पृथ्वी पर विचरण किया। उन्होंने अपने ध्यानमग्न मौन और आनंद से हर उस व्यक्ति को रूपांतरित कर दिया, जिनसे वे मिले। उन्हें बुद्ध, यानी प्रबुद्ध व्यक्ति के रूप में जाना जाता था। उनकी मृत्यु के बाद, उनके नश्वर अवशेषों को उनके जीवनकाल में उपयोग की गई कई अन्य वस्तुओं के साथ आठ स्तूपों के भीतरी भाग में गहराई से दफना दिया गया था। फिर भी, अब यह माना जाता है कि उनमें कई लोगों और राष्ट्रों के भाग्य को बदलने की पर्याप्त शक्ति है। 2023 भारत: विभिन्न देशों के कई लोग कुछ विशिष्ट वस्तुओं की खोज कर रहे हैं जो बुद्ध और सबसे प्राचीन स्तूपों से निकटता से जुड़ी हैं। उनमें से प्रत्येक का अपना उद्देश्य है। संयोगवश, शुवाशिनी और सैकत, जिन्होंने वाणीमय पत्थर का रहस्य सुलझाया था, इस अनोखी खोज में उलझ जाते हैं। धीरे-धीरे यह खोज उन्हें अशोक काल के एक अनसुलझे अध्याय की ओर ले जाती है। लेकिन जल्द ही, उनकी खोज एक निर्मम हत्या से टकराती है। दोनों जानते हैं कि उन्हें

प्राचीन स्तूपों की दीवारों पर खुदे हुए गुप्त कोड और ज्यामितीय आकृतियों को समझना होगा। उन्हें समझना ही बुद्ध से गहराई से जुड़े एक अनमोल खजाने को गलत हाथों में पड़ने से बचाने का एकमात्र तरीका है...

अंधेरी रातों के चिपचिपे हाथ

हम उस जगह विद्यमान हैं जहाँ प्रकाश गोधूलि से मिलता है, दिन रात से मिलता है, दृश्य अदृश्य से मिलता है, और जीवन जीवन से परे मिलता है... मुंबई: एक मनोचिकित्सक के पास एक अजीब आगंतुक आया जिसने उसे घटनाओं की एक असामान्य श्रृंखला बताई और उससे विचित्र सहायता मांगी। कोलकाता: एक असफल लेखक ने सफल लेखक बनने के लिए बेईमान हथकंडे अपनाए, उसे अपने आगे आने वाले भयावह परिणामों का अंदाजा नहीं था। मसूरी: एक लेखक को एक लंबा पारदर्शी पंख मिला जिसने उसे एक सदी पुरानी कहानी से जोड़ दिया, जिसके निशान अब तक मौजूद हैं... त्रिपुरा: एक निर्दयी सास ने अपनी बहू को प्रताड़ित करने के लिए कई तरकीबें अपनाईं, जिसके परिणामस्वरूप उसे विनाशकारी परिणाम भुगतने पड़े। नागपुर: भौंकते कुत्तों के झुंड से पागल होकर, एक आदमी ने उन्हें क्रूर तरीके से मारने का फैसला किया, लेकिन जल्द ही उसे एहसास हुआ कि वह खुद को रहस्यमय घटनाओं की एक श्रृंखला में फंसा चुका है। माथेरान: एक यात्री ने एक युवती से एक जीर्ण-शीर्ण आश्रम के बारे में एक अनजानी कहानी सुनी। लेकिन उसने अपनी कहानी सुनाने के लिए उसे ही क्यों चुना? हिमालय की तलहटी: एक लेखिका का सामना एक रहस्यमय प्राणी से हुआ जिसने अपनी दिल दहला देने वाली कहानी उसे सुनाई। लेकिन वह कहानी पूरी किए बिना ही चली गई... देश भर में घटित होने वाली ये अलौकिक घटनाएं पाठकों को एक ऐसे अनछुए क्षेत्र में ले जाएंगी जहां यथार्थवाद और अतियथार्थवाद दोनों का समान प्रभाव है।

sjeet

Am I My Best Version?
I don't know, but I am certainly The Happiest Version of Myself.

Every time I fell, they told me, 'You cannot rise again.' But I heard a voice within telling me, 'Give it another try.'

They always told me, 'Don't go against the wind for there lies all danger,' and that voice would whisper, 'Explore the unknown for there lies life.'

When they advised me, 'Accept your fate for only Destiny can decide our fate,' that silent voice uttered, 'Your fate is in the hands of Destiny only when your sincere effort is absent.'

When they told me, 'You must not cherish an improbable dream,' the voice within whispered, 'One step at a time, and every day you will be nearer to your cherished dream.'

This voiceless voice within us is always guiding us, and I listened to it with the utmost sincerity.

I lost my Paradise by the forces of circumstances but am determined to work with grit and courage until my story becomes, 'Paradise Lost & Regained'.

And yes, the warrior hidden within you will find yourself in this saga of a little deer...

'Paradise Lost & Regained'

FICTION ISBN : 978-81-941328-5-1

9 788194 132851